

नहीं चल सकता, तो इसका कारण संभवतः यह है कि वह भिन्न ध्वनिया को नहीं सुन पाता। उसे उस संगीत तक जाने दो, जिसे वह सुन रहा है चाहे कितनी ही दूर क्या न हो। जब उन्होंने भौतिकवाद पर प्रहार किया तो एक ऐन रहस्यवादी व दृष्टिकोण से जिसमें भगवद्गीता पड़ी थी। उन्होंने मात्मी का पक्ष लिया। उनका विश्वास था कि आत्मा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए धन नहीं चाहिए। उनका आग्रह था मनुष्य को उन चीजों का मूल्य नहीं चुकाना चाहिए, जो उसके लिए आवश्यक नहीं हैं। उस उन चीजों के लिए अपने को नहीं खपाना चाहिए जिन्हें वह वास्तव में नहीं चाहता है। प्रकृति विषयक उनकी कृतियां में विविधतावादी आन्तरिकता है। एक प्रकृति प्रेमी हान के नाते व एक मानव प्रेमी भी थे।

थोड़े भारतीय संस्कृति के अनुरूप भक्त थे। उन्होंने ब्रह्म, महानास्त भगवद्गीता मनुस्मृति आदि कई भारतीय धर्मग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया था और उनसे प्रेरणा प्राप्त की थी। उनसे पुस्तकालय में भारतीय दर्शन संबंधी अनेक पुस्तकें थीं। उन्होंने पूर्व के अनेक कई देशों के धर्मग्रंथों का भी अध्ययन किया था और उनकी शिक्षाओं को पूरी जात्या के साथ अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया था। थोड़ा सच्चं अर्थ में एक मनीषी सत थे। जीवन की भागदौड़ में उनकी यह अमर रचना हमारे लिए एक दिव्य प्रकाश-मन्त्र सिद्ध हो सकती है।

पथ की खोज

अर्थ व्यवस्था

य कुट्ट पण्ड जिन जिना मिल गए थे उन जिना में एक जगन् म अक्ता रहता था। मसाचुसेट्स के कानकाड प्रान्त में वाडेन मरोवर के तट पर अपन हास में मैन एक घर बना लिया था। इस घर के चारा आर मीन-मात तक काट बसा नया था। वहा में निफ अपन लाया के थम में अपना पट पावता था। इन प्रकार दो नाव और दो महीन में वहा रहा। अब गायन कुट्ट जिनों के लिए मध्य जगन् म में फिर लाया आया है।

वापसी पर मर नगरवाला न मरी जीवन निधि के गार में लाया जाकर पूटना की है। कुछ लोग इस व्यक्तिगत जिनामा का घटना कह सकते हैं पर मुने ता यह क्या बिलुप्त नहीं होगी। मुभ ता परिस्थितिया का दखन नग लगी पूटना छ वही ही स्वाभाविक और प्रमाणानुक्त मालूम पड़ती है। कुट्ट न पूजा है मैन क्या बन में क्या लाया ? मुझे अकलापन महसूस हुआ था नहीं क्या मुभ डर नहीं था ? क्या प्रमाण के जनका प्रान्त। जय कुछ न जानना चाहता है कि वहा अपना आय का जितना भाग में जान म लाया था। कुछ ऐसा न जितन बन में दान-वस्त्र हैं पूछा है कि मैं जितन गरीब बच्चा का पालन-पोषण करता था। इन प्रान्त में कुछ के उत्तर में इस पुस्तक में रहा है। कुट्ट जाया का मने न व्यक्तिगत बाता में बिगय रचि नहा जागी। मैं एम मज्जना में पान हा ममा माग जाता है। अनिरतर पुस्तक में लख के अपन बार में कुछ नहीं कहता उनमें में या उत्तम पुस्तक का उतर नहीं किया जाता। पर प्रस्तुत पुस्तक में मैं अपन बार में बहुत कुछ बताया और यही हमकी विषयता जागी। हम आम लोग में यह भूत जात है कि पुस्तक में ता कुछ कहा जाता है वह वास्तव में तबत द्वारा न बना जाता है। यदि मैं किया जय को उतना ही अच्छी तरह से जानता जाता जितना कि अपन आपरा जानता है ता मैं अपन बार में अपनी बात न करता।

मेरा तो दुर्भाग्य है कि मेरा अनुभव बहुत सकुचित है और मैं अपने व्यक्तिगत जीवन के दायरे तक सीमित हूँ। पर मरी हर लेखक से पहली और अन्तिम भाग यही रहती है कि वह अपने निजी जीवन का भरपूर साधा और सच्चा ध्योरा मुझे द। वह दूसरों के बारे में जो लिखता है उसे पढ़कर मुझे सन्तोष नहीं मिलता। किसी दूर देश में बठकर लेखक किसी सपने-सम्बन्धी का जैसी निजी बातें लिखेगा वह ही निजीपन की मुझे चाह रही है। जिस लेखक ने अपना जीवन ईमानदारी से जिया है वह मेरे लिए तो एक दूरदेश के वासी की तरह ही उत्सुकता का पात्र है। अपने निजी जीवन को ध्यान में रखकर ही मुझे कहना पड़ता है कि ये कुछ पण्डित शायद गरीब विद्यार्थियों के लिए रास तौर पर लिखे गए हैं। मेरे पास पाठक उन बातों को ग्रहण कर लें जो उनसे सम्बन्ध रखती हैं। मेरा विश्वास है कि कोई भी व्यक्ति इस विषय की सीमा को इतना अधिक फैलाने की कोशिश नहीं करेगा कि एक तम कोट की तरह इसकी सीमा ही उधड़ जाए क्योंकि यह कोट उसीके पास ठीक तरह चलता जिसपर वह फिट होगा।

मैं यहाँ अजनबियों के चीन्ही या मैडविच (हवाई) द्वीप के वासियों के बारे में कुछ बताने नहीं बटा हूँ। मैं तो आप सबके बारे में—आप जो इस पृष्ठ का पढ़ रहे हैं आप, जो न्यूदिलड में रहते हैं—कुछ कहना चाहता हूँ। मैं आपसे आपकी आत्मा के बारे में वास्तविक आपकी सामाजिक परिस्थिति और तब की स्थिति के बारे में कुछ बातें करने की उत्सुक हूँ। यह दंगा क्या है? क्या जल्दी है कि यह इतनी ही सराब रहें? इसमें उचित सुधार किया जा सकता है या नहीं? कानकाड में मैं बहुत काफी घूमा हूँ। मुझे लगा है दुकानों में दफ्तरो में खेतों में, सब वही यहाँ के लोग हजार विविध तरीकों में जुटे हैं जहाँ एक-तय-गा कर रहे हैं। मैंने ब्राह्मणों की तपस्चर्या के बारे में बहुत कुछ सुन रखा है। वे अपने चारों ओर जागते हैं और बीच में बठकर मृग पर आँखें गड़ा लेते हैं। तिर मोचा करके जाग की तपस्या पर उलट लम्ब जाते हैं। गदन उठाकर ऊपर आकाश की ओर इतने लम्बे समय तक दगने चल जाते हैं कि गदन का सामाजिक स्थिति में लौट आना जमझट-सा हो जाता है और मुझे इस गदन में गतरत पदार्थ के मिश्रण कुछ भी पत्त नहीं पहुँच पाना। वे स्वयं का जमीन से जकड़कर आयु भर के लिए पेड़ की जड़ा में घास लेते हैं। वे दण्डवत् प्रणाम करने हुए रेंग खड़े बड़े-बड़े प्रेता की परित्रमाएँ कर डालते हैं। और स्नान की चाटी पर एक टांग से लटके रहते हैं।

पर जान-बूझकर किए गए थे तब भी गायद ही उतने अजीब और अविश्वसनीय हो जिनके वे सब देख रहे हैं जिन्हें मैं यहाँ अपने नगर में प्रतिनिधि देवता हूँ। हर्-कुदीन^१ ने जो बारह पराक्रम किए थे, व तो उनकी तुलना में कुछ भी नहीं जा मेरे भगवान् को नियम करते हैं। वे पराक्रम बाहर थे उनका अन्त निश्चिन्त था। पर योंग तो एक भी दैत्य का पकड़ या मारकर अपने एक भी पराक्रम का पूरे परिणति तक नहीं पहुँचा सके हैं। इनका आयातग्रस्त^२ जैसा कोई मित्र भी नहीं है जो दृढ़ हो लाल ताँह से हाइड्रा^३ के निरन्तर उगनवान् मित्रों की जड़ का जवाब देने। पर य पड़ोसी एक मित्र कुचनन हैं दो उग आन हैं।

मैं अपने भगवान् को इन नवयुवकों की देखता हूँ। इनका दुर्भाग्य यहाँ तो है कि इन घर काठार, पशु और कृषि-यन्त्र उन् विरामित में मिले हैं। इन सबका पाना तो आसान है, इनसे छुटकारा पाना आसान नहीं है। अच्छा जाना यदि य लाग्गुल चरागाहों में पना हुए हात और किसी मादा भेड़िये का दूध पीकर पाने। तब गायद य अधिक स्पष्ट दल-ममक सबन कि किस धरती पर उन्हें श्रम करना पड़ेगा। धरती का गुलाम इन्हें किसने बना लिया है? ये क्या माठ एक जमीन का गाँव डालन पर तुल हैं जबकि आदमी के भाग्य में चौब नर गद के सेवाय और कुछ भी नहीं है? क्यों य पदा जान ही अपनी पत्नी पान्ता आगमन पाने हैं? इसीलिए तो मैं कि इन्हें मनुष्य बनकर जीना है और समझिए इन सब चीजों का सिर पर उठाए किन्ना है जिसमें यथाशक्ति मध्यम बना जा सके। किन्नी हा तयारकिन्त अमर पर विद्युत् आत्माएँ मुझे मिली हैं जिन्हें मध्यमि के मर ने लगभग कुचन डाला है जिनका दम घट रहा है जो जीवन की गडक पर रँग रही हैं, जो अपने कंधों पर पचहत्तर कुट नम्र और चानीम फुट चौड काठार का कभी माफ न की गई गाना घुड़मान का सौ एकड़ जमीन का जोतन-बानका, चरागाह का, और एक चनम्यनी का बाभ हो रही हैं। यह अना वर्यक अभिगाप जिन्हें विरामन में नहीं मिला है वे भूमिहीन लोग तो चार पाय की इस माम की लोप का माधारण श्रम में पाने वेने हैं।

१ श्रीम का मन्त्रानुसार बार पुत्र जिसे अपने स्वामी से मुक्ति पाने के लिए बारह पराक्रम करने पड़े थे।

२ श्राक पुराणों का एक बार पुत्र

३ पौराणिक नव-दैत्य जिनमें अनेक तिर करने पर फिर उग आन थे।

रोग एक भ्रम के बश होकर मेहनत करते हैं। मानव का अधिकांश कुछ ही समय से रात बतकर घरती में मिल जाता है। आवश्यकता जो गायद भाग्य का ही प्रचलित नाम है मानव का ज्ञान रमता है और जमावि एक प्राचीन पीढ़ी में बहा गया है वह राजने जमा करना है जिन्हें अन्त में नीमक रग डालती है, जग सग जाता है और चोर उठा ल जात हैं। और पहले नहीं, तो जीवन के अन्त में, मानव को पता चलना है कि उसने मूर्खता का ही जिदगा गुजार डाली है। यही भाव एक प्राचीन पुस्तक में भी व्यक्त किया गया है। ग्रीक पुराणों में कहा आती है कि ड्यूकेनियन और पीग^१ पत्थर उठा उठाकर अपने मित्रों के ऊपर से बिन दखे पीछे फेंकते रह और व पत्थर जोड़ित मानव का आकार ग्रहण करते रहे। यही बात ग्रेले ने अपने मधुर स्वर में गानर बताई है

तब स पत्थर मिल हम कष्ट-याचना सन्ने।

‘पत्थर से तन बना हमारा सहज मानने, रहत।

एक दोषपूर्ण देव-वाक्य पर अर्धे बनकर चलनेवाले उन दोनों के बारे में क्या कहा जाए जो अपने सिर पर स बिना दखे पत्थर पीछे फेंकते गए और यह नहीं सोचा कि इसका क्या परिणाम होगा।

यह देव (अमरीका) तुलना में बंदगी से अधिक उन्मुक्त है पर यहां भी अधिकतर मानव अज्ञान और भ्रम के बगीभूत हाकर जीवन की नूठी चिन्ताओं और अनावश्यक तुच्छ व्यस्तताओं में डलके हैं। जीवन-तरंग के श्रेष्ठतम पक्ष के कभी तोड़ नहीं सकते। अत्यधिक भ्रम के कारण उनकी उन्नति का इतना बडीन हा गई है, वे इतनी बापनी हैं कि उनमें वह पक्ष टट नहीं सकता। असल में रात में हाड शांनवान मानव के पाम जीवन की सच्ची समग्रता प्राप्त करने की पुग्मत नशा रहती। वह अपन माथी मानव से एक भरपूर मानव के रूप में व्यवहार कर ही नशा सकता। ऐसा करने स उमने भ्रम का बाजार मूल्य जो घट जाएगा। एक मगीन से आगे कुछ और बनने का समय ही उमने पाम नहीं हाता। जिस कर्म कर्म पर अपना ज्ञान नियाता पजता हो उम आपन अज्ञान की अनुभूति कैम हो सकती है? यद्यपि एमी अनुभूति उमने विनाश के लिए बटुन जरूरी है। तेम व्यक्ति को पहल हम कुछ समय तक उन्मरतापूर्वक मुपय गिनाए पिनाए, मयट

पहनाए अपन निश्छन स्नेह मे उसे सींचें तभी हम उसकी सहो परख कर सकते हैं। हमारे स्वभाव के सर्वोत्तम गुण फला पर आए उस जोवन की तरह हाते हैं जिन उठा धरी म पूरी नजाकत बरतकर ही सुरमित रखा जा सकता है। पर हम स्वयं के अथवा एक दूसरे के साथ कभी कोमलता कभी नहा बरतते।

आपम बहुत-से लोग गरीब हैं। गुजारा भी दूभर है और कभी-कभी नो कड़िए, साम लेना भी कठिन हो जाता है। मुझे सदेह नहीं कि आपम मे कुछ जो इस पुस्तक का पढ़ रहे हैं, अपने खाए हुए भाजा के, अपने तेजो में पड़ते और नूटते अथवा फट चुके और टट चुके काट और जत के धसे चुकाने में भी असमर्थ हैं। आप उधार माग हुए अथवा चुराए हुए समय में इन पन्थों को पढ़ रहे हैं और इस प्रकार अपने मालिक को ठग रहे हैं। अनुभव ने मेरी दृष्टि का बहुत तेज बना दिया है। मुझे साफ दीख रहा है कि आपम से बहुत-से बड़ा ही आछा और धूतता-पूर्ण जीवन बिता रहे हैं। आप हमेशा किमी न किमी ताक में रहते हैं कभी तो किमी कारोबार में घसने की, और कभी किसी ऋण से छुटकारा पाने की। ऋण एक बहुत पुराना पाप है। लातीनी लोगो ने इसे पराया पीतल नाम दे रखा था, क्योंकि उनके कुछ सिक्के पीतल से बनाए जाते थे। आप जी रहे हैं और मर रहे हैं और इस पराये पीतल के नीचे दफनाए जा रहे हैं। ऋण चुकाने का वचन देते हैं, कल का वचन देते हैं और आज दीवाणिया बनकर मर जाते हैं। आप किसीकी कृपा पाना चाहते हैं चुगी बचाना चाहते हैं। उन अपराधों को छोड़कर जो आपको जेल की हवा पिलाए स्वायसिद्धि के लिए आप सभी तरीके अपनाते हैं। आप भूठ बोलते हैं, खुशामद करते हैं भूठे मत दते हैं शिष्टता का चोला ओढ़ते हैं, हलकी निस्तार उदारता का भ्रमजाल तानते हैं। हर कोशिश करते हैं कि आपको पड़ोसी आपने अपने जत माफ करा ले अपनी टोपी या कोट सभलवा ले, अपनी गाड़ी ठीक करा ले, अथवा आपने कुछ सामान ही मगवा ले। और आप अपने-आपको बीमार बना लेते हैं जिससे बीमारी के समय के लिए कुछ जमा कर सकें कुछ जिने अपनी पुरानी तिजोरी में आप महेज सकें पनस्तर के पीछे या इटो के नीचे वही भी छिपा या दबा सकें। और आप चिन्ता नहीं करते कि यह राशि कितनी कम है या कितनी अधिक।

कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि हम इता ओछे कम बन जाते हैं। नीचो लागो को गुलाम बनाने की प्रया कुत्सित है। पर दरअसल वह अमरीकी नहीं,

विदेशी है। उसीकी भाषा में कह तो कह सकता हूँ कि अमरीका के उत्तरी और दक्षिणी दोनों खंड बड़े ही प्रवल और घूँस मालिकों के गुलाम हैं। दक्षिण का ओवरसीयर सरत होना है। उत्तर का उमर भी सख्त पर स्पष्ट गुनाम बनकर खुद अपना ही जावरमीयर बन जाना तो भयकर लक्ष्य है। तुम मानव में देवत्व की बातें करते हो। राजमाग पर चलते उम गाड़ीवान को तो देखो जो गन दिन सफ़र करके मड़ी की ओर बढ़ा जा रहा है। क्या कही उसमें देवत्व देख पड़ता है ? उमका सबसे बड़ा कतव्य यही है न कि वह अपने घोड़ा को चारा पानी देता रहे ? माल दान के इस काम के सामने अपने भविष्य की कितनी चिंता उम है ? क्या वह स्वयं अपना गुलाम नहीं है ? देवत्व और अमरत्व का कितना अंश है उममें ? देखो तो कैसे वह दुबकता है और पछ हिलाता है और दिन भर अवारण ही उसका दम सूखता रहता है। असल में न उसमें देवत्व है न अमरत्व। वह तो अपने बारे में अपनी निज ही राय का कदी और दाम है। और यह स्थिति अपने ही कामों से उमने प्राप्त की है। अपनी निजी राय की तुलना में दूसरे लोगों की राय दुबक और कम निरकुश हुआ करती है। यह मानव का अपने बारे में निजी मत ही है जो उमका भाग्य को गढ़ता है और इंगित से उमके बारे में मात्र कुछ जतला भी देता है। जहाँ भावना और कल्पना का राज्य है उन बेस्ट इण्डियाई प्रेक्षा के लिए भी आरम्भमुक्ति का आग्रह। 'कौन-सा विल्वरफोम' है जो वहाँ के लोगों को उन्मुक्त और उत्तीर्ण बना दे ? वहाँ की कुलीन स्त्रियों को दगिण। मौत के दिन को नजर दाब करन के लिए वे केश प्रसारन की गढ़िया युनन में व्यस्त हैं। इसमें क्या मह प्रकट होता है कि इन्हें अपने भविष्य में बहुत गहरी निष्ठा है ? शाम का लाल की गति को धुँस किए बिना भी समय बरबाद किया जा सकता है।

अधिरतर लोग एक मौन निराशा से उमरत जीवा बिना हैं। जिसे बेराग्य कहते हैं वह तो निश्चय ही निराशा है। एक हताश नगर में एक हताश गाँव में आप जाने हैं। वहाँ ऊँसिलावा और छछूँरो जसी हलचल और बीरता आपकी देखन को मिलेगी। मानव जाति के खेलों और मनोरंजना में भी एक स्तर पर अचेत विस्मय की निराशा छिपी होती है। उनमें वास्तविक आनन्द की प्राप्ति नहीं

१. विल्वरफोम विल्वरफोम (१७५३ से १८३३ तक) गुनामों के व्यापार को रोकने के लिए लड़ा।

उसे १८०७ में सज़ा मिली। फिर उमने गुलाम प्रथा का समाप्ति के लिए आन्दोलन

१. आरम्भ किया।

होनी, क्योंकि आनन्द तो काम के बाद ही मिलता है। पर उतावले होकर काम न करना ही विवेक की पहचान है।

सुकरात^१ द्वारा प्रस्तुत मानव-सबकी प्रश्नात्तरी की भाषा में मोक्ष तो प्रश्न उठते हैं—मानव का प्रश्न लक्ष्य क्या है? जीवन की मनी आवश्यकताएँ, उसके मही उपयोग क्या हैं? तब लगता है लागा न जान-बूझकर ही जीवन की यह सामान्य विधि चुनी, क्योंकि यही उसे सभ्य अच्छी और उपयुक्त लगी। फिर भी वह ईमानदारी से यह मानता है कि अय कोई विकल्प गप नहीं है। लेकिन जाग्रत और स्वस्थ प्रकृति के लोग यह नहीं भूलते कि सूरज हर सुबह ताजा हो जाता है। कभी भी किसी भी अवस्था में अपने पूर्वग्रहों को त्यागना व्यर्थ और समयातीत नहीं होना। विचार और क्रिया की पुरानी से पुरानी विधि भी सबूत के बिना सही नहीं मानी जानी चाहिए। जो सत्य आज हर किसी की उम्र पर है, मृत्यु स्वीकृति मानकर जिसे ध्यान में लाना भी आवश्यक नहीं समझा जाता वही बल अमर्य साबित हो सकता है। वह विचार जिसे कुछ लोग खेता पर उपजाऊ जल धरमानवान बाँध जसा उपयोगी समझते हैं वह धुएँ का घाली गुब्बारा भी निकल सकता है। पुराने लोग जिस काम को आपके बग में बाहर मानते हैं, कागिग करके आप उसे ही कर डालते हैं और अपने बग का बना लेते हैं। पुराने लोग न पुराने काम किए, पर नया आदमी तो नये काम करेगा। प्राचीन मानव शायद आप को जलाए रखने के लिए ताजा इधन उपलब्ध करने में बहुत कुशल नहीं था, पर नया आदमी थोड़ी-थोड़ी सूखी लकड़ी भट्ठा में भाड़ता है और विह्वल-गति में घरनी का चक्कर बाट खाने की समयता प्राप्त कर लेता है। और इस प्रकार गायद वह अनाज का विच्छेद कर डालता है। बढ़ावम्या वह सब नहीं मिटा सकती जा जबानी मिटा सकती है क्योंकि वह बमाज काम है यानी अविक है। माय दीपायु न किसी विन पुष्प का चरम मूया की गिना दी हा, यह मदह का ही विषय है। बुढ़ा के पास जवानों को दन के लिए व्यवहार की गति से कोई काम मलाह नहा हाती। उनका अपना अनुभव बहुत एकाकी होता है। व स्वयं महसूस करने हाथि कि उनका जीवन, कुछ अप्रकट बारणा से, बहुत विषम रहा है। हा, यह हा सकता है कि कुछ बूढ़ा में वह निष्ठा बची हा जिसे सामने विषयता सुद्ध सिद्ध हो जाए और व अपनी आयु

की तुलना म कम बूढ़े लगें। मैं इस धरती पर तीस वष जो चुका हूँ, पर अभी तक अपने बड़ों से किसी मूल्यवान सत्पर सम्मति का एक अक्षर सुनना भी मुझे नसीब नहीं हुआ है। वे कुछ भी उपयोगी मुझे नहीं द सके हैं। शायद वे द ही नहीं सकन है। यह जीवन एक बड़ी प्रयोगशाला है। अभी मैं इसके सभी प्रयोग पूरे नहीं कर सता हूँ। पूवजा के प्रयोग भरे किसी भी काम क नहीं हैं। यदि मैं कोई नया अनुभव कर पाता हूँ जो मुझे मेरी दृष्टि से मूल्यवान लगता है तो यह निश्चय है कि उसके बारे म बड़ा न मुझ कुछ नहीं बताया है।

एक किसान मुझसे कहता है सिर्फ शाकाहार पर नहीं रह जा सकता, क्योंकि उसमें हड्डियाँ की मजबूत बानवानों तत्त्व नहीं होते।' यह किसान अपने शरीर के लिए अन्धविश्वास तत्त्वों को प्राप्त करने म न्न का एक अणु बड़ी निष्ठापूर्वक लगा देता है। मजा यह कि यह मान यह उन बलों को हाकते हुए कहता है जो हर प्रकार की रक्षाबंदी के बावजूद शाकाहार से ही बनी अपनी हड्डियाँ स उस और उसका भारी हल का खीच सत हैं। जीवन क कुछ क्षण म जैसे कि असमय और बीमारा क लिए कुछ चीज दरअसल अनिवार्य होती हैं, वही चीजें कुछ अया क लिए विलास का साधन हो सकती हैं और सम्भव है कि कुछ लोग ने अमा उन चीजों का परिचय भी प्राप्त न किया हो।

कुछ लोग कहाकरन हैं कि हमारे पूवज जावन-म्रक मम्पूण विस्तार को जाव परल चुके हैं। उहान इसकी ऊचाइया का नाप सिमा है गहराइया का थाह ल सी है। वे सभी बातों क बारे म तो नियम बना गए हैं। एवलिन के अनुसार 'मुनमान' निश्चित आत्मा दे गया है कि पहा के बीच कितना अन्तर छाड़ा जाए और रोम क दबाधिकारी महा तक तय कर गए हैं कि इतनी धार पड़ोसी क बाग म जाकर जमीन पर गिर हुए मजुफन चुन लन स अतिप्रमण का दोष आपपर नहीं लगगा, बशर्ते कि पला का इतना निरसा अपन पहामी को आप द दें।' हिप्पाक्रेटीड^१ ने तो नासून काटन तक क तरीके बता द्या हैं और क भी ऐसा कि उगलिया एक दूसरे म छोटी-बड़ी न रह बराबर हो जाए। जावन का सभी विविधताओं का जान लन

१ शमरास क रामा देव का पुत्र सुनमान ६३७ ई० पू० म गया पर बैठा था। क अपनी व्यापारायागता और बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध हैं।

२ ४६० ई० ० मर्याद मक प्रक वैत

और सभी भोगों को भोग लेना का मानव प्रयास, निम्नन्देह आदम चित्तना ही पुगना है। लेकिन कभी भी मानव-आमय की पूरी तरह नापा नहीं जा सका। इसकी इतनी कम गहराई अभी तक चाही जा सकी है कि पढ़ने के किन्हीं भी दृष्टान्तों के आधार पर यह निगम नहीं दिया जा सकता कि मानव क्या कर सकता है और क्या नहीं। जितनी भी विज्ञताएँ तुम्हें अब तक मित्रा हा, मर दच्चे, नू निराण मत हो। नला अघर कामा का पूरा करने का काम दूसरा कौन तुम्हें सौंपने आया ?

हम द्वारा किम्ब क साधारण परीक्षणों में अपने जीवन को जाच-समझ सकते हैं। सप्ताह-प्रायः जा मूय हमारी सेम की फलिया का पकाता है वही ता इस घरती उस पता नहीं जितन भूमण्डला का एकसाय ही प्रकाशित करता है। आ यह तथ्य मर ध्यान में रहा होता ता इसने कुछ गनतिया न हान दी होती। उस समय इस तथ्य के प्रकाश में अपनी समा की गुडार्ड मैन नहीं की थी। ये तार कस आचयजनक निकोता के प्रीपविन्दु हैं। निम्न विद्वत् के विभिन्न भुवना में दूर दूर बैठे जितन विविध प्राणी एक हा क्षण में, एक ही समय को कामना कर रहे हैं। प्रकृति में और मानव जीवन में इतना ही नातात्व है जितना हमारे आश्रित स्पा-कारों में। जैन बताएगा कि एक जीवन दूसरे में अविव्य निर्माण में क्या योग दे सकता है ? हमारे लिए इससे बड़ा चमत्कार और क्या हो सकता है कि हम एक क्षण के लिए ही सही दूसरे के अन्तर भाव लें। एक घंटे में ता हम एक लोक के सभी युगा का नहीं-नहीं युगा-युगा के अनन्त ताकों का अनुभव प्राप्त कर लेंगे। इतिहास काव्य पुराण—मैं ता कहता हूँ पुनः-भान में लिखी कोई भी परानुभूति उतनी जानबूझ और धीरे-धीरे इनवादी नहीं हो सकती जितनी कि यह स्वानुभूति।

मेरे पड़ोसी जिन बातों को अच्छा बताते हैं उनमें से अधिकतर का मैं दिन में कुछ मानता हूँ। और यदि मुझे कभी पछताना पड़ता है ता तभी जब मैं कोई तपोकथित अच्छी बात कर बैठता हूँ। तब मैं शोक उठता हूँ, पता नही कौन भूत मर सिंग पर आया था कि मैं बैसा अच्छा काम कर बड़ा हूँ बृद्ध-प्रवर। मैं जानता हूँ मनोरमान का जीवन तुमने भोगा है और काम किम्ब के सम्मान सभी तुम वचित नही रहे हा। पर जिनकी भी समझदारी की बातें तुम बघारा, मेरी आत्मा में ता एव ही दुनिदाग पुकार उठती है कि मैं उनसे दूर रहूँ। एक पीढ़ी दूसरे के उदम-पना को घेरे हुए अजन्मता का तरह धाँवर आगे बढ़ जाती है।

मरा विचार है जितन हम हैं उसस काफा अधिक आस्थावान हम निश्चिन्तता में बन रह सकते हैं। ईमानदारी में जितनी दय-रेख हम किसी आय की करें ठीक उतनी ही अपनी कम कर दें। हमारी कमजारी का माय भी प्रवृत्ति उतनी ही अनुकूलित हो जाती है जितनी हमारी शक्ति के साथ। कुछ लोग 'रगतार' इनमें अधिक चिंताकुल रहते हैं और अपने पर जोर डालते हैं कि यह उनका लिए लगभग एक विशेष प्रकार का अमाध्य रोग हो जाता है। हम स्वभावतः अपने लिए काम का महत्त्व का बहुत बड़ा चढ़ाकर दिखाते हैं। फिर भी कितना कुछ हमसे अनकिया रह जाता है। और कहाँ हम बीमार पड़ जाते सब क्या होता? कितन सतक हम रहते हैं? हमारा दब निश्चय रहता कि जहाँ तक हम सब आस्था का सहारा न लिया जाए। दिन भर हम सन्मिद रहते हैं रात में बेमन रा हम भगवान की याद करन हैं, और अपने को अनिश्चितताओं की गान्धी में छोड़ देते हैं। ऐसे ही पूरे और धरे ढग से जीते चल जान को हम विवश हैं। अपने जीवन का हम प्रतिष्ठा देते हैं और परिवर्तन की किसी भी सम्भावना का अस्वाकार कर देते हैं। हम घोषणा करते हैं कि बसल यही एक माग है। पर एक केन्द्र में जितने अद्वय्याम मीचे जा सकते हैं उतने ही माग मौजूद है। सोचें तो हर परिवर्तन एक चमरदार है। लेकिन यह ऐसा चमत्कार है जो हर क्षण घट रहा है। 'ननु फल' न कहा है 'हम जानते हैं कि हम यह जानते हैं और हम नहीं जानते कि हम यह नहीं जानते—यह जानना ही सच्चा जानना है। यदि एक भी व्यक्ति कल्पना का तथ्य को अपनी धारणा का तथ्य बना पाता है तो कभी न कभी सभी मानव इसी आधार पर अपने जीवन का निर्माण कर सकेंगे यह मैं साफ दाख रहा हूँ।

एक पल साचें तो कि जिन परम्पानिया और चिन्ताओं का मैं ऊपर शिखर किया है उनमें से अधिकतर दिन बातों का लकर पदा हाती हैं, और यह भी कि इन कष्टों को उठाना अथवा कम से कम दतना मतक रहना हमारे लिए कितनी दूर तक अनिनाय है। यदि हम जानना चाहते हैं कि जीवन की मोनी आवश्यकताएँ क्या हैं और उन्हें पूरा करने के लिए क्या-क्या तरीके अपनाए गए हैं तो एक आत्म और भीमान्तक जीवन का अनुभव प्राप्त करना थोड़ा लाभप्रायक सिद्ध हो सकता है, 'ले ही ऐसा अनुभव हम एक बहिमुख सम्यता का बाँच रहकर प्राप्त करना पड़।

यह भी हो सकता है कि हम दुकानगारा के गुरान प्रहोखाता को टगानें और दख कि उनकी दुकाना में कौन भी चीजें सबसे अधिक खरीदी गई हैं किन चीजों को लोग ने घर में जमा करना पसंद किया है अथवा किराने की सबसे अधिक प्रचलित वस्तुएं कौन-सी हैं। युगा की उन्नति मानव-अस्तित्व के अनिवार्य नियमा पर बहुत घाटा हो असर डाल सकती है। शायद हमारे और हमारे पूर्वजों के अस्थि-पंजरा में कोई विभिन्नता नहीं खोजी जा सकती।

जीवन की आवश्यकताएं, इन शब्दों से मेरा क्या अभिप्राय है ? जिन चीजों का मनुष्य ने अपने परिश्रम से उपलब्ध किया है उन सबमें से जो चीजें आदि से ही जगत् सगातार प्रयोग में आने के कारण मानव-जीवन के लिए इतनी महत्त्वपूर्ण बन गई हैं कि नगण्य सहायक लाग हो, या तो अपनी बबर अवस्था के कारण या गरीबी के या एक विशेष दार्शनिक भावना के कारण उनके बिना गुजारा चलाने का प्रयास करते हैं वही कुछ चीजें जीवन की अनिवार्यताएं हैं। इस दृष्टि से कुछ प्राणियों के लिए तो बस एक ही आवश्यकता है भोजन। घास के मदाना में मिलनेवाले अरुण भूमा की थोड़ी-सी स्वादिष्ट घास चाहिए, पीने को थोड़ा पानी चाहिए और अन्त में किसी जंगल अथवा पहाड़ की छाया में आश्रय। पशु जगत में किसीको भी भोजन और आश्रय से अधिक की आवश्यकता नहीं है। सही सही कहें तो, हमारे यहाँ की जलवायु में, आदमी की आवश्यकताओं को इन कुछ विभागों में विभाजित किया जा सकता है—भोजन, आश्रय, वस्त्र और इधन। जब तक ये चार चीजें हम उपलब्ध नहीं हैं तब तक हम स्वतंत्र मन से, सफलता की आशा के साथ जीवन की असल गुलियों को सुलभाने के लिए तैयार नहीं हो सकते। मनुष्य ने केवल घरा का ही आविष्कार नहीं किया है, वस्त्र और पकाए हुए भोजन को भी उसने खोजा है। इसी प्रकार जब अचानक उसे पता चला कि आग में गर्मी है तो उसने आग सक्ना आरम्भ किया। पहने-पहन ऐसा करना विलास की ही बात रही होगी, पर यही आज आवश्यकता बन गई है। हम देखते हैं कि बुद्ध और बिलिया भी इस आवश्यकता को अपनी प्रकृति में ग्रहण कर लेते हैं। आश्रय और वस्त्रों का हम अपने अन्दर ऊष्मा का ही यायसगत रोति से सुरक्षित बनाते हैं। लविन खाना पकाना ठीक तरह आरम्भ हुआ कब से माना जाए ? तभी से जब से मनुष्य के पास चमड़ा और आश्रय अथवा इधन की अधिकता हो गई, या कहिए कि जबसे उसको अपनी आन्तरिक ऊष्मा की अपना बाहरी ऊष्मा बढ़ गई।

मरा विचार है जितन हम है उसम काफी अधिक आस्थावान हम निश्चितता
 स बन रह सकते हैं। ईमानदारी स जितनी देख-रेख हम किसी अर्थ की करें ठीक
 उतनी ही अपनी कम कर दें। हमारी कमजोरी के साथ भी प्रवृत्ति उतनी ही अनु-
 कूलित हो जाती है जितनी हमारी गति के साथ। कुछ लोग लगातार इतने
 अधिक चिन्ताकुन रहते हैं और अपने पर जोर डालते हैं कि यह उनका लिए सग-
 भग एक विशेष प्रकार का असाध्य रोग हो जाता है। हम स्वभावतः अपने किए काम
 का महत्व का बहुत बड़ा चन्कर दिखाते हैं। फिर भी कितना कुछ हमसे अनकिया
 रह जाता है ? और कहीं हम बीमार पड़ जाते तब क्या होता ? कितने सतक हम
 रहते हैं ? हमारा दब निश्चय रहता कि जहाँ तक हमें सके आस्था का सहारा न
 लिया जाए। दिन भर हम सन्नद्ध रहते हैं रात में बेमन से हम भगवान की या-
 करत हैं और अपने का अनिश्चितताओं की गोदी में छोड़ देते हैं। ऐसे ही पूरे और
 बरे दृग स जीते चले जान को हम विवश हैं। अपने जीवन को हम प्रतिष्ठा देते।
 और परिवर्तन की किसी भी सम्भावना का अस्वीकार कर देते हैं। हम घोषणा
 रते हैं कि बस यही एक माग है। पर एक कदम स जितने अद्वय्यास बीच जा
 सकते हैं उतने ही माग मौजूद है। सोचें तो हर परिवर्तन एक चमत्कार है। लेकिन
 वह ऐसा चमत्कार है जो हर क्षण घट रहा है। 'कनफ'स' न कहा है 'हम जानते
 हैं कि हम यह जानते हैं और हम नहीं जानते कि हम यह नहीं जानते—यह
 जानना ही सच्चा जानना है। यदि एक भी व्यक्ति मरणा के तथ्य को अपनी
 धारणा का तथ्य बना पाता है तो कभी न कभी सभी मानव इसी आधार पर अपने
 जीवन का निर्माण कर सकेंगे यह मैं साफ दख रहा हूँ।

एक पल सोचें तो कि जिन परलानिया और चिन्ताओं का मैंने ऊपर जिक्र
 किया है उनमें स अधिकतर किन बातों का लेकर पड़ा हामी है और यह भी कि
 इन कष्टों को उठाना अथवा कम स कम इतना सतक रहना हमारे लिए कितना
 दूर तक अनिवार्य है। यदि हम जानना चाहते हैं कि जीवन की मोटी आवश्यकताएँ
 क्या हैं और उन्हें पूरा करने के लिए क्या-क्या तरीक अपनाए गए हैं तो एक आन्तिम
 और सीमान्तक जीवन का अनुभव प्राप्त करना थोड़ा लाभदायक सिद्ध हो गयेगा
 भग ही ऐसा अनुभव हम एक बहुमूल्य सम्पत्ति का बीच रहकर प्राप्त करना पड़।

प्रवृत्तिवादी डार्विन^१ ने टियरा डेल फफो के निवासियों के बारे में बताया है कि जंगल में उमका दल अच्छी तरह कपड़े पहनकर और आग के सामने बैठकर भी ठंड महसूस कर रहा था, तब ये जंगली लोग आग में काफी दूर पर नंगे खड़े थे। आश्चर्य तो यह है कि इस आग के कारण उन्हें ऐसे पसीना छूट रहा था जैसे कि उन्हें तला जा रहा हो। इसी प्रकार बताया जाता है कि 'यू हालड का आदिमवासी विना किसी अनुविधा के नंगा घूमता है जबकि एक यूरोपियन वहां कपड़ा में भी ठंड से कापता है। क्या इन असम्पन्न वस्त्रों की हृष्ट-पुष्टता और सम्पन्न मानव की बुद्धि प्रगतिशीलता की एक जगह मिलाना असम्भव है? लाइबिग^२ के अनुसार मानव 'गरीर एक चूल्हे के समान है और भोजन उस इंधन के समान है जो फेंफड़े में अंतर्ग्रहीत किया जा रहा है। सर्दियों के मौसम में हम अधिक खाते हैं, गर्मियों में कम। पशु गरीर की गर्मी में बदलने का परिणाम है और जब वह बहुत तड़ हो जाता है तब रोना पड़ता है और मृत्यु का घेरती है। अथवा यदि कहिए कि इंधन की कमी से या कृष्ण-मृत्त में कोई दाप पड़ा हो जाने पर आग बुझ जाती है। इस मूल प्राणोष्मा को माधारण आग नहीं समझ लेना चाहिए। यह केवल एक उपमा है। इस प्रकार ऊपर की सूची से यह प्रतीत होता है कि उर्विन्ध्या पशु जीवन और पशु ऊष्मा लगभग पर्यायवाची हैं। भोजन को हमारे अंदर की आग बनाए रखने वाला इंधन समझा जाना है। बाहरी इंधन इस भोजन का तैयार करने और हमारे अंदर की गर्मी का बाहरी योगदान से बनाने का ही काम करता है। आश्रय और वस्त्र भी इस प्रणाली से उत्पन्न और अवशोषित ऊष्मा को सुरक्षित बनाने में ही सहायक हैं।

तो हमारे शरीर की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि उसे गर्म रखा जाए और अंदर की प्राणोष्मा को बनाए रखा जाए। सिर्फ भोजन, श्रम और आश्रय प्राप्त करने के लिए ही हम कष्ट नहीं उठाते, अपने विस्तर पर भी हम बहुत ज्यादा ध्यान देते हैं। ये विस्तर हमारे रात्रि-वसन हैं। आश्रय के अंदर इस आश्रय का तैयार करने के लिए हम बिड़िया के धामला को लुटते हैं। उनके शरीरों को नाच लेते हैं। एक निधन व्यक्ति निवासित करने को बाध्य है कि सप्ताह

१ (१८०१-१८८२) इंग्लैंड का प्रसिद्ध जीवशास्त्रज्ञ, जिसने विज्ञानवाद के सिद्धान्त को प्रसिद्ध किया।

२ जर्मन बायोलॉजिस्ट (१८०३-१८७३), एक जनन रसायनशास्त्रज्ञ

हिम शीतल है। इस भौतिक और सामाजिक हिम शीतलता को ही हम अपने अधिकतर कष्टों का जिम्मेदार मानते हैं। कुछ देशों में ग्रीष्म में एक तरह का स्वर्गीय या 'एलीसियन' जीवन^१ मानव के लिए सम्भव बना दिया है। मिठाई भोजन पकाने के काम के इधन उनके लिए बेकार है। मूय ही उन्हें गर्मी देता है और मूय की किरणें ही पत्तों को यथावश्यक पका देती हैं। वहाँ विविध प्रकार के भाजन बड़ी आसानी से उपलब्ध हैं। वस्त्र और आश्रय बिल्कुल ही अनावश्यक अथवा कम आवश्यक है। अपने अनुभव में मैं कहता हूँ कि आज दिन इस देश में एक चाक एक कुल्हाड़ी एक पावड़ा एक रेली यही कुछ औजार आदमी को मुख्य रूप से चाहिए। यदि वह अध्ययनशील हो तो एक सम्प, कुछ कागज-कलम और कुछ पुस्तकें और गिन लीजिए। और यही सभी चीजें गण्य मूल्य पर प्राप्त की जा सकती हैं। फिर भी कुछ लाएँ—ममम्भदार मैं उन्हें नहीं कहूँगा—जो धरती के दूसरे छोर तक दौड़ते हैं, असम्य और अस्वास्थ्यकर प्रदेशों में जाते हैं, और वहाँ दस या बीस वर्षों तक व्यापार में जुटे रहते हैं। किसलिए? इसीलिए न कि वे जी सकें और अपने को आराम दे सकें और अपने को गम रख सकें और अंत में यूँ इंग्लैंड में मर सकें। बहुत अधिक धनी लोग को सिर्फ आवश्यक आराम और गर्मी ही नहीं मिल पाती उन्हें अप्राकृतिक ढंग से मँका भी जाता है। जहाँ मैं पहले कह चुका हूँ उन्हें निस्मृति परित्यक्त ढंग से भूना भी जाता है।

विलास की अधिकतर वस्तुएँ और तथाकथित सुख और सुविधा की चीजें अनावश्यक ही नहीं हैं वे मानव के उत्पन्न के माग में ठोस बाधा भी हैं। जहाँ तक विलास और सुख सुविधा की वस्तुओं का सम्बन्ध है, विगततम व्यक्तियों ने सदा ही गरीबों में भी अधिक माना और गरीबों का जीवन बिताया है। सभी प्राचीन दार्शनिक—चीनी, हिंदू, फारसी और ग्रीक—सांसारिक वस्तुओं की दृष्टि से निश्चयतम के और आत्मिक गुणों की दृष्टि से सम्पन्नतम। हम उनके बारे में बहुत अधिक नहीं जानते। जितना भी जानते हैं उतना हम जानते हैं यह आश्चर्य की ही बात है। जो बात उन लोगों के विषय में तथ्य है वही मानव जाति के अधिक आधुनिक सुधारकों और संरक्षकों के बारे में भी सत्य है। मानव-जावन की निष्पत्ति और विवेकपूर्ण जाच-परख उसने मिठाई कौन कर सकता है जो उस उन्नत भूमि

१ होमर के अनुसार मृत्यु के बाद पुण्यात्मा लोग 'एलीसियन फ़ैल्ड्स' में जाकर रहते हैं। वहाँ का जीवन 'एलीसियन जीवन' कहलाता है।

प्रकृतिवादी डॉबिन^१ १ टियरा डेस फुगो व निवासियो के बारे में बताया है कि जब उसका दल अच्छी तरह कपड़े पहनकर और जाग व सामने बैठकर भी ठंड महसूस कर रहा था, तब ये जंगली लोग आग से काफी दूर पर नगे खड़े थे। आश्चर्य तो यह है कि इस आग के कारण उन्हें ऐसे पसीना छूट रहा था जस कि उन्हें तप जा रहा हो। इसी प्रकार बताया जाता है कि 'यू हारलैंड का आदिमवासी बिन किमी असुविधा व नगा धूमता है जबकि एक यूरोपियन वहां कपड़ा में भी ठंड से कापता है। क्या इन असम्य वबरा की हुष्ट-पुष्टता और मध्य मानव की बुद्धि प्रखरता का एक जगह मिलाना असम्भव है? लाइविंग^२ के अनुसार मानव शरीर एक चूल्हे के समान है और भोजन उस इंधन के समान है जो फेंफड़ा में अतःदहन क्रिया को बढाए रखता है। सर्दों के मौसम में हम अधिक गाने हैं गर्मियों में कम। पशु-शरीर की गर्मी भेद रहन का परिणाम है और जब वहां बहुत ठंड हो जाता है तब रोग पैदा होते हैं और मृत्यु आ घरती है। अथवा या कहिए कि इंधन की कमी से या कषण यंत्र में बाइ दोष पदा हो जाने पर आग बुझ जाती है। इस मूल प्राणोष्मा का साधारण आग नहीं समझ लेना चाहिए। यह केवल एक उपमा है। इस प्रकार ऊपर की सूची में यह प्रतीत होता है कि डॉबिन या 'पशु-जीवन और 'पशु ऊष्मा लगभग पर्यायवाची हैं। भोजन को हमारे अंदर की आग बनाए रखन वाला इंधन समझा जाना है। बाहरी इंधन इस भोजन को तैयार करने और हमारे अंदर की गर्मी को बाहरी यागदान से बढावा का ही काम करता है। आध्य और वस्त्र भी इस प्रणाली से उत्पन्न और अवशोषित ऊष्मा को सुरक्षित बनाने में ही सलग्न हैं।

तो हमारे शरीर की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है न कि उसे गम रखा जाए और अन्दर की प्राणोष्मा का बढाए रखा जाए। सिर्फ भोजन वस्त्र और आश्रय प्राप्त करने के लिए ही हम कष्ट नहीं उठाते, अपने विस्तर पर भी हम बहुत ज्यादा ध्यान देते हैं। ये विस्तर हमारे रात्रि-वसन हैं। आश्रय व अंदर इस आश्रय का तयार करने के लिए हम चिड़ियों के घासला को लूट लेते हैं। उनका शरीर को नीच लेते हैं। एक निधन व्यक्ति गिरायत बरा को बाध्य है कि समार

१ (१८०६-१८८२) इंग्लैण्ड का प्रसिद्ध जीवशास्त्री नियन विज्ञानवाक्य व विज्ञान को प्रसिद्ध किया।

२ जर्मन बा ल र्विग (१८०३-१८७३), एक बड़ा रसायनशास्त्री

हिम-शीतल है। इस भौतिक और सामाजिक हिम गीतलना को ही हम अपन अधिकतर कष्ट का जिम्मेदार मानते हैं। कुछ देना में शीघ्र न एक तरह का स्वर्गीय या 'एलीमियन' जीवन^१ मानव के लिए सम्भव बना दिया है। सिवाय भोजन पकान के काम के इधर उनके लिए बकार है। सूर्य ही उन्हें गर्मी देता है और सूर्य की किरणें ही पत्ता का यथावश्यक पका देती हैं। वहाँ विविध प्रकार के भाजन बड़ी आसानी से उपलब्ध हैं। वस्त्र और जातीय विलक्षण ही अनावश्यक जपवा कम आवश्यक हैं। अपने अनुभव से मैं कहता हूँ कि आज दिन हम देना में एक चाक एक कुल्हाड़ी एक पावड़ा एक रस्सी यही कुछ जोड़कर आदमी का मुख्य रूप से चाहिए। यदि घर अध्ययनशील हो तो एक लम्प, कुछ बागड-बलम और कुछ पुस्तकें और गिन लीजिए। और य सभा चीजें नगण्य मूल्य पर प्राप्त की जा सकती हैं। फिर भी कुछ ना^२—समभार में उन्हें नहीं बूना—जा घरती के दूसरे छोर तक दोहन है असम्य और अस्वास्थ्यकर प्रदत्ता में जाते हैं, और वहाँ दम या बीस वर्षों तक व्यापार में जुट रहते हैं। किसलिए? इसीलिए न कि वे जो मकें और अपने को आराम दे सकें और अपने का काम रख सकें और अन्त में 'यू इगल' में मर सकें। बहुत अधिक धनो नागा का भिष आवश्यक आराम और गर्मी ही नहीं मिल पाती उन्हें अप्राकृतिक ढंग से मँका भी जाता है। जैसा मैं पहले कह चुका हूँ उन्हें निस्सन्नेह परिष्कृत ढंग से भूना भी जाता है।

विलास की अधिकतर वस्तुएँ और तयाकथित सुख और सुविधा की चीजें अनावश्यक ही नहीं हैं वे मानव के उत्कर्ष के मार्ग में ठोस बाधा भी हैं। जहाँ तक विलास और सुख-सुविधा का सम्बन्ध है विनतम व्यक्तियों में सत्ता ही गरीबा से भी अधिक माना और गरीबा का जीवन विलासा है। सभी प्राचीन दार्शनिक—चीना हिन्दू, फारसी और ग्रीक—सामाजिक बमब की दृष्टि से निधन सम थे और आरम्भिक गुणा का दृष्टि से सम्पन्नतम। हम उनका बाग में बहुत अधिक नहीं जानते। जितना भी जानते हैं उनका हम जानते हैं, यद्वास्त्वय की ही बात है। जो बात उन सागा के विषय में तथ्य है वहाँ मानव ज्ञान के अत्रि आधुनिक सुधारका और मरत्यका के बाग में भी मय है। मानव जीवन की निष्पत्ति और त्रिवक्त्रूप जात-पद्म समक मिवाय बोन कर मरता है जो नम उन्नत भूमि

१ रोम के अनुसार मृत्यु के बाद पुनर्जन्म का 'द्वितीय जीवन' में जाकर रहना है।
२ वहाँ का जीवन 'एलीमियन जीवन' कहलाता है।

पर सदा है जिसका नाम स्वच्छा से धारण की गई निधनता होना चाहिए। कृषि वाणिज्य साहित्य जयवा कला सभी क्षत्रा म विलासपूर्ण जीवन का फल निरपेक्ष विलास ही होता है। आजकल दाशनिक नहीं मिलते कम दशन क अध्यापक मिलते हैं। फिर भी दाशनिक उपदेश देना प्रशंसनीय है, क्योंकि कभी उनके अनुसार जाना प्रशंसनीय माना गया था। दाशनिक वह नहीं है जो बस सूक्ष्म विचार रखता है न ही वह है जो किसी एक विचार पद्धति की नींव डालता है। दाशनिक तो वह है जो पान म इतना प्रेम करता है कि उसके निर्देशों के अनुसार सादगी, स्वतंत्रता, सदाशयता और आस्था का जीवन व्यतीत करता है। ऐसा वह इसलिए करता है कि जीवन की कुछ गुत्थियां बसल सद्धान्तिन दृष्टि से नहीं व्यावहारिक रूप से सुलभ जाएं। बड़े-बड़े विद्वानों और विचारकों की सफलता आम तौर से मुसाहिबा की सफलता होती है। वह न नपोंचित्त होती है, न पुरुषाचित्त। व तोग कम पूवजों का अनुसरण करते हैं उहाके नमून पर अपन जीवन का ढालते हैं। व किमा भी दशा म मानव जानि की एक उनम पीढ़ी क पूवपुरुष बनन क योग्य नहीं हान। विन्नु मानव क्या पतन की ओर ही सदा चलता है? क्या क्या विवशभाव से चुक जान हैं? विलास की मन्नुआ म ऐसा क्या निहित है जो राष्ट्रा को निस्तेज और अन्त म ममाप्त कर डालता है? क्या हम पूरा विश्वास है कि हमारे अपने जीवनम व तत्त्व मौजूद नहैं? दाशनिक तो जीवन क गहरी रंग-ढंग म भी अपन युग से जाग होता है। वह अपन समसामयिकों की तरह भोजन वस्त्र आश्रय और कामा ग्रहण नहीं करता। भला वह पुरुष दाशनिक कस हो सकता है जो अपनी प्राणोर्जा की रक्षा अया की अपेक्षा अधिक अच्छे माधन से करन म अग्रमय है।

जब ध्यति ऊपर बताए गए सामना म अपनी मूल आवश्यकताएं पूरी कर चुकता है तब वह और क्या चाहता है? पहले जैसी ही और अधिक ऊष्मा नहीं अधिक मात्रा म अधिक बढ़िया भोजन नहै अधिक विशाल और अधिक गान्धार पर नहीं अधिक मात्रा म अधिक बढ़िया वस्त्र एक अधिक गम लगातार जलती रहनवाती अनगिनत अंगीठियां नहैं और निश्चय ही ऐसा और बहुत कुछ नहीं। जम मनुष्य जीवन का मूल आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं तब वह इन सबका पात्रनू दर जमा करन क वस्तु कुछ अतिरिक्त करता है। जीवन रक्षण क कुछ प्रयोगों त मुक्ति पाकर वह माहिरिता क क्षत्र म कूना है। तपता है, धोज के लिए धरती हा अनुसृत है। बीज का मूलाबुर धरती म गहरा प्रयोग कर चुका है।

अब वह अपने अकुर को वि-वामपूवक उन्वगामी बना सकता है। मानव ने अपनी जहा को धरती में इतना गहरा क्या गपा है ? इसीलिए न कि यह उतने ही अनुपात में ऊपर आकाश में उठ सके ? उत्तम पोसा का महत्त्व उन फल में होता है जिन्हें वे अन्न धरती में बहुत ऊपर पवन और प्रकाश के बीच जम दत्त हैं। इनकी तुलना में कुछ निम्न जाति के गाय पोषे हैं मल ही वे द्विर्षी हा विन्दु वस तभी तक पोसा जाता है जब तक उनकी जड़ें पनप चुकती हैं। कभी-कभी तो जहा की खातिर ऊपरी अकुर का काट डाला जाता है। जब ये पौध अपने जीवन पर हान हैं तो भी लोग इनका गान-नाम नहीं कर पाते।

कुछ लोग हैं जो स्वर्ग या नरक हर कहा अपना काम बना लेंगे। जा अगर मौका मिले तो धनी से धनी जागा से भी अधिक गानदार भवन खड कर लेंगे और गंधा पानी की तरह बहाएंगे। उन्हें गरीबी कभी नहीं मनाएगी और वे जान भी नहीं पाएंगे कि वे कस रह रहे हैं। यदि वास्तव में ऐसे लोग हैं तो उन साहसी और पराक्रमी व्यक्तियों के लिए कोई नियम निश्चिन करना यहां मरा उद्देश्य नहीं है। मैं उस दूसरी किस्म के लोग में भी कुछ कहना नहीं चाहूंगा जो सिर्फ वर्तमान परिस्थितियों में प्रेरणा और प्रोत्साहन पाते हैं और प्रेमियों के साथ और उल्लाह के साथ भागे बचते हैं। कुछ दूर तक मैं अपने का भी इसी श्रेणी में गिनता हू। मैं तीसरी किस्म के व्यक्तियों से भी कुछ नहीं कहूंगा जो कभी भी परिस्थिति क्या न हो गहन तक व्यस्तता में डूब रहते हैं और चौकसी रखते हैं कि वे पूरी तरह व्यस्त हैं या नहीं। मैं तो ये सब बातें भीड़ की भीड़ उन लोग का लक्ष्य कर कहना चाहता हू जो मग्न अमनुष्य रहते हैं और टाली बटे समय की या अपनी परिस्थितियों की गिरावट करते हैं। यह समय वे अपना परिस्थितियों का मुधारण में लगा सकते थे। कुछ लोग तो पूरी अधीरता से पूरी गति से किगा-के भा लिए रोने भावने लगते हैं कुछ देते हैं कि हम तो अपना कर्तव्य कर रहे हैं। इस समय भर निमाग में वह बग भी है जो दबने में बचने धनी है पर दरअसल जो संस अधिक बगाल है। इस बग के लोग कडा-बगवट जमा कर लेते हैं। वे न इसका सदुपयोग करना जानते हैं न कम छुटकारा पाना और कम प्रकार मान मा चानी की जजोरा में अपने आपको जकड लेते हैं।

विगत वर्षों में अपने जीवन को मैं किम ढंग पर डालना चाहता है, यदि मैं यह

बताने का प्रयास करूँ तो शायद मेरे वे पाठक भी हैरान हो उठेंगे जो इन वर्षों के असल इतिहास से थोड़ा-बहुत परिचित हैं और जो उनमें मिलकुन परिचित नहीं हैं वे तो निश्चय ही आश्चर्यचकित रह जाएँगे। मैं अपने उद्यमों में मेरे कुशल का ही उल्लेख नहीं करूँगा।

कोई भी श्रुतु हा दिन और रात का कोई भी घड़ी हो मेरी सत्ता कोशिश रहती है कि मैं समय के प्रस्तुत क्षण का पूरे से पूरा सदुपयोग करूँ और उसे अपनी छड़ी पर जड़ स मैं भूत और भविष्य रूपी 'गे सनातन बाला' के भगम पर खड़ा हो जाऊँ। इस समय की ही वर्तमान क्षण कहते हैं। मैं इसी क्षण का पावन्द रहता घाटता हूँ। कुछ रहस्यमय बातें कह जाऊँ तो आप मुझे क्षमा कर दें। और लोग के धंधा से बहुत अधिक भेद की बातें मेरे धंधे में निहित हैं। मैं जान-बूझकर कुछ भी सापनीय नहीं रखता। पर क्या करूँ रहस्य मेरे धंधे से बिपके हैं। इस विषय में जो कुछ भी मैं जानता हूँ मैं बड़ी प्रसन्नता से बता दूँगा और अपने द्वार पर 'प्रवेश निषिद्ध है' की पट्टियाँ कभी नहीं लगाऊँगा।

बहुत दिन हुए एक गिरारी मुना एक कुम्हैन घाटा और एक जगली बबूतर मैंने खो दिया था और अभी तक मैं उनकी खोज में हूँ। बित्तन ही यात्रियाँ मैंने उनका खिफ किया है उनका खीब बतार्ई है और बतारमा है कि किस पुराने पर वे जवाब देते हैं। एक या दो व्यक्ति मुझे ऐसे मिले जिन्होंने मुझे का भीरना मुना था थोड़े की टापें मुनी था और जगली बबूतर को बारसा में बिलीन होते देखा था। उन्हें उड़ लाने की वे लोग मुझे ऐसे उत्सुक लग जैसे यही उन्हें खो बठ हा।

मिथ भार और प्रभात में हा नहीं सम्भव हो तो स्वयं प्रकृति में गहरे उत्तरना। गर्मी की बित्तन सुत्रहा में इसमें पहल कि मर कोई भी पशायी उठकर अपने काम के लिए चला हो मैं जगन काम में लग गया हूँ। मर बित्तन ही माथी नागरिक अपने काम के लिए बिना बोस्टा नगर के लिए अथवा लकड़हार लकड़ी साठने के लिए जब घबलत में चले तो मैं उन्हें काम पर से लौटना दूँगा मिला। सच है मूल का उदय हान में कोई गहायता मैं न देखता पर इसमें भी कोई सन्नेह नहीं कि इस अवसर पर उपस्थित रत्ना कम महत्व की बात नहीं है।

पठमड हो नहा जाया तब य बित्तन ही दिन मैं नगर से बाहर पवन में धिया हूँ मगीन की मुनन उगे अपनी आया में समा नन और उग अभिव्यक्ति देने के प्रयास में बिताए हैं। अपनी लगभग पूरी पूजी हो मैं इसमें गया बटा हूँ।

प्रकृति की आत्मा में मात्र लेन के प्रयत्न में मैंने अपने स्वास्थ्य को भी बहुत गिरा लिया है। यदि जोई भी राजनीति दल मेरे इस काम का अपनी रुचि का पाता तो बिस्वाम मानिए इसका नये में नया विवरण गजट के पन्नों में छप चुका होता। मैं कितनी ही बार किसी टीने अथवा पड की चौकी पर चक्कर आकाश में होन-वाले नये परिवर्तन का अध्ययन करना रहा हूँ। किन्तु ही मध्याह्न मैं पहाड़ की खोटाया पर आकाश का भूत आना देखने के लिए और 'गोप' उम्र में कुछ पकड़ लेने की जगह में बिनाई हूँ। मैं मध्याह्न के घिरते अथवा को पकड़ नहीं पाया और यह घुघनका मूय के प्रकाश में बस ही बिनीन हो गया जैसे फूलों का रस हवा में लीन हो जाना है।

बहुत लम्बे समय तक मैं एक एस पत्र का सम्पादन करता रहा जो बहुत खाना नहीं बिकता था। जो कुछ मैं इस पत्र को भेजा उम्र में अविश्व प्रकाशन योग्य नहीं समझा गया। जमाकि लेखकों के साथ साधारणतया हाता है, मेरे इस सारे परिश्रम के बदले गुजारे-भर ही मुझे मिन पाया। कुछ भी हो, मैं समझता हूँ मेरा परिश्रम ही मेरा पारिश्रमिक बना।

बहुत वर्षों तक मैं वर्षादि तूफाना, वर्षा और आधिया का आभिनय निरीक्षक रहा। मैं अपना काम बड़ी मुश्किल और लगन से किया। मैं राजमार्गों का तो नहीं पर वन मार्गों का सर्वेक्षण भी किया। एक छार में दूसरे छार तक जानकार रास्ता का पाना योग्य बनाए रखने लूँ पर पुन बनान और जो भाग जनहित के प्रयोग में आ सकता था उसे सब ऋतुओं में खाने रखने का काम भी मैंने किया।

नगर के पशुओं की व्यवस्था करने में भी मैं जुटा रहा। किसी अनुनवी चरवाहा को यह काम दिया जाता तो भाग-जोड़कर बाढ़ा पर मरूत में उस की काफी अनुविद्या होती। यद्यपि मैं यह ध्यान न रखता था कि जानान और भू-मान नामक किसान आज किम क्षेत्र में काम कर रहे हैं और इस बात में मरुत का मतलब भी नहीं था। पर मैंने भेजा कि उन काना तक की दस्तावेज का जमा करना भी कोई पसन्द न करना। मैंने सान व्यवस्था के रत में व्यवस्था के वर्ग, स्थिति बूटी लाल देवदार, कान प्रभुज नये अगूर और पीन बादल जड़ स्थित जगनी पोधा का पानी दिया नहीं तो सुन मौसम में य सब मुख जान।

मैं वार्ड डींग नहीं हावना पर इसी तरह बहुत लम्बे समय तक बड़ी लगन और लान में मैं ऐसे ही कामों में लगा रहा। अन्त में मैं समझ गया कि मैं

के लाग भुके नगर रमधारिया की शणी म शामिल नहीं करेगे और न ही वे कोई ऐसी नियुक्ति मुक्त देंगे जहां त्रिा कोई विशेष काम किए भी में साधारण नत्ता पाता र म्भ । इस बीच जा कुछ मने खच किया उमका मैंने पूरा हिसाब रखा पर किसीने उमरी पढताल तक नहीं की उम चुकना करने का ता प्रान ही पदा नहा होता । छोडिए इन सब वाता की आगा लेवर तो मैं चला नहीं पा ।

अभी कुछ दिन हुए मेरे पडोस म रहनेवाल एव प्रसिद्ध बकील क घर एव आदिवासी कुछ टोररिया बचने आया । क्या कुछ टोकरिया 'रनीदेने' उसने पूछा । 'नहीं हम नहीं चाहिए उत्तर मिला । वह आदिवासी द्वार से बाहर निकलत हुए उड्डरयाया क्या तुम हम भूला या डालना चाहते हो ? अपने इन परिश्रमी इवेन पडासिया को दिन पर दिन मप्यन्न बनते हुए बट देख ही रहा था । ये बकील महोदय मला तब जात चुनने के सिचाय और क्या करत हैं ? पाहू की तरह घन और यश इनके पास पिचा खना जाता है । बेचारे आदिवासी ने सोचा होगा मैं भी कारोबार करेगा । मैं टोकरिया बनाऊंगा । यही काम मैं कर सकता हू । उमय मन म रहा होगा कि जय उमन टोकरिया बना ली, अपना काम समाप्त हो गया । उनरो परीक्षा तो इन 'बत लोगो का बतव्य है । उसन यह नहीं गाचा होगा कि टोकरो ऐसी बनानी होगी जिसे दूसरा खरीदन का उसुक सा हो बप म कम खोग उम खरीदने योग्य तो ममभ मर्कें अपना कोई और चीज उमे ऐरी बनानी हागी जिसे ग्रान्ख खरीदने योग्य मान सरे । मैंने भी एक बार मोला और नाचुक मुनाइ की टोकरो बनाई थी । पर मैंने बेचने की दृष्टि स उम नहा बनाया था । व्यापार के त्रिा टोकरो बनाना ता दूर बनामा सीखना भी मैं नहीं चाहता था । मरा लक्ष्य ता यह खोजना था कि बचन का आवश्यकता म कम मुक्त हुआ जा शकता है । जिस जीवन-पद्धति का लाग सकन और प्रामसीय भाजने हैं वह केबन एक पद्धति है । किना एक पद्धति का दूसरा मे बदा-बदावर क्या आता जाए ?

जय मैंने समझ लिया कि मर बचु नागरिक भुके 'पापा'नय म या पादरी के धन या बही भी कोई जगह दन का तयार नहा है और मुभ अपना प्रबन्ध स्वय करता हागा ता मैंने पहने की अगला अधिक निरपन्न और निश्चिन्त भाव से जगन की ओर रग किया । और मभ ही जगत ही मरा अधिक अपना था । मैंने आव दयक पृथी इबटटी हान तब प्रतीता नहीं कर । जा भी कम से कम सापन मेरे फाम थ उन्हें लेकर अपन कारोबार म फौरन उतर पहन का मैं वृत्त-मन्थन हुआ । याहन

पाण्ड जाने मैं मेरा उद्देश्य बहुत समझे मैं जयवा बहुत महिमे मैं जीवन निवाह करना नहीं था। मेरा उद्देश्य तो यह था कि मैं वहाँ रहकर निजी कारोबार कम में कम बाधाएँ सहकर चला सक। थोड़ी-सी साधारण बुद्धि थोड़े-स प्रयास और थोड़े बागेदारी विवेक की कमी से यदि मेरे काम में रुकावट पड़ जाती, तो यह मूल्यता की रात अधिक होनी मुझ की कम।

मैंने मना ही कठोर व्यावहारिक सम्भार ग्रहण करने का प्रयास किया है और यह हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य भी है। यदि आपका व्यापार चीन देश से है तो समुद्र-तट पर अथवा सलेम^१ जैसे किसी बन्दरगाह में हिमाय कितान का एक छोटा सा केंद्र स्थापित कर लेना काफी होगा। उन वस्तुओं का नियान आप करी जा विगुद्ध स्थानीय चीजें हैं जैसे वस्त्र दवाइयों की सज्जी, कुछ ग्रेनाट आदि। यह सब आपको स्थानीय धरती में मिल जायगा। व्यापार के लिए मैं चीजें बढ़िया रहेंगी। पर पूरे काम की हर बारीकी का निरीक्षण स्वयं ही करना एकमात्र ही चालक और कप्तान, मानिक और वाता करनेवाला बनना सही दना, बेचना और हिसाब कितान रखना, हर प्राप्त पत्र को पढ़ना और भेजे जान-वाने पत्र को लिखना या पढ़ना रात दिन आयातित वस्तुओं का निरीक्षण करना एक ही समय में समुद्र-तट के विभिन्न भागों में उपस्थित रहना, विशेष कर जमीन तट पर जहाँ सबसे नीमती माल उतारा जाता है स्वयं ही तार की मीनत बनना और आकाश को अधिक रूप से चीरते हुए तट की ओर बल्ल जहाजों में बातें करना दूरस्थ बड़ी बड़ी मण्डियाँ को लगातार माल भिजवाना मण्डियाँ के हालातों की, हर देश में युद्ध और शान्ति के भविष्य की जानकारी रखना और बाणिज्य और सम्पत्ता की प्रवृत्तियों की पूर्वकल्पना करना राज-यात्राओं के परिणामों का लाभ उठाना और समुद्र यात्रा में नये मार्गों और नये सुधारों का उपयोग करना नक़्शे पढ़ना जनमग्न चढ़ाना प्रकाश-स्तम्भों और घोषों की म्यिनि की गोज-मवर रखना लॉग टेबल या जहाज मन्त्रिणी सारणी का बार-बार ठीक करना, क्या-बि गणना की मामूली भूल से कोई जहाज घाट पर गिरने के बल्ल चढ़ाने से टकराकर मण्ड-मण्ड हो सकता है (जहाजों का पन्थरे का अज्ञान

१ अमेरिका में अन्तर्गत तट पर स्थित एक बन्दरगाह। मन् १८१२ में पहले तक पूर्वांच भारतीय चानी व्यापार का एकधिकार इसी बन्दरगाह के पास था।

२ एक प्रख्यात नाविक और नाविकों के गणप (१७८१-१७८८) ने प्रख्यात सागर के १

हिमालय इस बात का दृष्टांत है), सावभौमिक विज्ञान के साथ कदम मिलाना, प्राचीन हानो और फीनीशियन^१ नाविका से लेकर आज तक के महान अन्वेषकों नाविका, साहसी योद्धाओं और व्यापारियों के जीवन चरित्रों का अध्ययन करना अन्त में समय-समय पर भाल की समालोचना और अपनी स्थिति की जाह्न लेना—यह मारा काम 'यकिन की क्षमताओं की परीक्षा लेनेवाला है। हानि-लाभ, व्याज अमली वज्र और घड़ा निवातने के तरीकें और सभी तरह के माप—ये समस्याएँ ऐसी हैं जिनके लिए सावभौमिक ज्ञान की आवश्यकता होती है।

मैंने सोच लिया है बाल्डेन पाण्ड कारोबार के लिए एक बढ़िया स्थान रहेगा सिर्फ इसलिए नहीं कि यहाँ रेल-मार्ग है और बर्फ का व्यापार चलता है, बल्कि यहाँ और भी कितने ही लाभ हो सकते हैं जिनका रहस्योद्घाटन कर देना नीति विरुद्ध होगा। यहाँ नवा^२ जसा दलदल नहीं है जिसे भरना पड़े। वैसे अपने ही लाभ के लिए घर-घर कहीं ऊँची ही कुर्मी पर बनाता पड़ता है। कहते हैं कि नवा में पश्चिमी हवाओं के साथ आनेवाली तूफानी बाद और हिमपात ऐसा भयंकर होता है कि वह सेंट पीटर्सबर्ग^३ जैसे नगर को भी धरती में मिटा डाले।

मैं अपना कारोबार साधारणतया आवश्यक पूँजी के बिना ही आरम्भ करना चाहता था। इसलिए जो साधन इतने पर भी अनिवार्य थे, उन्हें कहाँ से प्राप्त किया जाए, यह गुत्थी जामान नहीं थी। मैं एकदम प्रश्न के व्यावहारिक पक्ष पर आता हूँ। पहली समस्या कपड़ों की थी। कपड़े बनाते समय हम नहीं उपयोगिता का उतना ध्यान नर्ती रखते जितना दूसरों की पसन्द-नापसन्द का और एक मनपन की सामंजस्य का। जिस व्यक्ति को काम में व्यस्त रहना है उसे समझ लेना चाहिए कि कपड़े हम दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पहनते हैं। प्रथम तो आंतरिक ऊँचाई की रक्षा के लिए, दूसरे समाज की वर्तमान अवस्था में नगपन का ढक्कन के लिए। उस यह बात जान लेनी चाहिए कि पाश्चात्य में किसी भी प्रकार की चट्टानरी किए बिना आवश्यक अथवा महत्त्वपूर्ण काम का निष्पन्न अंग किया जा सकता है। दर्जों

का अध्ययन किया था। उसका जशान 'ला पेस्व' आस्ट्रेलिया के पास किया जगान से टकराकर नष्ट हो गया था।

१ साल मार्ग के तट के प्राचीन सामा राज्य

२ रुम की एक नया जिनसे देखा पर सेंट पीटर्सबर्ग अथवा लनिनग्राद कहा है।

३ सेंट पीटर्सबर्ग का वर्तमान नाम लनिनग्राद है।

या राजकीय भूषा निर्माता यद्यपि राजा रानियो की गान के अनुकूल पोशाक बनाने हैं पर राजा रानी उह बम एक ही बार पहनते हैं। ये बड़े लोग साधारण कपड़े पहनने के आनन्द को नहीं जान सकन। ये लोग लकड़ी के उन घोड़ा मे ऊंचे नहा हैं जिनपर साफ बढिया कपड़े नटका दिए जाते हैं। हमारे वस्त्र दिन दिन हमारे चरित्र के रंग म रंगकर हमम रमने और हममे एक्स्प होने चले जान हैं। यहा तक कि बिना कुछ दर लगाए सम्भ्रम दिवाए और बिना डाकरी माघनो का प्रयोग किए उन्हें अपने से अलग करने म हम उम्मी प्रकार हिचकिचाते हैं पीछे हटते हैं जैसेकि हम गरीर को त्यागने म। कपटो म घिगली लगी दखकर मैंन किसी भी व्यक्ति को अपनी नजरा से नहीं गिराया। पर मैं निश्चय के साथ कह सकता हू कि नय फलान के जयबा कम म कम साफ और बिना घिगली लगे वस्त्रो की लोग जितनी कामना करते हैं उननी अपनी जन्तरा मा का पुष्ट-पवित्र बनाने की नहीं करते। यदि फर कपड़े को न सिया जाए तो इससे पता लगता है कि हमम अविचार और फिजूलखर्ची का दोष है। मैं कभी-कभी अपन मित्रा को कुछ ऐसी बात म परखा करता हू कौन है जो घुटन पर लगी एक घिगली अथवा दा म अनिरिक्त मीवने सहन कर लेता है ? अधिकतर लोगा का विश्वास रहता है कि यदि व ऐसा करेंगे तो उनकी की उनकी आगाए नष्ट हो जाएगी। टूटी हुई टांग म लगडान हुए नगर जाना उनके लिए सरल है पर फटी हुई पतलून पहनना आसान नहीं। यदि किसी सज्जन की टांगें दुषटनाग्रस्त हा जाए तो उनका इनाज हा सकता है, पर ऐसी ही किसी दुषटना मे फटी-टूटी बेचारी पतलून व लिए कोई आगा नहीं की जा सकती। कारण यह है कि व्यक्ति, अमल सम्मान किमम है इस बात को नहीं दुनिया सम्मान किमम देखती है इस बात की चिन्ता अविक करता है। हम आद मिया म परिचय कम रखते हैं कोरा और बिगजिमा म अधिक। अपन ऊपर की पोशाक एक फूम के पुतने का पहना दीजिए और स्वय बराबर म पोशाक व बिना सडे हा जाइए। मला ऐसा कौन है जो पहन उम पुतने को नमस्कार न करे। अभी पीछे एक मेत म म गुजरते हुए एक धून पर एक टोप और कोट इसी प्रकार लटके हुए और मेत के मालिक का उमम गठकर सडे हुए मैंन देखा। मैंन उमे पह चान मिया। मुझे उम किमान का रंग रूप गायन श्रुतु प्रभाव व कारण पहन की अपना उम ममम अधिक उतग नूआ नगा। मैंन एक कुत्ते के बार म सुना है जा मालिक के घर म कपड़े पहनकर घुसनेवाले हर आपन्तुक पर भौकता था पर

ईर्भाव्य इस बात का दृष्टान्त है) सावभौमिक विज्ञान के साथ कदम मिलाना, प्राचीन हानो और फीनोशियन^१ नाविका से लेकर आज तक के महान अवयवी नाविका माहमी योद्धाओं और व्यापारियों के जीवन चरित्रों का अध्ययन करना अन्तःसमय-समय पर माल को समाल करना और अपनी स्थिति की माहलना—यह सारा काम व्यक्ति की क्षमताओं की परीक्षा बनवाता है। हानि-नाम, व्याज असली धन और घड़ा निगलने के तरीके और सभी तरह के माप—ये समस्याएँ ऐसी हैं जिनके लिए सावभौमिक ज्ञान की आवश्यकता होती है।

मैंने मोच लिया है वाल्डन पॉण्ड कारोशर के लिए एक बड़िया स्थान रहेगा, मिफ इसीलिए नहीं कि यहाँ रेल भाग है और यहाँ का व्यापार बनता है, बल्कि यहाँ और भी स्थित ही लाभ ही भवत हैं जिनका रहस्यमय घाटन कर देना नीति विरुद्ध होगा। यहाँ नया^२ जैसा दन्तल नहीं है जिसे भरना पड़े। वैसे अपने ही लाभ के लिए घर हर वही ऊँची ही कुर्मी पर बनाना पड़ता है। कहते हैं कि नवा में पश्चिमी हवाओं के साथ आनवाही लूकानी बा^३ और हिमपात एका भयंकर होता है कि वह सेंट पीट्सबर्ग^४ जम नगर को भी घरती में मिटा डाले।

मैं अपना कारोशर माधारणतया आवश्यक पूर्ण के बिना ही आरम्भ करना चाहता था। इसलिए जो साधन इतने पर भी अनिवार्य थे उन्हें कहा में प्राप्त किया जाय यह शुभी आमान नहीं थी। मैं एक्स्म प्रान के व्यावहारिक पत्र पर आता हूँ। पहली समस्या बर्फ की थी। बर्फ बनाने समय हम सही उपयोगिता का उनका ध्यान नहीं रगने जितना दूसरों की पग-द-नापग-द का और एक नयन की मानता का। जिस व्यक्ति को काम में व्यस्त रहना है उसे गमन करना चाहिए कि बर्फ हम दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पड़ता है। प्रथम तो आन्तरिक उष्मा की रक्षा के लिए दूसरे समाज की घनमान अवस्था में नयन को दर्शन के लिए। उसे यह बात जानना चाहिए कि पाठशाला में विद्या भी प्रकाश की चट्टानों के लिए बिना आवश्यक अथवा महत्वपूर्ण काम का बिना जा किया जा सकता है। दर्शकों

का प्रत्यक्ष किया था। उसका मतलब ला वेरुह^५ आर्देनिका के पास किभा धान में २४२४२२२२ का गया था।

१. सावभौमिक के लट व प्राचीन माना राम्य

२. हम को एक जगह जिरफे टांग पर सेंट पीट्सबर्ग अवस्था में निगलना बना है।

३. सेंट पीट्सबर्ग का नाम नया लूकानी है।

चोर को भी नगा आता हुआ देखकर चुप हो जाता था। यह एक रोचक प्रश्न है कि यदि मनुष्यों का वस्त्रहीन कर लिया जाए तो कितने हमारे जो अपने पं के गौरव को बनाए रख सकेंगे ? तब क्या निश्चित रूप में इंगित किया जा सकेगा कि साम्य सागा के इस समूह में यह हैं जो सर्वाधिक प्रतिष्ठित बग के हैं ? जय श्रीमती पीफर अपनी साहसपूर्ण निरूपणा का बीच पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ती हुई एशियाई समूह में पहुँची तो उनका कहना कि 'नुमा उहान अधिवारिया' से मिलने जाने समय सागा के मन बपड़े बदलकर अच्छे कपड़े पहनने की जरूरत महसूस की। क्यों ? 'क्याकि मैं जब एक साम्य देग में थी जहाँ माव को उमरे कपड़ा में आना जाता है।' हमारे प्रजातन्त्रवादी यू इन्डियन नगर में भी जब कोई व्यक्ति अचानक धनवान बन जाता है तो वह सिर्फ कपड़ा और साधनमान में ही धन का प्रमाण परता है और उस प्रकार वह सभी की प्रशंसा का पात्र बन जाता है। लेकिन कपड़ा को एगा इरजल लेनेवाला यह असह्य लागू निश्चय ही जगती है। यह सम्य बनाने के लिए इनका धन धर्म प्रचारकों को भेजा जाता चाहिए। कपड़ा का साधन-मात्र मिलाई का धन आया। और आप समझिए इस धन का ताबड़ों जन ही नहीं। कम से कम स्त्री-वस्त्रा की मिलाई तो सभी पूरी हो ही नहीं सकती।

जिसे व्यक्ति को बहुत समय बाद कुछ काम मिला है उसे करने के लिए उसका उत्तर नय सम्य पन्नो का उत्तर नहीं है। उसका काम तो अनिश्चित काल में दुष्प्रतीति में पड़ चुकता है मन पुराने कपड़ा में ही बन जाएगा। एक वीर कमिष्ठ पुरान पुरान जूता का अपने टन्डुल की अण्डा अधिक निम्न तक चला जाता है। पर तब भी पुरान पुरान देखा गया कहा करते हैं। फिर तब पर ता जूता में भी शवादा पुरान है। वह तो उनका भी काम चला होता है। नय की ता उह ही चाहिए जिसे साम्य-प्रभाव और विधान-परिष्कार में जाना है। यह उनकी ही चार रोश बरता है तितनी धार का ता में निष्ठा व स्वयं बरतते हैं। किन्तु यदि मैं अपनी इसी जारट इसी पतलून इसी टाई और इसी जूता को पहनकर भगवान की उपासना कर सकता हूँ तो अन्य काम क्या करता कर सकता ? एक व्यक्ति ने अपने पुरान वस्त्र अपना पुराना काल पन्नकर इनाम चोर चोर कर डाला है कि का

१. निम्न प्रश्न करने का आदेशितवादी मंडिका १११ (१०१०-१०१८) । इनने
 - १. ००० ई.पू. का अन्त भाग और २१ ००० ई.पू. का अन्त भाग दिया था।

अपनी आदिम अवस्था का प्राप्त हो गया है। उस कोट का किसी गरीब का दे देना दान नहीं कहना सवेसा। चकि यह व्यक्ति, कम से कम म गुजारा कर सका है, इसलिए इसे अधिक बनी क्या न मान लिया गया? मैं तो कहना हूँ उन सब कामों से दूर रहना चाहिए जिनका करने के लिए कपड़ा का नया होना तो जरूरी हो, पहननेवाले के व्यक्तित्व का नया होना जरूरी न हो। यदि नया व्यक्तित्व नहीं उभर सका है तो उसपर नय कपड़े सज कमे सकने हैं? यदि आपके पाम करने को कुछ है तो उम पुराने ही कपड़े पहनकर कीजिए। सभी लाग काम करने के लिए वस्त्र नया पाम करना चाहते हैं कुछ बनना चाहते हैं। हमारे पुराने कपड़े कितने भी गंदे और बिगड़े क्या न हों, हम तब तक नई पोसाक नहीं बनानी चाहिए जब तक हम कोई ऐसा काम न कर चुकें, किसी पसी दिसा की ओर न बढ़ चुकें कि हम अपने को पुराने वस्त्रों में नया आदमी महसूस करें और इन पुराने कपड़ों को पहने रहना बसा ही लग उठे जसा पुरानी दोनल में नई शराब ढाल देना। मुर्गों के लिए पखा के गिरन का समय जिस प्रकार एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का समय होता है वसा ही वह हमारे लिए भी होना चाहिए। मुर्गाग्री पण-पनन के समय किसी अकेले तालाब में चली जाती है। साप अपनी बेंचुली और तितली अपना लावा एक आन्तरिक कष्ट और बिचाव के बाद उतारती है। इसी प्रकार कपड़े हमारे लिए बाहरी खाल की तरह जो शरीर पर लिपटे लच्छे की तरह हैं। यदि हम उन्हें इतना अधिक महत्त्व नहीं देंगे, तो हम गलत लहरा में बह जाएंगे और अनिवाध रूप में अपनी और लोगो की धारणाओं के निकार हूंगे।

जमकि पीछे हाने हैं, जिनपर बाहर की ओर पत पर पत चन्ती जाती है, उन्हीकी तरह हम वस्त्र पर वस्त्र पहनने जात हैं। हमारे ऊपरी वस्त्र जो बहूधा बढ़िया और बारीक होत है हमारी बाह्य त्वचा अथवा उस निर्जीव खाल की तरह हैं जो हमारे शरीर का अंग नहीं है एव जिसे शरीर को घातक हानि पहुँचाए बिना ही यहा उहा में अलग किया जा सकता है। लगातार पहने जानेवाले मोटे कपड़े हमारी बाह्य त्वचा के समान हैं। लेकिन हमारी कमीज बहुत अंदर की उस खाल के समान होती है जिसे बिना शरीर का छील और इस प्रकार मनुष्य का मार डाले बिना उतारा नहीं जा सकता। मेरा विश्वास है सभी जानिया के लोग किसी न किसी ऋतु में कमीज जय कपड़े जरूर पहनते हैं। उचित यह है कि आदमी इतने सादे कपड़े पहने कि वह अंधेरे में अपनी आत्मा को टटान सके। उसे सभी दृष्टियों

म इतना सुमयन और मनन रहना चाहिए कि यदि क्षत्रु नगर पर अधिकार कर ले तो वह बड़े दानविक की तरह खाली हाथ निश्चिन्त नगर-द्वार से बाहर निकल जा सके। व्यवहार में एक मोटी मोटी पोगाक बढिया और चारों तरफ तीन पोगाकी व घरावर ठहरती है। सस्ता कपड़ा आम ग्राहक की आर्थिक स्थिति के अनुकूल बैठता है। एक घटिया बोट पाच डालर का जाता है और पाच घण्टा चलता है। घटिया पतलून दो डालर में और गम टापी भाड़े वासठ सेंट में खरीदी जा सकती है। टोपी तो बहुत कम लागत पर घर में भी बनाई जा सकती है। अपने भ्रम की कमाई में खरीद गए इन सस्ते वस्त्रों को पहननेवाला ध्यानि भला गरीब कस है और बिना पुरुष उस सम्मान क्या न दे ?

जब मैं अपनी दक्षिण में कहता हूँ भुक्त पत्रा किस्म के कपड़े सीढ़ी, तो वह मुह बनाकर कहता है अब तो लाग उस कपड़ नहीं मिलता। दक्षिण योग गान्ध सहज रूप में कह जाती है उसपर जरा भी खार नहीं डालनी। गान्ध कह 'लागा को ग्रीक पुराणा की भाष्य-द्विधा' के समान निरपक्ष प्रमाण माननी है। वह विश्वास ही नहीं कर पाता कि मैं इनका भी असम्भव हो सकता हूँ कि जा मैं चाह रहा हूँ असल में वही मेरा मतलब भी है। इस प्रकार अपनी आवश्यकता नुसार कपड़ सिनवाना मर लिए कठिन हो जाता है। दक्षिण के देववचन जग इस याज्ञ की सुनकर मैं एक क्षण के लिए अपने विचारों में डूब जाता हूँ। उमने एक एक क्षण पर असंग-असंग सोचना हूँ उनका अर्थों को समझने का प्रयत्न करता हूँ। मैं यन् लाजना चाहता हूँ कि व साध और मैं हम ने पसा में कितना रक्त सम्पन्न है और उह क्या अधिकार है कि व मेरे इन निजी मामलों में हस्त पड़ें ? अतः मैं कम ही रहस्यपूर्ण ढंग में 'लाग दान' पर और अधिक जोर दिए बिना उत्तर देता हूँ सब है अभी कुछ ही पहल तब लाग एक कपड़ नहा पहनने में पर अब पहनने हैं। यदि दक्षिण मर चरित्र का गहराई का नहा लाग पत्रता तो मर कपड़ा की चौड़ाई और मर घरीर की ऊंचाई को नापने से क्या लाभ ? क्या मर गरीर एक सूनी है जिसपर कोन सत्त्व रिया जाएगा ? हम ग्रीक पुराणा में वर्णित अनुग्रह की अथवा भाष्य की द्विधा की पूजा नहीं करते, बल्कि पत्रा को

१. वन ने मैडिना मर पत्रास में एक दान भाष्य-द्विधा को मन्त्र-य ज्ञान के गुण गुणा है। वे दक्षिण सिद्धा की सविचार हैं।

पूजन हैं। दक्षिण पूरे अधिकार के साथ जानती, बुनती है और सीती है। परिमम प्रधान विदूषक यात्रियावाली साधारण टोपी पहनता है। अमरीका के विदूषक भी ऐसा ही करत हैं। कभी-कभी ता मुझे निगाहा हाने लगती है कि दुनिया म कोई भी सूच्चा और सीधा काम क्या लागा क सह्याम मे किया जा सकता है ? लोगो को पहल एक गकिगालो प्रेम म दवाना पड़ेगा। उनकी पुगनी धारणाओ को भीच-कर-भीचकर बाहर निकालना हागा। इतना कि बंदुबारा मिर न उठा सकें। लेकिन हा मकना है कि इतन पर भी किसी एक व्यक्ति के मस्तिष्क म एक कीडा मौजद निकन जिस पता नही कँम और किमन बहा रख दिया हा, और जो सारे परिश्रम का व्यय कर द। आग भी इन वस्तिया का नष्ट नही कर सकती। फिर यह भा हम नही भूलना चाहिए कि मिस्र की एक समी क माध्यम म उस पुरान युग के गहू का दाना हमार हाथा म पहुच सका है।

सार यह है कि मेरी विचारणा क अनुसार यह नही माना जा सकता कि वंग भूपा किसी भी देश म किसी भी कान म कला क सम्माननीय पद तक उठ सकी है। आजकल ता लाग जैसा दखन हैं वसा ही वंग ग्रहण कर लेत हैं। किसी नगन जनपान के नाविका की तरह किनारे पर जा पडा मिल आए उमे ही पहन लेते हैं और कान अथवा म्यान का थोडा-मा जल्दर पढ जान पर ही एक-दूसरे के बहु-मपियेपन पर हसते हैं। हर पीढी पुरान फगना का मश्राक उठाती है, पर नय फगना का धार्मिक श्रद्धा के साथ अनुसरण करती है। हनरी अष्टम अथवा गनी एलिजाबेथ की वेगभूपा देखकर हमारा ऐसा मनारजन होना है जमे के मनुष्य भभी जानिया के राजा रानी गृह हा। मनुष्य क ऊपर मे सब कपडे उतार देने पर उसकी दशा नरण अथवा हास्यास्पद बन जाती है। जिनन एक सूच्चा, धम प्राण जीवन बिताया है वही किसी अथ जानि की वेगभूपा का देखकर अपनी हमी रोक सकता है और उमे उचिन सम्मान द सकता है। यदि कम और मडकील वस्त्र पहन, नकाब लगाए, जाडू की छटी लिए एग मूक विदूषक को गुदों का दद उठ आए तो उसके उन्हीं कपडा का उस ऋण स्थिति म भी उमका साथ देना हागा। जब सनिक पर तोप का गोना पडना है ता चियडे भा पहले की जान-नीली बर्दी की तरह ही उमे साम्रा प्रगान करत हैं।

स्त्रिया और पुण्या म नय-नय वस्त्र पहनने की एसी बचकाना और अमन्य रचि मिलती है कि जिनन हो कारीमग बहुम्पदगीं या कैलाशदम्काप को हिता-

हिलाकर औ उमम घूर घूँवर बतमान पीढा का पसा के डिजाइन खाजने में लग रहन है। निर्माता लाग समझ गए हैं कि यह अभिरुचि एक खल और सनक क सिवाय कुछ नहीं है। विशेष वण के धाड़े-मे धाग एक नमून में कम हा और दूसर में अधिक् ता एक नमूना हाथा हाथ बिक् जाता है और दूसरा पढा सडना रहता है। और अग हा यह सहर बदलती है वह उर्पा इन नमूना अचानक ज्ञान का चीज बन उठता है। इस प्रवृत्ति की तुलना में मार्चे ता गरीर सुदमाना उन्ता गती प्रधा महा है जितनी समझी जाती है। गरीर पर का जानबाला यह छपाई क्याकि खाल न गहरी और अपरिवर्तनीय हाती है कम ज्मालिए वह जगली नहीं कहला सकती।

मरा विश्वास है कि कारखाना से कपड बनवाने का हमारा तरीका सरम अच्छा तरीका नहा है। हमारे यहा मशहूर की स्थिति न्ति पन् दिन अप्रजा के घना जसी बनती जा रही है। और हममें कोई आश्चर्य का बाव नहा ह क्याकि जहा तब मैं मुना अपवा दया है कारखाना का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र का अच्छे और आवश्यक कपड पहनाना नही बल्कि असन्तुष्ट रूप में अपन का अधिक में अधिक घना बनाना हाता है। मानव आ लक्ष्य अपन सामन रखता है अन्त में उमीष। ता प्राप्त करना है। इसीलिए भत ही गुरु-गुरु में कारखाना का सपनता न मिन फिर भी उह अपन सामन महत्तर उद्देश्य रगन चाहिए।

जहा तब आध्रय का सम्बन्ध है मैं इस बात में इकार नहीं करूंगा कि अब यह जीवन की अनियाम जावयनता बन गया है। बस एक दुष्प्रान्ता की कमी नहा है जब लाग न यहा न भी अधिक् ठने प्रान्ता में लगबी अवधिया तक घरा क दिना काम चलाया है। समुअन लग कहता है, 'लपट ड व निवासा खान क कपडा में गान के एक घत का अपन मिर और क्या तब गाइर रान का घप पर मान रहन हैं और उतर प्रान में इतनी सर्मी पढती है कि बड़िया स बड़िया उनी कपड पहनकर भी काइ आत्मी भुन में बिग्न नहा रह सकना। उगन उन लोग का दमा प्रसार गां दगा है। पर व आग कहता है व साग दूसरा का अपशा अधिक् हट हट नहा है। गायद मानव घर में मिननवाल आराम का घर नु मुविषात्रा क मन्त्र का गन्धान बिना अधिक् न्ति नही र सता। आरम्भ में गायद 'पन्तु गड' पारिवारिक भुग क लिए उन्ता नया जिनना आध्रय-रूपत में मिननवाल जागम न्ति प्रयुन हुआ हाया। सन्ति जिन प्रान्ता में घर की उा पाणिना विग क सर्मी जयदा कपा ऋतु क बचाव के जिन में हम मान हैं और

हमारी कल्पना में घर का यही जय निहित रहना है, और जहाँ वष क दा तिहाई भाग में छतरी के सिवाय सब कुछ अनावश्यक है, वहाँ घरेलू सुख एक बड़ी एकांगी और मामयिक चाज बन जाता है। हमारे यहाँ की जलवायु में गर्मिया के निना में घर रात्रि के लिए आवश्यक एक आच्छादन मात्र था। यहाँ के जातिवासियों के विषय में प्राप्त सूचनाओं में पता चलता है कि भाषण उनके लिए दिन की यात्रा का प्रतीक था। पत्नी की छान पर जकिन अथवा चित्रित भाषणिया की पक्ति सूचित करती था कि वह कितने पड़ाव डाल चुके हैं। भगवान न मानव को इतना मजबूत और उनकी टांगों को इतना अथक नहीं बनाया है कि वह अपनी दुनिया का सरीण बनाकर एक दीवार के घेर में घेर लेने का प्रयास न करे। पहन वह खुले में नगा रहता था। यद्यपि शान्त और मधुर ऋतु में दिन के समय इस प्रकार रहना सुख देता था पर वषा और शीत ऋतु में, बिनाप कर आग बरमाना हुआ सूम निश्चय ही उनके लिए अमह्य था। मानव-जाति अपनी सशवावस्था में ही काल की भेंट हो गयी यन्नि वह एक घर का आश्रय स्थापन और उसके द्वारा स्वयं का ढापन की गिरता न करती। आत्म और जीवा कपड़ा में पहले टहनिया से अपन गरीर का ढकत थे, ऐसा पुराणों में लिखा है। मानव न एक घर की, आराम और सुविधा का एक जगह का इच्छा की। पहन उमने अपन गरीर के लिए उष्णता और बाद में मन के लिए सहृदयता चाही।

उस समय की कल्पना कीजिए जब मानव जाति के क्षात्रिक म काद प्रयामी भाव किसी चट्टान के आश्रय के लिए जा घुसा था। हर वच्चा अपन सासांगिक जीवन को कुछ मात्रा में वहीं से आरम्भ करता है। वर्षा हा या सर्मी घर में बाहर रहना उसे अच्छा लगता है। एक अन्त प्रेरणा से प्रेरित होकर वह घर और घाट के लेन खेलता है। किस याद नहीं कि छुटपन में वह चट्टान की ढलान को जयवा गुफा के द्वार का किननी रुचि में निहारता करता था। यह प्रवृत्ति शायद हममें अभी तक जीविन उस अग्रज आदिकारीन पूर्वज की ही नैसर्गिक चाह है। गुफा से हम ताड़ के पत्ता के, छाल और टहनियों के बुने हुए कपड़ा के, घास और तिनका के लकड़ी के फट्टा के तथा पत्थर और टाइला के घरा तक बढ़ आए हैं और आज हम सुली हवा में रहना मिलकुन भूत गए हैं। हमारा जावन, जिनना हम साचते हैं उससे बहुत अधिक घरेल बन गया है। घर की अपेक्षा सेत हममें बहुत दूर पड़ गया है। अच्छा हा कि हम अपन और प्राकृतिक उत्पादना के बीच

हिलाकर औ- उसम धूर धूरकर बतमान पीछा की पस- क डिडाइन राजन म लग रहत हैं। निर्माता लाग ममभ गए हैं कि यह अभिग्वि एक मन्त और सनक क सिवाय कुछ नहीं है। विशेष वण क धा-म धाग एक नमून म कम हा और दूसर म अधि- ता एक नमूना हाया-हाय वि- जाता है और दूसरा पडा मडता रहता है। और जम हो यह सहर बदलती है वह उपरित नमूना अचानक पसान की चीज बन उठता है। इस प्रवृत्ति की तुलना म मार्चे ता शरीर गुम्बाना उनकी ग-नी प्रधा नहा है जितनी ममभी जाती है। शरीर पर की जानवाली यह धपाई क्याकि खाल त- गहरी और अपरिवर्तनाय-नी है कम इसीलिए बहजगली नहीं कहला सकती। मरा विश्वास है कि कारखाना स कपड बनवान का हमारा तरीका सबसे अच्छा तरीका नहीं है। हमारे यहां मजदूरा की स्थिति नि-पर नि- अग्रजा क- जहा जसी बनती जा रही है। और इसम कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्याकि जहा तक मैन सुना अथवा दखा है कारखाना का मुख्य उद्देश्य मानव मान को अच्छ और आवश्यक कपड पहनाना नहीं बल्कि असदिग्ध रूप स अपन का अधि- स अधिक धनी बनाना होता है। मानव जो लक्ष्य अपने सामन रखता है अन्तः उसीका ता प्राप्त करता है। इसीलिए मल हा शुरू-शुरू म कारखाना को मफलता न मिल फिर भी उ-ह अपन सामन महतर उद्देश्य रखन चाहिए।

जहा तक आश्रय का सम्प-य है म इस बात स इन्कार नहीं करूंगा कि जब वह जीवन की अनिवाय आवश्यकता बन गया है। वस एम दष्टान्ता की कमी नहा है जब लोगो न य- स भी अधि- ठठ प्रदेश म लम्बी अवधिया तक घरा क बिना काम चलाया है। समुजल लग कहता है 'लपलड क निवासा खाल के कपडा म खाल के एक घन को अपने सिर और क-धा तक ओ-कर रात का वष पर साते रहत हैं और उनके प्र-ग म इतनी सर्- पडती है कि बडिया से बडिया ऊनी कपड पहनकर भी कोई आ-मी खुन म जि-दा नहीं रह सकता। उसने उन लोगो का इसी प्रकार सात दया है। पर वह आग बहता है वलाग दूसरा का अपक्षा अधि- हट-कट नहीं है। शाय- मानव घर स मिलनवाल आराम को घरलू मुविधाया क महत्व का पडचान बिना अधिक नि- नहीं रह सका। आरम्भ म शाय- घरन ग- पारिवारिक सुख क लिए उतना नहीं जितना आश्रय-स्थल स मिलनवाल आराम क लिए प्रयुक्त हुआ हागा। लेकिन जिन प्र-गा म घर की उप यागिता विनोप कर सदी जयवा कर्पा श्रुतु के बचाव क लिए ही हम मानत है और

हमारे कल्पना में घर का यही अर्थ निहित रहता है और जहाँ वष के दो निहारों भाग में छतरी के सिवाय सब कुछ अनावश्यक है, वहाँ घरेलू सुख एक बड़ी एकांगी और सामयिक चीज बन जाता है। हमारे यहाँ की जलवायु में गर्मियाँ व सर्दियाँ घर रात्रि के लिए आवश्यक एक जाच्छादन मात्र था। यहाँ व आदिवासी व विषय में प्राप्त सूचनाओं में पता चलता है कि भोपड़ा उनके लिए दिन की यात्रा का प्रतीक था। पड़ की छाल पर अंकित जयवा चित्रित भापटिया का पक्कि सूचित करती थी कि वे जिनने पड़ाव डाल चुके हैं। भगवान ने मानव का इतना मजबूत और उमकी टांगों को इतना जयक नहीं बनाया है कि वह अपनी दुनिया को सकीण बनाकर एक दीवार के घेर में घेर लने का प्रयत्न न करे। पहले वह पुरुष में नगा रहता था। यद्यपि शांत और मधुर ऋतु में दिन के समय इस प्रकार रहना सुख दता था, पर वषा और शीत ऋतुएँ, विशेष कर आग बरसाना हुआ मूष निश्चय ही उनके लिए असह्य था। मानव-जाति अपनी शशवावस्था में ही काल की मेट हा जानी यदि वह एक घर का आश्रय छाजन और उसके द्वारा स्वयं का ढापन का गीघ्रता न करती। आदम और हौवा कपड़ों में पहल टहनियाँ स अपन शरीर का त्वत्त थे, ऐसा पुराणों में लिखा है। मानव ने एक घर की, आराम और सुविधा की एक जगह की इच्छा की। पहले उसने अपने शरीर के लिए उष्णता और वायु में मन के लिए सहृदयता चाही।

उस समय की कल्पना कीजिए जब मानव जाति व शत्रुत्व में काई प्रयास मानव किसी घटान व खोखल में आश्रय के लिए जा घुसा था। हर वच्चा अपने साप्ताहिक जीवन को कुछ भाना में वही से आरम्भ करता है। वर्षा हा या सर्मी घर से बाहर रहना उसे अच्छा लगता है। एक अत प्रेरणा से प्रेरित होकर वह घर और घाडे व लेल खेलता है। किसे याद नहीं कि छुटपन में वह चट्टान की ढलान का अथवा गुफा व द्वार का कितनी रुचि से निहारता करता था। यन् प्रवृत्ति गान् हममें अभी तक जीवित उस अत्यन्त आदिवासीन पूर्वज की ही नमगिक चट्ट है। गुफा से हम ताड़ के पत्ता के, छाल और टहनियाँ के बुन हुए कपड़ा के घावदार तिनका के, लकड़ी के फट्टों के तथा पत्थर और टाइलों के घरा तक बढ़ आए हैं और आज हम मुली हवा में रहना बिलकुल भूल गए हैं। हमारा जीवन जिसमें हम साधते हैं, उसमें बहुत अधिक घरेलू बन गया है। घर की अपेक्षा सब हमसे बहुत दूर पड़ गया है। अच्छा हा कि हम अपने और प्राकृतिक उपादानों के की

व व्यवधान को हटा दें और अपने अधिक स अधिक दिन रात बाहर बिताए।
कवि छत व नीचे बैठकर कविता न लिखे सयासी घर म ठहरना पसन्द न करे।
पत्नी गुफाअ मे बच होकर नही गा सकते। वधूतर दवों म रहकर अपनी मोती
झीडाए नही कर सकते।

पर, यदि आप अपने लिए एक घर बनाना चाहते हैं तो गुप्त यही होगा कि
आप अमरीकिया की एतद्विषयक निपुणता का कम से कम उपयोग करें। नही तो
हासकता है घर के बदल आप अपन को किसी वाग्यमान म, किसी भाग दूय भूत
भुलया म अजायबघर म सवा मदन म जल म अथवा एक बिया ममाधि भवन
म बटा पाण। विचारणीय पहली बात तो यह है कि आथम्य कितनी दूर तक एकदम
अनिवार्य है। मैं इसी नगर म पेनाम्सकाट आदिवासियों को एक फुट गहरी बर्पा व
बीच पतल सूती कपड के सेमा म रहते दखा है। मैं सोचा थापद वे चाहते हैं कि
घफ और अधिक ऊंची जम जाए जिसस हवा दूर हा दूर रह सक। अपने मुख्य
उद्यम मे स्वतः प्रतापूवक सलग्न रहते हुए भी नतिक उपाय स जीविका कस उपा
जित का जाए—जिन दिना यह समस्या मेरे लिए सिर-दद बरी रहती थी उन
दिना की मान है आज की नही क्योंकि दुर्भाग्यवश आज तो मैं कट्टर बन गया हू।
उन दिना मैं छ फुट लम्ब, तीन फुट चौड एक सन्दूक को अक्सर रेल की पटरी
के किनारे पड दखा करता था। इसम मजदूर अपने औजार रास भर के लिए बंद
कर दिया करते थ। मैं सोचा कि एक निधन, तब जादमा क्या न ऐसा ही एक
सन्दूक एक डालर म मर्राद स ? हवा के लिए उसम कुछ छेद बना ल और रात के
समय अथवा बर्पा होने पर उसम घुस जाए और अंदर से हूक लगा ले। इस प्रकार
उसकी आत्मा और उसके मनोभाव स्वतन्त्र रह सकेंगे। इमे किसी भी दंगा म
सबस भद्दा और त्माग्य आश्रम नही कहा जा सकता। जितनी भी देर स चाहें
आप उठें और जब मा उठें निश्चिन्त भाव मे बाहर चल जाए। कोई भी जमीदार
अथवा मकान मालिक किराये के लिए आपका पीछा नही करेगा। वह सन्दूक
आपका जाठ स मरने न दंगा, लेकिन एक बड विलासपूर्ण मकान रूपी सन्दूक
का किरामा देन की चिन्ता निश्चय ही आपक प्राण स लगी। मैं मजबूत नही
करता, अथ व्यवस्था को लागू हलका और महत्त्वपूर्ण विषय मानत है। पर इस

प्रकार विषय में छुटकारा तो नहीं मिल जाता। अधिकतर बाहर खुले में रहनेवाली उद्धत और हट्टी-कट्टी मानव-जाति ने पहला आरामदेह घर उस सामग्री में बनाया था जो उसे प्रकृति का ओर से अनायास यथाप्रस्तुत मिल गई थी। मामाचूसेटस उपनिवेश के आदिवासियों के अधीक्षक गूकिन ने सन १६७४ में लिखा था, "आदिवासी लोग पहाड़ के बगल को जिस ऋतु में वे गोल और हरे हाथ हैं, उतार लेते हैं। उन्हें लकड़ी के भारी लट्ठा से ढकाकर वे बड़ी-बड़ी फेंदें तैयार करते हैं जिनको उनके सर्वोत्तम कहलानवाले घरा पर डाला जाता है। इनसे ये घर बड़े हाँ माफ-मुयर, ठोस और गम बन जाते हैं। घटिया माने जानेवाले घर एक किस्म की संवार धास की बनी चटाईया से ढाँप जाते हैं। ये भी पहले घरा जितने ताँ नहीं, पर काफी बड़े और गम हाते हैं। इनमें से कुछ घर साठ अथवा सौ फुट तक लम्बे और तीस फुट तक चौड़े पाए गए हैं। मैं बहुतों आदिवासियों के इन घरों में टिका हूँ और मैंने उन्हें बढियाँ में बढियाँ अथवा घरा के समान ही आरामदेह पाया है।" वह आगे लिखता है कि इन घरों में माधारणतया बढियाँ खुली हुईं और कसीदाकारी से सजी हुईं चटाईया के कालीन बिछे हाते हैं और कितने ही प्रकार के बने भी वहाँ मिलते हैं। ये आदिवासी लाभ इतनी प्रगति कर गए थे कि हवा के प्रभाव को नियमित करने के लिए वे छत में बने एक मुराब पर एक टाट लटका लें थे जिस एक रस्सी के द्वारा हटाया अथवा डाला जा सकता था। ऐसा घर एक नहाता अधिक से अधिक दो दिनों में बनकर तैयार हो जाता था और उस गिराने में कुछ ही घण्टा में दुबारा खड़ा किया जा सकता था। हर परिवार के पास अपना एक घर अथवा किसी घर में अपना एक कमरा हाता था।

उस जगली सम्यता में हर परिवार के पास उनकी स्थिति के अनुकूल एक बढियाँ अपना घर था जो उनकी साधारण और मोटी भोटी आवश्यकताओं के लिए काफी हाता था। लेकिन यद्यपि पशियों के घामले हाते हैं और लामढियाँ के बिल और जगली जातियाँ अपने भाँपड़ों में रहती हैं, पर जाधुनिक सम्य सम्राज के आगे से अधिक परिवारों के पास उनके अपने घर नहीं हैं। मैं समझता हूँ कोई अनुचित और सीमा में बाहर की बात मैं नहीं कह गया हूँ। बड़े नगरों में, जहाँ सम्यता का विशेष प्रसार है, पूरी आवादी का बहुत ही छोटा हिस्सा अपने घरों का मालिक है। गण लाभ गर्मी और सर्दी दोनों ऋतुओं में अनिवार्य इस बाह्य परिधान के लिए वार्षिक किराया देते हैं। यह किराया आदिवासियों की भाँप

डिया के एक पूरे घाव का सरीद सने के लिए काफी हो सकता है। यह किराया जीवन भर उह गरीब बना रहता है। यहाँ मैं निजी घर की तुलना में किराये के घर की हानियाँ गिनाने नहीं चता हूँ। पर इसकी बात स्पष्ट है कि जगली लोग के घर उनके अपने इसीलिए बन पाते हैं क्योंकि वे बहुत ही थोड़े में घन जानते हैं और साधारणतया किराये में रहनेवाले मध्य लोग इसीलिए अपना घर बनाने की क्षमता नहीं रखते क्योंकि वे बहुत ही महंगे बनते हैं और अन्त में अधिक अच्छा मकान किराये में भी हिम्मत भी उनमें नहीं बचती। कहा जा सकता है कि गरीब सम्म नागरिक इस मामूली किराये के बन्द रहने के लिए ऐसा घर पा जाता है जो जगली लोग के महंगे जसा होना है। यह सच है कि पच्चीस से लेकर मो डालर तक का बापिक किराया (यह किराया सामान्य क्षमता में है) दूर व्यक्ति सन्ध्या में विविध इन सुविधाओं की भोगने का अधिकार पाता है—दीवारा पर रागन और कागज की मट्टाई, रमफोड की अगीठियाँ, पन्स्टर बेनिम के ढंग के लिडकियाँ के पमें पीतल के पम्प स्प्रिंग के ताल बंद खुले सहवान और अन्य नितनी ही ऐसा चीज। लेकिन क्या है ऐसा? इन सब सुविधाओं का आनन्द उठानेवाला व्यक्ति एक साधारण निधन सम्म है जबकि जिस जगली के पास ये सब चीजें नहीं हैं वह जगली होता हुआ भी सम्पन्न है। यदि यह कहा जाए कि मानव जीवन की स्थिति में मरुवी प्रगति का नाम ही सम्पत्ति है—और मैं समझता हूँ यही सत्य भी है, यद्यपि सिर्फ विचक्षण पुरष ही उसमें सुधार कर पाते हैं—तो हम लागत बनाए बिना पहले से बढिया घर बनाकर दिया चाहिए। वस्तु की कीमत पता नहीं है वह जितनी है जो हम उससे बदल में तत्काल जयवा बाद में देनी पड़ती है। इस प्रदेश में एक औसत घर की कीमत सायद आठ सौ डालर है। इतना धन जमा करने में एक मजदूर का अपना जीवन के दस से पंद्रह तक वर्ष लगाने पड़ेंगे। यह भी तब ही सबेरा जय परिवार का बोझ उनके कंधों पर गड़ा जाता है। यह गणना प्रति व्यक्ति प्रतिदिन एक डालर के हिसाब से लगाई गई है क्योंकि मुख्य लागत अधिक बर्मात में तो कुछ कम भी बर्माते हैं। इस प्रकार अपने लिए एक निजी भाड़ा उपलब्ध कर लेने में व्यक्ति को साधारणतया अपना आधे से अधिक जीवन लगा देना पड़ता है और यदि साथ ही उस किराया भी दत्त रहना पड़ा तो यह चुनाव बहुत पुनः सिद्ध नहीं होगा। मैं पूछता हूँ क्या एक जगली अपने भापड़े के बदले इस कीमत पर एक महंगे सने की बुद्धिमानी करेगा?

ऐसा लग सकता है कि इस आवश्यक सम्पत्ति में मिलनेवाले लाभ को मैंने एकत्र ही जमा कर दिया है। मैंने उसे भविष्य में काम देनेवाली एक पूँजी और जहाँ तक व्यक्ति का सम्बन्ध है उसकी उत्पत्ति का व्यय चुकाने के लिए रक्षित धन बता दिया है। लेकिन शायद व्यक्ति को अपने कामकाज में व्यय करना पड़ेगा। फिर भी इस बात में सन्देह और तर्कहीन मानवा के बीच अन्तर्गत एक महत्त्वपूर्ण अन्तर को आर सरेन निहित है। मानव न सत्य जानिया के जीवन को एक सत्या का रूप दे दिया है जिसमें व्यक्ति का जीवन बहुत दूर तक मानव-जाति को अमर और पूरा बनाने के उसके मनसूबों को पूरा करने में सहायता दिया जाता है। निस्सन्देह यह हम सभी के लिए है लेकिन मैं दिखाना चाहता हूँ कि आज दिन यह लाभ कितने बड़े बलिदान के द्वारा प्राप्त किया जा रहा है। मैं यह प्रस्ताव रखना चाहता हूँ कि सम्भव हो तो हम इस प्रणाली से रहें कि जिना कोई हानि उठाए हम पूरा लाभ प्राप्त कर सकें। ऐसी बातें कहने का क्या अर्थ है कि हममें से कुछ सदा ही गरीब रहें, कि हमारा पूँजी का अक्षयताएँ मेलनी पड़ी थी, और यह कि उनकी सतनिया का धीमन्त्र नास का अनुभव करना पड़ रहा है ?

"समीक्षा ने कहा है क्योंकि मैं हूँ इसलिए इसराईन में ऐसी बात कहने का अवसर तुम्हें आग नहीं मिलेगा।

"दोस्तों, सब आत्माएँ मेरी हैं। पिता की आत्मा भी और उसी प्रकार पुत्र की आत्मा भी मेरी है। जो आत्मा पाप करेगी वह मर जाएगी।

मेरे पड़ोसी कानकाड के किमान-समाज के अर्थवर्गों के समान ही कम से कम अच्छे गान-पीने लोग रहते हैं। जब मैं उनका घर में सोचना हूँ तो पाता हूँ कि वे अपने जीवन के बीस तीस चालीस वर्षों तक काम करते हैं और मरने तक यह कहते रहते हैं कि वे अपने सेता के अनन्त मालिक हैं। आमतौर से वे सेता का भा तो बचक रंगी पतल सम्पत्ति के रूप में पाते हैं अथवा ऋण के धन में उन्हें खरीदने हैं। इस भाग के निहाई भाग का उनके घर का मूल्य समझ लीजिए। साधारणतया उस भी वे अदा नहीं कर चुके होते। मचता यह है कि बचक में दस धन कभी-कभी सेता के मध्य से बढ़ जाता है और इस प्रकार सेत अपने में एक भारी मुसीबत बन जाते हैं। यह सब अच्छी तरह जानते-समझते हुए भी व्यक्ति इस पतल सम्पत्ति का ग्रहण करता है। यह निर्धारण से पूर्व-निर्धारण पर यह जान कर मैं हैरान रह गया कि इस तरह के व्यक्ति भी हमारे नहीं हैं जिनके में

निबंध हा जिसदिग्ध रूप में उनके अपने हा। यदि आप इन घरों का इतिहास जानना चाहते हैं तो उन बैंक से पूछताछ कीजिए जहां वे गिरवी रहे हैं। जो विशेष कर धर्म करके उसरी कीमत चका पाए हैं ऐसे व्यक्ति उगलिया पर गिन जा सकते हैं। कानकाड में तो शायद ऐसे तीन भी व्यक्ति न हों। व्यापारियों के बारे में कहा गया है कि उनमें अधिकांश की सौ में सत्तानवे तक का, विफलता भुक्ति दिवत है। यह बात विमाना के बारे में भी उनकी ही सच है। व्यापारियों में से एक ने अपने बग के विषय में यथाय ही कहा है कि उनकी विफलताएं अधिकांशतर आर्थिक विफलताएं नहीं होती। वे अनुविधानजनक धान्य को पूरा करने में असमर्थताएं मान्य होती हैं। यह उनके नैतिक चरित्र का पतन तो हुआ न। इससे वस्तुस्थिति का निवृण्णतम पथ सामने आता है। इसमें पता चलता है कि सौ में बाकी बचे तीन व्यापारों में अपनी आरम्भ की रण्य में सफल नहीं हो पाते क्योंकि वे प्रत्यक्ष विफल दोखनेवाले व्यापारियों से भी अधिक दीवातिय बन चुके हैं। दीवालिया होना और ऋण में मुनर जाना व लचान सक्ते हैं जिनपर से हमारी अजिकाश सम्मता ऊपर उछलती है मुडती है आर कलाबाजिया खाती है। तकिन जगली जातिया भूख और अकाल के बड तस्त पर खडी रहती हैं। फिर भी मिडिलसक्म का पशु मेरा बप पत्र बप पूरी सान शौकत से सगस्ता रहता है जिससे लगे कि हमार कृषि-जीवन के सभी जोर ठीक और गतिशील हैं।

किसान जीविका की अपनी समस्या को एक एम उपाय में हल करने का प्रयास कर रहा है जो मून समस्या से भी अधिक उत्तम हुआ है। इसके लिए वह पशुओं का मट्टा करता है। पूरी चतुराई से तासा सगाकर वह ऋण मुक्ति और सुविधाएं पकड़ पान की जागा में जाल फेंकता है। तकिन जैसे ही वह मुनता है वह अपना ही पर उम पत्र में पना बठता है। यही कारण है कि वह गरीब है। इही कारण से हम सभी हर प्रकार के विलास माधना से घिरे रहकर भी हजारों जगली लोग की तुलना में गरीब हैं। कवि चैपमैन ने लिखा है

मानवों का भूटा समाज

ऐहिब महत्त्व के लिए

स्वयं के सुखा का हवा में उड़ा देता है।'

और यदि किसान निजी घर खरीद भी पाता है तो वह इस घर को लेकर धनी नहीं, पहले में गरीब ही बन जाता है क्योंकि उसने घर का नहीं पायद घर

ने ही उसे खरीद लिया होता है। ग्रीक पुराणा के मिनर्वा^१ ने जो घर बनाया था, मोमम^२ ने उसपर यह भगन आपत्ति की थी कि उसने घर का सचल नहीं बनाया है जिसमें एक घुरे पड़ोमी के सग से बचा जा सके।” हमारे घरा के बारे में ठीक यही बात कही जा सकती है। व ऐसी दुवह सम्पत्ति है कि उनमें रहने के बदले हम उनमें बंद हो जाते हैं। लेकिन यहाँ घुरा पड़ोमी कौन है? वह है हमारा अपना क्षुद्र, अधम व्यक्ति। मैं इस नगर के कम में कम एक या दो ऐसे परिवारों को जानता हूँ जो उपनगर स्थित अपने घरों को बचकर गाँव चले जाने के लिए लगभग एक पीढ़ी से उत्कठित हैं, पर अभी तक जा नहीं सके हैं। शायद मौन ही उन्हें इन घरों से मुक्ति दिला सकेगी।

चलिए मान लिया कि अधिकतर लोग वर्तमान सुविधाओंवाले इन आधुनिक घरों को खरीद लेने अथवा इन्हें किराये पर ले लेने में समर्थ हो जाते हैं। लेकिन जिस सम्पत्ति में हमारे घरों की इतना विकसित किया है वह उनमें बसनेवाले मानवों को उतना ही सस्वस्त नहीं बना सकती है। उनमें महल खड़े किए मही पर राजाओं और सामन्तों की सृष्टि करना उतना आसान नहीं है। यदि एक सम्य मानव का जीवन लक्ष्य असम्य जगली से उन्नत नहीं है, यदि वह भी अपने जीवन का एक बड़ा भाग एहिक आवश्यकताओं और सुविधाओं को प्राप्त करने में ही लगा देता है, तो उस असम्य की अपेक्षा अधिक बढ़िया घर में रहने का क्या अधिकार है?

लेकिन दायें तो कि गरीब अल्पमध्यम वर्ग का बसने का क्या होता है? देखने पर शायद पता लग कि सामारिक स्थिति की दृष्टि से कुछ लोग जंगलियों में जितने अनुपात में उन्नत हैं शेष ठीक उतने ही अनुपात में अवन्न हैं। एक वग का विलास हमारे भी दरिद्रता से सन्तुलित होना है। यदि एक आर महल में हैं तो दूसरी आर दान-गड़ हैं और 'भूक' दरिद्र हैं। वे लाखों लोग जिन्होंने पिछले के मध्याह्न की कक्षा पर बड़े-बड़े पिरामिड बनाए खाली लहसुन खाकर जीवित रहने थे। शायद उन्हें स्वयं बढ़िया तरह दफनाया जाना नमीव नहीं हो सता था। महल के मुंडेर को रूप देनेवाला मिस्त्री उस कुत्ते में रहता है जो एक जगली भापड़े से अच्छा

१ इतना की शिल्पकला की देवी

२ ग्रीक पुराणों के अनुसार मोमम रात का वेग है। वह वह किमीकी आलोचना करने और गन्तिया निकालने का अधिकार रखता है।

कर सनता था ? मैं तो खुली हवा में रहना पसंद करूँगा। घास तब तक मंजी नहीं हाती जब तक जानगी बटों की जमीन खोद न डाले।

बिनागी और ध्वनना रिम्म के नाग हात हूँ, जो पक्ष्य चलाने हैं और भीड़ प्रयासपूर्वक उड़ीने पीछे चल पड़ती है। तयारचित सर्वोत्तम सरायों में ठिकने वाला यात्री बहुत धीछ ही इस तथ्य को जान लेता है। नजियारे उमे जसीरिया के बिलासी और स्थण राजा मारदनापालग^१ ही ममम बठत है और यदि वह यात्री स्वयं को उतरी नाजुन महरबागिया पर छोड़ दे तो वे पीछे ही उमे पूरी तरह नपु मर बना डालने है। मैं समझता हूँ रेल के डिब्बे बनाते समय हम सुरक्षा और सुविधा पर उतना खच नहीं करते जितना बिलास माधना पर। निमातामा को इन बात का पता लगा रहता है कि यदि रेल के डिब्बे में धूम्रपान-गृह गद्गार चीरिया धपन लिए पड़ें और मरणा जय प्राच्य बिलागोपकरण न जुटाए गए तो वे आधुनिक बटवगाना से बढ़िया न बन पाएंगे। ये सब उपकरण पूर्व के हरमों की बगमा जार चीन के स्त्रियाचित नागरिका के लिए बनाए जाते हैं। इन्हींका हम लाग अपन साथ यहा पश्चिम में ले जान है। बिलाया^२ तो शायद इतम परिचित होने में भी गम महसूस करे। मैं जबने तो एक कद्दू पर बठना भी पसंद करूँगा पर तागा का भीड़ में मगमली गद्गा पर आसीन होना भी मुझे अस्विकर होगा। एक बेलगाडी में बठकर धरती पर जागादी के साथ घूमना मुझे अच्छा लगेगा, पर आमोद प्रमोद के लिए चली एक रत्नगाडी के बगिया डिब्बे की गंभी हवा में माम लेकर स्वयं की भी सर करना मरे बस स बाहर की बात है।

आत्मि यगों के मानव का मादगी और तन्त्रता का कम से कम इतना लाभ अवश्य था कि उस प्रवृत्ति के बीच सतत भ्रमणगीत रहना पड़ता था। वह कही भी बहुत घापी दर के लिए ही टिक पाता था। राया विया सोमा ताजा हुआ और फिर अपनी यात्रा पर चल पड़ा। इस सतार में वह एक तम्बू में ही टिकना था और पाटिया में बस। रास्ता बनाना हुआ मैगना को चीरता हुआ अयरा पहाडा की चोटियों पर चढ़ता हुआ निग्लर ताग बनता रहता था। किन्तु लाजिए, आज का

१ प्राचीन मारारिया का अन्तिम राजा। यह बड़ा ही बिनासी और कायर था।

२ अगर या वे लाग सामूदायिक रूप में इसी नाम से पुकारे जाते हैं। यह नाम गवर्नर अनाथन डम्बर (१७१०-१८०१) के नाम पर था।

मानव अपने यत्रा का यत्र बन गया है। जा कभी भूख नगन पर स्वच्छन्दता से
 फन ताड़कर खाता था वह अब विमान बन बैठा है। जा कभी पट्टे नीचे जाग्रय
 दिया करता था वह अब गहसरी उन्नत गया है। हम अब कभी भी एक गत के लिए
 डेरा नहीं लगाते। हम एक जगह रुक गए हैं और स्वयं को भूत गए हैं। हमने रमा-
 श्यन का कृषि का अथवा ग्रामीण मस्तिष्क का मस्तिष्क रूप मानकर ही ग्रहण किया
 है। हमने वनमान पीने के लिए एक बोटुम्बिक भवन बनाया है पर अगली पीढ़ी
 के लिए एक सामूहिक कक्ष बना जानी है। सर्वात्मक कलाकृतिज्ञा इस परिस्थिति
 में मुक्ति पान के मानवायमधप का ही अभिव्यक्तिया है। लेकिन हमारी कला का
 हमारा यही प्रभाव पड़ा है कि हम इस हीन स्था का अपने लिए सुविधाजनक
 बना लें और उस उच्च स्थिति को भूत जाए। जगत में बर्तिया कलाकृतिया के
 लिए इस गाव में कार्य स्थान नहीं है। जगत का कृति जीवन भर के लिए हम
 मिल भी जाए तो हमारा घरा में और हमारा मार्गों पर उस स्थापित करने के लिए
 काइ उचित पीठिका नहीं मिलेगी। यत्र कार्य कोल नहीं है निम्नपर कोई चित्र
 लटकाया जा सके को अतमारी नहीं है जिसमें किसी वीर पुरुष अथवा मन्त्र की
 आवरण प्रतिमा मज्राई जा सके। जब मैं माचना में कमे हमारा इन घरों का निर्माण
 हुआ है कम इनकी कीमत अन्त की गई है इनकी व्यवस्था कम चलाई और
 कायम रखी जानी है तो मुझे हैगनी हानी है कि आन में मज्र भटकील खिनीना
 की तारीफ करनेवान अनियिध परा के नीचे स्र जमीन क्या नहीं खिसक जाना
 और वह क्या नया उस तत्त्वान में जा पटना जहा की जमीन अथि पक्की और
 वास्तविक है ? मैं यह अनुभव किए बिना नहीं रह पाना कि इस तथाकथित सम्पन्न
 और सम्य जीवन भूमि पर जवदस्ती कूद जाया गया है। जब मैं इन घरों में मज्रा
 कलाकृतियों का स्वन लगाता हूँ तो इस कूद आन की आन में इतना उन्नत उल्ला
 हूँ कि कला का आनन्द ल ही नहीं पाना। जहा तक मुझे याद है मानवीय माध
 पणिया के वन पर मज्रम सम्बो उल्लाग उन स्थानावर्णों अथवा न लगा बटाइ
 जानी है ना समतल भूमि पर पचीम फुट ऊंचा कूद गए थे। बिना किसी कृत्रिम
 महार के मनुष्य वनना ऊंचा टिका नहीं रह सकता उस घरों पर लौटना भी
 पन्ता है। इतनी बड़ी अनुचित सम्पत्ति के मानिक में मैं यह प्रश्न किए बिना नया
 रह सकता कि कौन है जो तुम्हें महारा जाता है ? तुम अमरुत ज्ञानवाल ममानव
 में म गए या अथवा मफन होनेवान तीन में म गए ? पहन मर का प्रश्न का उत्तर

दो और तभी मैं तुम्हारे इन भटकीत पिलौना का देण पाऊंगा और उहे कता तमय समझ पाऊंगा। पोट के आग खगी थाड़ी न सुंदर लगती है, न लाभप्रद। अपन घरा का सुन्दर वस्तुओ से मजान मे पहुँचे तम दीवारो को उधड़ डालना चाहिए अपन जावन का निरावरण निभम कर केना चाहिए और वास्तविक रूप में सुन्दर घर-घर और जीवन की नीव रखनी चाहिए। अमल में सौन्दर्य की रुचि का विकास घर से बाहर हो किया जा सकता है जहाँ न घर होता है न घर का रखवाला।

बड्ड जानमन^१ ने अपनी पुस्तक बण्डर बर्निंग प्राविडन्स में समसामयिक उन लोगों के बारे में बताया है, जिन्होंने आकर इस शहर में पहली बस्ती बनाई थी। वह लिखता है अपने घर के इस प्रकार बनाने हैं। वे किसी पहाड़ी से सटकर घरती में बड्ड-बड्ड गड्ड खोद रत है। ऊपर सपड़ी बिछाकर उन मिट्टी से ढाव दत हैं। अन्दर उचा तरफ जमीन पर वे चल्पा सुलगात हैं। वह आगे लिखता है 'उन लोगो ने तब तन अपने लिए घर नहीं बनाए जब तक भूमि ईश्वर का कृपा से ध्यान के लिए पर्याप्त जल पदा नहीं करने लगी। पहले थप फमल इतनी कम हुई कि एक लम्बी अवधि तक उहे अपनी डबलरोटी के टुकड़ पतन काटने की विवश होना पडा। सन १६४० में यू नीदरलंड प्रान्त के सचिव ने उन लोगों की सूचना के लिए जा इस भूमि पर आकर बसना चाहते थे डच भाषा में यह बात विनैप जोर देकर लिखी कि 'यू नीदरलंड और विशेषकर यू इंग्लंड के लोगों के पास इच्छानुसार घर बना लेने के साधन नहीं हैं। वे महंगान के ढग का एक चौकार गडा जमीन में खान लत हैं जो छ या सान फुट गहरा और जितना भी वे ठीक समझते हैं उतना लम्बा और चौडा होता है। चारो ओर दीवारा पर वे सपड़ी मड लत हैं। घरती के धमाक को राखने के लिए पेडा की छान या कुछ और चीज के उस सपड़ी पर अस्तर की तरह चडा लेते हैं। इस तहलाने के फा पर वे तस्ते जट दत हैं और ऊपरसिर पर बलिया बिछाकर नीचे की तरफ तरुता बन्नी कर दते हैं और छान या धाम मिट्टी बलियाओ के बीच में भग्ग सतह एव सी कर देत है जिससे इन घरों में आवश्यक गर्मी और गुष्कता रह सके और पूरे न पूरे परिवार दो तान, चार वषों तक इनमें बस सकें। वे परिवार का सदस्य

सह्या के अनुमार इन तहखाना के हिस्स भी कर लेने हैं। इन वस्तिवा के आरम्भिक दिना में यू इन्सुलड के घनी और प्रमुख रोगा न इसी किस्म के घरा में रहना आरम्भ किया। इसने दो कारण रहे। पहले तो यह कि वे गृह निर्माण में समय बर्बाद करना और अगले भौमिक में अन्न की कमी होने देना नहीं चाहते थे। दूसरे, वे उन गरीब मजदूरों का भी अनुत्साहित करना नहीं चाहते थे जिन्हें वे बड़ी सन्ध्या में पिनपेन से लाए थे। तीन या चार वर्षों बाद जब हम प्रदेश में खूब खेती हान लगी, तब हजारों रुपये खर्च करके उन्होंने अपने लिए सुंदर घर बना लिए।'

हमारे पूर्वजों ने जा मान अपनाया उससे कम से कम उनकी दूरदर्शी होता प्रकट है। उससे यह पता लगता है कि उन्होंने प्रमुखतम आवश्यकता पहन पूरा करने में मित्रता को ग्रहण किया। लेकिन क्या आज भी प्रमुखतम आवश्यकताएँ पत्रों की जानी हैं? जब भी मैं अपने लिए एक शान्ति घर उपलब्ध करने की सोचता हूँ तभी यह विचार मुझे सङ्कुचित करता है कि देश में अभी तो एक मानववादी सङ्कल्पित नहीं हुआ है और हम अभी तक अपनी आध्यात्मिक रोगों के दुकान उससे भी अधिक पतले काटने का विवश हैं जितने कि हमारे पूर्वजों ने गृह की रोटी के काटने से। यह जरूरी नहीं है कि कठिन से कठिन समय में भी स्थापत्य की सजावट की उपस्था की जाए। लेकिन प्रथमतः हमारे घर उतनी ही दूर तक आत्मिक बनाए जान चाहिए जितनी दूर तक बसा करना हमारे जीवन के लिए आवश्यक है। कला का जीवन पर लादा न जाए। शस्त्र और घाघे अपने घर की इसी नीति से बनाने हैं। लेकिन अक्सर, मैं एक या दो भवना में गया हूँ और मैं जानता हूँ कि वे किस कला से अलङ्कृत हैं।

हम अभी इतने नहीं गिर गए हैं कि एक गुफा अथवा एक भोपड़ा में न रह सकें और साल पहनकर गुजारा न कर सकें। पर निश्चय ही अच्छा यही होगा कि आविष्कार और उद्योग न भारी मूल्य लेकर जो सुविधाएँ मानवता को प्रदान की हैं उसका लाभ हम उठाएँ। इस जल प्रदेश में लकड़ी के तेल और छिपटिया, चूना और इट्टे आदि गुफाओं, लकड़ों के पुरलट्टा, पर्याप्त छाल, पकी हुई मिट्टी के डेला अथवा चपटे पत्थरों से ज्यादा मस्त और महज उपलब्ध हैं। मैं यह सब बातें समझ-बुझकर कह रहा हूँ, क्योंकि बौद्धिक और व्यावहारिक दाना ही रूपा में मैंने इस विषय का ज्ञान प्राप्त किया है। यदि हम थोड़ा और बुद्धि से काम लें तो इसी गामभी में हम आज के सम्पन्नतम लोग से अधिक सम्पन्न बन सकते हैं और अपनी

दा और सभी में सुन्दार इन भद्रों का गिराई का रूप पाउगा और उठ बना
 रम्य गमन पाउगा। धार क आय सभी गरीब सुन्दर माना है न सामान्य।
 अपने घर का सुन्दर घरुआ म सुखा म पत्तन दोशरी को उधेद हावना
 पारिण अपने जीव का निगदण निधम न मना पारिण और वास्तविक रूप
 म सुन्दर घर घर और जीव का नाव रगना पारिण। अगम म गीत की रवि
 का विचार घर म धार ही विद्या का मरणा है अगम घर हाता है न घर का
 रगनाता।

यह अंगिकारी म अगता सुन्दर घर धार पारिण वास्तविक म गमनामपि
 उन माया क घर म बनाया है जिन्नि धारर दग नगर म पत्ती बना
 मगाई थी। यह विगना है अपने घर क रूप प्रचार बना है। व विता पगना
 मे मरुत धरना म क-वद गद गा मर है। उर मरनी विद्यार उग मिट्टा
 म दार दार है। अगता उगी मरुत उमीन पर क गुण सुन्दर है। धार
 विगना है उर मागा न तब तर अपने विग घर नही बनात जय तब मुमि रर
 की कपा म गात क विग पगान अल पग नही बनन मगा। पत्तन पग
 इनती म म हृद वि ग मम्बी अवधि तर उर अपनी कलरागा क रूप पग
 वास्तव का विग हाता गदा। मर १६२० म पू नारमद प्रान्त क गचिरन उन
 मागा की गूचना क विग जा म मुमि पर आरर बनन गान ये क मगा म
 घर बात विग उर दार विगी वि पू नीरनद और विगपर पू इरनद क
 मागा क पग दृष्टानुसार घर बना मर र गापन मरी है। व मगान क दग का
 मर शीवार गदा उमान म गा नन है जा म गा गात पुन मरुत और विगना
 नी क टीक ममभने है उनना मरुत और चीन गाता है। चारा आर दीवाग पर
 क मरुत मरुत है। धरनी क धमाव को गहन क विग पदा ती धान या कृद
 और चीन क उम मरुत पर धरनी की तरह कदा मर है। मर मगान क पग
 पर वे मरुत ज दन है और उरमिर पग बन्निमी विद्यार नीव नी मरुत मरुता
 बन्नी क दन है और धान या पग मिट्टी बन्निमी क बांध म मरुत मरुत
 सी क दन है विगम मरुत धर म आवदय मरुत और पुनना र मरुत और पूर
 क पूरे परिवार को मोन चार वर्षों तक इनम मरुत मरुत। व परिवार की मरुत

सध्या के अनुमार दन तहसना का हिस्सा भी कर लेते हैं। इन वस्तियां न आरम्भिक दिना में यू डग्नड के घनी और प्रमुख योगों न इसी किस्म के घग म रहना आरम्भ किया। इसने दो कारण रहे। पहल तो यह कि व गृह निर्माण में समय बरबाद करना और अगले मौसम में अन्न की कमी हानि देना नहीं चाहते थे। दूसरे, व उन गरीब मजदूरों का भी अनुत्साहित करना नहीं चाहते थे जिन्हें व वही सध्या में पितृदेन से लाए थे। तीन या चार वर्षों बाद जब इस प्रयोग में खूब खेती हानि लगी, तब हजारों रुपये खर्च करके उन्होंने जपन लिए मुल्कर घर बना लिए।

हमारे पूर्वजों ने जो भाग अपनाया, उसमें कम से कम उनका दूरदर्शी हाना प्रकट है। उसमें यह पता लगता है कि उन्होंने प्रमुखतम आवश्यकता पहले पूरा करने का निश्चय का ग्रहण किया। लेकिन क्या आज भी प्रमुखतम आवश्यकताएं पुरानी पूरी की जाती हैं? जब भी मैं अपने लिए एक गानदार घर उपलब्ध करने की सोचता हूँ तभी यह विचार मुझे सकुचित करता है कि देश में अभी तक एक मानवतावादी संस्कृति फलित नहीं हुई है और हम अभी तक अपनी आध्यात्मिक गरीबी के टुकड़े उसमें भी अधिक पतल कागज का विषय हैं जितने कि हमारे पूर्वजों ने गहू की राटी के काट थे। यह जरूरी नहीं है कि कठिन में कठिन समय में भी स्थापत्य की सजावट की उपस्था की जाए। लेकिन प्रयत्न हमारे घर उनका ही दूर तक कलात्मक बनाए जान चाहिए जितनी दूर तक समा करना हमारे जीवन के लिए आवश्यक है। कला का जीवन पर लादा न जाए। गलत और धांधले अपने घर टीन इसी नीति से बनाने हैं। लेकिन अपना मैं एक या दो बनाना में गया हूँ और मैं जानता हूँ कि व किस कला से अलङ्कृत है।

हम अभी तक नहीं गिर गए हैं कि एक गुफा अथवा एक भापड़ी में न रह सकें और छाल पतनकर गुजारा न कर सकें। पर निश्चय ही अच्छा यही होगा कि आविष्कार और उद्योगों ने भारी मूल्य लेकर जो सुविधाएं मानवता को प्रदान की हैं उनका नाम हम ठाण। हम जैसे प्रदेश में लकड़ों के तले और छिद्रटिया, चूना और चूने आदि गुफाओं, सबड़ी के पूरलटठा, पयाप्त छाल पकी हुई मिट्टी के देना अथवा चपट पत्थरों से बनाए गए मस्ते और महान् उपलब्ध हैं। मैं यह सब बातें समझ-बूझकर कह रहा हूँ क्योंकि बौद्धिक और व्यावहारिक दाना ही रूप में मैं इस विषय का ज्ञान प्राप्त किया है। यदि हम बाढ़ और बुढ़ि से काम लें तो इस सामग्री से हम आज के सम्पन्नतम लोग से अधिक सम्पन्न बन सकते हैं और अपनी

गमना को एक बरतान बना गया है। मध्यपुर अक्षर धातुमय और सुन्दरान
बकर हा होता है। वरिष्ठ अब मैं अपना प्रयाग का द्विज बरतान।

सात १८६५ वं अन्तिम शिवा का बाहर है मैं एक मन्त्रन स पुद्गाही मागी
और बाह्यन पाँच म मन्त्र जगत म चला गया कपाटि मैं आना पर बाह्यन पाँच
म निवर्तनम ही बताया बाहर था। बाह्यनोरा व निग मैं मन्त्र मन्त्र मोरनुमा
बाह्य व मन्त्र बना का बाह्यन पुद्गा किया। यदि किमीन बीड म मागे ला बाई
नया काम पुद्गा बना हो बरतान हा जग और मन्त्र प्रयाग म अन्त्र माधिया का
वधि पन्ना हा दन का बाह्यन मन्त्र उन्त्रनम मन्त्रा भी है। पुद्गाहीवात मन्त्रा
म उम अपने मुद्गे म अन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र था—दगा, म पुद्गाही मरी मागी
का मन्त्रा है। और मैं भी उमकी बीड पन्त्र म नी मन्त्रा अन्त्रा म लोनाई। मैं
एक पन्नाही व मुद्गाही दान पर नान म जुट गया। दान बीड व पन्ना म डका
था। मन्त्र म लोनाय और वन्त्र व बीडावीव लुगी एक दान-मा मन्त्रा उमोन मन्त्र
लीग पन्त्र रहा थी। हम उमान पर बाह्य और द्विज व पन्त्र पन्त्र पन्त्र था। लोनाय
की वधि अभी पिचनी नगी था हा बाह्य-बीड म पन्त्रा दगाई पन्त्र गई थी। उमका
रग ह्यामन्त्र था और पाता उमम लोनाय मन्त्र था। जिन दिना मैं व्यक्त था,
वन्त्र व हन्त्र मन्त्र वन्त्र वन्त्र वन्त्र वन्त्र था। लोनाय अधिकतर लोना होता कि
बाह्यन पर जान मन्त्र रन-नया की पीलो रन धुधमय बाह्यन मन्त्र म चमपता
और पन्त्रा वन्त्रा वन्त्रा की पूग म चमपतानी मुद्गे लोना पन्त्रा तथा एक और
वन्त्र हमार माय बिना वन्त्र आ पन्त्र मन्त्रा द्विजरी और दूगरे पन्त्रा का
जाबाई मुन्त्र मुन्त्र गन्त्रा। वन्त्र वन्त्र वन्त्र मुद्गाही न्त्र थे। मानवीय अगन्तोप
पर और धरती पर जमा हिम पिघल रहा था। अब तब जह, अवतन पन्त्रा
जीवन सन्त्र हा रहा था। एक न्त्र मरी पुद्गाही का बेटा दूग गया। एक वन्त्रो
द्विजरी का बाह्यन मैं पन्त्र म उम पुद्गाही म ठोका और दूरी पुद्गाही को
पाना म डाल दिया जिनम नन्त्रा वन्त्रा जग। लोना मैंने दगा, एक लोनाय
गाय भागवर पानो म चम गया और अब तब मैं बहा दन्त्रा रहा—गाय पन्त्र
मिनट म भी अधिक—वन्त्र जिना द्विज-दुल पानो की लती म ली पन्त्रा रहा। वह
जभी तब अवन्त्र अवन्त्रा म अच्छी तरह उबर नन्त्रा पाया था। मुद्गा लोना कि
बुद्ध लोना हा बाह्यन मानव मा जपनी वन्त्रा आन्त्र पन्त्रावन्त्रा म पन्त्र
रहन है। यदि व अपने चन्त्रा व वन्त्रा व प्रमाय को अनुभव करें तो निश्चय

हा व एक उच्चतर आध्यात्मिक जीवन तक उठ सनत है। पहन भी शिमाच्छादिन मुन्हा म राम्हा पर पडे एम चापा को मैन दया है जिनके गरीर ठड से जम और जक गए थे और जा बिना मुटे-मुटे सूरज निकलन की प्रतीत्या म पडे थे। पहना जप्रल का वषा हुई बफ पिघली जोर दिन व पहने पहर मे जम बटून घना कुहरा पह रहा था, मैन एक एकाकी हस का कुडकुडाहट सुनी। वह तालाब म माग डट रहा था, माना कि पत्र भ्रष्ट हा गया हा। वह मुझे उस कुदरे की आत्मा जैसा प्रतीत हुआ।

कुठ दिना तक मैं इसी प्रकार अपनी दोटी-भी कुन्हाडी म ही गहनीरें काटता और उन्ह मारता रहा। धूनिया और कडिया उनाता रग और इसी बीच एमे विचार, जा विद्वत्तापूर्ण और निवेदनोय हा मेर दिमाग म अधिक नहीं आग

गग बहते ह, व बटून धीरे जानत ह
लेकिन व सब विदा हो चुके हैं—
बनाए विना
और हजारा उपकरण
मह हवा जा चल ग्ही है
यही है जिसे वात जान सकना है।

वास गहनीरा को मैन छ बगदच व जाकार म गट त्रिगा। अधिकतर धनिया का मिफ दा आर स और कडियो का तथा फग का गहनीरा को एक बार म छोला और बाकी आर छाल का ज्या का त्या रहन लिया। इस प्रकार व आर म चिरी हुई गहतीरा जितनी ही मीची पर जनन वही अधिक मजबूत बन गट। अब तक मैं अब औजार भी मागजर ला चुका था। इसलिए मैन हर तख्त को अच्छी तरह जमाकर ठोका जो चून बिठाई। मैं जगल म बहुत समय समय तक नहीं रहता था। फिर भी अपनी मक्खन गनी अवजार व एक टुकटे म लपेटकर भाय ल आता था। ताजी कनी चीड की हने गाखाजा व बीच बठकर मैं उह खाता था और वह अवजार पटना था। मेरे हाथ पर रान की भागी तह नम जाना थी और मरी रोटिया उमका मात्र म नुगचिन हा जानी थी। अपना काम समाप्त करन स पहल हा चीड के बसा का मैं गत्रु म अधिक मित्र बन चुका था। निम्नन्ह उनम म कुछ का मैन बाटा था, पर इस कारण तो मेरा उनका परिचय

जीर भी गहग बन गया था। कभी-कभी वाइ धूमना फिरता राहगीर मरा कुल्हाड़ी की आवाज सुनकर पास आ खिचता था और हम दोनों बटी लकड़ियाँ पर पर रखकर कुछ मोठी बात करते थे।

मने अपने बायें में जल्नवाजी नहा की। उम अधिकतम गूबसूरती में किया। तब भी अप्रैल के मध्य तब मर घर का डाचा बनकर तयार हो चुका था। उम मिय खड़ा किया जाना था। तस्ना के लिए मैंने एक आयरनडवासी जेम्स कालिम्स की जो फिच बग रेल लाइन पर काम करता था भुग्गी पारीद ला था। जेम्स कालिम्स की भुग्गी अमाधारण रूप में बढ़िया मानी जाती थी। जब मैं उमे न्यून गया वह घर पर नहीं था। पत्त पत्त तो मैं अंदरवाला को बिना दीव बाहर में ही चारा और धूमकर उमे दंग गया। उमरी खिडकी काफी ऊँचाई पर थी सभी ऐसा ही मका। भुग्गा छान आयास की शिखरगदर छतवाला थी। और अधिक दखत का कुछ था नहीं। भुग्गी के चारा चार कूड की पाच फुट मानी तह जमी थी जसकि वह खान का टरा हा। धन के अधिकार तस्न धप के कारण एठ गए व आर उनम दरारें पड़ गई थी फिर भी छत ही उम भुग्गी का सबसे मजबूत हिस्सा था। द्वार पर चौकट नहीं था। वहा बस एक तस्ना लगा था जिसके नीचे से भुग्गी अविराम जाता-जाती थी। श्रीमती कानिम्स द्वार पर जाइ और उसने मुक भुग्गी को अंदर में दखन के लिए निर्मात्रन किया। मुक दखन भुग्गी अंदर भागा। अंदर अधेरा था। पश का अधिकतर भाग कूडा बिछाकर रनाया गया था। व सोसा और चिपचिपा था। उसक स्पग में जड़ी मा चड़ता था। यहा वहा एक आध तस्ना जडा था जो उखाड़ा जाना महन नहीं कर सकता था। गृहिणी न एक लप जला लिया जिससे कि छत और दीवारें अन्दर में दीव मकें और यह भी दीव जाण कि तस्ना का पग विस्तर के नीचे तब गया है। तहलाना दो फुट गहरा एक कूडा घर था जिमम उसन मुक नहीं जाने दिया। उमक अपन शान्ति में छत के तस्न बनिया है, चारा आर हा बढ़िया तस्न जह है और खिडकी भी बनिया है। खिडकी कभी दो वर्गाकार चौकटा में जडकर बनाई गइ थी। और अब बहुत समय में मिक विल्ली हा उमम को होकर आती जाती है। एक स्टाव एक विस्तर एक बठन की जगह यही पदा हुआ एक गिगु, एक सिल्व का छतरी एक सुनहर चौकटे का गीशा और बलून की लफडो पर कौना

बीज श्रीमन्त का यत्र, भव उमन गिया बना लिया। जेम्स

और गाली पारी की गद्दे नीचे तक फली थी और वनस्पति के चिह्न तली तक बर मान थे। उस वनफुल के सान फुट गहरे तहखाने का तला ऐसी बलिया बाल पर जाकर टिका जिसमें कम भी झाड़ पड़े जानुजा को पाना नहीं मार सता था। तहखाने की दीवारों पर मैं पत्थर नहीं बिन उहूँ हूँ छाड़ दिया। मूरा की मिश्रण उनपर कभी नहीं पड़ी है इसलिए वहाँ बाल अभी तक अपन स्थान पर जमी है। उस काम में सिर्फ दो घण्टे लगे। धरती की खुदाई में मुझे बिना आनंद मिला क्योंकि सभी जगह के लोग समीपतापूर्ण तापत्रम की खोज में धरती को ही सज्जत है। नगर के बलिया से बलिया धरा के नीचे भी सज्जत बने होते हैं जिनमें लाग अनीन की तरह ही बीज और जड़ जमा करत है। बहुत समय बाद जब य बिनास भवन धरागायी हो जात है तब भी मरतिया इन तहखानों का बतमान पाती हैं और भवना के मडहर ऐसे लगत है जस किसी माद के प्रवेश-द्वार पर बने दालान मान हा।

अन्त में मैंने व आरम्भ में अपन कुछ परिचिता के सहयोग में मैंने अपन घर का डाचा खड़ा किया। सहयोग मैंने आवश्यकताओं नहीं पणोसपन को पकका करने के इस बढिया अवसर का लाभ उठाने के लिए ही लिया। किसी भी अन्य व्यक्ति का उमके प्रत्याहृता ने उतना सम्मानित तामद ही किया होगा जितना मेरे मित्रों ने मुझे किया। मेरा विश्वास है एक दिन के अधिक बिगान इमारतों के निर्माण में सहायक हाय। तबत जउ दिए गए छत डल गई और एकदम मान हा ४ जुलाई से मैंने बहा रहना आरम्भ कर दिया। तबता के बिनारा को रवे से पतना पर की तरह का बनाने पर एक-दूसरे पर ऐसा चिपका दिया गया था जिससे वर्षा का जल उनमें से न चू सके। रहना आरम्भ करने से पहले मैंने एक बान में एक चिमनी की नींव भी रख दी थी। मैं तालाब के तट में दो गाड़ी भर पत्थर बाह्य में डोकर ऊपर पहाड़ी पर ले आया था। आग तापना आवश्यक था जान से पहले ही दलान का गुरपी से ठीक करके मैंने चिमनी बना ली। इस बीच मैं अपना साना मुँह ही बाहर रख में पका नेता। मैं अब भी माचता हूँ याना पकाने का यह ढंग प्रचलित ढंग की अपना वह दृष्टिया से अधिक सुविधाजनक एवं सुगम है। जब कभी मेरे साना पकाने से पहले ही तूफान उठ आता, मैं चूल्ह के ऊपर कुछ तख्त जमा नेता और उनके नीचे बठार रोटी पकाना और इस प्रकार कुछ समय मज मज में बिता देता। उन जिन जव मैं बहुत व्यस्त रहा मैं

बहुत ही छोटा पत्र सका। लेकिन ज़मीन पर लिखने वाले बागज के टुकड़े या मरा होल्डर या मजदूरी भुंके उतना ही आनंद देना और बड़ी मननर मिद्ध करता जो इलियड से सम्भव था।

अमल में जितनी फुरतन से भले घर बनाने में काम किया उसमें भी अधिक धन और सत्तोप से काम लना अधिक लाभदायक होगा। उदाहरणार्थ यह माचना हाया कि द्वार, लिडकी तहखान अथवा अगरी की मूल प्रेरणा मानव स्वभाव में कहा निहित है? हम भौतिक रूप में आवश्यक हा जान पर भी विशाल भवन तब तक बड़े नहीं करने चाहिए जब तक ऐसा करने के लिए अधिक उदार कारण उपस्थित न हा जाए। मनुष्य द्वारा अपना घर आप बनाया जाता ठीक वैसा ही है जसाकि चिडिया का अपना घासला स्वयं बनाना। यदि मनु मानव अपने घर अपने हाया से बनाए और पर्याप्त महान् सरन और यापूण तरीका से रोटी कमा कर अपना और अपने परिवार का पेट पालें ता सम्भव है कि बहिवर्त गुण का विकास सावभौम हो जाए। पनिया की जानि की जाति तेम काम करते समय स्वभावतः गा उठती है। पर जितने दुःख की बात है कि हम प्याग काउन्सिल और काउंसिल जमी चिडियाओं को करते हैं जो अपने अटे दूसरी चिडियाओं द्वारा बनाए गए घासलो में रन आती हैं और जिनकी बण-बटु बटबटाहुट किमी भा यात्री को सुखकर नहीं हा पाती। क्या हम निर्माण-सुख का लाभ सदा उठइ रो ही लन दन रहग? मानव-मान के सामूहिक अनुभवा में स्थापत्य को क्या स्थान और जितना मूल्य प्राप्त है? अपनी इतनी धुमककनी में एसा एक भी आदमी भुंके नहीं मिला जो अपना घर स्वयं बनाने में सरत-सहज काम में व्यस्त हा। हम समुदाय के हैं समाज के हैं। कहा जाता है दर्जों पूण मानव का नौवा हिस्सा है। पर उपर्युक्त भी नवाव ही है, यापागे भी और किमा भी। इस श्रम विभाजन का अन्त कहा जाना है? हमारे किम अन्तिम उद्देश्य की यह मिद्ध करता है? निस्सन्देह दूसरे का मरी चिन्ता बरनी चारिए लेकिन यह कस उचित है कि वह मेरी इतनी चिन्ता कर कि मैं अपनी चिन्ता सय करता छोड दू?

सच ही, तथान्वित वास्तु गिल्पी इस दग में वतमान ह। उनमें कम से कम एक के बारे में तो मैंन यह भी सुना है कि उसक मिर पर वास्तुकता के जाल कारिक नमून के क्षेत्र में एक मत्य का एक उपयोगिता को निरिष्ट करने का भूत

मरार है। शायद उसने समझा हो उस इलहाम हुआ है। अपनी दृष्टि में तो उसने ठीक ही समझा है। पर यह बल्पना अनसाधारण के मनही बला प्रेम में विचित्र ही गहरी होता है। स्वापत्य-सौत्र के उस भावुक सुधारक ने मूल में नहीं सिखर में आरम्भ किया है। यह प्रयास बसा ही है जमाकि आभूषणों के निर्माण को मूल पर आधारित करना अथवा हर बताना में एक वाक्य या काला जीरा भरना। मरार तो विश्वास है कि वाक्य शब्दों के बिना ही अच्छा लगता है। तब घर बसाने वाला क्या में अन्दर और बाहर से अपना घर अपने लगे से स्वयं बनाए और अल पारों का उनमें अपने ऊपर छोड़ दे ?

क्या किसी विचारशील व्यक्ति ने अभी साधा है कि गहन बाहरी प्रभाव में मात्र है सिर्फ छाल तक ही उनका सम्बन्ध है ? क्या किसीने यह भी सोचा है कि कछुए का अपनी विचित्र पीठ सोपी को मोती और झाड़ के क निवासियों को उनका टिटिटी गिरजाधर—नीला को य नीला बीजों एक समान करार के फल स्वल्प ही मिली था ? कछुए का अपना पीठ की चिन्तारों से जितना मतलब है उससे अधिक मतलब एक व्यक्ति को अपने घर का वास्तु-पद्धति में नहीं होना चाहिए। क्या एक सनिक इतना निठल्ला बन कि अपने ध्वज का अपने मरव, अपने असल रंग से रंगने की हठ करे ? कब उस सत्त्व का पता लगा लेगा। हो सकता है परीक्षा की घड़ी आन पर उसका रंग ही उड़ जाए। मुक लगा जब उस कम्पनाशील गिला नमशान की मुडर से विपन्नकर अपना जड़ सत्य मकान के उन उद्धत वासियों के शानो में कुसपुमाया हो जा असन्तुष्ट को उससे कहीं अधिक पहचानने है। यह जो वास्तुगत सौन्दर्य दोख पड़ रहा है यह क्या है ? मैं कहता हूँ यह स्वयं ही अपना घर बनानेवाले गृहपति के चरित्र और उसकी जरूरतों में से अन्दर से बाहर की आर जमरा विकसित हुआ है। ऐसा बाह्य रूप की बिलकुल चिन्ता किए बिना एक अक्षत सत्यनिष्ठा और उन्मात्ता की प्रेरणा से ही सम्भव हो पाया है। और जितना भी अतिरिक्त सौन्दर्य आग निरजा जाएगा वह ऐसे ही अप्रत्याश जीवत सौन्दर्य से अनुप्राणित होगा। एक चित्रकार से प्रेरित तो जानिएगा कि ' इस प्रदेश के सजस मुडर पर लकड़ी के जट्टा से बने शिखरों से एन्तम भूय गरीबा के मामूली भाष्य और कुटीर ही हैं। इनके बाह्य रूप की असाधारणता नहीं, ये खोल जिनके आवरण हैं उन लोगों का जीवन ही इन्हें एक चित्र में स्थान देने योग्य बनाता है। एक नागरिक का उपनगर स्थित घर भी उतना ही रोचक बन सकता

है, वगैरे कि वह भी अपने जीवन का उन गरीबा जितना ही सादा बना ल, एक उंची कल्पना के अनुस्यू दान न और अपने घर का बनामस बनान और साज-सज्जित करने में कम से कम श्रम कर। वास्तुविद्या के आदग इन गानागहा का एक उदा भाग वस्तुन स्वायत्ता हाता है। मिनम्बर की आधिया तयार मागकर अटवाए गए परा की तरह उन्हें उठाकर न जा मरनी हैं जबकि ठोस मकाना का व बाह्य हानि नहीं पहुंचा सकनी। जिनके नहखाना मन जून का तेज है न गगन व स्थापन में कलात्मकता पाए बिना भी अपना काम चला सकत हैं। क्या होना यदि साहित्य का अनवृत्त करने में सकना जितनी ही भुमीवन केनी जानी और हमारे पगम्बर घम-पुस्तका के प्रियर भागा का मजान में उतना ही समय लात जितना मन्त्रि गिरजा के गिल्पी हैं मजान में लगात हैं ? इसी गह में ललित साहित्य और कलाआ की तथा उनसे प्रचारका की मष्टि जानी है। यह ता व्यक्ति विगप की अपनी निजी बात अजिज है कि उनसे घर में घर के ऊपर या नीचे कुछ पट्टिया किम तरीक से टंगी या तिरछी जड़ी जाए और उसके घर पर कौन-से रंग पान जाए। जब वह स्वयं सिमा भाव विगप में भरकर पट्टिया का बैसा जडता है और वण विगप पानता है तब ऐसा करना अयपूण जाना है। लेकिन जस ही व्यक्ति विगप की भाव प्रेरणा समाप्त हुई निमाण स्वयं अपना तावून बनान का और गिल्पी कन्न व ऊपर की कारीगरी का रूप ग्रहण कर रता है और कई तावून बनान वान का हारार नाम मिद्ध हा जाना है। आवन के प्रति निगगा जयवा उपना व वगीभूत हारर एक व्यक्ति कहता है अपने परा व नीच की मुट्टी भर मिट्टी नकर उससे रंग में अपना घर बना न पान ला ? क्या वह अपने जन्मि घर भगीन कन्न के वार में साव रहा है ? क्या न इस कन्नवान पर एक पमा बार गिया जाए ? कितनी फुरमन में बैठकर साची है उमन यह बात ! मुट्टा भर फून मिट्टा बना रत हैं ? अच्छा हा कि आप अपने घर पर अपने चहरे जमा रंग पान नें। आपके स्थान पर आपका घर ही कभी पीना पड़े कभी गुलाबी। गृह निमाण गिल्पी में सुधार का यह उत्तम प्रयास हागा। जब आप मर अनकार बनाकर तयार कर देंगे मैं पत्न नूता।

आपें से पहन मैं किमनी तयार कर ता। मर घर में किसी भी तरफ में वया का जल धुम नहीं सजता था फिर भी मैं अगन-वान का छिपटिया (Shingles) में छत दिया। इससे लिए मैं नट्टा में उतर पढ़े कनना व गान जनगड रूपा

को चुन लिया था और उनसे किनारा को रखा करने सीधा कर लिया था।

इस प्रकार दिगम्बिया की जगह से मजबूत और पलस्तन किया हुआ मेरा घर नैवार हो गया जो लगभग चौड़ा पाँच फुट लम्बा और आठ फुट ऊँचा है, जिसमें एक ऊपर का कमरा और एक छोटी काठनी अलग म है। हर दोबारा म एक बरी मिडिया है दो चोर दरवाजे एक द्वार अलग म है और सामने इटो का बाग एक खुला है। मैं अपने घर पर सभी चीजें लागत नीचे द रहा हूँ। प्रयुक्त सामग्री का सामान्य मध्य ही मैंने बताया है। श्रम को मैंने नहीं गिना है क्योंकि वह मैंने स्वयं किया है। मैं श्रम का पूरा व्योम लिख रहा हूँ, क्योंकि बहुत ही कम श्रम घर पर आई श्रम को एकदम ठाक ठाक बता पाते हैं। प्रयुक्त सामग्री को अलग अलग रोमन तो और भी कम लोग बता पाएंगे। अस्तु

सहने	६०३३ अगिरास भुगी के तले
छत और अमन-जाल के तिर रही	
छिपटिया	६००
नकडी की पननी पट्टिया	१२५
नीलाबारा नमरानी मिडिया	२४२
एक हजार पुरानी डर	४००
चून के दो पीप	२४० बड बाल
बाल	० १ आवश्यकता से अधिक
मटल डो लोहा	० १५
कीलें	३६०
चून और पब	० १८
माकल	० १०
सधिया मिट्टी	० ०१
तराई	१४० काफी बडा भाग मैंने पीठ पर ढोया
कुन	२८१ १ नाल

यही सब सामान है। गहरी छत और डेल रूम अलग है जो मुझे उपवेशी

अधिकारका मुफ्त भिन गए। घर को पूरा करके जो मामान बच रहा उसमें मैं नाल म ही एक छोटा-सा मायमान बना लिया।

मैं एन ऐमा घर भी बनाना चाहता हू जो वानकाड के माग पर स्थित किसी भवन को गाा गोस्त म पीछे ंगेड मके। पर गाा यही है कि वह मुझे वनमान न जिनना ही आनन्द दे और उमपर इससे अधिक लागत न आए।

मैं इस नतीजे पर पहुँचा हू कि एक विद्यार्थी अपन जीवन भर क िगा एक र ठीक उनना ही धन व्यय करके बना सकता है जितना पन वह एक बप में कराये के रूप में द डानता है। गाा में सीमा से बढकर बात कह गया हू। मग नेवेदन है मेरी यह जीम मर लिए नही मानव-जाति के लिए है। मेरी मनकमिया गीर अनियमितताए मर वक्तव्य के सत्य को प्रभावित नही करती। मरी बात म टुट भट और पाखंड हा मवता है। भूमी को गहू के दान स अलग करना मेर निए फठिन है और इसका मुझे खेद भी है। फिर भी प्रस्तुत रिषय पर मैं अपन खल गीर उमुक्त विचार ही रखगा क्वाकि इसमें मन और गरीर दोना ही को अनुपम सानि मिलती है। मैंने निणय कर लिया है कि मैं सज्जनता के नाम पर शतान की बकालत नही करगा। मैं मचाई के पक्ष म ंगे शरू कहन का प्रयास कर रहा हू। कम्भिज नानिज म छात्रावास के एक कमरे का कि-गया मात्र तीम डालर बापिर है। कमरा मेर इस घर से मामूली बडा हागा। इतना तब है जब निगम को यह सुविधा रही कि उसन एक उत क नीचे बगावर-बराबर बत्तीम कमरे निवाल दिग और रहनेवाल का यह अमुविधा है कि उमे इतने मारे पडोसियो के शोर-शराब के बीच रहना पडता है। और हा सनना हैं कि कमरा उस चौथी मजिल पर मिने। मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकना कि यदि हमम इस बारे मे मच्चा विवेक हो ता यही नहीं कि थोनी गिमा म काम चन जाएगा बन्कि यह भी कि गिमा पर होन वाले व्यय म ंहुन बडी बटौनी हा जाएगी। नरअमल काफी अधिक ञान ता विद्यार्थी पहने ही पा चुका होना है। कम्भिज का या कही का भी छात्र जिन मुवि घाओ की अपेक्षा करता है उह पाने के लिए उसे या किसीको भी उममे दम गुना जीवन शक्ति व्यय करना पडती है जितनी दोना बार से समुचित व्यवस्था की जान पर करनी पड सकती है जिनके लिए मवमे अधिक धन चाह जाता है वे चीजें कभी भी विद्यार्थी के सर्वाधिक उपयोग की चीजें नहीं होना। उदाहरणाथ कप क विल म टयूना की फीम एक खाग मद ञानी है। नकिन नमगे भी अधिक मू-यवान

श्रेया विद्यार्थी को सुसंस्कृत समभावमयिना के समग स प्राप्त हुआ बरती ! और इसमें लिए कोई फीस नहीं ली जाती । एक कालिज की स्थापना करने का तरीका सामान्यतः यही तो है कि डाक्टर और मेंटा म चंदा जुटाया जाता है और जब ज़रूरत पड़े तो धर्म विभाजन के सिद्धांत का उसके चरम तक अनुगमन किया जाता है । मर विचार में इस सिद्धान्त का आश्रय तभी लिया जाना चाहिए जब पूर्ण चौरमी सम्भव हो सके । और फिर क्या होता है एक ठकेदार बुता लिया जाता है जो साबुता है और हिमाय लगाता है । वह कुत्र आयरिंग या अन्य मजदूरों का लगा देता है जो कालिज की अमल नीय रखते हैं । जिन्हें बहा पटना है, उन्हें तो बस स्वयं का बहा के अनुकूल ढालना होता है । इस प्रमाण का क्या अनेकाने पीलिया का गुणता पड़ता है । मर विचार में तो विद्यार्थियों के लिए भा और उमम लाभान्वित पान के इच्छुक सभीके लिए वतमान प्रणारी में अकड़ा यह रहेगा कि सम्यग्चित लोग भवन की नींव स्वयं रखें । एक विद्यार्थी अनिकाय मानव धर्म से विधिपूर्वक बचकर जिन धार्मिक अवकाश और निवृत्ति को प्राप्त करना है वह निवृत्त और लाभ रहित होती है । इस प्रकार वह धनपूर्वक अपने का उम अनुभव से वचित कर लेता है जो अकेला अनुभव उमके अवकाश का कृताप बना सकता था । एत कहता है ' त्वजि आपका यह म उब ता नहीं कि विद्यार्थियों का अपने निमाणा के बदले हाथा में धर्म करना चाहिए । मरा ठीक यही मतलब ता नहीं है लेकिन जों मैं कहता हूँ उमका य सम्जन बहुत कुछ ऐसा ही मतलब लगा सकते हैं । मरा मतलब है कि विद्यार्थियों को जीवन से बस तिसबाह या सिफ उमका अध्ययन ही नहीं करना है बल्कि लगनपूर्वक आरम्भ से अन्त तक उम जीना है । उह नहीं भूलना ठ कि इस खर्चीन खेन के लिए मयाज उह भरपूर धन दे रहा है । जीवन के प्रयाणा में तत्काल उतरकर नहीं तो और किस रास्ते से मुक्त जान की अधिक अचरी शिक्षा ले सकते हैं ? मैं समझता हूँ उपयुक्त विधि उनका दिमागा को जेना हा मकिय बना मकयी जितना गणित बनाती है । उम हरणाय मैं एर लम्ब का कना और विज्ञान की शिक्षा निवाना चाहता हूँ । मैं इसका लिए रुढ पय पर नहीं चरगा । मैं उम किसी प्रोफेसर के पास नहीं भेजगा, जहा जीवन जान की कता छेकर सभी कुछ पढ़ाया और अभ्यास कराया जाता है—यानी दूरबीन का गुदबीन के द्वारा असार का सर्वेक्षण करना पर अपनी प्राप्ति जाण में सभी कुछ न भवना रगायनगास्त्र अथवा यत्रगास्त्र पटना पर अपना

रागी पकाना न जानना जीर्ण राखी कम कमाई जानी है यह न मानना, नपचून के उपग्रह खाजना पर अपनी जाखा म पड़े रज-वणा कान दख सकना, मित्र की एक बंद म दत्ता ऊ हान की कल्पना करना पर जपन चारा आर उमटनवान दया द्वारा सहज ही निगल लिया जाना। माचिए, माम के अंत म किमन अधिक प्रगति की हागी—उम नहके न चिनन खान मे कच्चा लाहो स्वय मोन स्वय उमे गलाकर साफ किया और जपन लिए चारू बनाया और इसके लिए जितना जरूरी था उतना माय-माय पज भी था उम लड़क न जिमन सम्यान म धातु विज्ञान पर भाषण मुन और इसी बीच अपन पिता द्वारा भेजा हुआ राजर का बगिया चाकू हथिया लिया ? मना अपनी उगली स्वय वात लन की सम्भावना किम विद्यार्थी के लिए अधिक है ? मरे आचय का टिमना न रहा जब कालेज छात्र ममय मुझे बताया गया कि मैं नाना चालन भी सीता है। कही एक बार भी मैं बन्दर-गाह म उतर गया होता ता उमम कही अधिक मान जाता। एक निम्न विद्यार्थी भी अध्ययन करता है और उम मित्र राजनीतिक अथ-व्यवस्था पगई जानी है जबकि जावन की अथ-व्यवस्था जैस विषय का जो दान का ममकम है, हमारे कालिजा म मयाथ अध्यापन तक नहीं किया जाता। परिणाम यह होता है कि जब विद्यार्थी जदम स्मिथ, रिक्कार्ड और म के ग्रंथ म डूबा होता है तब उमका पिता अथाह अन्य ऋणा म गक हो जाता है।

जो वान हमार कालिजा के वार म है वही इन भकडा जाधुनिक प्रगतियों के वार म भी ठीक है। इन सब विषय म एक भ्रम पता है। अमन म हमारा ही असन्दिग्ध प्रगति नहीं जानी। शैतान आरम्भ म खरीद गए गेयर पग और इन प्रगति प्रयामा म बाद म लगाई गई अनगिनत रातिया पर चरबद्ध व्याज वमूल कता चला जाता है और हमारे आबिक्कार ऐसे खूबमूग्न गिलौन बन जान का ग्राध्य हैं जो असल गम्भीर विषय म हमारा ध्यान हटाते हैं। एक अनुन्नत लभ्य के वे उन्नत माघन हैं। इस लभ्य तक पहुचना ता पहन ही बहुत सरल था, उनका ही जिनना कि रेल मे वास्टन या यूवाक पहुचना। हम मन मटेकमात्र तक एक चुम्बकीय तार-लाइन प्रिछान की वस्तु जल्दी है लेकिन मन और टेकमात्र के पास ऐसी कई भी विरोध सूचना नहीं है जिसे वे एक-दूसरे तक भेजना चाहते हैं। एक व्यक्ति एक प्रतिष्ठित बहरी स्त्री से परिचित होन के लिए व्यग्र था। जब वह मामन लाया गया और उम स्त्री के श्रवण-यंत्र का एक मित्र उमरे हाथा म

गिम्ना विद्यार्थी को सुसम्पन्न, सुसंस्कृत समायामयिको के समर्थ से प्राप्त हुआ करता है और इसके लिए कोई भीम नहीं सी जाती। एक कानिब की स्थापना करने का तरीका सामान्यतः यही तो है कि डानर और सेंटो में चढ़ा जुटाया जाता है और तब अर्धे वनकर श्रम विभाजन के मिद्वान्त का उसका चरम तक अनुगमन किया जाता है। मेरे विचार में इस मिद्वान्त का आश्रय नहीं लिया जाता चाहिए जब पूरी चौकसी सम्भव हो सके। और फिर क्या होता है एक ठेकेदार बुला लिया जाता है जो साक्षता है और हिसाब लगाता है। वह कुछ आयरिस या जैन मजदूरों का नंगा देता है जो कालिन की जमल नीय रखते हैं। जिन्हें महा पढ़ना है, उन्हें तो बस स्वयं का बड़ा के अनकूल डानना हाथ है। इस प्रमाद का फल गानवाली पीढिया को भुगतना पड़ता है। मेरे विचार में तो विद्यार्थियों के लिए भी और उससे लाभान्वित होने के इच्छुक सभी के लिए वर्तमान प्रणाली में अच्छा यह रहूँगा कि सम्बन्धित नाम भवन की नीय स्वयं रखें। एक विद्यार्थी अनिवार्य मानव श्रम से विधिपूर्वक वचकर जिन काम्य अवकाश और निवृत्ति को प्राप्त करना है वह निष्कृष्ट और साम रक्षित होती है। इस प्रकार वह धनपूर्वक अपने को उस अनुभव से वञ्चित कर लेता है जो अकला अनुभव उमर अवकाश का कृताभ बना सकता था। एवं कहता है लेकिन जापका यत् मनब ता नहीं कि विद्यार्थियों को अपने निमाणा के बन्ने हाथों से श्रम करना चाहिए। परा ठीक यही मनलब तो नहीं है लेकिन जो मैं करता हूँ उसका यत् सज्जन बहुत कुछ गसा ही मनलब लगा सकते हैं। मरा मनलब है कि विद्यार्थियों को जीवन में बस विलबाद या मिफ उसका अध्ययन ही नहीं करना है बल्कि लगनपूर्वक आरम्भ से अतः तक उसे जीता है। उन्हीं नहा मूलना है कि इस खर्चने खेल के लिए ममाज उन्हें भरपूर धन दे रहा है। जीवन के प्रयाणा में तत्काल उत्तरकर नहीं तो और किस रास्ते में युवक जीन की जितक अच्छा गिना न सकन हैं ? मैं समझता हूँ उपयुक्त विधि उनका दिमागा का उमना ही सक्रिय बना सकगा जितना गणित बनाती है। उन्हीं हरणाय मैं एक लड़के को कना और विज्ञान की शिक्षा दिलाना चाहता हूँ। मैं इसके लिए म्म गय पर नहा चरगा। मैं उम किसी प्रोफेसर के पास नहीं भेजगा, जहा जीवन जीन की कना छात्रकर सभी कुछ पढ़ाया और अभ्यास कराया जाता है—यानी दूरबीन वा सुदबीन के द्वारा मसार का सर्वेक्षण करना पर अपना प्राकृतिक आय म कभी कुछ न दगना रमायन गाम्म जववा यज गाम्म पन्ना पर अपना

प्राप्ति पकाना न जानना और गरीब वसु कमाई जाती है वह न सोचना नपचनक उपग्रह मानना पर अपना जाना म पटे रख-वाँकान दब सकना निरुक्त की एक बूद म दया क हान की कचना करना पर अपने चांग जार उमनवान गनों द्वारा मन्त्र ही निगत किया जाना । साचिए, मान के अन्त म किमन अधिक प्राप्ति की हामी—उस लम्बे न निमन खान से कच्चा लाग स्वयं छाग स्वयं उमे गताकर माफ किया जार जपन लिए चारू बनाया औ इसके लिए जितना जल्दी या उतना मान-साय पा भी या उस नडक में जिसन सम्मान म धानु विमान पर मापन मुन और इन्ना बीच अपन पिता द्वारा भेजा हुआ रॉजर का बटिया चाकू हथिया लिया ? भना अपनी उतावा स्वयं ग्राट लेने की मग्नावना किन विद्यार्थी व लिए अधिक ह ? मे जाचय का ठिकाना न रहा जब कारेज ध्यान समय मुक्त बतारा गया कि मैं नाना-चानन भी सीखा है । वही एक बार भी मैं बल्सर-गाह म उतर गया हाता ना उनन वहीं अत्रिक सीग जाता । एक 'निधन' विद्यार्थी भा 'अध्ययन' करता ह और 'न मिक राजनीति' जय-व्यवस्था पण्ड जाती है जबकि जावन की अय-व्यवस्था जैस विपन का जो दान का समकथ है हमार कानिना में मनान अध्यापन तक नहा किया जाना । परिणाम यह हाता है कि जब विद्यार्थी जन्म म्मिन पिताओं और म क प्रया म दूरा होता है तब उसका पिता अयाद अय कणा मे गक हा जाता है ।

जा बाग हमार कानजों क धार में है वही दन सकटा जाधुनिक प्राप्तिना' क धार म भा टाक है । इन सबक विपन म एक प्रम पैना है । असन म हमसा ही छपन्तिग प्राप्ति नहा शनी । गैतान जारमन म बरीद गए गमर पर और दन प्राप्ति-प्रनाषा म बाग में गगार्ट गर्द अनगिनन गणिया पर चरबुद्धि ग्राज वसूत कना बना जाता है और हमार आविष्कार एन खूबनूग्न मिलीन वन जान का बाध्य हैं आ जसन गम्भार विपया स हमार ध्यान हटात हैं । एक अनुन्नन सत्य के व ज्ञान प्राप्त हैं । दम नय तक पहुचना ना पहन ही बहुत मुरत था, उतना ही जितना कि रन म वाग्मन या 'यूनाक' पहुचना । हम मेन सटकमात्र तक एक चुम्ब काय गार-वाग्मन विद्यन की बन्त जल्दी है लेकिन मेन और टकमात्र के पास एसा का भा विशेष सूचना नहीं है जिस व एक-दूसर तक भेजना चाहन हैं । एक व्यक्ति एक प्रतिष्ठित बहर्ग म्त्री ने परिचित हान क लिए व्यग्र था । तब वह नामन लाया गया और उस स्त्री क श्रवण-चन का एक मिरा उमने गायों म

पता चिन्ता गया तब उसका पाम कहन का कुछ नहीं मिला। इन दोनों नगरों का स्थिति भी और इनकी ही विषय है। लाता है प्रचान उद्देश्य से जो म बात करना है मवल की बातें करना नहीं। हम अनानक के बीच लम्बा मुरग घनाकर नई और पुरानी दुनिया के बीच के माग को कुछ मन्नाह कम कर दन को उत्पन्न है लेकिन इस माग में को हाथर जो पहला समाचार अमराह के सड़कडाल काना पर पडगा वह गायन यह होगा कि राजकुमारी अदलत का काला कानी हो गई है। यह आवश्यक नतीजा है कि एक मिनट में एक मील गैरनवाला घुसवार विश्वय ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समाचारों का वाहक होता है। वह काद ईसाई धर्म प्रचारक नहीं होता न ही वह बादबल का जान बर्पास्त होता है जो निहिया और जंगली गहद साकर प्रचार करता घूमता था। मुक्त गक ह कि पलाइय कादम्बस गारते का एक दाता भी कभी मिल सक ले गए हा।

एक व्यक्ति मुझसे बोला जाइय है तुम पता जमा नही करते तुम्हें यात्रा करन से बहुत प्रेम है क्या न तुम गाँवों पकना, आज ही पिचवग पहुच और द्युत का भ्रमण करा ? लेकिन मैं उससे अधिक बुद्धिमान हूँ। मैं सीता है कि सबसे त्वरित यात्री वह है जो पत्त जाना है। मरा अपन मिता निबन्ध है चला दलें कौन यहा पहुचता है। दूसरी तीस मीन की है किगया पत्र सेंट है। यह एक जिन का विज्ञानी के लगभग है। मुक्त के दिन याद है जब इसा मडक पर थमिका को साठ सेंट प्रतिनिधि मिला करते थे। चलिए मैं पत्त चवता हूँ और रात में पहले बहा पहुच जाना हूँ। मैं सप्ताह-सप्ताह भर लगातार इसी रपनार से यात्राए की हैं। और भाग्यवत् हा ममभिग इस मौसम में यानि काम आपका मिल भी सका तो पहन आप निराश जितना था कमाएंगे तब कत या सम्भव हुआ तो आज मन्ना तब आप सहय तब पहुच पाएंगे। पिचवग जान के बल दिन का बड़ा भाग

१ १९६२ में १८६२ तक जो जन मने का एक कुत्तर राजमारा, जो उरूक आरु सग्ड का पानी था। अनेक अनेक काँ सेव राग-अग्न र न लगी थी।

२ हा। वाचन का नैर्दिश को और मन्त है। जो का वग्न करन हुए का निरा है न न ऊट न माली न बना एक माटा को पानवा या और चने का पनी अपनी कमर पर बा ता था। निहिया और चन्ना सह-अन्य भाजन था। सा मन्नाह का वप निगमा हमने किया था।

३ यह रायन का वन में बाघों परियों का भार मन्त है।

आप महा काम करने में जिना देंगे। इस प्रकार यदि रेल वाइन इत्यादि का चारा बनाना में भी पहच गइ तब भी, मैं समझता हूँ मैं आपसे आग ही रहूँगा। और जहाँ तक नष्टान दायन और तद्विषयक अनुभव प्राप्त करने का सम्बन्ध है मैं आपसे ज्ञान का बहुत पीछे छाड़ जाऊँगा।

यह सावधानीमय नियम है और इसकाई कभी बिगड़ नहीं बना सकता। रना पर भी यह एकत्र पूरा उत्तरता है। घरती के चप्पे चप्पे पर पूरी मानव-जानि का उपलब्ध रेल-आयनों बनाना, इस भूगर्भ के पूरे घराने का नाप लन के घरा घर ह। लोग का एक घुघली-सी कल्पना है कि यदि मयूक पूजी और हम का यह दिया-कलाप पयाप्त तम्य समय तक जारी रखा जाए तो सभी मानव कही न कही से नहीं के बराबर माहा दकर माटी पर सवार हा ही लेंगे और तब याना में नहीं के बराबर समय लगा करेगा। लेकिन लीजिए एक भीड़ स्टेशन पर आ जमनी है कण्टनटर चित्ताता है, सब चढ़ जाग और जब धुआ साफ होता है और भाप घूल जाती है तो दीख पड़ता है कि चटे ता थोड़ा ही है गप कुचल गए ह। एक गोकपूष दुघटना ही इस कहा जाएगा। निस्मिन्दह जो भाट जितना कमा चुकेगे अथवा जा तत्र तत्र जीवन बच पाएंगे व गाड़ी चढ़ लेंगे, लेकिन व उम समय तब माना करने की इच्छा और आग्रह को शायद खा चुक हंगे। जीवन के अन्तिम महत्त्वपूर्ण भाग में एक सन्दिग्ध स्वच्छता का उपभाग कर लिया जाए इसका लिए पढ़ने का सर्वोत्तम भाग खपा कमान में बरबाद कर देना क्या ही है जैसा एक अग्रज ने किया था। वह भारत गया कि वहाँ से घन बदारकर वह हर्लैंड लौट आने पर एक कवि का जीवन जिताए। उम बाबल का तो तत्पश्चात् माघना में लग जाना चाहिए था। तब भर के भूमिगया में रहनेवाले तम साल आयरिंग लागाने चीमकर क्ता करने बनाकर क्या हमने एक गान्धार काम नहीं किया है? मेरा उत्तर है हा, तुम्हारा एक दृष्टि ने तो गान्धार ही किया है। काँच बुग काम करने उममें तो यह अच्छा हा है। आप लाग मर माई हैं और मैं माचना हूँ हम गदगी में स्नान हाइ गोल्डन व बन्ने किभी थ्रेप्टनर काम में आप अपना समय लागाने तो अच्छा जाना।

घर पूरा बना चुकने से पढ़ने ही निवट की मुलायम और स्तौली मिट्टीवाली गार्ड एण्ड जमान में गान कर नेम आर एक छोटे भाग में जानू, मक्का मटर

और गलजम मैंने बो दिए थे। यह इसलिए कि एक सट्टन और निमल साधन मे दम या बारह डालर कमाकर मैं अपने कुछ असाधारण सचें पूरे कर सकूँ। आम पास की सारी जमीन लगभग ग्यारह एकड़ है जिसके अधिकांश भाग पर चौड और हिकरी के पड खड हैं। पिछनी मौसम में इसे आठ डालर आठ सेंट प्रति एकड़ क हिमाय में बच दिया गया था। एक किसान ने मुझसे कहा 'यह जमीन बेकार है। हमपर ता ची ची करनेवाले गिलहरिया हो पैदा हो सकते हैं।' मैं इस भूमि का स्वामी रहा था सिर्फ उपवगी (Squatter) था और यह आगा भी मुझे नहीं थी कि मैं दूसरी बार भी इतनी ही जमीन जालगा इसलिए मैंन बाद बिलकुल नये डाली और उस एन्साय ही पूरा निराया भी नहीं। इस बसाते हुए कई ठेरी जड मैंन उवाड की थी जो काफी समय तक मेरा इधन का काम देती रही। जुती भूमि में महा-बहा कुछ वस्तु मैंन खानी छाड दिए थे जो गरमिया में हुई सम का धनी उपज का बीच साफ दीख पडते थे। मेरे घर के पीछे जा सूखे और व्यापार के अयोग्य ठंड सडे थे उनसे और तालाब में बटकर आई सबड़ी से इधन की मरी बाकी जरूरत पूरी हो गई। जुताई के लिए मुझे एक हल और एक हनकाहा उपलब्ध करना पडा। वस हल की मठ मैंन ही थामी। पहली मौसम में ओठार बीज धम जाणि कुन मित्रकर सेती पर मैंने १४ ७०३ डालर खच किए। बाज के लिए मक्का मुझे ऐसे ही मिन गई थी। मक्का के लिए कोई नास कीमत नहीं दनी पानी जड तक कि पर्याप्त से अधिक बुवाई न करनी हा। बारह बुाल सेम अठारह बुाल आलू कुछ मटर और मीठी मक्का सेम मडगी। पीली मक्का तीर गलजम की बुवाई मैंतनी कर हो गई थी कि कुछ न उग गया। खन में मुझे कुल आप इस प्रकार हुई

कुल आय	०३ ४४
खच	१४ ७२ ३
नेप	८ ७१ ३ डालर

यह उस उपज के अतिरिक्त है जो खा डाली गई और जिसकी कीमत तभी की तभी ४ ५० डालर मैंन बूनी थी। बाड़ी-ना घास जा मैं उगा सरता था, मैंने उगाई और इस हानि को इस उपज ने आवश्यकता से अधिक पूरा कर दिया। यद्यपि मग प्रयोग अल्पावधि का था और आंशिक रूप से वन् अस्थायी भी था

तब भी मानव की आत्मा के और आज दिन के महत्त्व का विचार करत हुए भरा विश्वास है कि उस वय वानकाट के निमी भी किसान से अधिक पदा में की ।

आज वय मैंने और भी अच्छा पत्र पाया । इस बार मैंने लगभग तिहाई एकड़ भूमि ली और उसे अच्छी तरह फावट से खोटा डाला । आधार यग' जैसे सेवका द्वारा कृषि-कर्म पर लिखित अनेक प्रतिष्ठित ग्रन्थ मुझ जरा भी घमरा नहीं गये । और दो वर्षों के अनुभव में मैंने सीखा कि यदि व्यक्ति मादारी स रहे, जो उगाए वही खाए और जितना खाए उतना ही उगाए और अपनी उपज के बदले में उच्चस्तरीय कीमती चीजाँ की अपेक्षा मात्रा का न लता उसे बहुत ही थोड़ी जमीन जोतनी पड़ेगी । ऐसी स्थिति में बना स हन बनवाने में उदने जमीन की फावटें ॥ खोदना और पुराने टुकड़े में राख डालने के बदले हर बार ताजा टुकड़ा चुनना सम्भव रहता । वह व्यक्ति अपना माग कृषि-कर्म समिपक बाकी बचे पण्डा में बाय हाथ लेकर लगा और उसे आज की तरह किसी वन या छोटे या गाय या भूखर से उधा रहना नहीं पड़ेगा । आज की आर्थिक या सामाजिक व्यवस्थाओं की सम्पन्नता या विफलता में मुझ कोई रुचि नहीं । इसलिए मैं इस विषय पर निराल विचार रखना चाहता हूँ । मैं वानकाट के निमी भी किसान से अधिक स्वच्छ या, क्योंकि मैं निमी एक घर या एक पत स जुड़ा नहीं था और जानी उस प्रतिभा के आ प्रतिपल कुटिम में कुटिल रूप धारण करती रहती है निर्देन पर चैन सकता था । जिनके वे थे, में उनसे अधिक सम्पन्न था और यदि भरा घर जल जाना और मरी फमल नष्ट हो जानी सब भी लाभम पहुँच जितना सम्पन्नता में रहता ही ।

मैं यह साक्षात् पर विचार हूँ कि मनुष्या न पशुओं का उतना नहा, जितना कि पशुओं न मनुष्यों का पालन करना रहा है और पशु उनसे ही अनुपात में मनुष्यों से अधिक स्वतंत्र हैं । मनुष्यों और बना ने काम को आवम में बाट लिया है और यदि हम अनिवार्य धर्म का ही विचाराय चुनें तो हम देखेंगे कि वह अधिक लाभ में है, क्योंकि उनसे आगेवाला जैन उतना ही अधिक बड़ा है । आत्मी अपने भाग के कार्य का एक अंश उन छ मन्नाहा में करता है जब वह धाम सुगाना है, और यह काम कोई लड़का या पित्रवाइ नहीं डालता । जो जाति सभी तरह में साँप जीवन विनाश चाहती है वह निश्चय ही पशु धर्म का उपयोग करने जमी

बढ़ी चलती नहीं कर सकती। दानिना की जाति की बात मैं नहीं करता। मैं तो यह है कि उनको जानि न बसा हुआ है न निकट भविष्य में उसके होने की सम्भावना है और मेरे निश्चित मतानुसार न उसका होगा उचित ही है। कुछ भी हो चाहा या बल मैं तो कभी न रख और बसा उससे खेता का अपना काम न कराऊ। मुझे डर रहता है कि मैं सिर्फ घोड़ों या चरवाहा बनकर ही न रह जाऊ। अगर समाज का काम करने में काम प्रतीत होता है तो क्या हम निश्चय है कि एक का काम दूसरे की हानि नहीं है और घुड़भाग व गोरवों को भी आत्म तुष्टि का उतना ही हर्ष है जितना मालिक का? माना कि इस संहयोग के बिना निर्माण व कई काम न हो पाते और निर्माण के इस गौरव को छोड़ा और बलो व साथ बाढ़न में कोई हज़ारों हैं तो क्या इसमें यह मतबल निवर्तना है कि अकेला मानव उसमें भी अधिक गौरवपूर्ण काम नहीं कर सकता था। जब मनुष्य पशुजा की सहायता लेकर न सिर्फ अनावश्यक अवकाश पर शिलामय और निरर्थक काम भी करता आरम्भ कर देता है तब अनिवार्य ही मृत्यु को योग बच पाते हैं जो बनास काय विनिमय में हिस्से आया काम करें। दूसरे पक्ष में वे बनवाने व गन्तव्य बन जाते हैं। इस प्रकार श्रामी को अपने जन्म के पशु व ही लिए नहीं उमक प्रतीक बाहरवाले पशु व लिए भी भ्रम करना पड़ता है। हमारे पास इतना पत्थर व बने कितने भी मकान क्या न हा किसान की सम्पन्नता का मापदण्ड आज तक यही है कि उसका कोठार घर से कितना ऊँचा है। क्या जाना है इस नगर में गडआ बना और छोडा के शान विनालतम है और राजकीय भवना की दृष्टि में भी यह नगर पीछे नहीं है। जिन इस प्रश्न में अब धिना पूरा अवकाश उमुक्त भाषणा व लिए बहुत ही कम हैं। राष्ट्र अपने वास्तु विषय में नहीं जमोतिक चिंतन की अपनी गति में आत्मसाक्षात्कार की पात्रता क्यों न खात्र? पूर्व व सारे सहृदय की सुलना में एक भगवदगीता कितनी उपाय प्रगमनीय है। मस्तिष्क और भीनारों राजाजा के विलासोत्तरण है। एक सरल स्वच्छ मानव किसी राजा को प्रेरणा में थम नहीं करता। प्रतिभा विमी सम्राट की दासी नहीं होती न ही नगण्य सीमा तक भले ही हा साता चादी या सगमर मर उसका उमरगा होने हैं। नत्र भला यह स्तना अधिक पत्थर किन नम्य की प्रति व लिए बना जाता है? नत्र मैं आर्कडिया गया तो मैं वहा विमीको भी

पत्थर तराशन हुए नहीं दखा । जानिया पर एन दावानी महन्त्राकाया हासी रहती है कि वे अपनी स्मृति का बनाए रखने के लिए बहुत सारे तराशे हुए पत्थर छांट जाए । कितना अच्छा जाना कि अपने आचरण करने और भवारन के लिए बना ही कष्ट उठान । एक महिचाय या मन्भाव चाय जिनसे उन्हे स्मारक से अधिक स्मरणीय जाना है । मुक्त पत्थर को उनकी अपनी जगह देखना ही ज्यादा जाना है । येबीज की विनाशना मन्त्री और अविष्ट है । एक मन्त्रे ईमानदार जादमी के मन के चाय और मिची पत्थर की बीजाय मौ द्वारा बान येबीज से बहुत अधिक मन्त्र और विचारपूर्ण है । येबीज तो जीवन के मन्त्रे लभ्य म बहुत दूर भन्त्र गया है । चा घम और मन्त्रताय जगती और अमन्त्र जानी हैं वही गान-दार पूजागह बनानी हैं पर जिह ईसायन कहा जा मन्त्रे व एमा नहीं करती । एक जानि जितना पत्थर मन्त्री है उसका जमिनाय उसकी कन्त्र जाना के ही काम आता है । वह अपने को जिह ही दफना नेनी है । और इन पिगमिडा म आदयवचित्त नान की बान यदि कुछ है तो यही कि इतनी बड़ी मन्त्रा म उतर पतिन-दलित लोग उपनयन हा मन्त्र जिह्ने एक महन्त्राकायी अहमक के लिए एक कन्त्र बनाने म अपने जीवन मन्त्र पर लिए । इन अहमक के लिए अधिक साहम और बुद्धिमत्ता की बान यह जानी कि कन्त्र नील नान म डरकर मर जाना और अपने गरीर को कुत्ता के हवान कर देना । गायन में उनके लिए और उन मन्त्रदूरा के लिए भी कोई गिहाइ का उपाय नह मन्त्र पर मर पाम उनके लिए ममय नहीं है । जहा तक निमा ताया के घम और उनके कला प्रेम का मन्त्र घ है मन्त्र के मन्दिर हा या अमरीका के वक्त्र विश्व भर म मन्त्रि बहुत कुछ एक जमी ही ह । लाभ म बहुत अधिक उनकी कीमत चुकानी पडती है । दम्भ उसका मूल प्रेरणा-म्यात बनता है । लहसुन राटी और मन्त्रन की लानमा उसका बनाव देती है । एक होनहार युवक बाम्नु विन्त्र वाक्त्रम अपने विन्त्रू वियम कायज पर मन्त्र पेंमित और मापक म एक मन्त्रावृति बनाना है और सगतराग डा-मन एन्त्र मन्त्र को निमाग का काम मौप दिया जाता है । जब तीम गाना-म्या इम भवन का गिरन हुए नन्त्र लता हैं तब मानव जानि का आपा म दमनी प्रतिष्ठा ऊंची हा जानी है । आपकी ऊंची मोतारा और स्मारका के सार म मैं उतना ही कहना चाहना हू कि इन नगर के एक मनका जायमी न एक बार चीन तक मुरम म्मान का इरादा किया था । उसका कहना था

१ प्रायन मित्र की राजधानी । मन्त्र विमान सबको के सन्तर अब तक बनाने हैं ।

कि वह दस काम में इतनी प्रगति कर गया था कि चीनिया व वतना जोर चाय दानिया को खरखडाहट उसका काम पढ़ने लगी थी। लेकिन उसके द्वारा निर्मित एक मूरख की प्रशंसा करने के लिए मैं अपनी मान्यता को नहा छोड़ सकता। किने ही लोग पूव और पश्चिम न स्मारक की और किमन उह बनाया इस बात की चिन्ता में पड़े रहते हैं। मैं तो यह जानना चाहूंगा कि कौन था जिमने उन स्मारक को स्मारक नहीं बनाए ? यौन इन सुष्ठु बातों से ऊपर था ? लेकिन लीजिए मेरे हिमाव किताब की बात पीछे छूट गई।

पितनी मेरे हाथ में उगलिया हैं उतने ही घंटा में परिचित हू। इसलिए गांव में जाकर वटईगिरी और दूसरे दिन में हानवाल घंटा का इमी बीच में सर्वेक्षण किया और इस प्रकार १३ ३४ डायर कामा। वहा दो घण्टे अधिक मैं रहा, पर जिस अवधि में यह जाच-पडताल में की उन आठ महीना में अर्थात् ४ जुलाई से १ मार्च तक—आल धागे-भी हरी भवना कुछ मटर जा में पड़ा था थी इनको और अन्तिम तिथि पर जो हाथ में था उसकी कीमत को शामिल करते हुए—जा कुछ में भाजन पर खर्च किया वह इस प्रकार है

चावल	१ ७३३
नीम	१ ७३ सत्रमे सस्ती किस्म की सरीस
रई का आटा	१ ०४६
मक्का का आटा	० ६६ ३/४ रई स भी मक्का
मूअर का भास	० २२
गहू का आटा	० ८८ पसा और दिक्कत दाना दलिया में मक्का के आटे में मक्का
शक्कर	० ८०
मुअर की चर्बी	० ६५
मद्य	० २५
मूअर हुए गव	० २०
भीठ जालू	० १०
एन कदू	० ०६
एक तरबूज	० ०२
नमक	० ०३

कम प्रयास जो मिलते रहे।

हा मैं ८७१ डालर खा गया और इसका मैंने ज्या का त्या हिमाव भी द
 दिया है। पर मुझे अपने अपराध का इतना निलज्ज भाव स लिख नहीं डालना था
 भले ही मैं जानता हूँ कि मेरे जविकाण पाठक भी इसी अपराध के अपराधी हैं,
 और छाप में छपन पर यह कृत्रिम जून भला नहीं भात्म पड़गा। अगले दस भाजन
 के लिए कभा-कभी मैं मछलिया पकड़ लेना और एक बार तो मैं इतना तक किया
 कि सम के सन का बरसाद करनेवाले एक भूकण का, ताणिक रूप में प्रयोग की
 छानिर ही मैं काटकर खा गया। तानारी मायना के अनुमाग मैं उसके पुनर्जम
 का प्रगति किया। यद्यपि इसमें मुझे एक शणिक रूप मिला पर उसकी कम्पूरी का
 भी सुगन्ध के बावजूद मैं महसूस किया कि अधिकतम उपयोग करने की नीति को
 मानने हुए ऐसा करना उचित नहीं है। भूकण का शान के बसाद द्वारा
 बरबाद कर तयार करना ही वहनर भात्म पड़ना है।

इहा निधिया के बीच कपटा पर और कुछ आनपमिक विषया पर—यद्यपि
 जना वता जने में उनका अनुमान भर ही हा मुक्ता है—आ श्वेद हुआ वह है

८१०२ गज

तन और कुछ घन वजन २००

इस प्रकार घुटाट और ट-ए-ए टाक काटि के मिश्रण—यह काम अधिकतम मैं
 घर में बाहर करवाया और इसके बिना मुझे अभी तक नहीं मिल सका है—एक तरह
 का श्वेता—घरती के इस कान में जिन जिन मर्गों पर पसा श्वेद हुआ है जाने
 अधिक ही मर्ग पर मेरा पूरा श्वेद इस प्रकार पसा

घा	८८१०३
मेरु पर एक वष के लिए	१८१०३
आ मर्गों का ज्ञान	८८
आ मर्गों तक करण ज्ञान	८१०३
आ महाना तक नन ज्ञान	२००
कुल	६१८२३, गज

मैं अब अपने उन पाठकों में कुछ श्वेता बांटा हूँ, जिन्हें अपनी गरीबी के

घरा का आगना का मारे नगर को घाने और साफ करत हैं और सारा गन्धवा-बुचा अन्न और दूसरी पुरानी सामग्री निकालकर बाहर ढेर लगा लेते हैं और उसे आग में जला डालते हैं। दवाइया खाकर तीन दिन तक श्रत रखने के बाद नगर में हर कहीं आग बुझा दी जाती है। श्रत के बीच-बीच हर प्रकार की भूख और वासना की तपित से दूर रहते हैं। एवं सबमाद्यारण क्षमागान धोपित कर लिया जाता है और सभी अपराधी नगर में वापस आन गि जाते है।

चौथे दिन सुबह ही प्रधान पुजारी नगर के बड़े चौक में लकड़ी रगड़कर आग जलाता है और नगर का प्रत्येक घर वही से नई और पवित्र अग्नि ले जाता है।

तब तीन दिन तक ये नये अन्न और फला की दावतें खाने हैं। नाश्ते हैं और गात हैं और अगर चार दिनांतर व पड़ामी नगर में जा इसी पद्धति में अपने को पवित्र और प्रस्तुत कर चुके हाने हैं। आनमान मित्रों का स्वागत करत है और उनके साथ आनन् मनाने हैं।

सन्नामण^१—शब्दकोष में इसका यहाँ अर्थ दिया है न अंतर व आध्यात्मिक लावण्य का बाह्य दृश्यमान चिह्न। तो उपयुक्त स्थावर व गड्ढे सच्च मेघा मेण्ड' के वार में मैंने कठिनाई से हा वभी कुछ सुना होगा। मैं निस्सन्देह कह सकता हूँ कि उह दधी शक्तिमो ने ही ऐसा करन के लिए प्रगति बिपा होगा परन्तु इन हाम का उनके पाम कोई गाम्नीय उल्लेख नहीं है।

पाच से भी अधिक वर्षों तक मैं एकमात्र गारीग्वि श्रम में अपना पट पालता रहा और मुझ पता धना कि वष में छ सप्ताह काम करके मैं अपने सभी खर्चे निवाला सकता हूँ। पूर जाड़े और गर्मिया का अधिकांश मुझ आयमन के लिए खाली मिल जाता था। मैं स्वतन्त्र बनाकर भी अच्छी तरह देखा है और पामा है कि इस धंधे में भरे खर्चे या तो जाय के समतुल्य रहते थे या उसम वग जाने थे। विचारणा और आस्था की बात तो दूर मुझ तो स्थिति व अनुकूल वेग भूपा पद्धत और स्वयं का नैपार करने में ही काफी समय नष्ट कर डालना पड़ता था। क्योंकि मेरा पनाना अपने साधिया व हित के लिए नहीं अपनी रानी के लिए था इसलिए वह विफल सिद्ध होता था। मैं व्यापार करके भी देखा पर पाया कि उसमें कुशल बनने में मुझे दग वष लगेंगे और सभी साधन मैं उस नृत्य को ओग वग सकूँगा। जमल में

ता मुझे भय था कि तब भी मैं व्यापार में सफल हो सकूँगा या नहीं। एक बार जिन दिनों मित्रों के वहाँ घर चलन का दम्भ अनुभव करे निमाग में ताज़ा था और मेरा मूँह मुझ पर वह खार डाल रहा था, मैं एक सम्भावित जीविका का खोज में था। उन दिनों मैंने गम्भीरता से सोचा था कि मैं वरुण परिवारों को ताना का काम क्यों न कर लूँ ? इसमें निश्चय हुआ कि मैं कर सकता था और इसमें हानिवाली मामूली आय मेरे लिए काफी थी। कारण कि अपनी आवश्यकताएँ कम करने में ही अपना जीवन मैंने सदा प्रवृत्ति किया है। मुखनावन मैंने विचारता इस काम में बहुत कम पैसे की जरूरत है और इसमें मेरे अभ्यस्त जीवन में बहुत थोड़ा व्ययधान पड़ता है। जब मेरे सभी साथी किसी न किसी व्यापार अथवा धर्म में निम्नकोच लग गए तब मैं भी अपना इस काम का उनका धर्म का समकक्ष मानता हुआ व्यस्त हो गया। माग में पड़ती दरिया को चटल पड़ाहिया नागन और एकत्रित माल को तापरवाही में बेचते मैंने गर्मिया बिना दी और इस प्रकार अन्तेनम के खंडों का पेट पाना। मैंने यह भी सोचा कि गाहिया में भरकर जगती जड़ें अथवा सदाविहार के पौधे भी उन गावा और नगरों में ले जाकर बच जो बना की स्मृति में अभी तक प्रेम करते हैं। लेकिन इस बीच मैंने सोच लिया कि वाणिज्य जिस चीज़ का भी छू देता है वही अभिगृह्य हो जाती है। यदि आप लकी सल्ला का भी व्यापार आरम्भ करें तो इस धर्म में भी वाणिज्य का मार्ग अभिगृह्य लिपट जाएगा।

क्याकि कुछ बातें अथवा की अपेक्षा मुझे अधिक भाती हैं अपनी स्वच्छता का मैं विशेष रूप में मृत्युदान समझता हूँ, और गरीबी का कठोर जीवन बिताकर भी मैं सफलता प्राप्त कर सकता हूँ इसलिये कीमती गन्नाचा बढ़िया फर्नीचर, खाना पकाने के नाजूक बर्तन अथवा गूनाली या गायिक स्थापत्य के भवन खड करन के लिए धन कमान में अपना समय गवाना मैंने कभी नहीं चाहा। जिन लोगों के लिए मैं चीज़ें बाँटा नहीं हूँ और जो मिल जान पर इनका उपयोग करना जानते हैं, इनका प्राप्त करने की धुन मैं उहीने लिए छाड़ता हूँ। कुछ लाल उद्यमी होते हैं जो श्रम का श्रम की खानिर अथवा इसलिये कि यह उठे गतानियन में बचाता है प्यार करते प्रताप होते हैं। फिरदान हमें लागे स मैं कुछ कहना नहीं चाहता। जिन लोगों की समझ में नहीं आ पाता कि जितना अवकाश उन्हें आज उपलब्ध है उनका

१ राता अन्तेनम को मेरे वरुणों का देव निहें स्वयं से बहिष्कृत अपालो ने चराया था और इस प्रकार यनवाम के दिन काटे थे।

य किस प्रकार उपयोग करें उठ में सम्पत्ति दूना कि वे दुगुना श्रम करें और तब तक करने जाए जब तक वे अपना मूल्य अदा कर मुक्तिपत्र न पा लें। जहां तक मंग मन्वन्ध है मैंने देखा है कि दिवस-श्रमिक का घंटा सबसे अधिक आजादी का घंटा है। विशेष कर इसलिए कि वय म तीस या चालीस दिन इस प्रकार काम करके व्यक्ति अपना पेट पाल सकता है। मूय के छिपने के साथ श्रमिक का दिवस समाप्त हो जाना है और तब वह अपनी जीविका संस्वतः अपनी लगन का कोई भी काम कर सकता है। लेकिन उसका मालिक जो महीने के महीने रुपया लगाता है और पूरा लाभ चाहता है उस वय के एक सिरे से दूसरे सिरे तक कभी भी शक्ति नसीब नहीं होती।

संक्षेप में मुझे आस्था और अनुभव दोनों दृष्टियां से यह विश्वास हो गया है कि यदि हम सादगी से और समझदारी से बसर करें तो एक व्यक्ति का अपना पेट पालना इस धरती पर कोई कठिन काम नहीं है बल्कि वह तो दिलबहाल काम है क्योंकि अधिक सादी जातियां जिन कामों को लक्ष्य रूप मानती हैं अपेक्षाकृत कृत्रिम जीवन बितानेवाली जातियां उन्हें खेल-मात्र समझती हैं। यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति अपनी रोटी खून पसीना एक करके ही कमाए। यदि उस मेरी अपेक्षा जल्दी यमीना आता हो तो बाल दूमरी है।

मेरे परिचित एक युवक ने जिसे कुछ एकड़ भूमि यमीयत में मिली थी मुझे बताया कि यदि साधन जुट सके तो मैं आप जमा जीवन बिताने का विचार कर रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि कोई भी मेरे आग्रह पर मेरी जीवन विधि को अपनाए। हो सकता है कि जब तक व्यक्ति विशेष मेरे तरीकों को अच्छी तरह सीख पाए मैं अपने लिए कोई नया मांग ढूँढ लूँ। मैं तो चाहता हूँ कि जितनी भी सम्भव हो मैं उतनी ही विभिन्नताएँ समाज के मानव में मिलें पर मैं प्रत्येक व्यक्ति का चेतावनी देना चाहूँगा कि वह अपना मांग स्वयं खोजकर उसपर चले। अपने पिता का या माता का या पड़ोसी का मांग वह न अपनाए। युवक विशेष चाहें गिल्पी बने या विमान या नाविक, लेकिन जो कुछ भी काम वह करना चाहता है उसमें उसे रोका नहीं जाना चाहिए। जिस तरह एक नाविक जयवा एक भागा हुआ गुनाम ध्रुवसार पर अपनी दृष्टि मड़ाए रखता है उसी तरह हम लोग सिर्फ शक्ति की दृष्टि में ही समझदार होत हैं, लेकिन यह दृष्टि जीवन भर हमारा पथान मांग-दर्शन कर सकती है। हम एक निश्चित अवधि के बीच बंदरगाह तक भन हो न पहुँचें पर यह तय है कि ठीक मांग पर हम जम रहेंगे।

इस विषय में निम्नलिखित बातें एक के लिए सच हैं, एक हजार के लिए वह और भी अधिक सच है। एक बड़ा भवन छाट-न आनुमानिक रूप में अधिक महंगा नहीं पड़ता, क्योंकि एक छत पूरा का टुक लेगी। नीचे एक तहमना काफी हांगा और एक दीवार कई कमरा का अलग कर सकेगी। लेकिन जहां तक भग सम्भव है मैं तो एक घर में अकेल रहना ही पसन्द करता हूँ। दूसरे पूरा घर स्वयं बना लेना किसी अर्थ का साध रहन के लाभ समझान में मग्ना और भुगम है। यदि आप किसीका तयार कर भा लें तो हा सकता है कि बीच का पार्श्वगत मग्ना हान के कारण बहुत पतना हो या दूसरा व्यक्ति एक चुग पटाली निवन और जान हिम्न का सम्भव भी न करण। सह्याग, जो सामान्यतया सम्भव ही पाना है, दरअसल वहां ही आंगिक और ठपरी होता है और यों-बहुत मच्च सह्याग का जितना कुछ प्रमिल है भी वह न हान के बराबर है क्योंकि सह्याग एसी सम्भवता है जिसे नाग मुन नहा पान। यदि व्यक्ति में आम्ना है तो यह हर वहां समान आस्थावाना में सह्याग कर लगा लेकिन यदि उसमें आम्ना नहीं है तो वह किसी भी दन में क्या न मिल जाए, वह गेप समाग की तरह ही रहता बना जाएगा। उच्चतम और निम्नतम दाना ही दुष्टिया में सह्याग करने का अर्थ माय-माय जीवन-निर्वाह करना ही होता है। पीछे किसीन यह प्रस्ताव रखा था कि दो युवक एकमाय मसार-याना के लिए निकलें। उनमें एक बिना पस चले अपना जीविका नाविन का काम करके या किसानों करके कमाए, और दूसरे का जब में हुणिया हा। माफ है कि वे बहुत दूर तक साथी या सह्यागी नहीं बन सकन क्योंकि उनमें से एक तो कार् या दगा ही नहीं। अपनी साहमपूण मात्रा के बीच पहन राखक सट के सामन पडत ही वे अलग हा जाएंगे। सबसे बड़ी बात यह है, असाकि मैं पहले कह चुका हूँ कि अकना मानो तो आज ही बूच कर सकता है पर जिस दूसरे का माय जाना है, उस माग के तयार हा जान तक प्रतीक्षा करनी पडती है और उह यात्रागम्भ करन में बहुत नग्ना समय लग सकता है।

अपन नगर के कुछ लोग का मैं कहन सुना है कि यह तो बड़ा हा स्वापूण नीति है। मैं स्वीकार करता हूँ कि इधर लोकन्याय के कामा में मैं बहुत ही कम पडा हूँ। एक विगिष्ट कृत्य की बनी पर मैं कुछ चिन्तन किए हैं। नाकहिन में प्राप्त आनन्द का त्याग उन्मेष में एक है। कुछ नाग हैं जिन्होंने नगर के किसी एक निधन परिवार का भरप-भोषण अपन ऊपर से उन के लिए मुझे हर उपाय में

तयार करना चाहता है। उहान सुभ समयमाया, तुम्हारे पास करने को कुछ नही है और यान्ता आत्मी शान्त का काम बन जाता है इसलिए क्या न तुम ऐसा ही कुछ काम अपने हाथ में ले लो। खर अन्न में ऐसा हा करना मैंने विचारा। जिनकी अच्छी तरह मैं अपना पेट भरता हूँ सभी दृष्टियों में उतनी ही अच्छी तरह कुछ निधन प्राणिया का पापण करके उनके भगवान पर अहसान करने का मैंने उपक्रम किया। अपनी आर में प्रस्ताव रखने का नाम भी मैं कर बैठा। लेकिन उन निधनों में सरक्षण के बन्स बिना किसी अमयजस के निधन बन रहना ही उत्तम समझा। मर नगर के स्त्री-पुरुष तरह-तरह से अपने भाइया के उपहार में लग ही हैं। मैं समझता हूँ तब कम से कम एक व्यक्ति का तो इससे बन्स दिया जाए और उस कम मानवीय अर्थ उद्यमा में लग रहने दिया जाए। जमेवि किसी भी अर्थ काम के लिए इस ही दान के लिए भी प्रतिभा की आवश्यकता होती है। जहां तक परोपकार का सम्बन्ध है वह तो इन धंधा में एक है जिनमें पर रखने को जगह नहीं है। मैं इस धंधे को भी अच्छी तरह परखा है। दान अजीब लग सकती है पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि यह काम मरी प्रवृत्ति के अनुकूल नहीं है। जानन-बमन प्रयामपूर्वक अपने विषय उद्यम को मुझे ऐसे सुदृश्य के लिए त्याग नहीं देना चाहिए जिस समाज मुझमें इसलिए कराना चाहता है कि वह अन्तिम प्रलय से बच सके। लेकिन मेरा विदवास है कि किसी भी अपर धाम में उस रिस्म का पर उससे बड़ी अधिक असीम दानता हा सृष्टि को बचा सकती है। पर मैं किसी व्यक्ति और उसका प्रतिभा के बीच जाना नहीं चाहता। आ आत्मी अपने पूरे मन से आत्मा से और जानन से वह काम करता है जिस करने से मैं डकार कर चुका हूँ तो मैं कहूंगा बट रहो दुनिया में ही इस काम को पाप बताएँ और पाप वह जरूर बताएंगी सब भी तुम अहिंस रहो।

मर बहुत-से पात्र निस्म-दह मेरे पक्ष में मही दलान दग पर मैं तो अनुमान भी नहीं कर सकता कि मेरी स्थिति एक निराली स्थिति है। जहां तक क्या भी धर्म बान का सम्बन्ध है—और मैं नहीं चाहूंगा कि मर पड़ोसी उस अच्छा हा घापित कर—यह कहने में मुझ कोई भी हिचकिचाहट नहीं है कि मैं उसके लिए एक ठिबान का आत्मा हूँ। लेकिन क्या काम मेरे लिए उचित होगा यह निर्दिष्ट करना तो निया जेब का ही बन्य है न। "ह" के मामा-य अर्थ में मैं क्या अच्छा करता हूँ, मर प्रमुख वान् में यह प्रश्न एकलम अलग है और अधिकांश अवाछ्य भी है। नाग व्याव

हारिद दृष्टि म कहा करत है जहा भाहा जस भी हा अत्रि ममय वनन कालस्य
 मामन न गवन हुए पूवकल्पित मज्जनना क माय वस चारा ओर भला करत घमा ।
 यदि इसी तहजे म मुझे भा कियावा उपपन्न दना पडे ता मैं इसक बदल यह कहूंगा
 कि भना वनन ता प्रयास जारम्भ करा । रागा का बात ता वैसी ही हुई कि जब
 मूय चाद अथवा छटे आममान पर स्थित तारा तक अपनी ज्यानि पटुचा चुक ता एक
 जाय और भद्र पुष्प गविन की तरह हर कुटीर की विष् की म भावना हुआ योगा
 क भस्मिन् विवृत करता हुआ माम का मडाना हुआ जाग अथकार का ज्यातिन
 करता हुआ घूम । मूय का ना चाहिए कि वह अपनी सुख उल्लसता और पगाप-
 कारिता का स्थिरतापूर्वक तब तक बढ़ाना जाए जब तक उसका ज्वलन्ता इतनी
 न बन जाए कि कोई भी मय उसम आब न मिला सक । तबित तब भी और इस
 वाच भी वह बगवत् अपना कथा म घमना रह और सबका हित-साधन करता रह
 बकि अधिक मन्त्र दागित चिल्लन का भाया म यह कहिए कि ताकहिन-नाम
 करत हुए उसकी परिणामा करत रह । एक बार श्रीक पुराणा क पितना न अपनी
 स्वर्गीय उत्पत्ति का अपनी उपकारणीनता मे मिद करना चाहा । मिए एक दिन
 क लिए वह मूय का मार्गि बना लिया गया । जब बपा था मूय क रय का उमन
 म्निबद्ध माग म हटाकर चलाया । फलत स्वय की निचली गतिपा क कितन ही
 गन्तुम जनकर राव न गए, वमन की रगीनी हर कहा ममान हा गई और
 महाग का विमान म्मयन अस्मिन् मभा गया । अल म जुपिटर का अपना वय
 चलाकर उम मिर क वन धरता पर फेंक दना पया । उसकी मयु म मूय का बडा
 हुए हुआ और वह एक वय तक नहा चमका ।

अष्ट सज्जनता म म जैमा दयन आती है वसी और कहीं न नहा जाती । यह
 मानवीय अथवा स्वर्गीय गव क समान है । यदि निश्चित रूप म मुझे पता नग जाए
 कि जमुक व्यक्ति मेरा भना करन के मनेन सकल्प क साथ मर धर था रहा है ता
 मैं अपना जान वचान क लिए उसी तरह भाग लू जगति अफाका सम्मथन की मूखी
 भुनसा दनवाली मिमून नामक उन आविया म मुझे भाग लेना चाहिए, जा मह
 नाक कान और आन्वा का घूम म मर दता हैं और माम का राक त्ता हैं । मुझे
 डरना चाहिए कि कहा उसका सज्जनता का कुछ नाम मुझे न मिल जाए और उसका
 सन्नामन विप मर खन म न भिन जाए । नहा उनन ता अच्छा यही है कि नमगिन
 त्ग म भिना नानि का मन्प मन्न कर लिया जाए । जा यदि मैं भूता ह ता मुने

मिला देता है मैं ठिठुर रहा हूँ तो मुझ कपड़े पहना देता है और यदि मैं कभी खड़ब म गिर जाता हूँ तो मुझ बाहर खींच लेता है वह इत्तीलिण अच्छा आत्मी नहीं बन जाता। न्यूफाउण्डलैंड का एक कुत्ता भी इतना कर देगा। लोककल्याण सूक्ष्म अर्थों में साथी के प्रति प्रेम नहीं है। निस्मन्त्रह लोकपकारक हाव^१ अपने तरीके का अत्यन्त ही दयालु और श्रद्धेय व्यक्ति था और उसका फल उसे मिला है। लेकिन तुलनात्मक दृष्टि में विचार करें तो सबका भी हावड हमारे किस काम के यदि उनकी लाककल्याण भावना हमारी बनिया हालत में हमारी कोई मदद नहीं कर सकती? दरअसल तो इसी स्थिति में हम महायता के सर्वाधिक पात्र होते हैं। किसी भी लाककल्याणकारी समिति द्वारा मरा या मरे जन्म अर्थात् की सहायता करने का सच्चा प्रयास नहीं किया गया है।

जमुइंट सम्प्रदायवाला^२ न जान्तिवासिया का जीवन जलाया था। जब उन्होंने जान्तिवासिया^३ अपने सन्तानपका का यन्त्रणा देन के नय-नय तरीके बताए तो वह हतप्रभ हो उठ। शारीरिक यातना सह सकन में वह आदिवासी बहुत आगे थे। अवसर पर देखा गया कि मिशनरी लोग द्वारा दिए गए किसी भी आश्वासन से वे बहुत ऊपर थे। वसा व्यवहार करो जसा व्यवहार किए जान का तुम आगा करत हो। इस नियम ने उन लोगों को कम आकर्षित किया था। उन्हें अपने साथ किए गए व्यवहार की चिन्ता नहीं थी। वह अपने गन्धुआ को भी एक नये ढंग का प्यार देते थे और उनका किया क्षमा करके उनका बहुत निकट आ जाते थे।

इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि गरीब को सहायता में बही दिया जाए जिसकी उस सबसे अधिक जरूरत है। भले ही आपने दृष्टान्त के कारण व पिछड़े के पिछड़े ही रह जाए। यदि आप पमा देना चाहते हैं तो उस अपने हाथ में खींचिए पमा दे मत डालिए। कभी-कभी हम बड़ा मज्जार गलतिया कर देते हैं। बहुधा गरीब उतना गीत-प्रस्त और भूखा नहीं होता जितना कि वह गलत चिन्ता से लिपटा और रूखा होता है। इसके लिए सिर्फ उसका दुःसाध्य ही नहीं उसकी कुरबि भी आशिक रूप में जिम्मेदार होती है। यदि पमा आप उसे देगे तो धायन वह और बिपडे हा उनसे खरीद लाएगा। तानाब पर बफ वाटनवाल आयरिश मजदूर ऐम मोटे भोटे चिन्ता पहनन थे और इतने मत-कुचल रहते थे कि मैं उनपर तरस सान का

^१ निन्तेधापा का प्रचारक जॉन हाव (१७२६-१७६०)
^२ १५३४ में रणायत ३१ धार्मिक एवं कलात्मक

अम्भन्त हा गया था। कारण कि मैं अपने अधिक नाक और अधिक दन्तिन बना
म भी जादे न बना करता था। बल्कि की नदिनों में एक दिन उनमें मैं एक
स्मिन्तर पानी में निर पड़ा और मैं घर आता करने आता। अपने सीकट और
विनय तीन पट्टे और दो जाही जुएँ अपने पास लाया। तब एक टुकड़ा
गरा मुझे दीया गया। नि जा अतिरिक्त अपने मैं उसे निर दूने दूने अतिरिक्त
कर मुझा था क्योंकि उसका पान नाच करने के किन्तु हो सके थे। अपने मैं एक
हुक्का ही उसका महा पान नी। तब तो मुझे अपने ऊपर नाम आन गया कि
पूरा की पूरी चिन्ता की तुलना उस निर दने में दूना पान-कर्म यह देता कि मैं
अपने लिए पानान का एक कमीज बनवा देता। यदि पान की जरूरत आराम
करनवाला व्यक्ति एक है, तो आराम एक है जो कि अपने पान-कर्मों पर प्रभाव
रह है। यह सम्भव है कि अम्भन्तों पर सदादिब धन और समस्त अम्भन्त-
वाला व्यक्ति अपनी विधि में उस विपन्नता का बना हो गया है कि निर दने का
व्यय प्रयास उसका नक्ष है। वह उस धार्मिक दाम-व्यापारी के समान है जो अपने
अपने दाम में हानिवानी आय आप का इनवार का छुट्टी दिनांक में अम्भन्त
है। कुछ नाग गरावा का अपने रमा-भगम नौकर रखकर उनपर कृपा निवाते
हैं। यदि स्वयं का बड़ा नियुक्त करें तो क्या यह अधिक सम्भन्तता का काम न
हागा? आप अपनी आय का अम्भन्त भाग दान दन का योग्य हाकन हैं। भन ही आप
अम्भन्त में नौ भाग दान द डालिए और छुट्टी पाइए। पर अम्भन्त दाना में समान क काम तो
सम्पत्ति का दमवा भाग ही आ पाया। अब प्रश्न है कि यह दमवा भाग उसके
मार्मिक का उत्तरता के कारण बच पाया अथवा दानाधिकारिया को लापरवाही
के कारण?

लोक-व्यापार की भावना ही एक ऐसा मानवीय गुण है जिसे मानव-जाति की
प्रशंसा पयाण माना में मिल सकती है। नही उसका हमने अनुचित रूप से अधिक
मूय लगा लिया है और ऐसा हमने स्वायत्त ही किया है। एक दिन कानकाड में
एक दृष्टे-कृष्टे निधन व्यक्ति ने यही के एक साथी नागरिक की प्रशंसा मुझमें की और
कहा कि वह गरीबों पर बहुत दया करता है। उसका मतलब अपने से था। इस
प्रकार के लोग अपने असल माता पिता की अपेक्षा कृपालु चाचाओं और बुआओं
का अधिक दखल करते हैं। एक बार मैं एक पानरी को इंग्लैंड पर भाषण करते
हुए मुना। वह पान और बुद्धि से सम्पन्न व्यक्ति था। पहले उसने बानानिक,

साहित्यिक और राजनीतिक महापुरुषों के नाम गिनाए—गवसपियर वकन नामवत, मिल्टन यटन और अथ और इनके विषय में कटन के बाद वह इंग्लैंड के ईसाई धर्म के धष्ट पुरपा पर आ गया। जैसेकि अपने धर्म की दृष्टि से ऐसा करना उसके लिए जरूरी था वह उसमें गप से बहुत उंचा महानतम में भी महान बनाकर पेश कर दिया। ये लोग ४—पन हावड और थीमती भाई। हर व्यक्ति २५ भठ का और उसकी व्यावसायिक नीति का समझ मका हागा। ये अन्तिम नाम इन २५ सर्वोत्तम स्त्री पुरपा के नहीं उसमें सर्वोत्तम लोककल्याणवादिया के थे।

मैं लोककल्याण सस्था को जिनकी प्रगता मिलनी उचित है उसे कम करना महा चाहता। मेरी भाग कबल यहो है कि जिनके भी जीवन और काय मानव जाति के लिए बरदान सिद्ध हुए हैं उन सबके साथ माय किया जाए। मैं व्यक्ति को माधुता और उसकी मज्जनता का प्रमुख मूल्य नहीं देता। ये मण तो उमरे बूढ़ और पक्ष है। जिन पीछे से उनके मूल जान पर रागिदा के लिए औषधमुख चाय बनाई जाती है वे पीछे छेद हैं और उनका इस्तेमाल नीम-हकीम ही करते हैं। मैं तो मानव के फल और फल चाहता हूँ कि सुगंधि की एक टिलका उससे बहकर मुझ तक पहुंच सके और एक प्रीति हमारी बातचीत का सुस्वादु बना सके। उसकी मज्जनता एक जाति के अस्पृशिक कृत्य नहीं एक स्वाया बहाव होना चाहिए जो उसमें जरा भी बाध न बन सके और जिसका उसे भान तक न हो सके। यह वह दान है जो पापा के डर के डर को डक सकता है। लोककल्याणवादी बहुधा अपने व्यतीत कष्टों की स्मृति में मानव-जाति के चारा चार बातावरण के रूप में पता देता है और उस सहानुभूति का नाम दे देता है। हम अपनी हिम्मत दनी चाहिए अपनी निराशा नहीं अपना स्वास्थ्य स्वास्थ्य देना चाहिए अपने राग नहीं और सतत रहता चाहिए कि सताप सक्रामक रूप धारण न कर लें। मला विलाप की ध्वनि किन दीक्षिणी मदानों में आ रही है? नास्तिक किम अध्यापन में रहते हैं जहां हम आत्म-याति भर्जे। कौन वह असमझी पूरे व्यक्ति है जिसका उद्धार हम करना है? जिस भी कोई ऐसा राग हाता है कि वह अपना काम महा कर पाता—यदि उमर पत्र में दे भी जाता है क्योंकि पेट से ही तो सहानुभूति की जाती है—बढ़ी पीरत मसार का सुधार करने चल देता है। वह स्वयं को एक सूक्ष्म ब्रह्माण्ड मान लेता है और खोज निवालता है कि दुनिया कच्च हो सब लाए जा रहा है। मजा यह कि उसका यह गात्र मच्ची हानी है और वह समझता है कि एमी खाज सिर्फ वही कर

गया है। उनकी दृष्टि में यह भूमण्डल स्वयं एक विमान बच्चा मात्र है और इस बात का भारा डर है कि मानव-मन्तान पवन से पहन ही वहीं उसमें भी मुह न मार्ग नगें। उसकी प्रचण्ड लावकन्यापान्तिना सीधे एम्बिका और पन्थागनियन गागा का नात्र निकालती है भारतीय और चीना गागा की जनता का गने लगती है और तब नृगानक के एक या दाना गागा पर हनका-भी गागी म्विन आती है जमकि उसका पकना गुरु हो रहा है। जावन अपनी रमना स्वा दना है और एक बार फिर मधुर जीर आगाप्रद बन जाता है। जिनका कुछ मैं आचरण में ला सका = उसमें अधिक दन्त का सपना मैं नभी नहीं लिया है। अपन स भी दूरे किसी व्यक्ति का न मैं नभी जाना है न मैं नभी जानगा।

मरा विश्वास है कि एक मुशरक वह स्वर्ग का पावनतम पुत्र हो क्या हो उसका नदामी का कारण साधिका क वर की अनुभूति नहा उसकी निजी यत्रगा ही गता है। जम हा यह दूर दुर्ग जम हा वमन्न उसका पाम आया प्रमान उसकी गय्या पर मूना वम ही बिना किसी क्षमा-याचना क जगन भद्र साधिया का उमन छाड़ दिया। तम्बाक के प्रयाग क विद्वद भाषण न गन का मरा कारण यह है कि मैं नभी तम्बाकू नहा चवाया ह। यह इजाना उन तम्बाकू खानवाना का भुपनना चाहिए जा उसका प्रयाग छोड़ चुके हैं। वम काफी धीज है जिनका मवन मैं न किया है और जिनके विद्वद मैं भाषण न मरना ह। यदि नभी जापको इन लावकन्यापान्तिना में घकेन लिया जाए ना अपन बायें हाय का यह न जानन दना कि आपका दाया हाय क्या कर रहा है। एना जानकारी उसका लिए उचित नहीं होगी। हूबत हुए का बचा ला जीर अपन पीत घाय ला। जवमर पर काम करा और किसी स्वच्छन्द धर्म में लग जाजो।

मन्ता क ममग म हमारे व्यवहार विकृत हो गए हैं। हमारे पवित्र ग्रन्थ ऐसे गाता और मन्त्रा म भर है जिनमें ईश्वर का मणीतमय गती में जगिगप्त किया गया है और यह सत्र मतन महन किया गया है। कहनवाना कह सकता है कि पगम्बरा और परिजानाजान ना ना मानव अय का निराकरण करने की ही बात का है और उसमें मानव की आगाण वधा भा है। मुझे बही भी तो ईश्वर के इस जावनापहार क प्रति एक मग्न अन्म्य मनापाभिव्यक्ति उसकी स्मरणीय स्तुति व्यक्ति नहीं मितो है। स्वास्थ्य और मफनता कितनी भी दूर और पीछे हटी हु क्यों न प्रनान ना मेरे लिए बही गुन है। राग और अगपनताए उह मुझे भी मुझ उनमें कितना भा महानुभूति क्या न हो मरा अहित हो करती है -

उदास हो बनाता है। सच्च भारतीय, मानस्यतिक चुम्बकाय अथवा प्राकृतिक माधना स मानव का वास्तविक उद्धार करने का यदि हम उत्सुक हैं तो पहले हम स्वयं को प्रकृति जितना हा सरल और पुष्ट करना होगा हमारे मित्रों पर जो वादल घुमट रहे हैं उन् जितरा देना होगा और अपने राम-कृपा में धाड़ा जावन रम भग्ना होगा। गरीबों के ओवरमियर मत बनो समाज के समथ पुरुष बनने का प्रयास करो।

द्वाराज के गल मादी के 'गुलिस्ता' में मैंने पढ़ा उन्होंने एक दिन पुरप स पूछा—सबशक्तिमान भगवान न जितने भी यगस्वी कथा को उन्नत और निविड छाया-सम्पन्न बनाया है, उनमें देवदास के सिवाय किसीका भी आजाद नहीं कहा गया है। और देवदास पर फन नहीं लगते। बनाइए इनमें क्या रहस्य है? उमने उत्तर दिया—प्रत्येक का अपना सगत फन होता है निश्चयन श्रुत होता है। जब तक वह रहती है वह ताजा और फला फूला रहता है। उमके बात जाने पर वह सूख जाता है बिखर जाता है। पर देवदास इनमें किसी भी न्यति या गुनाम नहीं है। वह सदा विकसित रहता है और यही आजादा अथवा धार्मिक दृष्टि से उन्मुक्त पुरुषों की प्रकृति है। किसी क्षणभंगुर चीज पर अपना मन मत टिकाओ क्वाकि दखला नही खलीफाओं की जानि के मिलुप्त हो जाने के बाद भी बगनाद में से बहता रहेगा। यदि तुम्हारे पास धन है तो खजूर के पड़ की तरह उदार बनो, और यदि धन को कुछ नहीं है तो देवदास की तरह आजाद अथवा मुक्त पुरुष बना।

पूरक पस्तिया

गरीबी की छाकाक्षाएँ

र दान दरिद्र अधम जन ।

तुम महत्वाकांक्षा करते हो, जो

आममान में जगह पाने का दावा करने हो

वह भी सिर्फ इसलिए कि तुम अपनी दीन-दान भापटा में

मा टबो में सस्ती घूप में अथवा छामान्तर सोने के तन् पर

जहाँ जड़ी-बूटियाँ उगी हैं

विनीवी माघाग्न मवा का पुण्य क्या रहे हो ।

और तुम्हारा दाहिना हाथ
 उन मानवीय सम्कारों का, जिनकी प्रेरणा में
 पुण्य विन उठता है, नीचे फेंकता है।
 वह प्रकृति का क्लृप्त बनाता है और
 प्राणा का मुग्न करता है और मागने की तरह
 मचेत चपल सागा का पापाण बना देता है।
 हम तुम्हारे उपयोगितावादी स्वभाव का
 अथवा अप्राकृतिक जड़ता का
 अनम सम्पर्क नहीं चाहिए
 नून रूप को समझता है न गोक का।
 हम मचेष्ट में ऊपर तेरा भग्न उदात्त निस्चेष्ट
 माहस भी नहीं चाहिए।
 यह निम्न अधम चिन्तन
 यह मामास स्तर
 तुम्हारे निभागा की गुनामी बन जाता है।
 हम तो बसा पुण्य चाहिए जा
 वीर उदार कार्यों में
 गाही उदात्तता में मधुद्रष्टा विवक में
 अमीम दानशीलता में मिलता है।
 हम वह पुण्य चाहिए जिसका अतीत
 कोई नाम नहीं दे सका है
 वह बस कृद्ध रूप टोड़ गया है—
 अचपूनीज, अकिनीज योमियम आदि।
 नू अपनी अशित काठरी में चला जा
 और जब नूनल उत्कृष्ट गगन तुम्हें नीच प
 ना दख कि वह महान पुण्य क्या थे।

टी० ३

‘निपात गीत लिखने का नहीं है। मैं तो प्रभात के समय तबड़े का छत पर लड़े मुर्गे की तरह बाग देना चाहता हूँ जिसमें यदि सम्भव हो सके तो अपने पड़ोमियों को जगा सकूँ।

जिस दिन मेरे मैंने जगन में पूरी तरह रहना अर्थात् अपने दिन और रात को जगन में ही बिताना आरम्भ किया वह दिन मयोगवश स्वतन्त्रता दिवस अर्थात् चौथी जुलाई १८६५ का दिन था। उस समय तक मेरा घर जाड़ो के मसल्ले का नहीं बन सका था। वर्षा के लिए भी कुछ आश्रय नहीं था। न पलस्तर हुआ था न चिमनी थी। दीवारें ऋतुरा के प्रभाव में जड़ सत्ता में बनीं थीं और ढाँसी थी। उसमें चौड़ी दरार पड़ी थी जिससे रात में समय ठण्ठक रह जाती थी। मीची खड़ी कटी हुई, मफ्फ बनिया अभा-अगौर रंग लिया हुआ दरवाजा और लिङ्गिया इन सबसे विशेष कर प्रभात के समय जब सकलिया जोम से तर हानी थी घर का रूप बड़ा ही निहारा हुआ और हवादार गाल पड़ता था। मैं चिन्ता था कि दोपहर तक कुछ माटा गाद उनमें में गिराना पड़ेगा है। वह घर भरी बल्बना में तो दिन भर हो अपनी उपायानीन जाभा को बनाए रखता था और मुक्त परत पर बने उस घर की माद दिला देता था जहाँ एक बंधू धूँव में गया था। यह बिना पलस्तर किया हुआ हवादार एक छोटा-सा घर था और उस योग्य था कि कोई दबना अपनी मादों के बीच जगम ठण्डे और उसकी दीवारों के लम्बे बरतन बड़ा सहारा। मेरे घर के ऊपर से जो हवा गुजरती थी वह यही थी जो पहाड़ों की चाटिया पर चल करती है। जिसमें पार्थिव मगान के कुछ टूट पड़े हुए अथवा उस मगीत का भाव दिख जाया करता है। प्रातः समीर निरन्तर चलती रहती है मृष्टि का काय अविच्छिन्न गाया जाता रहता है पर बहुत ही कम लोग उस मुक्त पान हैं। ओलिम्पस^१ पर नहीं घरती मेरे ऊपर ही तो है।

इससे पहले जिस घर का मैं अपना वह सबना था वह नाव के अतिरिक्त एक तम्बू-भाग था। गर्मिया में भ्रमण के लिए निकलने पर मैं अक्सर उसका उपयोग करता था। वह तम्बू मेरी कोठरी में अब भी लिपटा हुआ पड़ा है। तबिन नाव इस हाथ में उन हाथ में जाकर समय की लहरों पर बह गई है। उस अविन टास जाधम का प्राप्त करके समार में बड़ा टिकाऊ ढलने की जिज्ञा में मैंने काम बनाया था। यह घर लोपी आवरण जो इननाहकवा था मेरे चारों तरफ एक प्रकार के मणिमी

१ मक दबकाश्री की श्रृंखला का ओलिम्पस नावक पवन पर बनीं जाती है।

करण व समान था और अपने निर्मला पर इसकी प्रतिक्रिया छाड़ना था। यह बहुत कुछ एक रेखाचित्र की तरह मनेनपूष था। हवा गान व लिए मुझे बाहर जान की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि अन्तर व वातावरण में ताजगा की दृष्टि में काँ भी कमी नहीं आई थी। धुआँ राग गया व अवसर पर भी जल में द्वार के अंदर इमना नहीं गितना नि द्वार के पीछे रहना था। हरिवा^१ में निगा है चिन्ता व बिना घर बना ही है असाकि बिन समान का माय। मेरा घर गया नहीं था। मैं एक स्मात ही स्वयं का परिभाषा का पड़ोसी पाया और वह भा क्रिमी एक को पिजड़े में घात करके नहीं बिन अपने को उनका पाद्व में पिजड़े में कट करके। मैं सिर्फ उन्हीं निडियों के निरन्तर नहीं था जो उद्याना और बगीचा में माधारणतया मिलती है पर बना की उन जगती पर रोमांचक गायिका का भी बहुत पाल था जो या तो ग्रामो में आती ही नहीं या कभी नहीं हा जाती है। उदाहरणार्थ जगती मना पीनी मना मिन्दूरी गौरवा अवाचीन जालि।

मेरा यह घर एक छोटे-से मगेवर के लड़ पर था। यह जगह कानराड गाव में एक मीन दक्षिण में उमम कुट्ट उंची भूमि पर इस नगर के और दिक्कत के मध्य एक विस्तृत वा व बीच स्थित है। इसमें न मान दक्षिण में हमारा एकमात्र प्रसिद्ध युद्धस्थल कानकाड है। लेकिन मैं बना के बीच रचना नीच व तल पर रहता था। ता मान पर गणमान्य भूभाग की नी तरह जगद मन्ना सामन का मगेवर-लड़ ही मेरा सुदूरस्थ निनित्र था। पन्ने मप्ताह में तो जय कभी भी मैं सग घर पर दक्षिण कर्मा था व मुझ वस्तु ऊँचे किमा पहाड़ी रानान पर स्थित एक भीन जमा पीय पड़ता था। गरी तनी भी दूसरी भीना की मन्हा में बहुत उंची थी। जल ही सुखोदय हाता था मुझे लगता था कि यह मगेवर कुट्टर व अपने रात्रि-परिधान को यहाँ वहाँ से श्रम श्रम में शीमे शीमे उतारकर पर रहा है। रात्रि में जुटी किमो गुप्त मभा के विमजन व समान जय कुहना भूता की तरह चोरी चोरी हर निगा स बन की ओर पीछे हटन लगता था तब मगेवर की नन्ही कामन नहों और उमक। रमन्ता मन्हा उमी श्रम में प्रकट हाती जाती थी। निन में माधारण समय में बहुत राग तर जाय का बंद पडा पर वह ही लटकी प्रतीत होती थी असाकि वे पवता व पाखों पर नटरी रहती हैं।

जगन्त भाग की अण्ड-वर्षा का के बीच-बीच जय पवन और जय एकन्त

१ हरिवा पुराण जिमका नाममा अनुता लगने में प्रयुक्त दिवा था।

स्तब्ध मिलते थे आकाश मेघाच्छन्न रहता था, तीमरा पहर भी सध्या जितना भारी भारी लगता था और जगती मना का संगीत एक तट से दूसरे तट तक मुना जा सकती था उस समय उन मन्थावधिया में यह छोटी-सी भील एक भूल्यवान पड़ोसी का काम देती थी। उसी भील वप के इस समय जितनी शान्त मिनती उतनी किसी भी अन्य समय नहीं। उसके ऊपर के वायुमण्डल में स्वच्छ वायु की पट्टी बहुत सकीर्ण होनी है और वह जल वाष्प के कारण धुंधला दीख पड़ता है। और सबसे विशेष बात यह कि प्रकाश और छायाओं से सफुल्ल और धरती के स्वर्ग जसा प्रतीत होना है। पाम की ही एक पहाड़ी की चाटा पर का जगल अभी ही साफ किया गया है। यहां से तट की पहाड़िया के बीच पड़े एक कटाव में दक्षिण की ओर तालाब के पार तक का भाग साफ दीख पड़ता है। वहां जब पहाड़िया एक-दूसरे की ओर नीच की तरफ ढलती हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि बनाक़ात घाटी के बीच कोई सोता बह रहा है। पर सोता कहां कोई नहीं है। उसी दिशा में पाम की हरी पहाड़िया के बीच और उनके ऊपर में क्षितिज से सटी दूर का अधिक ऊंची पहाड़ियों का लयता तो वे मुझे नीली आभा में युक्त लगे पड़ती। उत्तर-पश्चिम दिशा में और दूर का पश्चिम-दिशा की अधिक नीली चोटियों की स्वर्ग की अपनी टकमाल में बड़े इन मध्वे नीले मिट्टी की और गाव के थोड़े-से हिस्से की किचिन भागी में उच्चकर अगूठा पर गड़ा हाकर ही देख पाता था। लेकिन दूसरी दिशाओं में इस स्थल तक से इनका उच्चकर भी मैं अपने चारों ओर घिरे बना के पार कुछ भी देख न पाता। यदि पास पड़ोस में जल हो जिसके कारण धरती तरल-सी और तरती-सी दीख सके तो अच्छा ही लगता है। छोटे से छोटे कुए का भी इतना लाभ तो अवश्य है ही कि जब आप इसमें भाकत हैं तो दीग पड़ता है कि धरती एक अविच्छिन्न महाद्वीप नहीं है जलावच्छिन्न द्वीप भर है। यह बात उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी यह कि कुए में मकरम ठंडा रहना है। उपर्युक्त चोटी पर से सरोवर के उस पार सड़वरा के चरागाहों को मैं देखता था। जब बाढ़ आती तो शायद भ्रमवश ही ये चरागाह खोलती हुई पाटी में बंदोरे में पड़ मित्र की तरह जलजल ऊपर उठ हुए से मुझे दीग पड़ते थे। उस घाटी में सरोवर के पार की सारी भूमि बीच के इस छापे-से जन विस्तार के ही कारण मुझे द्वीप जसा और तरती-सा मालूम पड़ती थी और मुझे लगना था कि जहां मैं रह रहा हूँ वह सूखा जमीन बस वही है।

यद्यपि मरे गृह-द्वार में दुःख और भी सबूतित दाख पड़ता था फिर भी घुटा

घुटा-मा और कद-मा मैं बिनकुन अनुभव नहा करता था। मगी कल्पना के लिए वहाँ काफी बड़ा चरागाह था। मामन का तट बलूत व नन्ह तम्-गु मा स दवे जिम पठाग व आकार म उभरता था वह पश्चिम के प्रगी मगाना और टारटरो व चरागाह की ओर ढल जाना था और वहाँ मानव-जानि व ममस्त खानाबदोश परिवारा के लिए पदास्त जगह थी। जत्र दामानर^१ को अपन पंगुआ के लिए नय-नय विगालनर चरागाह की जम्स्त पड़ी तत्र उमन कहा था 'जा विस्तृत भीमाआ का म्वच्छन्ता म उपमाग करन है, उनक अनिरिक्त और कोई भी इस ममार म प्रमन्न नहीं है।

स्थान और कान दाता बन गए थे और मृष्टि व उन हिम्मा और इतिहास के उन युगा व निकटतम मैं रह रहा था, जिन्होंने मुझे सबसे अधिक आरपित किया था। नगानगाम्नी रात के समय जिन मुद्गवर्ती गहा का दम्बा करन हैं, मेर रहन की जगह उन जितनी ही दूर थी। कौताहन और उपद्रवा स पर कमिया पियाज चेंयन^२ नामक उत्तरी नान-मडल व पीछे खगोन-चत्र व एक मुद्ग और अधिक दिव्य कान म दुलम और रमणीक स्थाना की कल्पनाएँ हम किया करत हैं। मैं पाया कि मरा घर दरअमल मृष्टि व एक एस ही एकान्न पर चिरनवीन और अक्लुप भाग म स्थित था। प्लाडएगज^३ या हाएडीज^४ या आन्डेवगन^५ या आल्पर^६ के निकट व स्थाना म बसना यदि तनिक भी उचित है तो मचमुच मैं बसा ही जगह रह रहा था। कम म कम जिम जिन्दगी का मैं पीछे छोड़ आया था उसमे ता मैं इन नगना जितना ही दूर था। मैं इन गहा जितना हा छोटा बन गया था, वसी हा सूक्ष्म किरणें मर धल्दर म फूटता थीं और मरा निकटतम पदामी मुझे चद्रमा रहित राता म ही दब पाना था। गमा था मृष्टि का वह भाग जहाँ मैं रह रहा था।

एक कविता का अंग है एक चरवाहा था, जो अपन विचारा का उतना ही ऊँचा रखना था जितन कि व पहाड थे जिनपर चरकर उमक पंगु हर घड़ी डमक पापण करत थे।

१ सम्भवत यहा कृष्ण में हा लउक का तात्पर्य है।

२ कैन्निमपिया भरकम की बंदा और सुकिवन की गना था। उत्तर गलाप में स्थित नवत्र मएल्ल का नाम इसी नाम पर रखा गया।

३, ४ प्राक पुराणा व एल्लम का बंदिश जिसे जियस (१८८८) न नवत्र बना दिया नन्दा व नाम।

५ रादिगा नवत्र व एक नवत्र

यदि चरवाह व पशु उगने विचारों में भी जबिक ऊँच चरागाहों पर ही निरन्तर चरा करें तब उनके जीवन के धार में क्या बढ़ा जाय ?

हर सुबह मेरे लिए एक आह्लादकर निमंत्रण पानी थी कि मैं अपने जीवन का स्वयं प्रकृति जितना ही सरल साधा जटिल बनाऊँ। मैं अराग^१ भेवा का घोल खा लिया जितना ही मच्छा भक्त रहा हूँ। मैं सुबह ही जल्दी उठता और सरोवर में स्नान करता। मरे लिए यह एक धार्मिक कृत्य बन गया था। जितने सर्वात्मन काम मैं करता था यह उनमें से एक था। प्रसिद्ध है कि चौरी मघाट चिन्म था के मन्त्र के टब पर कुत्र इन अथावात अभ्यस्त हुए थे प्रतिदिन पूरी तरह अपना बाधा बर्त्त करों फिर करों फिर करों, और सदा करत जायें। मैं उसका भाव समझ सकता हूँ। प्रभात व्यतीत घोर युगा को बाधना जाना है। ब्राह्ममुहूर्त में जब मैं द्वार और लिङ्ग किया जाल बठा था तब एक अल्प और अवपनीय भ्रमण पर निकला एक मच्छर मेरे कमरे में मगुझरा। उसका सीटी भनभनहट न सुभ उनना ना प्रभा वित किया जितना कि घोरों की कीर्ति में बसती हुई^२ की^३ तुम्ही मुझे कर सकती थी। मच्छर का घीत गायन मृतात्माओं की गानों के लिए गाया गया हमारे^४ का कोई गान था। वह गायन स्वयं हवा में उड़ता हुआ कोई इन्धियर या जोड़गी था जो अपने ही घुड़ों और यात्राओं के गीत गा रहा था। उसमें कुछ अस्वास्थ्य था। विश्व की अभय आनपूणता और उबरता का जब तक रास्ता न जाए वन्ध्यायी विज्ञापन कर रहा था। प्रभात दिन का सर्वाधिक स्मरणीय समय है वह जागृति की घड़ा है। उस समय हममें सूत्रतम तन्त्रा हाती है और कम ग कम एक घण्टा तक हमारे अन्तरंग का वह अंग जागता है जो गप दिव और रात के समय नाश में डबा रहता है। उस दिन मैं काइ आता नहीं की जा सकती उस दिन कहा जाय यही सत्यारूप है जिस दिन कि हम अपनी प्रज्ञा के सतत पर नहीं किमा नौकर के द्वारा भभोड जान पर जागत है किम दिन अन्तरंग का नवापन गति और आकाशा नहा निय सगीत का नहने नहा किम किसी कारणवत्त का घटा हम उठाती है। प्रभात के पवन में एक सुगन्ध भरी जाना है। जग जीवन में हम मान थे उसमें उच्चतर जीवन में हम जागत हैं और इस प्रकार अन्तरंग एक फल जाता है और सिद्ध करता है कि वह

१ मोर पुगली का उग

२ एक पुगली का गायन या हमारे। गायन एवं आत्मा उगः द्वारा निर्मित घोर का उग।

मरणा मरम गुम नहीं है। जो व्यक्ति नहीं मानता कि जिन के जिन पहरा का वह
 दूषित कर चुका है, उनमें पहन भा एक पहन होना है जो अधिक पवित्र और प्रत्युपाय
 होता है, मरमिष्ट कि वह व्यक्ति अपने जीवन स निराग है और पतना मुख अवकार
 पय पर चम रहा है। हर जिन ऐंद्रिय जीवन आत्मिक रूप स स्वता है और मनुष्य की
 आत्मा अथवा उमरे अग नये प्राण प्राप्ति कम्मे हैं और प्रता जीवन का यथासम्भव
 श्रेष्ठ बनान का फिर ने प्रयाम करती है। मैं कहूंगा सभी स्मरणीय घटनाए प्रभात
 के समय अपना प्रभात के वातावरण म ही अकुरित होनी है। वेना म निवा है
 'सज प्रताए प्रभात के माथ-माथ जाग उठनी ठ। बकिता और कता तथा मानवा
 क सुन्दरतम और सवाधिय स्मरणीय कृत्या का मून प्रभात म ही निहिा है। सभी
 कवि और महान व्यक्तित्व ममनन' का तरह अरारा की ही मल्लतिया हैं और
 उनका सगीत उनम म मूर्धोन्म क ममय ही फूटता है। जिरर नबील ओजस्वी
 विचार मूय के माथ-माथ सहगमन करत हैं उमक लिए पूरा दिन ही प्रभात है।
 घडिया मया कहती हैं, नागा क र्व और प्रयाम क्या धापित करते ह यह एक
 तुच्छ बात है। जब मैं जागता हू तभी सुनह हाती है और प्रभात ता मरे अन्तमल म
 निहित ह। निद्रा का भगा दन क प्रयाम का ही तो नैतिक मस्कार कहते हैं। लोग
 जिस दिन सो नहीं पात उस जिन का घटा ही उल्हाहापून विवरण क क्या दिया
 करते है? दतत कच्चे हिमात्री के हात ता नहीं। यदि क तद्रा म पड न रहन ता
 गायद कुछ कर पाते। गारीरिक श्रम क लिए तो नागा ही मरेन रहने हैं पर दम
 लावा म कोर्क म हा व्यक्ति प्रभातगानी यौदिक श्रम के लिए पयाप्त मजग मिलता
 है और सो नागा म जाकर काई एक मिनता है जो कवि का अथवा दिव्य पुरष का
 जीवन बिताता है। जाग्रत रहना ही आयित रहना है। मुझे अभी तक एक भी व्यक्ति
 ऐसा नहीं मिल सका जो पूण मजग ने। भना ऐसे व्यक्ति की जागा म मैं कम भाक
 मरता ?

हम यार्निक मायना स गहा गहरी म गहरी ना म म हमारा माथ न छाडन
 वाल प्रभात की अनन जागना म प्रेरित हाकर ही फिर म जाग उठना आर
 जान रहना मीयना चाहिए। सवेत प्रयल हाग अपन नीच का ऊचा उगन की

- १) एक पुगणो का मर अरारा का पुन था अनन। न न नग पर उनका मूर्ति था।
 मे हा मय का प्रयन किरणें मरे छाता थी, नमें स एक सात फूटा था, निने मेमनन
 का मगत कहन था।

मानव की असंख्य क्षमता से अधिक उत्साहवद्ध किंसी दूसरे तथ्य की जानकारी मुझ तक नहीं है। एक विशेष चित्र चित्रित करना अथवा एक मूर्ति गढ़ना और इस प्रकार कुछ चीजों का सुंदर बना देना कुछ है लेकिन दृष्टि के माध्यम को और स्वयं वातावरण का ही चित्रित करना या गूँधालना एक बहुत ही उत्कृष्ट वाय है और ऐसा नैतिक साधना से ही किया जा सकता है। दिन के गुण हम का प्रभावित करना कलाओं में सर्वोच्च कला है। प्रत्येक मानव पर अपने जीवन की तपशील तक को भी इस योग्य बना देने का भार है कि चरम उत्कर्ष और सफलता की घड़िया में वह उनका चिन्तन कर सके। जो गण्य-स साधन हमारे पास है यदि हम उन्हें न आसमाएँ अथवा उन्हें चुबा डालें तब तो भविष्यवक्ता ही साफ-साफ बता सकेंगे कि कैसा फिर किस साधन से किया जाए।

मैं वन में गया था क्योंकि मैं गतिपूवक रहना चाहता था मैं चाहता था कि जीवन की मात्र अनिवाय समस्याओं का सामना ही मुझ करना पड़े, और मैं देखता चाहता था कि जीवन के पास सिखाने का जो कुछ है उससे मैं सीखता हूँ या नहीं। कभी ऐसा नहीं हुआ कि जब मैं भग्न लगता हूँ तब मुझे यह कि मैं तो जिया ही नहीं। जो जीवन नहीं है उसे जानना मैं नहीं चाहता था क्योंकि जीना एक महंगा खर्च है। जब तक अनिवाय नहीं होता मैं वैराग्य धारण करने का भी उत्सुक नहीं था। मैं गहराई में जीना और जीवन-नैतिक को पूरी तरह घुस लेना चाहता था। मैं चाहता था जीवन का स्पष्टता की तरह कठोर धर्मपूवक जिज्ञासु जिगम जो जीवन नहीं है उसे उलाहकर फेंक सके। घाम के लिए चौड़ा लफट चुन और दगाकर छोड़। जीवन का एक कान में धर ल और उसका माग का 'यून' में 'यून' स्तर पर ल आऊँ। यदि जीवन क्षम मिट्टी है तो इस समय वास्तविक शुद्धता का ग्रहण हो क्या किया जाए और मसार के मामले में प्रकाशित हो क्या किया जाए ? और यदि जीवन उत्पन्न है तो अनुभव में उसे जाना जाए और अपनी जगह यात्रा में उसका सच्चा विवरण देने के योग्य बना जाए। मुझे लगता है अधिकतर पाण्डित्य इस विषय पर कि जीवन गतिमान का स्तर है या भगवान की एक आश्चर्यजनक दुविधा में पड़ रहे हैं और जलवायु में यह निष्पत्ति कर लेते हैं कि मानव का प्रधान एहिक लक्ष्य यह होगा चाहिए कि भगवान की प्रणाम की जाए और मरना मुक्त सून जा जाए।

१ प्राचीन ग्राम के 'कोनिका रा'य का राजधानी के निवास । यहाँ मरने, पारि लो और गुडमेमा थे ।

यद्यपि एक पौराणिक आध्यात्मिका के अनुसार बहुत काल पूर्व ही मानव-जन्म पा चुके थे पर आज भी हम चींटियाँ की तरह धुंधला का जीवन हो विनाश हैं। बीना की तरह हम मारमा स युद्ध कर्त्त हैं गलती पर गलती करत और पैवन्द पर पवन्द गगन हैं और हमारा सर्वोत्तम गुणा का परिणाम एक अनादयक और परित्याग दम्य हो जाता है। हमारा जीवन निरर्थक तपस्वीमा में नष्ट हो जाता है। एक मर्कट मानसार जादमी का अपने गाय की दम उगलिया और बिगोप मामना में परा का दम और जोड़ लीजिए—यम इसमें अधिक हिमाव किताव की जल्दतर कटिनाद से ही पशुओं चाहिए। आप सब उस कड़े पर फेंक देना चाहिए। सादगी सादगी सादगी ! मैं कहता हूँ, आपका मामल न या तीन तक सामित हो सौ या हजार तक न पनें। दम नास तक मिनन के बने आगे दजन तक गिना और अगुठे के नाबून पर अपना हिमाव करन योग्य बना। मध्य जीवन के इस अगालन समुद्र में एक बादल नूफान और बालुवन्द हैं और एक हजार एन एमी समस्याएँ हैं कि यदि व्यक्ति लडखडाकर डूबना तनी में बैठना और अपना जरा-सी भी हानि करना नहीं चाहता तो उस ठाम गगना के आधार पर हा चरना पड़ेगा। जो इसमें मग्न हो जाए वह निश्चय ही बड़ा भारी हिमावी हाना चाहिए। जीवन का मरल बनाओ सरन बनाओ। दिन में तान बाग भावन करन के बदल उररत हो ता एक ही बार लाओ। यानी मैं भी बगारिया के बदल पाच ही रया जार दूसरी चींटी का भी अनुपातित घना भा। हमारा जवन जमन गाय मध के समान है जिसमें छाटी छाटी गियामें मम्मिनित हैं जिनकी सामाए निगलन घन्ती-बदना रहता हैं इतना कि एक जमन भा वह नया नया मक्ता नि हम मग राय बिगोप की मही सीमा करा है। अपने मनी तथाकथित उन आन्तरिक मुयारा के बावजूद या वास्तव में निहायन मगहा और अनावयक हान हैं गच्छ स्वयं अपने में एक भारी मर्कट विगान-काय संगठन बन गया है। मात्र-मानान मग्याय भर दुआ अपने ही फलाम वमा हुआ हिमाव-किताव का कमी और एक श्रेष्ठ हेतव के अभाव के कारण विनाश के और अघायुध मर्कों के द्वारा आज का राष्ट्र भी उतना ही बर्बाद है जितना कि य साम्राज्य है। उसका भा और इन मक्का भा एक हा इनात्र है और वह हमी हूट अथ-व्यवस्था स्पाटावाला में भी अधिक मात्रा और कगार जीवन जोर उद्यम की उगातना। राष्ट्र बहुत तडी में भागता है। नाग स्वयं बना कर मन या नहीं, इस निम्न-ह अनिवाय मानन है कि राष्ट्र वाणिज्य कर बफ का नियान कर नार-म

वातचात करे और तीस माल प्रतिघण्टा का चाल स सवारी करे। लेकिन हम मानवा की तरह-हम या लगन की तरह इस त्रिपथ पर व एकदम स्पष्ट भग्न है। यदि हम जीवन की बतन में टाके लगाने और उस सुवारने में ही नगे रह और स्लोपर न जमाए उनपर रेल की पटरिया न गिद्धाए और इस काम में अपने निरान एर न कर दें तो भला ये पथ का निमाण कौन करगा? और यदि रेल पथ न बन सके तो हम समय के भीतर म्रग तक कैसे पहुच सकेंगे? लेकिन यदि हम घर पर ही टिक और अपने अपने घरों में व्यस्त रह तो भला रेल पर चन्न कौन जाएगा? हम रेल पर नहीं चन्न रेलें हमपर चढ़ती हैं। क्या क्या आगे सोचा है कि रेल की पटरियों के बीच पड़े स्लीपर क्या हैं? उनमें से प्रत्येक एक मानव है आयरन या अमरीकन वार्ड भी उनके ऊपर पटरिया गिछा दी जाती है। रेल से उह डर दिया जाता है और सब डिव्व उनके ऊपर में सहन रूप में दौन्न लगन हैं। मैं आपसे विश्वास दिलाता ह कि व बड़ा गरीबी नींद सानेवाले स्लीपर (सानेवाले) हैं। हर कुछ घणों के बाद नये स्लीपर डाले जाते हैं और उनपर रनें चलाई जाती हैं। यदि कुछ साग रेल की सवारी का जानद उठाने हैं तो अन्य उनका बोझ ढाने के दुभाग्य के नीचे पिसते हैं। और जब कभी नींद में चलन के बीमारीमाला कोई आदमी एक फानतू स्लीपर की तरह जाकर पटरी पर सेट जाता है और रेल व नीचे कुचला जाता है तो रेल गक दी जाती है और साग इस घटना को नकर ऐसा शार मचाव है जसकि यह अनहारी है। यह जानकर मुझ खुशी होती है कि हर पाप मान के ऊपर कामकरा का एक गिरोन नियुक्त रहता है, जो इस बान की दमभा करता है कि स्लीपर क्यास्थान अपन विस्तरा में लटे है या नहीं। यह दस बात का प्रमाण है कि ये जयशर पाकर उठ गये हो सकन ह।

हम क्या जीवन का इतनी जल्दबाजी में जीन और उस बरबाद करत हैं? हम क्या भये हान में पहेन है मृथ में मर जाने का कृत-सकल्प है? साग कहा करत हैं, बान का एक टाका वां के दम में उत्तम है। क्या वसोनिण व एक हजार टाके आज गगन ट कि व न न गगन पड? जहा तक काम का सम्यक् है, कोई महत्व का काम हमारे पास नहीं है। हम सन्त चण्डटम^१ के नत्य में भाग लेते हैं और अपन मिरा का जग भा स्थिर नहा रख पात। यदि मैं मिरजाघर के घण्टे की रम्मा का न। मर बार लगातार मम बीच दू जमकि आग लग जान पर उम गीचा

१ एक इसा मन्त्र त्रिपरा स्मृति में १५ ब्रून के दिन अत्यन्त, नत्य आदि किया जाता है।

जाता है, तो वानवाड के सीमावर्ती फामा का कोई पुरुष या स्त्री या वानक घर में बठिनाई में ही एक पाण्णा। सात मुखे अति कामा में व्यस्त होना का बहाना बना रहे थे, उन कामा को छोड़कर वे जावाड़ का तरफ भागेंगे और उनका उद्देश्य सम्पत्ति को लपटा स बचावा नहीं, बल्कि सब कह तो उसे जतने हुए रसना होगा क्योंकि उसे ज्ञान था जाना ही है। सबका मालूम हो कि आग हथिन गरी लगाई था, हमने तो उस बुद्धि को देना है और यदि यह ब्रह्ममूर्खों से बुद्धि जाए तो हम कहेंगे कि हमने उसके बुद्धिमान में हाथ बटाया है। यदि आग स्वयं गिरजाघर में भी लग जाए तो भी हमारी प्रवृत्ति यही होगी। व्यक्ति भोक्त के बाप बठिनाई से आध घण्ट की नींद लगा और जागकर सिर ऊपर उठाएगा और पूछेगा 'क्या खबर है।' 'जैम दास मातृ-जाति उसकी चानादारी कर रही है। कुछ लोग का आदेश रहता है कि हर जाय घंटे के बाद जाग दिया जाए। पर जिसलिए ? निस्संदेह, किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं। और तब मातो उठाए जान के पानि श्रमिक के रूप में ब सुनाएंग कि क्या अपना उद्देश्य देखा है। रात भर सोने के बाद तो समाचार नाश्त जितने हा अनिवाय हा जान है। कोई नई खबर बताइए न, कोई घटना जो इस भू-मानव पर कही भा किसी ने आदमी के साथ घटी है।' काफी पाते हुए और त्रिभुट ग्रात हुए व्यक्ति पता है कि पता गुरुह वाचिनी नदा पर एक आदमी ने अपनी जानें निकलवा दी। और इस बात की वह कल्पना भी नहीं करेगा कि वह स्वयं दुनिया की इस विनाल अथाह गुफा में रह रहा है और स्वयं उसके पास जाया के प्राथमिक चिह्न। के मित्राय और कुछ नहीं है।

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं मानवता के बिना काम करना नहीं है। मेरे विचार में उनका माध्यम में बहुत ही कम महत्त्वपूर्ण पत्र भेज जान है। एक सख्त बात कह दूँ पूरे जीवन में एक या दो पत्रों में अधिकतम पत्र भेजे गये हैं जो पत्र टिकट का पत्रा उचित हो खर्चा गया था। कुछ वर्ष पहले भा मन यही बात निवी थी। पना-पास (एन पेना की बीमारी का समाचारपत्र) वह मध्या है जिसने माध्यम में आप अपना एक पत्रा गम्भीरतापूर्वक एन व्यक्ति तक उसके विचारों का कामा के रूप में प्रकाशित है। यही पत्रा जब मजाल में हम किसीको भेंट कर देते हैं तब पायन वह अधिन सुरक्षित रहता है। मैं निश्चय के साथ कहता हूँ कि किसी ने समाचारपत्र में काम भी स्मरणाय गमावार में कभी नहीं पठा। यदि हम एक बार पत्र लन है—एक आदमी ने लिखा गया था कि वह कर दिया गया, या

दुघटना में मारा गया अथवा एक घर जल गया, एक जहाज टूट गया, एक स्टाम
 कोट फट गया पवित्रभी रत्न-भाग पर एक गाय कुचनी गई, एक पागल कुत्ता मार
 डाला गया, या जोड़ा में टिड्डीदल चढ़ आया—तो इसे दसग्रे बार पढ़न का जम्हरत
 हम नहीं होनी चाहिए। यह सब एक बार ही काफी है। यदि आप एक मित्रान
 में परिचित हैं तो उसके साक्षात् दृष्टान्तों और प्रयोगों का जानना बकार है। एक
 दासनिष्ठ के लिए तथाकथित मंत्र समाचार गप्पें हैं। धार पर जमा हुई वृत्ति
 मिनिया ही उनका सम्भालन करती और उन्हें पढ़ती है। फिर भी इन गप्पा के पीछे
 ललकनेवाले लोग यादें नहीं हैं। जमा मैंने सुना है अभी उस दिन विदशा स
 आई ताड़ी रावरा का जानन के लिए एक समाचारपत्र के दफ्तर पर इतनी भाड़
 जमा हुई कि धनबन्ध धक्के में दफ्तर के फितन हा बड़े-बड़े शाश टूट गए। मैं सम
 भता हूँ एक चपन बुद्धिवाला व्यक्ति बारह महीन क्या बारह बप पहले भाइ-हां
 समाचारों का पर्याप्त यथायनापूर्वक गढ़ रहा। जहां तक स्पन का सम्बन्ध है
 यदि आप जानते हैं कि डान बाला^१ और इन्फण्टा^२ और डान पट्टा^३ और
 रोविल^४ और ग्रनडा^५ का जिक्र समय-समय पर उचित भाषा में बस कर दिया
 जाए—अलवार पढ़ मुझ बहुत दिन हा गए हैं हा सकता है इस बीच नाम कुछ बाल
 गए हैं—और यदि आप अथवा आपणा के विषय होने पर साडा का लडाइ का वणन
 कर सकते हैं तो समझ लीजिए कि स्पन की यथाय दगा अथवा दुदगा का उतना
 ही सदा महो चित्र आपन साध दिया है जितना कि अलवारा के तत्सम्बन्ध
 कानमा की मक्षिप्त और स्पष्ट सूचनाओं में प्राप्त किया जा सकता है। और जहां
 तक इरलड का सम्बन्ध है वहां का पिछला महत्वपूर्ण समाचार १६४८ की
 क्रान्ति^६ था। फसला हा एक जीमंत साल की प्रगति का अध्ययन करने के बाद
 इस विषय में कुछ और चातव्य नहीं रहता। हा यदि आपका उद्देश्य मात्र जापिक

१ १५४५ से १५६८ तक जयचरण स्पन का एक राजकुमार जो आरा रायन था।

२ स्पन के राजकुमारों का सामान्य नाम

३ १७१८ से १७४८ तक नाविनस्पन का राजा ताराशानाच का प्रथम राजा मद्रास

४ स्पन का एक प्रांत

५ निरालगा का एक प्रमुख नगर

६ इंग्लैंड का ममर द्वारा राजा चार्ल्स के विरुद्ध का गठित मिलने जनसहस्र राजा को
 मुन्दु-दयद कर कागलदेन का राजपना की गई थी।

इं ता वान अलग है। जो कभी-कभी ही अवधारणा पन्ता है यन्ति वह निणय दे तो यही देगा कि विदेशा मे कोई नई घटना कभी नहीं घटनी। फ़ान्सीसी कान्ति जैसी घटनाएँ भी इसका अपवाद नहीं हैं।

क्या खबर है। कितना महत्वपूर्ण है उसे जानना जा कभी पुराना नहा पड़ता। क्यूहे-यू^१ (वाई राज्य का एक बड़ा पदाधिकारी) ने एक आदमी का खग-स्मे^२ का पाप उसका समाचार जानने को भेजा। खग-स्मेन इस दूत का अपन पाम बिठाया और उसमें इस प्रकार पूछा, 'तुम्हारा स्वामी क्या कर रहा है? दूत न मनममान उत्तर दिया मगर स्वामी अपन दापा की मर्यादा कम करना चाहता है पर उन्हें उनके अन्त तक पहुँचा ही नहीं पाता। दूत के चन जान पर दार्शनिक कह उठा 'दूत कितना दाम्य था। दूत कितना चतुर था। मप्ताह के अंत में आराम के दिन, क्योंकि एतबार कठार श्रम में भी मप्ताह का उचित अन्त है एक नय मप्ताह का ताजा और माहसपूर्ण आरम्भ नहीं—निदियाएँ किसानों के कानों में एक और बन्ना उपपन्न उठेनन के बदन एक धर्मोपदेशक का ता चित्ना चित्लाकर यह कन्ना चाहिए 'ठहरो, ठहरो'। एतन तब क्या भागे जान हा? बहुत धीमे चनो।

प्रवचनाओं और भ्रान्तियों को पुष्टनम गत्या का गौरव दिया जाता है, जबकि यथाथ को कपोतकल्पित माना जाता है। यदि लोग न्डनापूर्वक बचन वास्तविकताओं से परख और भ्रान्तियाँ में न टग जाएँ और जीवन की सुपरिचिन उपमानों में तुलना करें तो कह सकते हैं कि वह परिया की गहानी और अरब की हज़ार राता की कथाओं जमा बन जाएगा। यदि हम अपग्निहाय को जीर ज़िम होन का हक है उसीका ग्रहण करते हैं, तो भीत और कविता गलियाँ में गूँजती घूमेगी। जब हम अधीर नहीं हान और समझनागे में काम लेते हैं, तब हम समझ लेते हैं कि केवल उपास और श्रेष्ठ चीज़ों का ही स्थायी और धरम अस्तित्व होता है। तुच्छ भय और तुच्छ मनोरजन ता कम गत्य की छाया-मात्र हैं ऐसा समझ लेना मन्ना ही आह्लात्क और मन्गन होता है। हर वही 'योग आर्षे बन्द करके उछलें हैं और स्वयं को सपना में छेने जान लेते हैं। यह उस दनिव जीवन क्रम और स्वभाव का स्थापित और सिद्ध ही करता है जो विगुद भ्रमा की नींव पर हा जभी तक भी निर्मित किया जाता है। अच्छे ज़िन्गी के खेन मिलते हैं। वे जीवन के मन्चे नियमा

१ १०वीं शताब्दी ईसापूर्व का एक चीनी राजनीतिज्ञ

२ एक चीनी दार्शनिक

दुघटना में मारा गया अथवा एक घर जल गया, एक जहाज टूट गया, एक स्टीम बोट फट गया पश्चिमी रेल-भाग पर एक गाय कुचती गई एक पागल कुत्ता मार डाला गया या जाड़ा में टिहरीदल चर आया—तो इसे दूसरी बार पाने की जरूरत हम नहीं हानी चाहिए। यह सब एक बात ही काफी है। यदि आप एक सिद्धांत में परिचित हैं तो उसमें साक्षात् अष्टान्ता और प्रयोगों का जानना बेकार है। एक दार्शनिक के लिए तथ्यावली में समाचार गप्पें हैं। चाय पर जमा हुई बूढ़ी स्त्रियाँ ही उनका सम्पादन करती और उन्हें पढ़ती हैं। फिर भी इन गप्पों के पीछे सतकनेवाले लोग थोड़े नहीं हैं। जसा मैंने सुना है अभी उस दिन बिदगा में जाते ताड़ी रावरो का जानन के लिए एक समाचारपत्र के दफ्तर पर इतनी भीड़ जमा हुई कि धक्कम धक्के में दफ्तर के बितने ही बड़े-बड़े छीने टूट गए। मैं मम भना हूँ एक चपल बुद्धिमान व्यक्ति बारह महीने क्या बारह वर्ष पहले भी इन्हीं समाचारों का पचापत यथायथापूर्वक गूँ रगा। जहाँ तक स्पष्ट वा सम्बन्ध है यदि आप जानते हैं कि डान कार्ता^१ और इन्फंटा^२ और डान पेन्ना^३ और सविल^४ और ग्रनेडा^५ का जिन समय-समय पर उचित मात्रा में कैसे कर दिया जाए—अवधारण्ड मुझ बहुत जिन हा गए हैं हा सक्ता है इस बीच नाम कुछ बदल गए हैं—और यदि आप अन्य आकषणा के विषय हान पर साडा का लडाई का घणन कर सकते हैं तो समझ लाजिए कि स्पष्ट वा यथायथा दशा अथवा दुदगा का उतना ही गूँ रगा महा चित्र आपन ग्राह दिया है जिनका कि अवबारा के सम्बन्धों कालमों की सक्षिप्ता और स्पष्ट सूचनाओं में प्राप्त किया जा सकता है। और जहाँ तक इंग्लैंड का सम्बन्ध है वहाँ का पिछला महत्वपूर्ण समाचार १६४६ की क्रांति^६ था। फमला ही एक औमत साल की प्रगति का अध्ययन करने के बाद इस विषय में कुछ और जानिये नहीं रहता। हा यदि आपका उद्देश्य मात्र आर्थिक

१ १५४५ में १५६० तक जॉर्ज स्पेन का एक राजकुमार, जो आशा वासना था।

२ स्पेन के राजकुमारों का सामान्य नाम

३ १७६० में १७६४ तक यविरस्पेन का राजा तशवाचाप का प्रथम स्वयं संपाद

४ स्पेन का एक प्रांत

५ निराराग्या का एक प्रमुख नगर

६ १६४६ की मम द्वारा राजा चार्ल्स के विरुद्ध की गई थी जिसके पतनरूप राजा को मनोरेव का राजपना का गर्भो।

है ता वान अलग है। जो कभी-कभी ही अगवारा पटना है, यदि वह निणय दे ता यही दगा कि विदेगा म कोई नद घटना कभी नहीं घटनी। फ्रान्सीसी क्रांति जर्मा घटना भी इसका अपवाद नहीं हैं।

क्या सवर है। चितना महत्त्वपूर्ण है उसे जानना जा कभी पुराना नहा पडता। क्यू-हू-यू^१ (वाई राज्य का एक बड़ा पदाधिकारी) न एक आदमी का स्वयं-स्म^२ का धाम उसके समाचार जानन को भेजा। स्वयं-स्म ने न इस दूत को अपने पाम बिठाया और उसमें इस प्रकार पूछा 'तुम्हारा स्वामी क्या कर रहा है?' दूत ने सम्मान उत्तर दिया, 'मरा स्वामी अपने दापा को मर्या कम करना चाहता है पर उन्हें उनका अन्त तण पट्टा ही नहीं पाना। दूत का चल जान पर दान्तिक कह उठा, दूत कितना योग्य था। दूत चितना चतुर था।' मप्ताह के अन्त म आरम्भ के दिन, कदाकि स्तवार कनार श्रम म बीन मप्ताह का उचित अन्त है एक नय मप्ताह का ताजा और माहमपूण आरम्भ नहीं—निदियाण किसानों के काना म एक और बहूना उपरान्त उद्येन के बल एक धर्मोपदेशक को ता चित्ला चिरलाकर यह कहना चाहिए, ठहरा ठहरो। इनने तज क्या भागे जात हा? बहूना धीमे चलो।'

प्रवचनाओं और भ्रांतियों का पुष्टम सयो का गौरव लिया जाना है, जबकि यथाय को कपोरकल्पित माना जाना है। यदि लोग श्रद्धापूर्वक कवन वास्तविकताओं को पख और भ्रांतिज म न ठग जाए और जीवन की सुपरिचित उपमाना म तुलना करें, तो वह सकने हैं कि वह परिया की श्रुतानी और अरव की श्रुताराना की क्याशा जैसा बन जाएगा। यदि हम अपरिहाय को और जिम होन का हक है उसीका ग्रहण करते हैं, ता मगीत और कविता गलिया म गून्ती घूमगी। जब हम अर्थार नहीं होने और समझनारी म काम लेत हैं तब हम समझ लेते हैं कि बवल उगात और थोछ चीजा का ही स्थायी और चरम अस्तित्व हाता है। तुच्छ भय और तुच्छ मनोरजन ता वम मत्य की छाया-मात्र हैं ऐसा समझ बना मना ही आह्लाक और महान होता है। हर कहीं लोग आर्थे बढ करके ऊपन हैं और स्वय को सपना म छन जान न्न हैं। यह उम दनिक जीवन म और स्वभाव का स्थापित और मिद हो करता है जा विगुद भ्रमा की नीव पर ही अभी तक भी निर्मित किया जाता है। वच्च जिन्दगी क खेल खेलत हैं। वे जीवन के मच्चे नियमा

१ १०वीं शताब्दी का एक चीनी राजनयिक

२ एक चीनी दार्शनिक

ही प्रिताना चाहिए। कोई बलि या कलाकार अभी तक इनकी मुन्तर और भय बनाईति नही बना पाया है तब उसकी मन्तविया म म ही काई बर काम पूरा कर पायगा।

आइए हम एक दिन तो प्रकृति चित्र ही महज रूप म गुदाग्रर गये। हम रन का तरह हर गुठली या मन्दरा क पग क सामन पत ही पटगी पर म न उतर जाए। हम जटुन जल्दी उठें अत ग्वें या नाना नें चित्र महजा म रीर बिना धबगाए। नाग आग नोग चन जाए घण्टिया यज और बच्चे चीखें प हम हम एक त्रि का मफन बनाने क लिए इत-मरुत्प रह। क्या हम ठोकर गानर गानी के नीचे आ जाए और धारा क साथ वह जाए? मय्याल्ल क द्वि-न जन म उत्त-वानी मध्याल्ल भाज नामक उम भयानक नेत्र लहर और भवर का दयनर हम धबगा न उठें अमन-व्यमन न हो जाए। इस मकट का सामना कर मर नया नि आप मुग्ध हैं और रोष गमता उनर का है। यूनीमिम की तरह मम्नू न मम्बय न। बाव तो और दूसरी तरफ देखने हए प्रमान के उत्साह क साथ नीचे पड़ बिना बम खा जाओ। यदि इजन सोटी दरहा है तो उस इन दो, तब तक जब तक उसका आनाउ भरा न जाए। यदि घण्टी बज रही है तो मुन्तर हम क्या दौट पडें? हम माचेंगे नि इन सबका मगीत है किस प्रकार का? पहन हम स्थि हा नें और कीचट और गार मटनीनर अपने पर जमा लें। कीचन? विचार पूवाग्र परम्परा भ्रान्ति और छन क काच की पन जिमम यह भूमान लिपटा है जो पग्मि और तइन पूवाक और वाग्मन और वानकाट गिरजाघर और राज्य कविता और दान और धम मर कहा व्याप्त है। इस कायट के नीचे वास्तविकता की मल्ल भूमि जोर घटान है। जमपर हम जपन पैर जमा नें और तब हम कह कि यन मत्य है और हमम काई गनती नहीं है। और तब चन जन क वष क जीर आग क नीच तक आश्रय-वद्र खजिंकर वहा एक गीवार या तल्ल या क्षीपाधार मुग्धित हग म स्या पिन कर न जयना एन मात्र—पन्नु नाउननी का मर-मापन स्तम्भ नया, बल्लि एव मत्य मापन यन—हम उहा बना द जिमन भावी युग जान नें कि पायण और छन का नन ममय-ममय पर कितना उचा चढ़ सकता है। यदि आन तध्य क टीर सामन जमकर माधे चने न जाएंगे तो आप नयेंगे कि मूय उसन दाना पृथ्वा पर चमक उठा है और यदि मय एव खडग हा तो आप उसकी मीठी धार नृदय

और याम मन्त्र के बीच प्रवेश करते हुए अनुभव करेंगे और इस प्रकार आप मानस अपने पार्थिव जीवन के सत्य का निष्पत्ति कर लेंगे। जीवन का सामना हो या मृत्यु का हम केवल सत्य की आकांक्षा करें। यदि मच ही हम मर भी रहे हो तब भी हम अपने गले में घग्घराहट की आवाज हो सुनें और अपने जन्तुमान को हिम होता हुआ अनुभव करें और यदि हम जीवित हैं तो हम जाए अपना धंधा देखें।

समय बहो नती तो है जहां मछलिया पकड़ने में जाया करता हू। मैं उसके तट पर पानी पीता हू। पवित्र पानी पीने पर मैं उसकी रसीला तला को देखता हू। देखता हू कि वह कितनी उथली है। इसकी छोटी-थोड़ी लहरें बह जानी हैं पर शाश्वतता स्थिर रहती है। मैं और गहर का जल पियगा उस आकाश में ही मछलिया पकड़ गा, जिसकी गहराईयो में तारों के पत्थर बिखरे हैं। कहीं तब तो मैं गिन नहीं सकता। वणमाला के पहले वण तक को तो मैं पढ़ नहीं सकता। मुझ हमें इस बात का दुःख रहा है कि मैं उतना समझदार आज नहीं हू जितना मैं पण होने के समय था। बुद्धि प्रगल्भ समझने होती है। वह विषय के रहस्यों में घुसकर अपना माग बना लेती है। मैं गौरीरिक् श्रम में आवश्यकता से अधिक व्यस्त होना नहीं चाहता। मेरा मस्तिष्क ही घर हाथ और पर है। मैं अपनी सर्वात्म्य प्रतिभाओं को उसमें केंद्रित पाता हू। मेरी जन्मरात्मा मुझमें कहती है मर लिए मेरा मिर हां खानेवाला अंग है। कुछ प्राणी अपनी धृष्टि और मामन के पत्रा में मिट्टी हटाते हैं। मैं इसी प्रकार अपने मिर में इन पहाटिया में अपना रास्ता बनाऊंगा। मैं सोचता हू सबसे मूल्यवान् खनिज की पट्टा यही कही चतमान है। जलावण ऋषि यही कहता है और यह भाव का उठना भी यही मकत देता है। खुदाई मैं यही में आरम्भ करूंगा।

अध्ययन

लोग यदि व्यवसाय के चुनाव में चिन्तन विचारणा में थोड़ा अधिक काम लें तो पायदे से ममा अनिवाय रूप में विद्यार्थी और पद्यवशक बन जाएगा यत्राकि सभीका अपनी प्रवृत्ति और नियति में निश्चय हो समान रचि रहता करती है। जब हम अपने या अपनी मन्तनिया के लिए सम्पत्ति एकत्र करते हैं जब हम एक परिवार अथवा राय की नाव रखते हैं या धन प्राप्त करने चलते हैं उस समय हम मय ही होते हैं किन्तु मय की साधना करते समय हम अमत्य होते हैं और तब किसी परिचितन अथवा दुष्टता से डरने की हम जरूरत नहीं रहती। प्राचीनतम मित्री अथवा हिन्दू दार्शनिका न लिख्य की प्रतिमा पर पड़ पड़े के एक ठार का ऊपर उठाया था। अभी तक वह सम्पित आवरण उठा का उठा हा है और उस तजामणन का आज भी मैं उनका ही साजा देखता हू जितना उस दिन उन दार्शनिका ने देखा होगा, क्योंकि उनमें मैं ही था जो उतना साहसी बन सका था जोर आज मुझमें भी वही है जो उस भारी का पुनरावलाकन कर रहे हैं। उस पदे पर जरा-सी भी धन नहीं जम सकी है जमकि समय आग बड़ ही नहा पाया है। वह काल, जिस हम वास्तव में उपयोगी बना नत था उपयोगी बनाया जा सकता है वह तो न भूत होता है न वर्तमान, न भविष्य।

मिफ बिन्तन के ही निष्पत्ती मरा घर सम्भीर अध्ययन के लिए भी एक विश्व विद्यालय की अपेक्षा अधिक उपयुक्त था। यद्यपि बना रहते हुए, वारी में पुस्तकें टनवाना को भी माचारण पुस्तकालय मरी पट्टच में बाहर था फिर भी मैं उन ग्रन्थों को टन का पट्टन अधिक ले सका जिनका कि पूरे विश्व में मचार है जिनके वाक्य पढ़ने-पढ़ने छान पर निम्ने गए य और अब बढ़िया कागजा पर जो तर बम उनकी नवन ही की जानी है। कवि भीर कमरुद्दीन मस्त^१ ने कहा है

बठ-बठे अध्यात्म-जगत के प्रत्यास म धूम आता, ऐसी उपलब्धि मुझ पुस्तक के द्वारा हो हा सकी है। सुरा का मिष्ट एव पात्र पीकर नम भूमन लगना, ऐसा आनन्द मैंन तथा अनुभव किया है जब मैंन रहस्यवाणी सिद्धान्त की शराब पी है। गमिया भर हामर की इतियड मरीमजपर रही यद्यपि अब-तब ही मैं उसके पत्ने पलट सका। आरम्भ म लगातार गारीरिक् थम करत रहने के कारण यथान पड पाना असम्भव बन गया था क्यकि मुझ अपना घर भी बनाना वा जीर माघ ही माघ सेमा की निराड भी करनी थी। पर मैं भविष्य म ए पान की आगा लवर धीरज धरत हुआ था। काम के बीच-बीच मैंन यात्रा विषयक एक्-नो हलकी फूतकी किताब पनी पर गीघ्र हो ऐसी पुस्तक। स मुझे अपा ऊपर गम आने लगी और मैंने अपन सप्रश्न किया कि तब भला मैं रह बटा रहा हू।

विद्यार्थी होमर अधया एम्पाटमस^१ के ग्रन्थ ग्रीक भाषा म ही क्या न पछें ? अप ध्यय अधवा विलासिता का खतरा इसम बितपुल रही है। इसका अर्थ इतना ही है व्यक्ति कुछ सीमा तक उन यथा व वीर थोडाआ की हां कर और उन पछा के पाठ म अपन प्रात-क्षणो को पवित्र करे। वे वीर काव्य भर ही हमारी मातभाषा म लिख छप मित्र जाए पर पतनगील युगा के लिए तो इनकी भाषा मृत हा बकी है। इमालिग उनका प्रत्येक पवित्र और शब्द का अर्थ हम धमपूवक निवासना चाहिए विद्या वीरता और उगगता का जो भी वतमान साधारण स्तर है, उससे बढत ऊच उठकर बहुत ही उदात्त अर्थ रगान चाहिए। मन्ता और थोका मात निवा ननवाला हमारा प्रकाशन-यन्त्र इतने मारे अनुवा छापकर भी हमे सुदूर अतीत के उा वीर काव्यकाग के निरुड न जान म अधिक सफल नहा हा पाया है। व सदा की भाति हम अद्वितीय ही प्रवीत होत हैं और जिन अक्षरो म व छप है व हम दुलभ और निगम ही लगत हैं। यन्त्रि किमी प्राचीन भाषा के कुछ गान आप सीत मक्के सडक की तच्छता से उठाकर अपन लिए उह यजक एवं उत्तरक बना मक्के तो यह काम यौवन के निना और मून्धवानक्षणो के उपयोगन हागा। जा थोडे म मुन-मुनाए लटिन के गान किमान का यान रहते है और वह जो उह बार-बार प्त्राता रहता है वह निरधर हा रही हागा। लोग कभी-कभी कुछ एमा कहा करत है कि प्राचा गौरवग्रन्थ के अध्ययन का स्थान एवं न एक निम अधिक आधुनिक

१ प्रकाशन (१२) म ४६ इ पू०) ग्रिक कव एवं मैनिह। २१ हैच-१५१ नव टाला थी।

और व्यावहारिक अध्ययन ल लेगा। गौरवग्रन्थ किसी भी भाषा में कितने भी प्राचीन युग में लिखे गए कथा न हों एक साहसी विचारार्थी सदा उन्हें का अध्ययन करता है। गौरवग्रन्थ क्या है? वे मानव के उत्कृष्टतम विचारा के सफल ही तो हैं। वे ही मान ऐसे भविष्यवक्ता हैं जो कभी जरूर नहीं होने और आधुनिकतम प्रश्नों का उनमें स एसा उत्तर पाया जा सकता है जसा डेन्फी^१ और डोन्नेना^२ के देवता भी कभी नहीं दे सके। हम चाहें तो प्रकृति का अध्ययन छोड़ दें क्योंकि प्रकृति बूढ़ी हो चुकी है। अच्छी तरह पढ़ना अर्थात् मत्स्य ग्रन्थ का सत्य निष्ठा से अध्ययन करना, एक ऐसा उत्कृष्ट व्यायाम है जो वर्तमान व्यवस्था द्वारा पुरस्कृत किसी भी व्यायाम की अपेक्षा अध्ययता पर अधिक मारी पड़ना है। उसके लिए मल्ला जेमे प्रशिक्षण और अभ्यास की, इस लक्ष्य की ओर पूरा जीवन को दृढ़तापूर्वक लगा देने की जरूरत होती है। जिस सम्भीर चिन्तन एवं मयम स पुस्तकें लिखी गई थी उसी से उन्हें पता भी जाना चाहिए। जिस जाति ने उन पुस्तकों को लिखा था उस जाति की भाषा को बोलना सीख लेना ही काफी नहीं है क्योंकि बोली हुई और लिखी तथा सुनी हुई और पढ़ी हुई भाषाओं के बीच स्मरणीय व्यवधान और अन्तर है। बोली हुई भाषा माधारणतया अस्थायी मात्र एक ध्वनि, एक आवाज सिर्फ एक बोली होती है। लगभग पशु जैसी जिसे हम अनजाने में पशुओं की तरह ही अपनी माताओं से सीख लेते हैं। निमित्त इस पहली का परिपाक है उसका अनुभव है। एक हमारी मातृभाषा है तो दूसरी पितृभाषा एक मयमित विविष्ट अभिव्यक्ति दत्तना महत्वपूर्ण कि उसका काना से सुनना नहीं हो सकता उसे बोल पान के लिए तो हमें पुनर्जन्म ही लेना पड़ना। भौंड की भीड़ के लोग जो मध्य युगों में ग्रीक और लैटिन भाषाओं का बोलन भर थे, सिर्फ जन्म के संयोग के कारण प्रतिभाओं द्वारा इन भाषाओं में लिखी गई कृतियों के अध्ययन का अधिकार उन्हें नहीं मिल गया था। कारण कि ये कृतियाँ उनकी जानी-पहचानी ग्रीक या लैटिन में नहीं बल्कि साहित्य की विशिष्ट भाषा में लिखी गई थी। उन्होंने ग्रीक और लैटिन की अधिक उन्नत बोलियाँ का नहीं सीखा था। जिन वागजाँ पर ये लिखी जानी थी वे उनके लिए गद्दी कागज भर थे और वे इनके बदल मममामयिक सम्ने माहित्य को ही महत्व देते थे। लेकिन जब यूरोप के कई राष्ट्राँ अपने-अपने-अपने माहित्य के लिए

१ प्राचन प्रेम का अर्थालो का सबसे प्राचन मंदिर। यज्ञ दत्ता पुरोहित व मुचसंभवेय कथन करता था। २ जियस का मन्दिर यहा भा भवेय कथन किया जा। था।

विशिष्ट यद्यपि असंस्कृत निजी भाषाओं का विकास कर लिया गया और प्राथमिक विद्या का पुनरुज्जीवन मिला तो विद्वान सुदूर अतीत में उस जनजात का दृढ़ निकालन की योग्यता पा गए। रोम और यूनान का भीड़ जिसे कानों से सुन न सही थी युगा बाद मुट्ठी भर विद्वानों ने उसे पढ़ा और आज भी धोड़-से ही विद्वान उस पर रहे हैं।

किसी वक्ता की भाषण शक्ति और उसके प्रासंगिक उद्गारा की कितनी भी प्रशंसा क्या न की जाए, स्पष्टतम लिखित शब्द मुख से बहता हुई अजस्र भाषा से साधारणतया उतने ही परे अथवा ऊपर है जितना कि सारक-मण्डित जानाश बादला से उतरा जाता है। नारे उपस्थित हैं और जो उनकी भाषा पढ़ सकते हैं, वे पढ़ लें। खगोलशास्त्री उनका पर्यवेक्षण और उनपर टीका टिप्पणी निरन्तर करते रहते हैं। वे भाषयुक्त वातावरण हमारे दैनिक सन्तानों की तरह उच्छ्वास-मात्र नहीं है। मभा के बीच जिसे वक्तृत्व शक्ति नहीं आता है साहित्य में वही अलवारिता कहलाती है। वक्ता एक शक्ति प्रसंग से प्रेरित होकर समक्ष जन-समूह के सामने उच्च लक्ष्य करके बोलता है जो उसे सुन सकते हैं। लेकिन सत्य अपने अपेक्षाकृत समरस जीवन का प्रसंग लेकर चलता है घटना और भीड़ का एक वक्ता को प्रेरित करते हैं वही उग गायद उखाड़ डालें। वह तो मानव की बुद्धि से, उसके हृदय से उस समझ, सवनेवान् प्रत्येक युग के सभी मानवों से अपनी बात कहता है।

क्या आश्चर्य यदि मिश्र-दर इलियड की प्रति का एक मूल्यवान् मनुष्य में रल कर अपनी विजय-यात्रा में अपने साथ रखता रहा। लिखित शब्द मनुष्य मूल्यवान् अनोप होता है। यह किसी भी अर्थ कलाकृति से बढ़कर प्रतिष्ठ और सावभौम होता है। यह ऐसा कलाकृति है जो जीवन में निकटतम है। इसका हर भाषा में अनुवाद किया जा सकता है। इसे बोल पढ़ा ही नहीं जा सकता, सभी मानव अपने-अपने के माध्यम से उसे सामने के साथ अन्तःस्थल तक पहुँचा भी सकते हैं। इसे चित्र-पटल पर चित्रित अथवा पत्थर पर गूँथ ही नहीं जा सकता स्वयं जीवन की सामा में डाला भी जा सकता है। प्राचीन मानव के विचारों का प्रतीक आधुनिक मानव की भाषा बन जाता है। दो हजार श्रौद्धा ने यूनान की पाषाण प्रतिमाओं की तरह ही उसके साहित्यिक स्मारकों को भी अधिक परिष्कृत स्वरूप और एक अद्वितीय आभा प्रदान कर दी है। ऐसा इसलिए हो सका क्योंकि काल-क्षय से वक्ता के लिए अपने गम्भीर और निर्व्य बातावरण को वे दृष्टि विशेष में ले गए। पुस्तकें ससार के सौष्ठव पाष

हैं और पीड़िया तथा राष्ट्र। के उपयुक्त दायवर्ण हैं। प्राचीनतम और सर्वोत्तम पुस्तकें हर घर की अलमारी में स्वभावतः और अधिकारतः ही सुगमिit मिलती हैं। उह को अपना स्वाथ सिद्ध करना नही हाना लेकिन जब व पाठक व मन को दन और उत्तीण बनानी हैं तब पाठक की साधारण बुद्धि उनका निपेध नही कर पाती। उन ग्रन्था का लेखक-ग्रन्थ ही हर समाज का स्वाभाविक और अनिवार्य अभिजात वग होना है, जो राजाआ और मन्त्राटा मे भी बन्कर मानव मात्र की प्रभावित करता है। जब एक अशिक्षित और मम्मवत तिरस्कार योग्य वर्णिक ग्रन्थ और उद्यम के द्वारा चिरकालिन अवकाश और स्वच्छन्ता प्राप्त कर लेता है और शृंगार और वमव के क्षेत्र मे बह अपना स्थान बना चुकता है तब वह अनिवार्यतः बुद्धि और प्रतिभा के उन उच्चतर क्षेत्रों की तरफ मुड़ता है जो अभी तक उसकी पन्च में बाहर थे। तब उसे सस्कृति की दृष्टि में अपनी अपरिपक्वता का अपन साथे धमड का और अपने वमव के अधुरपन का अहमास हो जाना है। वह समझारी में काम नेता है और जिस बौद्धिक सस्कृति का वह इनकी कमी महसूस करता है उसे अपन बच्चा को उपलब्ध कराता है और तभी जाकर वह एक कुन की नाव डालनेवाला बन पाता है।

प्राचीन गौरवग्रन्था को उनकी मन भाषा में पन्ना जो नही सीख पाए हैं उनका मानव-जाति के इतिहास का पान बड़ा ही अपूण माना जाना चाहिए। कारण कि किसी भी आधुनिक भाषा में उनकी प्रतिनिधि तब तक तैयार नही हो सकनी जब तक हमारी मम्मना भी वैसी ही प्रतिनिधि न मान ली जाए। हमारे अभी तक अप्रेसी में नहा धन सका है, न ही एम्कानलस, न ही बजिल। य ग्रन्थ स्वयं प्रमान जितने ही स्वच्छ ठोस और सुन्दर है। बाट के लेखका में उनकी प्रतिभा के बार में हम जो चाहे कहें, प्राचीन जमा मवागीण मौन्द्य, आवपण और उनके जैसा माहम पूण धामरण साहिबियक उद्यम बन्नाबिग ही देखने को मिलेगा। जिन्होंने कभी उह जाना तक नही वही उहें भूल जाने का बानें करने हैं। प्राचीन कृतिया के अध्ययन और उनके मूल्यांकन के लिए आवश्यक गिशा और प्रतिभा का पात्रन में पहन हो उहें भूल जाना बहुत जन्दवाजी की बात होगी। वह युग निरवय ही बहुत सम्पन्न होगा जबकि गौरवग्रन्थ-म्पी ये अवनेष और राष्ट्रों के इनमे भी प्राचीन और इनसे भी महत्वपूर्ण अर्थ अभिनस और अधिक इकट्ठे किए जाएंगे जब राम के पाप के नगर का वेन और जिन्दावस्ताआ^१ और इजोला अनगिनत होमरा,

दान्ते^१ और शक्सपियरा के ग्रन्थों से भर दिया जाएगा जब आनवाली शताब्दियाँ विश्वकाय में अपने-अपने उपहार धर्मों भेंट कर चुकेगी। ऐसे ढेर पर चक्कर हाँगा यदि हम कभी न कभी स्वयं तक पहुँच सके।

महान कवियों की वृत्तियाँ जनगण के द्वारा कभी भी नहीं पड़ी गई हैं क्योंकि महान कवि ही उन्हें पढ़ सकते हैं। उन्हें पढ़ा भी गया है तो उसी तरह जैसे जन समूह तारा को पढ़ता है, अधिक से अधिक ज्योतिषियों की तरह। भगोल-शास्त्रियों की तरह नहीं। अधिकतर साग-तुच्छ भुविधाओं की प्राप्ति के लिए पन्त हैं। गणित के हमालिए तो मानते हैं कि हिमाचल बिनाब कचरें और ठग न जाएँ। लेकिन एक उच्च बौद्धिक व्यायाम के रूप में अध्ययन करने के बारे में या तो वे बहुत कम जानते हैं या बिल्कुल ही नहीं जानते। पर अध्ययन हम सभी को कहे। स्वाध्याय हम उसका नहीं कहे जो विलास का साधन बनकर हम तारी दता है और हमारी 'उच्च' तर प्रतीक्षा का तत्काल के लिए मुलात्ता है बल्कि उस कहने जिस पन्त के लिए हम उच्चकर सीधा खड़ा हाना पड़ और जिस अपन सर्वाधिक मजग और सचन क्षण हम अर्पित करने पड़ें।

मैं समझता हूँ पढ़ना सीखने के बाद हम साहित्य का सर्वश्रेष्ठ अंग पढ़ना चाहिए हम चौबीस अथवा पाचवीं कक्षा की सत्रसे निचली और आगे की शक्ति में बैठकर के मन-मन अथवा छोटे-छोटे शब्द रटने में ही अपनी पूरी आयु न गुजार दें। अधिकांश लोग इतने से ही सन्तुष्ट रहने हैं, वे पढ़ते हैं अथवा पढ़ा हुआ सुन लेते हैं और कभी-कभी इजील जमी किमी थोड़े पुस्तक का ज्ञान भी उनके पढ़ने पढ़ जाता है और शेष जीवन भर के तयानयित हलकी पुस्तकें पढ़ने में ही अपना शक्तियों का विकास और व्यय करते हैं। हमारे पुस्तकालय में कई भागों में एक पुस्तक है जिसका नाम है लिटिल रीडिंग (सहज पठन)। पहले तो मैं समझता था कि यह पुस्तक इसी नाम के किसी नगर के बारे में है जिसका कि मैं अभी तक देख नहीं सका हूँ। कुछ लोग मानते हैं कि यह जलवायु और गुरुत्वाकर्षणों की तरह भरपूर मासाहार और शाकाहार के बीच भी इस प्रकार की हर चीज़ पचा जाना है क्योंकि वे किसी भी चीज़ का बकार जाना सहन नहीं कर सकते। यदि कुछ लोग यह भूसा तैयार करनेवाले मानें हैं तो ये उस पढ़नेवाले मात्र हैं। वे जबुनन और मफरानिया^२ की नौ हजारवाँ कहानी

^१ निवान्न कामरा का लेखक इटली का प्रसिद्ध कवि (१२६५-१३२१)

^२ माच न यूनानियों का एक प्रेम कथा

मो पत्र पागो । कम उनका अभूतपूर्व प्रेम बना कम उनका मन्त्रे प्यार की एक भी गन्धीनी न जामवी फिर भी भना बैसे बेचन कम उहाने ठाकरे मां व उठे और वे फिर चन पडे । कमे वह अमाणा जा गिगजे म नग घण्टे तक ननी चम मफना था उमके सर्वोच्च गिगवर नर चम गया । उपयामकार व्यय हो उमे वहा चमकर अथ मागी दुनिया को घण्टिया बजा-बजाकर बुना रहा है कि ह सागा आआ और देखो कि वह नीचे कम उनका । मैं ता चामा कि जैम प्राचीन गवक अपन नायका का घना म भेजा कगत ये कम ही व उपयामका कम न अपन उपयामा क मन्त्राकायी नायका का रूप-परिवर्तन करक उहें वान-मूचक (बैर-काक) मानव पुनने बना दें और गिगवर पर उह मय नर चमकर गान दें जब तक नम जग न मग जाए । व उहें कभी भी नीचे न उनगन दें जिमम व अपनी चुहनबाडिया म भन नागों का पगान न कर सकें । अगनी बार यदि कभी उम उपयामकार ने घण्टा बजाई ता मैं ता अपनी जगह से तिनगा भी नहीं भन ही वह ममा भवा जनकर मम्म हो बजा न हो जाए ।

स्पिन्ट-होप की दृष्टांश) मध्य युग का एक रामान्म उमक है 'स्पिन्ट-होप' का प्रतिष्ठित रचयिता मासिग मग्ना म प्रकाशित गगा भारी भीड़ है मव टकराट मन आण । यह मव व नाग कनी आत्मा म अपनी आत्मि उत्कठा मे भीधे तनकर पन्न हैं । अपन जयाह टाग-गह्वर म यह मव वे भग्न जान हैं पर पट की मनवग का मीषा बग्न की जग्न नर उहें नहीं पन्ती । उनका यह व्यवहार बमा ही है जैमाकि उम बार बप क नन् बानक का आ दा मेटवानी मुनहरी जिन्द का अपनी मिणहरना का पन्न मग्यावाहा । वह पने जा रग है पर उच्चा रण स्वराधान अथवा वन बिगप की दष्टि स अपन म काड मुधार नहीं कर पा रहा है और कुनि म न ननिक गिमा प्राप्ति बग्न की यागवता का भी विकास उपम नहीं ग रग है । परिणाम यह हाता है कि उनकी नृत्ति मन्त्र पट जानी है मय रम का मवरण दव जाना है और नमकी बौद्धिक ममताए मृडित ग जानी^३ और कीचड म पय जानी हैं । इसी प्रकार की माठ-मिना मीठी रागिया मुद्ध म अथवा र और मक्का की रागिया म बनी अधिक अध्यवमापपूर्वक प्रतिनिधि हर तन्दूर पर पकाई जानी हैं और निश्चय ही विक नी जाना हैं ।

जो अच्यु पाग्न बन्तान हैं व भी सर्वोत्तम पुनके नहीं पन्न । इमार कानका

३ एक प्राचिन कहानी, जिन्ने एक मउता लइका का बन्धकया कनी ग ६ ।

नगर की सस्कृति की क्या स्थिति है ? अंग्रेजी का हम सभी पढ़ और समझ सकन हैं पर बहुत थोड़े नागरिकों को छाड़कर किसानों में अंग्रेजी साहित्य की सर्वोत्तम अथवा उत्तम पुस्तकों को पढ़ने में कोई रुचि नहीं है। यहाँ क्या हर कहीं कालजा में पल और जो भर शिक्षा पाए तथाकथित शिक्षित लोग भी अंग्रेजी व गौरवग्रन्थों का या तो बहुत थोड़ा परिचय रखते हैं या बिल्कुल ही नहीं रखते। जहाँ तक सब मूल्यवान् प्राचीन ग्रन्थों और धर्म-पुस्तकों का सम्बन्ध है उनका परिचय पान के लिए भी हर कहीं यूननतम प्रयास किए जाते हैं। मैं एक प्रौढ मकबूर को जानता हूँ जो फ़ामीसी भाषा का समाचारपत्र, जसाकि वह बहता है, पढ़ने के लिए नहीं क्योंकि उनकी तो उसे चाह ही नहीं है बल्कि इसलिए लता है कि उसका भाषा का अभ्यास बना रहे। वह जन्म में बनायावासी है। जब मैं उससे पूछा कि मैं दुनिया में कौन-सा मकसद अच्छा काम है जिसे तुम करना चाहोगे तो उसने उत्तर दिया फ़ामीसी पढ़ने के सिवाय अपना अंग्रेजी के स्तर को बढ़ाना रखना उस अधिक ऊँचा उठाना मैं चाहूँगा। कालजों में पत्र शिक्षित जन भी आम तौर से यही महत्वाकांक्षा रखते हैं और इस मतलब के लिए वे समाचारपत्र लेते हैं। मान लीजिए एक व्यक्ति अभी-अभी साहित्य की एक सर्वोत्तम पुस्तक पढ़कर लौटा है। कितने आत्मा उसे मिलने जिनसे वह उसपर चर्चा कर सकें ? अच्छा मान लीजिए वह मूल यूनानी अथवा लैटिन भाषा में वह गौरवग्रन्थ पढ़कर आता है जिसके ग्रन्थ में तथा कथित अनपढ़ लोग भी सुपरिचित हैं। तब तो उस चर्चा के लिए एक भी व्यक्ति नहीं मिल सकेगा और उसे चुप ही रह जाना पड़ेगा। अमल में हमारे कालजा में कठिनाई से ही कोई प्राध्यापक ऐसा मिलेगा, जिसने भाषा की कठिनाइयों को पुराने तरह हल करने के साथ-साथ किसी यूनानी कवि की कविता व कवित्व की गुलियाओं को भी उतने ही अनुपात में सुनना लिया है और जो किसी सजग और सादगी पाठक तक उस रस को पहुँचाने में रुचि भी रखता है। जहाँ तक मानव-जाति के पवित्र ग्रन्थों अथवा वाक्स की काटि व अन्य धर्म-ग्रन्थों का सम्बन्ध है इस नगर में भला कौन ऐसा मिलेगा जो उनके नाम भी गिना सके। अधिकांश लोग नहीं जानते कि ग्रन्थों व सिवाय भी किसी जाति के पास पवित्र लेख रहे हैं। कोई भी व्यक्ति चाहे के एक सिक्के को प्राप्त करने के लिए काफी दूर तक पथ भ्रष्ट होना स्वीकार कर लेगा लेकिन यहाँ के स्वर्ण-वचन लिखे पड़े हैं जिन्हें अतीत व सर्वोत्तम ऋषियों ने लिखा है और अनुभूति युग के सभी विद्वानों ने जिनकी महानता के

विषय में हम जाश्वस्त किया है। लेकिन इतने पर भी हम वस प्राथमिक भाषा ज्ञान की और कक्षा की पुस्तकें जैसी हलकी पुनर्की पुस्तकें ही पढ़ते हैं और विद्यालय छोड़ने के बाद 'लिटिन रीडिंग और कहानी की किताबों में उलझ जाते हैं, जो कि लड़कों के लिए और पढ़ाई आरम्भ करनेवालों के लिए हैं। हमारा पढ़ना, हमारी सातवीं हमारा सोचना विचारना सब इतने निम्न स्तर तक का है कि वह पिग्मिया और बोनो के ही उपयुक्त हो सकता है।

मैं उन विद्वानों का परिचय प्राप्त करना चाहता हूँ जो इस कानकाड़ की धरती के स्तर में ऊँचे हैं और यहां जिन्हें कठिनाई से ही कोई ज्ञानता है। अथवा क्या प्लटो का नाम मैं सुन तो ल, पर उनकी पुस्तकें कभी न पढ़ूँ? जसकि प्लटो मैं अपने नगर का हो और मैंने उसे कभी न देखा हो वह ठीक मेरा पड़ोसी हो और मैं कभी उनकी प्रवचन न सुना हो और उनकी ज्ञानप्रद शक्ति का रस न लिया हो। लेकिन वास्तविकता क्या यही नहीं है? उसमें जो कुछ जाश्वस्त था वह सब उनकी जिन वार्ताओं में मतिरहित हुआ वे वार्ताएँ पाम की अलमारी में ही पड़ी हैं। फिर भी मैं उन्हें कभी नहीं पढ़ता। हमारा पासना-पापण और रहन-सहन बहुत निम्नस्तर का है और हम अनपढ़ हैं। इस सम्बन्ध में मैं मानता हूँ कि पढ़ना एकदम ही न जाननेवाले अनपढ़ों की शिक्षा में और मान बच्चा और क्षीणबुद्धि लोगों के लिए उपयुक्त साहित्य को पढ़नेवाले शिक्षितों की शिक्षा में मैं कोई बड़ा अंतर नहीं करता। हम अतीत के महापुरुषों जिनका ही श्रेष्ठ बनना चाहिए पर उसमें पहले यह जानना आवश्यक है कि कितने श्रेष्ठ वे थे। हम नन्ही चिड़िया की जाति के मानव हैं और दैनिक समाचारपत्रों में ऊँची बौद्धिक उड़ान बहुत कम लगा पाते हैं।

सभी पुस्तकें उनके पाठकों जितनी पिल्लूनी हुई हैं नहीं होती। सम्भवतः कुछ बातें ऐसी अवश्य कही गई हैं जो ठीक हमारी दशा को लक्ष्य करके कही गई हैं। यदि हम सचमुच ही उन्हें सुन और समझ सकें तो वे हमारे जीवन के लिए प्रमात अथवा वसन्त में भी अविश्व अमिनन्दनीय बन सकती हैं। हो सकता है कि पढ़ाई के विषय में एक नया दृष्टिकोण हम दे सकें। कितने ही लोग पुस्तक विरोध पत्रों अपने जीवन में एक नया अध्याय आरम्भ कर सके हैं। पुस्तकों का अस्तित्व हमारे लिए है। वे हमारी वर्तमान गुणिया को सुनभाती हैं और नये रहस्यों का उद्घाटन करती हैं। कितनी ही ऐसी बातों के बारे में, जो अभी तक अकथ्य हैं शायद

कहो कुछ इनमें लिखा मिल जाए। यही प्रश्न जो आज हम उलझते हैं अन्त व्यस्त करने और नष्ट करने हैं सभी विद्वानों के सामने प्रस्तुत हो चुके हैं। इनमें से कोई भी प्रश्न छोड़ा नहीं गया है। हर विद्वान ने अपनी योग्यतानुसार गहन में अथवा आचरण से उनका उत्तर दिया है। फिर चान से हम उत्तरता भीतते हैं। कानकाड का उद्घाटन के किसी क्षेत्र में नियुक्त वह एकाकी मजदूर, जिसने दोषों से ली है और विशिष्ट धार्मिक अनुभव प्राप्त कर लिया है जो अपनी आस्था के अनुसार एक मौन गम्भीरता और पथभाव को अपने अन्तर में स्थान न चुका है हा मकता है वह सोचें कि यह बात सच नहीं है। हजारों वर्ष पहले उरधुम्न इसी मार्ग पर चला था। ठीक ऐसा ही अनुभव उसने भी प्राप्त किया था। पर वह बुद्धिमान था। उसने जान लिया था कि यह अनुभव सावभौम है और उसीके अनुकूल पण्डितों से उसने व्यवहार किया। यज्ञा तक कहा जाता है कि उसने उपासना का आविष्कार किया और उस मानव में प्रतिष्ठित किया। क्यों यह मजदूर उरधुम्न में विचार विनिमय न करे? क्यों वह सभी महापुरुषों के सम्पर्क में प्राप्त उत्तरता के माध्यम से सीधे ईसा मसीह में संयुक्त न हो, आर अपने स्वयं का तिनार्जन न दे?

हम डींग हाकते हैं कि हम उन्नासवीं शताब्दी में रह रहे हैं और किसी भी राष्ट्र से अधिक प्रगति कर रहे हैं। लेकिन जरा सोचिए तो गांव अपनी सभ्यता के विकास के लिए कितना कम काम कर रहा है। मैं अपने नगरवाला की प्रशंसा नहीं करना चाहता और न ही उनसे प्रभावित होना चाहता हूँ क्योंकि इस प्रकार तो हममें से कोई भी उन्नति नहीं कर सकता। दौड़ने के लिए हम उत्तजित किया जाना और बना की तरह हम आर लगाई जानी बहुत आवश्यक है। हमारे यज्ञ छोटे बच्चा के लिए तो सामान्य पाठशालाओं का अपेक्षाकृत बर्तिया कम वनमान है लेकिन हम बड़ा के लिए जाहो के अवसरों व्याख्यान भवन (लोकियम) और राज्य द्वारा वाद में आरम्भ किए गए छोटे-म पुस्तकालय के सिवाय कोई विद्यालय नहीं है। हम अपने शहर की भूमि मिटान पर अथवा उसमें नगर पर मानसिक भूय की अपेक्षा बहुत अधिक खर्च करते हैं। समय है कि विशेष पाठशालाएं चलाई जाएं और स्त्री-पुरुष वन जान के वाद भी हम साथ पढ़ना न छोड़ दें। समय है कि गांव विश्वविद्यालयों का रूप ग्रहण करें। बड़े-बड़े ग्रामीण उन विश्वविद्यालयों के सम्पर्क में जाएं और यदि वे दरजसन सम्पन्न हों तो अपना गण जीवन कुशल में उच्च अध्ययन में लगा दें। क्या हमारा सारा धन परिम और एक आकर्मफोड तक

हा सीमित रहगा ? क्या विचार्यो इस कानकाट के आकाश के तले ही रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते ? क्या हम निम्नो अन्तार^१ का मण्डल भाषण के लिए नहीं बुला सकें ? अर पशुआ को चारा छानन और गोदाम की दम भाल करने से क्या लाभ है यदि विद्यालयों से हम इतने लम्बे समय तक दूर रखा जाए और हमारी शिक्षा की कष्टप्रद उपभा की जाए ? इस दग के ग्राम को बहुत दूर तक दूराय के सामन्त का स्थान ग्रहण कर लेना चाहिए। उमे सलितकलाआ का सरस्वत बनना चाहिए। उमके पास बहुत काफी धन है। मदाशयता और मस्तिष्क की हा उमके पास कमी है। प्राय, विमान और व्यापारिया के काम की चीजा पर ता बहुत काफी धन व्यय कर सकता है लेकिन जिन चीजा का अधिक बुद्धिमान लोग मयवान मानते हैं उनपर धन व्यय करना यहां एक हवाई (यूनापियन)^२ विचार माना जाता है। भाग्य को अथवा राजनाति का धनवाद् दीजिए कि नम नगर ने एक सावजनिक भवन के निर्माण पर सत्रह हजार डालर खच किए। लेकिन सापद जीवित माहित्यकारों पर उनके ककाला को अन्न और रस प्रदान करने के लिए उनना ही रगया मौ वर्षों में भी वह खच नहीं करगा। जाडा के कालेज का एक सौ पन्चाम डालर चन्दा दिया जाता है। मैं समझता हूँ नगर में किसी भी अन्य काम के लिए उगाह गए इतने हा धन की अपना वह राशि अधिक गुम काम में खच की जाती है। यदि हम उन्नीसवीं शताब्दी में रह रहे हैं तो उन्नीसवीं शताब्दी द्वारा दी गई मुविधाआ का भोग क्या नहीं करें ? किसी भी दृष्टि में हमारा जीवन गवार हा क्या रह जाए ? अगर हम अखबार पढना चाहत हैं ता बोस्टन की गपवाजियों को ठुकरा तत्काल ही मयार का सर्वोत्तम ममाचारपत्र क्या नहीं लेते ? क्या हम 'यू इग्न' के आन्तिव ब्राचज' पत्रा की वापरा को कुतरना और तटस्थ पारि-वारिक पत्रा के चुचुक का चूमना बन्द नहीं करते ? क्या न सभी विद्वामण्डला के विवरण हम तक पहुँचें और हम उनके ज्ञान की बाहुलें ? क्या हम हापर एण्ड ब्रदर नया रीडिंग एण्ड कम्पनी पर ही छोड़ें कि न हमारा लिए पाठ्य-सामग्री का चुनाव करें ? जिस प्रकार एक सस्वृति रुचि का सामन्त, अपना सस्वृति के अनुकूल जा कुछ भा उन मिलता है वही अपने चारा ओर डकट्टा कर लेता है—ग्रन्थिमा, शिक्षा, व्यय

१ अन्तार (१००६-११४२), एक प्रसिद्धि प्राप्त नाम। दार्शनिक

२ नम दामन मूर नामक अंग्रेज लेखक ने लैटिन भाषा में एक व्यय लिखा था, जिसमें उसने एक काल्पनिक राज्य का वर्णन किया था। हम इसका कल्पना को हा योपिया कहते हैं।

पुस्तकें चित्र यंत्रिया समीत, दार्शनिक तत्त्व आदि आदि, हमारे गांव भी बसा ही क्या न करें ? एक अध्यापक एक पादरी एक समाधिष्वनक, गिरजाघर का पुस्तकालय और तान निर्वाचित पण्डित—बस इन्हीं सब हमारे गांव भीमित क्या रह ? क्या इसलिए कि जब हमारे दादा-परदादा को एक सीतारतु एक काली चट्टान पर काटनी पड़ी थी ता य ही सब उनके साथी थे ।^१ सामूहिक रूप में काम करना हमारी सस्याआ की आत्मा के अनुकूल ही है और मरा विश्वास है कि क्याकि हमारी परिस्थितिया उन सामन्ता की अपेक्षा बहुत उत्तम हैं इसलिए हमारे साधन भी उनसे बहुत अधिक हैं । यू इंग्लैंड चारों तरफ समाज के सभी विद्वानों को पारिश्रमिक देकर अपनी शिक्षा के लिए बुलाते उठ रहे हैं तो घर-घर उनका भरण पोषण करे और जरा भी असंतुष्ट न रह जाए । हम ऐसा ही विद्यालय अपने लिए चाहते हैं । य ग्राम मनुष्या के भद्र ग्राम बन जाए । यदि जरूरत पड़े तो नदी के ऊपर एक पुनर्मत बांधो छोटा बक्करलगाकर बस जाओ वर अपने चारा और मुहवाए पड़े अनाज के अघेरे सड़ पर कम से कम एक महराब तो डाल दो ।

१ जो पहले यात्रा इंग्लैंड से चलकर ५ अगस्त, १६४० के दिन अमरीका के तट पर उतरे थे त्रिनिदाद यू इंग्लैंड की बस्ती बनाना अर्थस्य को था, यह उद्देश्य और मज्ज है ।

आवाजें

जब हम पुष्पना तक भले ही व चुनीदा और सर्वोत्तम हा सामित रहन हैं और बवल के विनिष्ट निम्न भापाए ही पन्त हैं जा मूल रूप म बोलिया हैं और असम्भूत हैं तब यह मनरा बगबर बना रहना है कि म उम भापा का न भून जाए जिस मभी पनाय और घटनाए जनलकृत रूप म बोननी हैं जो व्यापक है और जो स्तर की तो एकमात्र भापा है। प्रकाशित तो बहुत-सा होता है पर छाप बहुत थोड़े की ही पडता है। यदि भिनमिली निम्नकी का उतारकर एक तरफ रग दिया जाए तो भिनमिलो म म छन-छनकर आनवानी किरणें आगे धाद नहीं की जाणगी। काई भी तरीका का भी अनुनासन सदा-सबदा मनक रहन के महत्त्व का कम नहीं कर सकता। दृष्टव्य क्या है, इसके प्रति मनन सचेत रहन व अनुनासन के सामन इतिहास या दान की गति बर्तिया से बर्तिया चनी हुई कविता अथवा सर्वात्तम ससग अथवा प्रशसा योग्य एक उत्कृष्ट जावन नम भी कुछ नहीं हैं। आप एक पाठक बनेंगे या सिफ एक विद्यार्थी या एक मित्र रूपि। अपन भाग्य को पडिए, नैविए आपके सामन क्या है और तब भविष्यन म आग बढ जादए।

पहनी गर्मी म कितारें मैं बितकुल नहीं पना, मैं अपनी सेमा का निराता रहा। नहीं, नहीं अकसर मैं इसम भाउत्तम काम किया। ऐसे अकसर आए जब मैं बौद्धिक अथवा गारारिक किमी भी काम के लिए बतमान दण के आकषण को बलि देना गवारा नहीं कर सका। अपन जीवन के किनारा पर चौड़ा हागिया रखना मुझे अच्छा लगता है। कभी-कभी गर्मी की किसी सुबह को प्रतिदिन की तरह नहाकर मैं अपन घर व द्वार पर धूप म बठ जाता, दोपहर तक बठा रहता और अतीव कस्य-नाशा म साया रहना। चीड, हिकरी के पेडा और स्पूमक की भाडिया के बीच अविच्छिन्न एकाकीपन और स्तब्धता रहती। चारा आर चिडिया गाती अथवा घरके बीच म वो होकर चुपचाप फुर स निबल जाता। और जब सूर्य मेरी पदिचमी

खिड़की पर आ टिकता अथवा सुदूर सड़क पर यात्रियों की गाड़ी का गार मुझे सुन पड़ता तभी मैं जागता और तभी कितना समय बीत गया है इस बात का अहसास मुझे होता। ऐसे अवसरों पर मेरा मन उतना ही बड़ जाता जितने कि रात में अनक पौध लम्बे हो जाते हैं। और यह समय किसी हाथ के काम की अपेक्षा कहाँ ज्यादा बढ़िया तरह बट जाता। यह समय जमे मेरे जीवन की अवधि में स कम नहीं हो गया था बल्कि निश्चित अवधि से अधिक ही मुझे मिल गया था। ध्यान के और काम के विसर्जन का पूर के लोग क्या मतनब लगाने हैं यह मैंने तभी अनुभव किया। समय बस बीत रहा है इस बात की मुझ अजब चिन्ता नहीं होती थी। दिन चम्ता रहता और मेरे काम को काम के हलका करता जाता। अब सुबह थी ना अब साँझ हो गई और कुछ भी स्मरणीय नहीं किया जा सका। अपन निरंतर सौमार्थ पर चिड़िया की तरह गान के बोल में चुपचाप मुस्कुरा भर जाता। जिस तरह मेरे द्वार के सामने हिकरी कुल पर बठी गौरवा कल्पित स्वर में गाती है उसी प्रकार मेरे अन्दर से एक मद हसी या दबा दबा सा तराना फूटता जिसे मेरे घामन में से बाहर बहता वह चिड़िया सुन सकता। मेरे निम्न किसी प्राचीन देवी देवता की छापदान सप्ताह के निम्न नहीं थे। उन्हें घण्टा में सप्ताह-सप्ताह नहा कर लिया गया था। मेरा दिन घटा का टिकटिक से उड़ित नहीं रहता था। मैं तो पुरी जाति के आन्तिम कामिया की तरह रहता था जिनके द्वार में यह कहा जाता है कि बल आज और आनेवाले फल के लिए उनका पास केवल एक ही गन् है और अब की विभिन्नता को वे गन् से रहने कम होना हुआ अब का और जानबाला लगाकर प्रवृत्त करते हैं। निस्मृति मेरे नगरवाता की दृष्टि में यह सब गुड बाहिनी या लकिन यदि चिड़िया और फूला ने मुझ अपन मापण में नापा होना तो मुझमें जरा भी कमी न मिलती। यह सब है कि मानव का आभिव्यक्ति के क्षण दृष्टि निकालने हो चाहिए। नसर्गिक दिन बड़ा ही शांत होता है। वह मानव के एक निष्ठलपन की भत्तना बढिनाइ में ही करणा।

अपनी जीवन पद्धति में औरों से कम से कम एक लाभ मुझ अधिक प्राप्त था। और लोग का मनोरंजन के लिए मभा-माया-न्याय में या नाट्यगृहा में जाना पड़ता था पर मेरा जीवन हा मेरे लिए मनोरंजन बन गया था और उसका नपेपन में कभी भी एक नहा जाता था। वह उद्गम्यन न्याय का एक अन्तर्धान नाटक था। वास्तव में यदि निरन्तर-अतीत में सांगी सर्वोत्तम पद्धति के अनुसार जीवन का निवाह

और उमका नियमन हम मतन करने चन जाए तो मानसिक क्वालिटी हम कभी भी अनुभव नहीं करेंगे। अपनी प्रज्ञा का बहुत नज़दीक से अनुसरण कीजिए और आपका सामन नय माग स्थान तन में वह कभी चक नहा करणी। घर का काम मर लिए एक मुख्य मनारजन था। जब मरा फग गल्पा हा जाता तो मैं जल्दा ही उठता और अपना सामान बिस्तर और पत्र सब एक टंग बनाकर बाहर घाम पर रख देता। तब मैं फग पर पानी झुंका देता ताताव में सफ़ा रत साकर बहा बखेर देता और भाड़ में रगड़ रगड़कर फग का स्वच्छ और श्वेत बना देता। जब तक गाव वान मुबई का नामना नत होने मूरज मर घर का इतना मुक्ता धुक्ता कि मैं अन्दर बैठ सकूँ। मरा चिन्तन इस बीच भी अविच्छिन्न चलता रहता। अपने घर का मार्ग सामान किसी खानाबेदान के छात्र-में गटठर जैसा छात्र-सी गी में घाम पर रखा देखना बहुत ही मुन्ना लगता था। मरी तीन टागावाना मज निमपर में मितावे काम और स्पाही में हटाना नहा था चीठ और हिस्सी के पत्र के बीच रखा बहुत ही प्यारा लगता था। य चीठे वाटर निकनकर स्वयं भा वून प्रमन्न होमना था और जम अन्दर आन का गज़ी नहा जानी था। कभी-कभी ता मरी च्छा होना कि मैं एक ऊपर एक निरपान तान न और यही बैठ पाऊँ। इन चीठों पर धूप का चमकना लगना और इनपर से चलन भवन पवन का सरसराहट को सुनना समय का सन्पयाग था। य सवाधिक सुपरिचित चीठें घर के अन्दर की अपना बाहर रखा कहीं ज़रिफ़ रोचक लगता थी। एक चिडिया मयम पामवानी रहना पर बग है नाइफ़ गवरलॉस्टिंग का पीषा मज के नाच उग रहा है कृष्ण बारी का नताग मज की टागा में लिपनी हैं और चीठ के और वून के फग और तण बेरा के पत उसके चारों ओर बिखर हैं। साफ़ दीव पड़ता था कि फनीचर मजा कुमियों और पत्रगा के रूप में स्पान्निग हान से पन्न य सब वस्तु अपने मन रूप में कहा पना य वाच स्थानी होगी।

मरा घर एक पन्नाही की ढ़ान पर बड़ जगद के तटवर्ती चीठ और हिस्सा के छात्र-में जगन के बाव में स्थित था। ताताय में व सगमप तैनाम गज का दूरी पर था। एक पन्ना पगड़णी पह्लाही में उतरकर ताताय तन जाना थी। मर सामन के आगन में तण बेरा कृष्ण बारी साफ़-गवरलॉस्टिंग जाम्बव और स्वणानाका यदवाय और रूममरी नीनगदरी और मरपनी के पीछे उगा करत थ। मई के अन्त तक कापल में फूला सन रूममरी के पीछे पगड़णी के दाना और मत्र उठ। अपनी

छाती डडियो पर धतर-सा बनाए बैनाकार छत य फल विरणा की तरह भूमि पर दोना आर वृत्ताकार भरते थ । इही डडियो पर पिछनी बार बहुत खूबसूरत बड़ी बड़ी चेरी उगी थी । व फूल स्वादिष्ट नही थ पर प्रकृति को उचित सम्मान देने की खातिर मैंने उन्हें चम्पा । गमक घर के चारो ओर जमकर उगा । वह मरी बनाई मंड म को भीतर घुस जाया और पहली मौसम म ही पाच या छ फुट नम्वा हो गया । उसके पल्लुमा उष्णदृष्टिबर्धीय पत्ते विचित्र दीपते हुए भी बहुत ही सुहाने लगते थे । मरी-मी लगनेवाली सूखी टहनिया का बड़ी-बड़ा डोडिया घसत के अन्तिम भाग म अचानक ही जादू के पेन की तरह स्वय ही टूरी हो आड और एक इंच मोटी कोमल आकषक टहनियों के रूप म फट आ । ये टहनिया इतनी तजी स और आपगवाही म उगती थी और अपन दुबल जोडो पर इनना खार डालती थी कि कभी कभी जब मैं लिडका म बग होता था ता किसी ताजी और कोमल टहनी को अपन ही बोझ से चटखकर अचानक टटत और पथ की तरह धरती पर गिरते सुनता था । महा यह कि उस समय हवा सास भी नली भर रही हुनी थी । जिन बगिया पर जब वे पन थी गहद की मज्जिया मडरा उठता थी भुण की भुण्ड वही बरिया अब अगस्त म गहर लान मगमल क चमकदार गम म गिन उठी थी । उनक बोझ से फामल टहनिया भुकी और टटो पन्ती थी ।

गमिया के एमे तीमर पहर मैं खि का म बठा हू । बाज मेरे घर क चारा आर पडा खाला जगह के ऊपर चक्कर लगा रहे हैं । जगरी बबूतर दा दो तीन-तीन के जोडा म मरी आन्का क भागन दौड भपट करत थ या फिर मेर घर के पीछे खडे सफे चीड ती टहनिया पर अस्थिर भाव से बठने है और इस प्रकार हवा म एक मगमराहट पदा करत हैं । एक भछनीमार बाज तानाब की गीने की तरह चमकता मतह पर चाव चलाकर एक मछनी ले उठता है । मेरे द्वार के सामने क दलदल म रा चुपचाप निकलकर एक ऊन्गिलाव तानाब के तिनारे स एक मक्क पन्ड ले जाता है । पानी की चिडियाए इबर स उधर फुदकती फिर रही हैं और उनक बोझ म मुस्ता घाम भुकी जाती है । पिछन आगे घण मे मैं रेल के डिबा की खडखडाहट सुन रहा हू जो तीतर की आवाज का तरह कभी नब जाता है कभी फिर उभर उठती है । यह रल यात्रिया को वास्तम नगर से ग्रामा की ओर न जा रही है । मैं इतना तो दुनिया म बाहर नही रह रहा था जितना कि वह नडका जिसके बारे म मुना जाता

है कि उसकी अपनी मर्जी में उसे पूर्वी भाग में एक किमान के यहाँ रख दिया गया। पर बहुत ज़रा ही वह वहाँ में भाग निकला। जब वह घर वापस पहुँचा तो उसकी दगा बही जा खगब थी और वह घर के लिए तरस रहा था। उसने ऐसी उकता दनवानी अनग-अनग जगह कभी नहीं देखी थी। सभी जाग वहाँ में भाग चुक थे। एक मागे तक ना वहाँ मुन नहीं पहनी थी। ऐसी जगह भमाचूसटम में अब कहीं पायद नो हा

उमन में हमारा गाव जग्य त्रिष्टु बन गया है
रन-रूपी लोग को बौद्धारा का
हमारी गान्न घटना पर दोषन हुए
उमका आवाज रहनी है—कानकाड ।

जग में रहना है वहाँ में जगभग ५५० गजदमिण में फिचवम रन-मय सरावर का छता है। मैं दमन माय-माय जानवानी पगडण्टी में ही आम तोर पर गाव जाया करता हूँ। इसी मून में मैं ममान में जुटा हूँ। मडक के माय-माय अन्न तक जानवानी मानगाटिया पर गटे जाग पुगना परिचित मानकर अकसर मरा अभि बान्न करन हैं। कितनी ही बार के मरे पास में गुजगन है और स्पष्ट है कि वे मुझे एक कमचारी समझन हैं। और वह मैं हूँ भी। मैं तो इस भू-ग्रह की कत्ता में कहीं ना मन्क को मग्मन बनवाना मजदूर बनना सग्य स्वीकार कर गया।

इजन की सीटा किमा किमान के मत के ठपक का तैरन हुए बाज की चीख को तग जा-जामी मर जगन का धागती रहती है। वह मुझ मूछिन करना रहनी है कि कितन जा व्याकुल व्यापागी कस्ब की सीमा में पटुच रह हैं अथवा दूसरी गिना में ग्रामा के मात्मा अनियन्त्र आ रह हैं। जम ही वे एक आममान के तन पहुँचते हैं वे एक-दूसरे का अपन राम्मे में हट जान की चेतावनी दत हैं। कभी-कभी तो उनका गार नो बन्वा तन मुना ना सकता है। गाववाना। यह ना अपना पमारट्टा और यह है तुम्हारा बाजन। जपन मेन में मन्का कोई भी किमान जतना आत्म निमर तथा है कि वे मर लन में इन्कार कर मवे। ग्रामाण सीटी-नी बजाना हुजा चामता है, ये ना अपनपन। लम्ब मूमना की तरह गहतीरें बाम मीन प्रति घण्टा का गति में नगर प्राचीन में प्रवण कर रणी हैं। साथ ही इन दीवारा के पीछे रहन वाते धक-माज नार में भुव नागरिका के बँटन के लिए बहुत बाफी कृमिया भी वहाँ

भेजी जा रही हैं। ऐम भागी भरकम ग्रामीण शिष्टाचार के साथ ग्राम नगर को मुर्सी पेश करता है। जादिवामिया की पहाडिया स सारी हवन बरिया और मन्त्री भाडिया से अम्लपदरी चट-चटकर नगर म पहुँचा दी जाती है। कपास खर आता है बुना हुआ कपडा उधर जाता है रंगी कपडा इधर आता है उनी उधर जाता है। पुस्तकें इधर आनी हैं पर उनका निबनेवानी प्रतिभा उधर चली जाती है।

जब मैं किमी मजन को ग्रहा के गनिकन से अथवा एक पुच्छन तार की तरह—
 खनेवाला नहीं कह सकता कि इतने हाथ म इसी दिना से इसी जगह यह तारा फिर कभी सीटेंगा या नहीं क्योंकि उसका ग्रह-मय बनावट नहीं दीख पड़ता—डिब्बा की बनार के आग जग चेत हुए देखता हूँ जब मैं उनसे धुएँ के सादन की पताका की तरह आकाश म बहुत ऊँचे जाकर प्रकाश के सामने अपने को छिनरा बनवाल कामन जगत् की तरह पीछे की तरफ सहारा और सुनहरा ज्वन छन छाड़ते हुए देखता हूँ मानो कि यह पानी यम यह धूलपायी मय्या के आकाश को अपने डिब्बा के भोजन के रूप म कम जमी नीन आणगा जब मैं इस मोह के घोड़ को अपनी बज्र मजना जमी हिनहिनाहट म आकाश को गुजान और परा स धरती को कपान हुए और अपने नयना म आग और धुआँ निकालते हुए देखता हूँ (मैं नहीं जानता कि नय पुराण गारन म उस किस किस्म का उड़नेवाला घोड़ा या आग उगलनवाला दाय कहें) तब मुझे लगने लगता है कि धरती को बमने के योग्य जमल जानि अब आकर मिली है। वही जमा लगता है बसा ही मय हुआ भा हाता और आदमी ने उदार सदय सेनर ही पचभूता को अपना दाम बनाया होता। वही इजन के ऊपर भवनवाला धुएँ का बान्त किन्ही वीर-नृप्या के कारण जाया पमीना हाता अथवा वह उतना ही नाभनयव होता जितना कि किसान के क्षेत्र पर महरानवाला जलद होता है तब पचभूत और स्वयं प्रकृति सभी मातवीय प्रयामा म मानन्त उसका साथ देन और उसका सम्मान करत।

मैं प्रातः कालीन रेनगाडियो के गुजरन का उसी भाव से देखता हूँ जिम भाव से मैं सूर्योत्थ का देखता हूँ क्योंकि सूर्य वरिष्ठार्थ से हो उनकी अपना अधिक नियमित होगा। उनसे धुएँ की लहँगे बहुत दूर पीछे तक फैलना और ऊँचे म ऊँचे उठनी चनी जाती हैं। ये मध्य की ओर बढ़ती है जबकि रम योग्यन नग की ओर चला जाती है। ये लहँगे क्षण भर के लिए सूर्य तक का दब दती और मरे मुदरम्य सेन पर छाया कर दती हैं। धुएँ के बान्त की

इस स्वर्गीय रेल की बराबर में लौटती हुई घरती से चिपटी यह डिम्बावाली रेल माले पर के छल्ला जमी ही प्रतीत होती है। इस लौह-अश्व का सारथी अपने तुरग को चारा देने और उसे जोतने के लिए इन पहाड़ों के शीत में भी बहुत सुबह ही तारों के प्रकाश में उठ गया था। उसमें आवश्यक गर्मी लाने के लिए और उसे चालू करने के लिए आग बहुत जल्दी ही जना सी गई थी। यदि कहीं यह प्रातः ग्रम भी उतना ही त्रेष्ठ हुआ होता जितना कि यह प्रभात पवित्र है। जब भारी वर्ष पड़ी होती है तब इज्जत के परो से वर्ष के जूँ बाध दिए जाते और वह एक पैयाका हल से पहाड़ों में लेकर समुद्र-तट तक एक घाई खोदता जाता है जिसमें अनाज बोने की बल जैसे हिन्ने ध्याकुल लोगों को बिखरात और तरह-तरह का सामान बीज के रूप में ग्रामीण अचला में फैलाते बत्ते चले जाते हैं। पूरे दिन यह आग से चलनेवाला घोड़ा दश भर में उड़ता फिरता है वस तभी रक्ता है जब इसका स्वामी आराम लेना चाहता है। मैं आधी रात के समय इसकी घड़घड़ाहट और अकवड़ हिनहिनाहट को सुनकर जाग उठता हूँ। उस समय यह किसी सुदूर भ्रात्री व जगता में वर्ष के आधी-नूफान का सामना करता होता है। यह अपने अङ्गे पर भार के तार के साथ ही पहुँच पाता है और तबाल ही बिना आराम या नीद लिए फिर अपनी यात्रा पर चल पेटा है। अथवा कभी-कभी इसकी आवाज को मैं इसरी घुटमाल में आनी सुनता हूँ। वहाँ यह कुछ घण्टा की लौह निद्रा में पड़ने दिन भर की फालतू भाप निकालता है जिसमें इसकी नस गान्ति हो सक और पर तथा दिमाग ठण्डा हो सके। यह उद्यम जितना लम्बा और अपक्व है वही यह उतना ही वीरत्वपूर्ण और प्रभावी भी हुआ होता।

प्रयोगों के सामान्ता पर गड़े उन अछत जगला में जहाँ दिन तक में कभी कोई शिकारी ही जान का माहम करता था गुप्प अघेरी रातों में चमकने हुए डिब्बे भपाक में निकल जात है और अन्तर बटे लागा का पना भी नहीं चलता। अब य वस्व या नगर के किसी गौनकाल स्टेगन पर जहाँ भीड़ के भीड़ नागरिक डकट्टे हैं रक्त है तो अब उल्लुभा और लोमटिया को डराता हुआ डिस्मन स्वप्न जम किसी अघेर दलक्षी प्रयोग में जा गड़ा होता है। इन गाड़िया के पट्टचन और खाना पाने के क्षण गाववाना के लिए दिन के महत्त्वपूर्ण क्षण बन गए हैं। ये गाड़िया इन नियमित और अनिश्चित दग में आनी-जाना हैं और इनकी माटिया इनकी दूर तक सुनी जा सकती हैं कि किमान उनमें अपनी घड़िया ठीक करत हैं। इस प्रकार

सुचानित सस्था पूरे देश का नियमन करती है। रेलों का आविष्कार के बाद से योगा की समय की पाबंदी क्या कुछ बढ़ नहीं गई है? बग़ियारा के अड्डे की अपेक्षा रेल के स्टेशन पर राड लोग क्या अधिक तजी से नहीं सोचते या बातें करते? रेलवे स्टेशन के वातावरण में कुछ बिजली का मा असर है। इसमें घमंकारों को देखकर मैं ताज़ुब में रह जाता हूँ। अपने कुछ पड़ोसियों के बारे में भारी निश्चित भविष्यवाणी थी कि वे इतनी पाबंद सवारी से बोस्टन की यात्रा कर भी नहीं कर सकते। वही लोग अब घण्टी बजते ही गाड़ी पकड़ लेते हैं। रेलवाने तराफ़े से काम करता अब एक लोकोमोटिव बन गया है। यह ठीक ही है कि ऐसी गति अपने रास्ते से हट जाने की ठोस चेतावनी बार-बार सबको दे। इसके लिए उम्र उपद्रव-सम्बन्धी कानून का अध्ययन करने की ओर भीड़ के सिरों के ऊपर से गोसिया दागने की ज़रूरत नहीं पड़ती। इज्जत के रूप में हमने एक भाग्य की जीवन के धागे को काट देनेवाली गीक पुराणा की 'नेवी ज़नपास' की सृष्टि कर ली है और वह अपने पथ से कभी नहीं हटती। (आपके इज्जत का भी यही नाम होना चाहिए।) योगा को विज्ञापित किया जाता है कि अमुक घण्टे के अमुक मिनट में तीर नक्षत्रों के अमुक विनिर्दिष्ट राहों की ओर धोड़ जाएंगे। फिर भाग्ये इज्जत बिम्बीके काम धंध में हस्तक्षेप नहीं करते। बच्चे दूसरे भाग से निश्चित अपनी पाठगानायाँ करते हैं। इसके कारण हमारा जीवन और दृढ़ हो गया है। इस प्रकार हम सभीको टेल^२ के पुत्र बनने के लिए शिक्षित किया जाता है। हवा अदृश्य बाणा से भारी हुई है। आपके अपने माम के मित्रास सभी अथ राहें भाग्य की राह हैं। तब आप अपने ही माम पर जम रहिए।

वाणिज्य की उद्यमशीलता और साक्षिन्ता की मैं प्रशंसा करता हूँ। वाणिज्य हाथा को नहीं मनेता जुपिटर^३ की प्रार्थनाएँ भी तहा करता। कम या अधिक ग्राह्य और विन्वास से भर इन लोगों को मैं प्रतिदिन अपने-अपने धंधों पर जाते देखता हूँ। ये लोग अनुमान से भी अधिक कर जाते हैं और ग्राह्य किसी भी सुयोजित धंध की अपेक्षा अधिक उत्तम और सफ़ल उद्यम में धे जुटे हैं।

१ ग्राह्य पुराणों की तब भाग्य नेत्रियों में सबसे भी जो ग्राह्य धंध को काट देता है।

२ पं. श्री मंगल में मित्रासलेख पर आस्था का राय है। अद्विजन प्रशासक गमलर के अत्याचारों के विरुद्ध बग़ियारों के एकपक्ष देन में विरोध किया था। गमलर ने उसे दण्ड दिया कि वह अपने बेटे के मरने पर रत सब का निशाना लगाए। टेल स्वयं रहा।

३ प्रचीन रोमनों का देवराज

ध्यूना विस्टा^१ म जो लोग अग्रिम पक्कि म आवे घण्ट तक टिक रह उनकी बीगता मुझे इतनी प्रभावित नह करती जिननो कि इन लोगो का दग्ता और साहमिकता जा प्रमन्नता के साथ भरे जाटा म बफ हटानेवाली गाटा का ही अपना घर बना लेते हैं, जिनम, नपोलियन बोनापाट द्वारा दुनभनम बताई गई प्रात तीन बजे उठन की हिम्मत ही सिफ नहा है बल्कि जिनरा उद्यम आराम लेना नही जानता जा तभी सोन का नाम लेते हैं अब तूफान मा जाता है या उनक सौह अस्व की नमें ठडी पड जाती हैं। इस मुबह जब भीषण हिमपात हुआ है, हिम-अघड अभी तक गरज रहा है और लोहा के रक्त का जमाए दे रहा है मैं उनकी जमी हुई निश्वासा म बन कुहरे के भीतर म फूँती उनके इजन का सीटी की दबी दूड आवाज का सुन पा रहा हूँ। यह घोषित कर रही है कि यू इम्लट क उत्तर-पूर्वी हिम अ-ग्रह की अवना करके रेन अविलम्ब ही चली आ रही है। बफ हटानवासे हल के चालका का मैं देखता हूँ। वे हिम और कुहर मे आवत हैं। उनक भिरमिटटी धकेनवान उम पटट के ऊपर उठे बीस पड रहे हैं जो गुलबहार क पौरा और चूहा के बिना को उपाडकर इधर उधर झिनराता जाता है। य डर विश्व मे बहिष्कृत जमे मियरा निशाना^२ प्रदेश की विशाल गिलाभा के समान बडे प्रतीत होने हैं।

वाणिज्य अप्रत्यागित रूप मे आत्म विश्वस्त गम्भीर, सतक साहमिक और अथक होता है। इसकी प्रणालिया कितने ही उपपदाग उद्यमा तथा भावुक प्रयागा की तुलना म कहा अधिक स्वाभाविक होनी हैं और यही इसकी अद्वितीय सफनता का रहस्य है। जब मैं अपने पाम स मालगाडिया को खटखडाकर गुजरन दखता हूँ और उनके मान की उम मुगध का सघना हूँ जिसे ब लाग बाफ^३ स देख लेक चम्पेन^४ तक राम्म भरवाटती चलती हैं ता मैं ताडा हो उन्ता हूँ और भरी छाती पून जाती है। यह मुझे विदेशी भूभाग की, मग की चटगना की हिन्द महासागर की, उष्णकटिबन्धीय जलवायु की और इस भूगोलक के विस्तार को याद ग्लिानी है। जब मैं ताड के उन पत्ता को देखता हूँ जो अगती गर्मिया म यू इग्नड के जिनने ही लोहा के सन क म रगवाने मिया को त्कम जम मैं मनीना स आए मन और गोरे क बाला को पुरान कत्रा, बारिया रदा लाट के ढेर और जग नगी कीता को

१ नाथ रीवर पर अवस्थित राकमिन काउन्टी का एक नगर

२ पूर्वी कैलिफार्निया की एक पवन ेगा

३ एक बन्दरगाह ४ एक भौव, जिनका कुछ भग कन्डा म दे गोप अनरोका में

देखता हूँ तब मैं अपने का विश्व का नागरिक समझन लगता हूँ। य फटे-पुराने गाढ़ा भर वादवान अब जगिक सुन्दर और राचक लगने हैं। कागजा और छपी हुई पुस्तका में रूपान्तरित होकर ये ऐसे नहीं लगेंगे। इनके इन छेना का छोकर भला कौन है जा इनके द्वारा सह गए तूफाना के इतिहास को इतने चित्रागक ढग से अकित कर सके। ये वे प्रूफ है जिनके और अधिक गोर की जरूरत नहीं है। यह मेन के घनी की लकड़ी जा रही है। पिछली बार की वाड में इस समुद्र तक नहीं भेजा जा सका था। अब हजार पर चार डालर चढ गए हैं क्योंकि कुछ को तो भेजा गया ही था और कुछ को चीर लिया गया था। पहली दूसरी तीसरी और चौथी श्रेणी को चीड सनोवर और दवदार की लकड़िया इनमें हैं। अभी कुछ ही पहले तक ये सब एक ही श्रेणी की थी और भालुआ हिरना तथा रेनडियरा के ऊपर छाया करती थी। यह बहुत बगिया किस्म का थॉमस्टन का चूना जा रहा है जो बहुत सारी पहाडियों को पार करते-करते चरा बन चुकेगा। ये पुराने चियडा की गाँठें हैं। इनमें सभी रंग और बिस्मो के कपडे हैं। मूनी और रसमी पोसाकें इस निम्नतम अवस्था को प्राप्त हो जाती हैं। जिगाम मसमल आदि में और अगली, फान्सीसी अमरीकी छापो के बढिया कपडों में मिली पोशाकों की और उन नमूना की मिलवाकी को छोडकर जिनके लिए अब कोई नहीं चीखता यही अन्तिम गति है। गरीब और घनी सभी क्षेत्रों में ये चियडे इकट्ठे किए जाने हैं। इनमें एक अथवा कई रंगों का कागज बनगा जिनपर उच्च और निम्न वास्तव जीवन की तथ्याधारित कलात्मक चित्रणियां लिखी जाएगी। इस बाद चिन्त्र से नमक लगी मछली की गंध आ रही है। यह पूरा इगलड की तज निजारती गंध है जो मुझे ब्रड बकम और मछलीपाहा की याद दिलाती है। नमक लगी मछली बिखने नहा देखी है। उस ऐगा तयार कर लिया जाता है कि कोई भी चाहे उसे खराब नहा कर सकती। उसके घब के सामने मल भी तजा जाए। इसमें आप महब माफ कर लीजिए अथवा इस उसपर जड ही दीजिए। इससे अपना लकड़िया फाड लीजिए। कोचवान चाहे तो घप आधो और बर्पा में अपनी और अपनी सवारिया की रखा करन के लिए इनका प्रयोग करे। कोई दुकान दार—और पानवाड के एक दुकानदार ने एक बार ऐसा किया भी था—चाहे तो इस अपनी दुकान के सामने दुकान मानने के समय सूचक-पट्ट के रूप में लटका दे और पुराने में पुराना कोई ग्राहक निश्चिन रूप में यह नहीं बता सकेगा कि यह कोई पगु है या मज्जी है या घातु है। इतने पर भी यह बफ के गान जमी विगुड घनी

रुगी और यदि उस वनन में डालकर उबाल लिया जाए तो यह अनिवार के रात्रि-
भाज के लिए बहुत उत्तम भोजन मिष्ट होगी। इसके बाद मन में आई बातें हैं।
इनकी पठों में वही बल और बाण वनमान है जो तब या जब मैं बना के रूप में स्पेन
व वनमान मगाना में भाग लीब रही थी। यह हर किस्म के हठवाद का ही प्रतीक
है। इसमें प्रकट है कि गारोगिक वनावत में रह गए सभी तरह के दाप कितने
असाध्य मान हैं। मैं यह मानता हूँ कि व्यवहार में जब मैं किसी व्यक्ति के असल
स्वभाव का ज्ञान होता हूँ तो मुझे उसके इस जन्म में सुखरन या विगडन की कोई
आशा नहीं रहती। पूर्व के लोग कहा करते हैं कुत्ते की पछका गम करके दवाकर
उसपर पट्टिया लपेट दीजिए। बारह वर्षों तक इसी प्रकार करत रहने पर भी उसकी
नमर्गिक आकृति बयावन हो रही थी। इन पन्ना में जैसी बढमूलता मिलती है
उसका तो बस एक ही रामबाण निदान है कि इनमें सरस बना लिया जाए। मैं
मममता में आम तौर में इनमें मरेम हो बनाया जाता है और तब य चिपककर एक
जगह स्थिती रहती हैं। य मिरके अथवा दान्ते के पाप हैं जो ज्ञान माउण्टम में
कर्मिगिने वरमाट के किसी ज्ञान स्मिय नामक व्यापारी के लिए जा रहे हैं। वह
उनका आधान तब करता है जब माल समान ज्ञान बनता है। फिर वह अपनी
दुकान पर खड़ा लेकर तट पर अभी पट्टे मान का ही ध्यान कर रहा हागा और
माच रहा हागा कि दरी का मूल्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा। और इसी क्षण वह अपने
ग्राहकों का बना रहा हागा कि मैं बस अगनी ही गाढी में बट्टिया किस्म का मान
ज्ञान की आगा कर रहा हूँ। यही ज्ञान मुझ में बीम बार वह उन्हें बता चुका हागा
और कर्मिगिने टास्म में भी इसका विनापन कर चुका हागा।

य पाठों जा रही हैं तो दूसरी आ रही हैं। मनमनाष्ट की आवाज में चौककर
मैं पुनः य मिर उठता हूँ तो क्या दखता हूँ कि मुझ उत्तरी पहाडिया में काटकर
लाया गया ग्रीनमाउण्टम और कनेक्टीकट के ऊपर में उठकर आया हुआ पीछ
का एक लम्बा पड कम्ब के बीच में तम मिनट में तीर की तरह निकल जाता है
और बाईं अय बटिनाई में भी उस दख पाना है। यह गायन किसी महान नायना
पति का सम्मून वनन जा रहा है।

और सुनिए, यह पगुआ की गाढी धनी आ रही है। इसमें एक हजार पहाडिया
के पगुआ हैं। भेगा के बाटे घुमान और गंगागाण हवा में उड़ा बना जा रही हैं।
अपना पहिना निग खाने मन्म और खरवाह अपने यूया के बीच में खड़े हैं। पहाडी

चरागाहा के मिवाय सभी कुछ तो है और सितम्बर की आँिया में पहाड़ों में टट पता की तरह ये सब उठे जा रहे हैं। बछ्वा और भेडा के मिमियाने और बसा के रमान की जावाजें हवा में ऐसे गज रही हैं असेकि एक गाँवर घाटी हो चली जा रही हो। जय आगेवाले पशु के गने की घण्टी बजती है तो पहाड़ मंग की तरह छोटी पहाड़िया मेमना की तरह सबमुच ही फुटने लगती हैं। बीच के एक डिबे में खाल सईस और खरवाहे भरे हैं। उनका घन्ना जा चुका है और वे अपने पशुओं में समस्त हो गए हैं। लेकिन अपनी बेकार छड़िया को अब भी अपने पद के बिल्गा की तरह उहाने छानी से चिपका रखा है। लेकिन उनके कुत्ते कहाँ हैं? उनके लिए तो यह सब एक खलवली और भगदड़ है। उन्हें दूर भगा दिया गया है। वे सधने की अपनी गतिन लो घटे ह। मुझे लगता है पीटरवरा हिम के पीछे वही से उनके भौंकन अथवा ग्रीन माउण्टेन्स के पश्चिमी छाना पर उनके सरपट दौड़ने की आवाज में काना में पड़ रही है। अब मग्ने समय वे अपने स्वामी के साथ नहीं होंगे। उनका घन्ना छिनचुका है। अब उनकी स्वामिभक्ति और बुद्धिमत्ता अपने स्तर से गिर चुकी है। वे अपमानित की तरह या तो अपनी मादा में मुह छिपा लेंगे या गायद जगली बन जाएंगे और भेड़िया और लोमड़िया के साथ दौड़ लगाएंगे। इस तरह आँवो पशुचारण सम्बृति रानसनाती आई और निकल गई। लेकिन रेल की मीटा बज रही है। मुझे पटरी से हट जाना चाहिए और डिबे को आग बन्न देना चाहिए

रेल-पथ मेर लिए क्या है ?

उसका मिरा कहा है

यह दरन में कभी नहीं जाना।

यह कुछ गढ़ा का भर देता है

अवासीसा को बठन की जगह देता है

रेल का उडाता है

कृष्ण बदरी को उगाता है।

लेकिन मैं बग़ाडिया की लोक की तरह रेल की पटरियों को पार कर जाता हूँ। मैं इनके धुल जोर भाप से और मगरी आवाज में अपनी आँखा और काना को फोड़ना नहीं चाहता।

रेल के टिकट और उनके साथ उनकी ध्याकुन दुनिया जा चुकी है। ताराब की मछनिया अब उनकी घड़बड़ाहट महसूस नहीं कर रही हैं। मैं सदा की अपना जिक्र खेती हा गया हूँ। उधे तामर पहर के गोपाग म मूढ़ माग पर मे जान वाली गाड़ी या बग्गी की हलकी खड़बड़ ही मेर ध्यान मनन म बाधा डाल ता पान ।

कभी-कभी इनवार के दिन जब हवा अनुकूल हानी है मैं लिक्न, एक्टन बड पाठ अथवा कानकाड के गिरजा की घण्टिया सुनता हूँ। यह एक मन्द मधुर प्राकृतिक सगीत जाना है। इसका इस उजाड म पड़ुच पाना अभिनन्नीय गगना है। जगना के ठपर म बहुत लम्बा दूरी तय करने के कारण इस ध्वनि म एक विशेष थरथराहट म भरा गन आ जानी है लगना है जमे आकाश म उठे चीड के पत्ते मारपी के तार हा जिनको छूकर यह ध्वनि बली आ रही है। दूर कही धरती के उमार का बीच का आकाश एर ऐसी नीली आभा प्रदान करता है कि वह हमारी आत्मा को और भी अधिक रोचक लगने लगता है। ठीक इसी प्रकार अधिक तम सम्भव दूरी मे आकर काना म पड़नेवाली सभी ध्वनिया एक जमा ही प्रभाव सन करती हैं। वे विश्व-वीणा की धिक्कन का रूप ग्रहण कर लेती हैं। मुझे तो इस रूप म वह स्वर-नहरी सुनन का मिनी जिमे पवन ने प्रसारित किया जिम वन के हर पत्ते और नुकीली पत्ती का स्पग प्राप्त हुआ जो पक्षभूता द्वारा बनाए मशारे गए और घागे घाटी म भजाए गए ध्वनि-सगम का एक अंग थी। प्रतिध्वनि कुछ दूर तक मून ध्वनि ही होना है और इसीमे उमका जादू जीग शाकपण निहित है। घनी की ध्वनि म जा कुछ पुनरावृत्ति योग्य भा सिफ वनी यह नहीं है आगिक रूप म यह जगन की आवाज भा है। गान और तय तो वही मही पर इसे एक वनदवी न गाया है।

मध्या समय जगना के पर बहुत दूर खनी किसी गाय का गगना आकाश म उठकर मुझ तक पहुँचना है और वन ही मोटा और मुगीता मात्रम पड़ना है। पहचानने तो मैं समझा कि यह किसी उन वनालिका का संगान है जिनका माध्य गायन मैंने कई जग मुना है और जा गायन अब भा गहाडिया पर और घाटिया म घूम रू है। लेकिन जब गाय के समन नगणिक सगीत व रूप म यह ध्वनि नभ्वी धिक्का ता मैं असल बात जान गया पर इसमे कोई अरवि या निरागा मुझे नहीं हुई। जब मैं बन्ता हूँ कि उन नवयुवक गायका का संगीत गाय के संगीत व समकक्ष

था, तो मेरा उद्देश्य उनपर व्यग्य करना नहीं है। मैं तो उनकी प्रशंसा ही करना चाहता हूँ। आखिर उनका संगीत भी प्रवृत्ति का अनुसरण ही तो है।

गमिया के विशेष दिना में सध्या की रेल के चल जान के बाद, नियम में ठीक माडे गात बज दरवाजे के खूण पर या मवान की ऊंची बडी पर बठकर अवाबीन आध घण्टे तक अपन साध्य-गीत गाती थी। जसेकि घडी दबकर एक निश्चित समय वे पाच मिनटों के अंदर अन्दर वे अपना संगीत आरम्भ कर देती थी। यह निश्चित समय या सूयास्त का समय। उनकी आदता से परिचित होने का यह दुलम अवसर मुझे मिला था। कभी कभी तो मैं वन के विभिन्न भागा में चार या पाच कि मैं हा गीत के बाद होनेवाली कुट की आवाज को ही नहीं बल्कि मबटो के जाले म फमी मबली की बजवजाहट जमी ध्वनि को भी सुन पाता। हा यह ध्वनि अनुपात में अश्व जोर की होती। जब कभी मैं किसी अवाबील के अडो के आसपास हाना तो वह ऐसी मेरे चारा ओर चक्कर पर चक्कर लगाती जमे उसे किसी घाग में बाध दिया गया हो। थोड़ा रुक रुककर ये पमी वमे तो सारी रात ही गाते रत लकिन ओर के ठीक पहने या उसका आसपास उनका स्वर पहने जसा ही मुरीला होता।

जब अथ पमी चुप जाते तो आतनादक उनका स्थान ल नेत हैं। वे विलाप करनेवाली स्त्रियों की तरह अपनी उन्मूलू ध्वनि निरालते हैं। उनकी शोक पूण कीत्कार ठीक वेन जोनमन की शी की होती है। आधी रात की समयदार चुड़लें य। कविया द्वारा किया गया उल्लू की बोली का संगत और रुध रूपांतर टु हिट-टु-ह यह नहीं था। मजाक मत मानिए, यह तो किसी बर्हिस्तान में उठन वाला कोई गम्भीरतम गायन था। यह तो आत्महत्या करके मरनेवाले प्रेमी-युगल का परस्पर आश्वासन तथा नरक के निकुञ्जों में पारस्परिक प्रणय की पीडाओं और गुवा का स्मरण था। इतन पर भी वन प्रणय में कम्पायमान उनका यह विलाप और आनगायन मुझे प्यारा लगता है। यह कभी-कभी मुझे गायक पक्षियों के संगीत की याद दिना देता है जसकि यह उनके संगीत का अश्रु भीगा वृष्णपण हो वे अनुताप और जाह हा जिह गा दिया गया हा। जिन पतिनात्माओं ने कभी मानवा बार में इस घरती पर रात्रि चरण किया था और बाले कारनाम किए थे वे हा मानो अथ अनिचारा के अपन इस प्रणय में विनाप करती और रदन-गीत गाती घूम रही हैं और इस प्रकार अपने पापा का प्रायश्चित्त कर रही हैं। ये उल्लू उहीक अधम

भूत हैं, ये उन्नीकी विपायुक्त चेतावनिया हैं। य उल्लू हम मन्त्रक सामूहिक निवास-स्थल प्रकृति के विभिन्न रूपा एव उसकी शक्तिया की एक नतन अनुभूति मुझे देते हैं। 'ऊं हूं ऊं ऊं—कि मैं कभी पदा न हुआ हाना—तालाब के उम तट पर एक उल्लू चीखना है और निराग विह्वलता के साथ मफेद बलून की किमी नई गाथा के चारा आर मडराना है। तज—मैं कभी पदा न हुआ होता—यह ध्वनि दूर कही और बड़े दूमरे उल्लू क प्राणा मे गनती है और उतना ही मकम्प स्वर सहरो म वह भी चीख उठना है और 'होना आ-आ' की मन् ध्वनि सुदूर लिकन क बना मे आती सुन पडती है।

साध्या समय एक 'हूं ऊं-ऊं करनेवाले उल्लू की आवाज भी मर जाना म पडी थी। यदि बहुत पाम हा ता आप उस गहनतम विपाद से भरी प्रकृति की आवाज कह सकते हैं। सायन वह अपन इस संगीत मे किमी मरते हुए मानव की चीत्कारा का स्थायी रूप मे बढमून करना चाहती हो। यह मानव मत्त मानवता का वह विवश कमजोर अवशेष हागा जो आगा छोड चुका होगा, जो उम काली घाटी म प्रवेश करते हुए जिस एक विशेष घरघराहट भरे मगीन न और भी भयानक बना दिया है मानवीय हिचकिया म भी पशु की तरह चीखता होगा। जब मैं इस घरघराहट का अनुकरण करना चाहता हू ता मैं देखता हू कि मैं 'ग' अक्षर म आरम्भ करता हू। यह इस बात का सूचक है कि स्वस्थ और साहमपूण विचारणा का पूण ह्याम हा चुकने के कारण निमाग एक लमलमी और फफणी स्थिति को प्राप्त हा गया है। यह मव मुझे पिगाचा जड मूखों और पागला की चीत्कारा की याद दिलाता है। लेकिन सुदूर जगता मे काद उल्लू दूरी क कारण मचमुच ही मुरीली बनी लय म चीखता है हू-हू-हू हुरर-हू। और मच ही अत्रिकागत इसन मुग्ध सम्बन्ध म ही म्मति के मूत्र जोड है भले हा मैंन इसे तिन म सुना हो या रात म, गर्मिया म या जाडो मे।

इन उल्लुआ की मत्ता मुझे सुनी भी देती है। अच्छा हो कि मानवा के म्थान पर य जडता और मन्त्रक म भरी अपनी हू हू करन चन जाए। यह आवाज दलदला के लिए और उन अघरे बना के लिए, जिहें कोई भी दिन प्रकाशित नही कर सका है बहुत ही उपयुक्त है। यह उन विस्तृत अविकसित प्राकृतिक प्रदग्ता की मूचना हम नेती है जिहें अभी तक मानव पहचान नही सका है। यह गोधूनि बना की ओर मभीम बनमान अतुप्त आवागाओ की प्रतीक है। पिछले पूर दिन उम दनन्ती बन प्रग्ता की घरती पर मूरज चमकना रहा है जना भाऊ का एक अकेला पेड खड़ा

एक हलक-भ उमत्त भाव की उपस्थिति की चेतना भी मुझे हो रही थी और मैं यह भी माफ़ देख रहा था कि मैं जल्दी ही स्वस्थ हो जाऊंगा। जब य विचार मेरे अन्दर घुमड़ रहे थे तब हृन्की बपा हो रही था। तभी अचानक ही प्रकृति में बूने की उस टप टप में अपने घर के चतुर्मुख हर ध्वनि और दृश्य में एक मधुर लाभदायक सग का एक अपरिचीम अपरिगणनीय मित्र भाव की अनुभूति हो उठी। मुझे लगा कि मारा वातावरण मुझे सभात रहा है और मानवा के पड़ोस के कपित लाभ मेरे लिए तुच्छ बन गए। उसके बाद स उनके बार में मैंने कभी सोचा भी नहीं। चीड़ का हर छोग-मा पत्ता भर प्रति मित्र भाव और महानुभूति में फला और फला-मा मुझ प्रतीत होता था। जिन दृश्यों को हम जगती और डरावन कहने के आगे हैं उनमें भी मुझे स्पष्ट रूप में एक अपनत्व भाव वर्तमान मिलता था। मरा निकटतम एक सम्बन्धी और मानवोचित गुणसम्पन्न जन अब कोई नागरिक अपवा ग्रामीण नहीं था। कोई भी जगह जब मुझे अपरिचित नहीं लग सकती थी।

जो तास्कर की मुद्दर बनी।
विनाश असमय ही दुखी जन को ला डालता है
और जीविता व देश में उनके निनि
बहुत धाड़ रन जान हैं।

बगल या पतभ्रम में जब बहुत नम्बे समय तक वर्षा और अघट चलत रहने थे और मैं दोपहर से पहले भी और बाद में भी घर में बंद हाकर रह जाता था, तब मेरे व कुछ घण्ट मयम अधिक आनन्द में बीतने थे। निरंतर गरज और टप-टप मुझे मात्वना-सी देती था। भटपुन बहुत जल्दी उतर आना था और सध्या बहुत गर्मी हो जाती थी। ऐसे क्षणों में ही अनर तरह के भावा या अकुरित होन और व्यवन होने का जयमर मिलता था। गाव के घरा की हिला देनवाली उत्तर-पूर की उन भय वर बपात्रा तब में जय नौकरानिया भाडू और बाटी तक अतिरिक्त पाना को बाहर फेंकने व लिए सदर दरवाजा पर तनान खड़ी रहती थी तब भी अपने छोटे में घर में मैं अवेना अपन एकमात्र द्वार के पोछे बठा रहता था और पून मुग्गा का रम-नाभ वगता था। एर बार एक भीषण बपा और तूफान व निनि तालाब के पार एवं बड़े चीड़ व पन पर बिजली गिरी थी। त्रिजली न उम पटम मिर से तनी तक एक गाफ और पवरी सपिन ननी बना दा थी जो एक दूध या अधिक मागे जो

चार या पांच इंच चौड़ा थी। यह वसी ही थी जमीन हम अपनी छड़ी में खोद लेते हैं। अभी पांच एक दिन में उसका पास में गुजरा। आठ वष पहन हानिरहित जाकाग में टूटकर एक भाषण अप्रतिरोध्य वज्र जिम स्थल पर गिरा था वग बना निगान जब पहल में भा भाफ था जिम देखकर मरा हूँ एक भय में भर उठा। लाग जकम मुझमें कहा करत हैं मैं समझता हूँ आप वहाँ जकेलापन महसूस करेंगे और विशेष कर वषा और हिमपान व निना और गता में लागा के निकट मरक जाना चाहता। ' एम नागा का मैं यह उत्तर दे बैठता हूँ यह घरनी जिमपर हम रहते हैं महाभूय में एक बिन्दु के बराबर ही तो है। आपका विचार में उस मुद्दतम तार के निवासों हममें कितनी दूर होंगे?—उस तार के जिमकी गोलाई को नापना भी हमारे यहाँ के बम की बात नहीं है। तब मैं अक्लापन अनुभव क्या करूँ? क्या हमारा भू-ग्रह जाकागगा के बीच नहीं है? आपका यह प्रश्न मुझे सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न मानूँ नहीं पड़ता। वह नाय क्या चीज है जो एक व्यक्ति का उसका माथिया में जलग करता है और उस एकाकी बनाता है? मैं यह समझा है कि नागा का कितना भी श्रम दा मनो का एक-दूसरे के निकट नहीं ला सकता। हम सबसे अधिक किमक निकट रहना चाहते हैं? निश्चय ही बहुमूल्यक मानवा के नहीं निपो डाकखान मध्यपान-वाह समा भवन पाठागता पमारी की तुलना यकनन्ति अथवा जहा सर्वाधिक नाग एकत्र होत हैं उस फाइव पाटण्डम के निकट भी नहीं। हम अपने जीवन के उस चिरन्तन स्नान के पास रहना चाहते हैं जो हमारे मार अनुभवों को प्रगति करता है। सरपत पानी के निकट उगती है और अपनी जड़ों का उमीका निशान में फँसती है। भिन्न प्रवृत्ति के नागा के साथ भिन्न स्थितियाँ हो सकती हैं किन्तु एक बुद्धिमान व्यक्ति इसी स्नान के निकट अपना तहखाना खोल्गा। एक दिन मैं अपने कसब के एक परिचित से टकरा गया। इन मज्जन न वालन्त मरावर भाग पर तथाकथित मांग नायदाद बना रगी है। बम में कभी उस नायदाद का भरी प्रकार लग नहीं सका हूँ। मर हम समय नाय मज्जन एक छोड़ी पगु हाकर बाजार ल जा रहे थे। उन्होंने मुझमें पूछा जीवन की इतनी सुख-सुविधाओं का निवासलि दन की बात आप सोच भी कम करें? मैं उत्तर दिया मैं तो यह मय सूख-सूख पसन्त कर सका हूँ। और मचमुच ही यह मैं मज्जा में नहीं कहा था। मैं तो अपने घर मान चला गया और उन अंधे और गारे मिट्टी में घ्रातन या घ्रात-ग्रातन का माग स्नान के लिए छाटाया। कभी सुनह जाकर वह अपनी मज्जन

पर पहुँच पाएगा।

यदि एक मृतक व्यक्ति बं जाग उठे, उसमें फिर भी जो उठने की आत्मा फँसि होन लगे तो उस व्यक्ति के लिए समय और स्थान का प्रश्न निरपेक्ष हो जाता है। जिस भी स्थान पर यह घटना घटित होगी वही उसकी इन्द्रिया के लिए अवश्यानीय रूप में मुखप्रद हो जाएगा। अधिकतर बाह्य और अस्थायी परिस्थितियाँ का हा अपन विशिष्ट क्षणों का कारण हम बनने देते हैं। अमन में तो वे हमारी एकाग्रता में गलल डालने का ही काम करते हैं। पदार्थों का अस्तित्व निर्माण करनेवाली शक्ति ही उन सबके निष्पत्तन है। प्रकृति का महानतम कानून हमारी आत्मा के ठीक सामने लागू किए जा रहे हैं। हमारे सामने वह कमबल गहरी है जिस हमने काम पर रखा है और जिसमें बानें करना हमें बहुत पसन्द है बल्कि वह जारीगर है जिसमें हम सबको बनाया है।

आकाश और धरती का अतिसूक्ष्म शक्तियाँ का हमपर किन्ना व्यापक और गहरा प्रभाव है ?

"हम उन्हें पहचानना चाहते हैं पर उन्हें देख भी नहीं पाते हम उन्हें सुनना चाहते हैं, पर सुन नहीं पाते वे पदार्थों के मातृत्वा में एकाग्र है उन्हें उनमें अलग नहीं किया जा सकता।

वे पूरी सृष्टि में हर वही मानव को मजबूर करती हैं कि वह अपन हृदय को पवित्र और पापमुक्त बनाए उल्लासमूर्चन धृष्टी के बल पर ही अपन पूजना को बलिदान और चण्डे समर्पित कर। यह तो सूक्ष्म बौद्धिक तरणा का एक महा मागर है। ऊपर बाय, दायें के छर कही हैं और हम चारा ओर में घरे हैं।

हम एक ऐसे प्रयोग के विषय बन गए हैं जो मुझ जरा भी रजिजर नहा है। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वर्तमान परिस्थितियाँ में थोड़ी दर के लिए भी हम अपनी गणराजियों को त्याग दें और अपन विचारों से ही अपना मनाविनाद कर लें। जनपूजास न मच ही कहा है, 'सुष्ठु एक परित्यक्त नागरिक की तरह अनेना नहीं रह सकता पड़ोसी उस अनिवायन मिन जाएंगे।

विचारणा के द्वारा हम प्रवृत्तिस्थ रहने हुए भी आप में बाहर हो सकते हैं। मन के एक सचेत प्रयास के द्वारा हम कथ और उसमें परिणामों से अलग बन रह सकते हैं। यह हो जाता है कि सभी चीजें—अच्छी भी और बुरी भी—एक हमारे पास में निवल जाए अम नेत्र नहर निरन जाती है। हम प्रवृत्ति में पूर्ण तरह चपे नहीं हैं।

इस बनाव में वह जानवाली लकड़ी भी बन सकती है और आवागमन में बहुत दखन-
 वाला इन्द्र भी। किमी नाटक का दृश्य भी मुझे विचित्र बन सकता है और हो
 सकता है मुझमें अतिवाचिक सम्बद्ध लगनवाली वैसी ही अमन घटना तक मुझे जरा
 भी प्रभावित न कर। मैं अपने का एक मानवीय इकाई के रूप में और यह कहिए कि
 विचारों और संवेदनाओं के रूप में के रूप में ही पहचानता हूँ। एक दाहरेपन की
 चेतना भी मुझमें बनी है जिसके द्वारा मैं अपने में उनकी ही दूर लगे हुए मरता हूँ
 जिनकी दूर कि मैं किसी अर्थ में खड़ा हूँ। मेरी अनुभूति किनी ही तीव्र क्या न हो
 मुझे बराबर अस्वस्थ रहना है कि मरा ही एक अर्थ में मेरी आलाचना कर रहा है
 जैसा कि वह मेरा अर्थ न करके एक दार्शनिक-मान है। वह उस अनुभूति में भागी-
 दार न हो। उसका विवरण निरन्तरवाली भग्न हो। वह 'मैं' इतना नहीं है जितना कि
 'तुम' है। जब जीवन का नाटक—भग्न ही वह अनुभव है—समाप्त हो जाना है
 तो दृष्टि अपनी गह जाता है। जहाँ तक उसका सम्बन्ध है उसके लिए तो वह एक
 कहानी थी। कल्पना की एक ग्रीष्म-भात थी। कभी-कभी यह दाहरेपन बड़ी
 आसानी से हम एक कच्चा मित्र या कच्चा पटोसा बना सकता है।

अपने समय का अधिकतर भाग जेबें बिताना मुझे बहुत अच्छा लगता है।
 सर्वोत्तम मित्र-मण्डली में बैठकर भी मैं अन्तर्गत ही थक उठता हूँ ऊब उठता हूँ।
 अव्ययपन से ही मुझे प्यार है। एकाकीपन में बर्तिया कोई साथी मुझे कभी नहीं
 मिला। जब हम बाहर लागा में मिलने जाते हैं उस समय अपने कमरे में बैठे रहने की
 अपेक्षा हम वहीं अधिक अव्ययपन महसूस करते हैं। माचने समय या काम करने
 समय व्यक्ति हमारा अकेला हो जाता है। एकाकीपन इस बात में नहीं नापा जा
 सकता कि व्यक्ति-विशेष के और उसके साथियों के बीच कितना फास है।
 कम्ब्रिज काल के छात्रावास की भीड़ भाड़ में रहनेवाला एक योग्यतम छात्र
 उठता है अथवा होता है जितना कि रमिग्टान का काँ भी दरवेश। एक किमान
 अकेला अपने सेत का लगना रहता या जान में लड़कियाँ बाटता रहता पर एकाकी
 पन महसूस नहीं करेगा क्योंकि वह काम में लगा है। लेकिन जब वह रात को घर
 चला जाता है तब अपने विचारों के सहारे अपने कमरे में वह जेबें वैसा नहीं रह
 सकता। रात में मिलकर अपना मनोरंजन करने वह निश्चय ही पड़ता है जैसा कि
 दिन भर के अव्ययपन की क्षतिपूर्ति कर रहा हो। और उस आश्चर्य होता है कि एक
 विचारों पूरी रात और अधिकतर दिन के बिना उठता और मन में ना किए अपने

१४२

घर में बंद रह जाता है। वह यह नहीं साचता कि विद्यार्थी यद्यपि घर में है पर वह किमान की तरह ही अपने खेत में काय-व्यस्त है और अपने जगन में लकड़िया बांट रहा है और उसे भी उसीकी तरह सग-साथ और मनोरजन की जरूरत होती है। हा यह सग-साथ और मनोरजन उसकी अपेक्षा अधिक ठोस किस्म का हो सकता है।

जाम तार में सग साथ बहुत हलका चीज है। हम बहुत जल्दी-जल्दी मिलते हैं और इस बीच एक-दूसरे के प्रति कोई नई विचारणा बाँध नया मूल्य अर्जित नहीं कर पाते। हम दिन में तीन बार खान पर मिलते हैं। हम सभी जा एक बारी पानी के समान हैं, उसीका नया स्वाद हम दूसरे को प्रदान करते हैं। इस बार-बार के मिलने का सहनीय बनाने के लिए और इसलिए कि हम खुद जाम लड़ ही न पड़ें हमन व्यवहार के लिए कुछ नियम बनाए हैं और उन्हें हमन सम्मति और विनम्रता का नाम दिया है। हम डाकघर में मिल जाते हैं ताप में मिलते हैं और हर रात आग के पास मिलना होता है। हम भीड़ बनकर रहते हैं एक-दूसरे के रास्ते में जाना और एक दूसरे से टकराते हैं। मैं समझता हूँ उसीमें एक-दूसरे के प्रति आवश्यक सम्मान का भी हम थोड़ा बहुत स्वाद लेते हैं। सभी महत्वपूर्ण हार्मि सम्बन्ध का बनाए रखने के लिए निश्चय ही कम मिलना भी बहुत काफी रहेगा। किमा बार खान में काम करनेवाली गड़किया का दबिए। वे कभी जेबली नहीं रहता। कभी बठिनाई में ही वे अपने सपना में डूब जाती होगी। अच्छा तो यह होगा कि जमे में रहता हूँ एक बगमील में एक जादमी रह। मानव का मूल्य उसकी खान में नहीं है कि हम उसमें रमड़ खाए।

मैंने सुना है एक बार एक व्यक्ति जगन में खा गया। भूय और धकान में मत प्राय हाकर वह एक पड़ के नीचे गिर पड़ा। गरीर की कमजोरी और लगना के कारण उस पड़े का अत्यन्त दृश्य अपनी कल्पना में दाय पड़े। इन् उन वास्तविक मान लिया और इन्होंने ही उसका अवलपन का बाटा। इन्ही प्रकार गारमिक जी मानसिक स्वास्थ्य की अवस्था में भी हम ऐसे ही पर अधिक स्वाभाविक और सगन सपना के सहारे लगातार अपना मनोरजन करते रह सकते हैं और हम एक नग भवता है कि हम अक्सर एकज्म नहीं हैं।

मुझे अपने घर में ही बहुत काफी सग-साथ मिल सकता है बिनापर मुकह के समय जब कोई मुझमें मिलन नहीं आता। मैं कुछ चुननाए प्रस्तुत करना हूँ जिसमें

मेरी स्थिति को पूरी तरह समझा जा सके। मैं जार में हमनेवाली मुगात्री या स्वयं वाडेन सरोवर में अधिक तो अवस्था रही है। बना बताइए हम अवल ताताव का माथो यन्त्र कौन है ? तब भी हमने नीलाभायुवा जल में नीले रंग नहा वरिष नीली पगिया हो बनमान हैं। मूय भी एकाकी हो है। कभी-कभी घन कुहरे में एमा लगता है कि मूय ने हो गए हैं पर दूसरा तो अवास्तविक ही होता है। ईश्वर भी एक ही है। लेकिन गन्तव्य वह बिलकुल अकेला नहीं है। उभे उभूत-म मगा-माथी भिन्न जाते हैं। उसकी ता एक अपार मेरा है। चारागाह में उभे एक अकेल स्वर्णघास के पीछे जयवा कुकुरों के म मा मेम के पत्तों में या लोनी में या गोमकना में या भौर में अधिक अकला मैं नहा हूँ। भिन्न श्रुत या वानसूचक मुर्गों (वेदर काक) में या उत्तरी ध्रुव से या दक्षिणी पवन से या अप्रेल की घषा में या जनवरी के हिम-द्राव में या एक नय घर की पहली मकड़ी से अकला ता मैं नही हूँ।

जाना की सध्याआ में जब वर्ष बहुत तनी में गिरती है और जगला में हवाए घ घ करता है तब अस्मर एक बद्ध मज्जन मेरे पास जाकर बैठ जाया करते हैं। यही हम स्थान व मूल स्वामी थे और बहुत है इतना ही हम बाल्टेन सरोवर को छोड़ा था, हमके तब पर परवर जन्मे थे और किताब किताबे चीठ क पढ लगाए थे। य मुझे बीने धुप की कहानिया और आनवान युगा की बातें सुनाया करते हैं। हम दोनों मद्य और उमकी गराव का बीच में रमे बिना भी आमोद प्रमोद और मधुर खचा क द्वारा ही अपनी सध्या मानन्त्र रिता लेते हैं। ब बह ही बुद्धिमान और विनाशी मित्र हूँ। वे अपन को गोपनी या बहाला में भी अधिक गुप्त रखते हैं। माना जाता है कि व मर चुके हैं लेकिन काइ न नी बना सकता कि उन्हें कहा दफनाया गया है। मर पडास में एक पुरातन बुद्धिया भी रहती है। अधिकतर लोग उसे देख भी नहीं पाते। कभी-कभी उमक जड़ी-बूटियावाले मधयुक्त बगीचे में धूमना, धूमिया इकट्ठी करना और पौराणिक क्याण मुनना मुझे बड़ा ही प्यारा लगता है। कहानिया गन्त की उमम अद्वितीय प्रतिमा है। उमना स्मृति पुराण युग से भी परे तक जाती है। हर पौराणिक क्या का मूल रूप और जिसपर उनमें म प्रत्येक आधारित है वह

- १ इन्वेस्ट गृह्युद्ध क दिनों में माफ एक महत्त्वपूर्ण सामान्य या और बहाला एक जनरल। माफे में वाल्मि प्रथम क गृह्युद्ध क आगाप पर इस्तेमाल किया। बाद में अपनी जान बचाने के लिए हैं भागकर अमरीका चले आया पडा। वही वेश बदल कर वे भ्रमन कर रहे।

१४२

घर में बंद रह जाता है। वह यह नहीं माचता कि विद्यार्थी यद्यपि घर में है, पर वह किसान की तरह ही अपने खेत में कार्य-व्यस्त है और अपने जगल में नकशिया का रहा है और उसे भी उसीकी तरह मग-साथ और मनोरजन की जरूरत होती है। हा यह मग साथ और मनोरजन उसकी अपेक्षा अधिक ठोस किस्म का हो सकता है।

आम तौर पर मग-साथ बहुत हलका चीज है। हम बहुत जल्दी-जल्दी मिलते हैं और इस बीच एक-दूसरे के प्रति कोई नई विचारणा काइ नया मूल्य अर्जित नहीं कर पाते। हम निम्न में तीन यात्राएँ पर मिलते हैं। हम सभी जाएँ वाली पत्नी के समान हैं। उमाका नया स्वाद हम दूसरे का प्रदान करते हैं। इस बार-बार के मिलने को सहनीय बनाने के लिए और इसलिए कि हम खुले आम लट्टी नहीं पटें हमने व्यवहार के लिए कुछ नियम बनाए हैं और उन्हें हमने सम्मना और वित्तप्रता के नाम दिया है। हम डाकघर में मिल जाते हैं ताकि हम मिलते हैं और हर रात आग के पाम मिलना होता ही है। हम भीड़ बनकर रहते हैं एक दूसरे के प्रति आवश्यक हैं और एक-दूसरे से टकराते हैं। मैं सम्मता हूँ उसीसे एक-दूसरे के प्रति आवश्यक सम्मान को भी हम थोड़ा बहुत खो बैठते हैं। मग महत्वपूर्ण हार्दिक सम्मान का बनाए रखने के लिए निश्चय ही कम मिलना भी बहुत काफी लगता है। किसी बार खान में काम करनेवाली लड़कियाँ को देखिए। वे कभी अकेली नहीं होती। कभी कठिनाई से ही वे अपने सपना में डूब पाती होगी। अच्छा तो यह होगा कि जम में रहता हूँ एक वगसीन में एक आत्मी रहूँ। मानव का मूल्य उसकी खान में नहीं है कि हम उसमें गड़गड़ाएँ।

मैंने सुना है एक बार एक व्यक्ति जगल में खा गया। भूय और घसान में मत प्रायः हाकर वह एक पक्ष के नीचे गिर पड़ा। गरीर की कमजोरी और लगता के कारण उस वृद्धे ही अटपट दृश्य अपना कल्पना में दीख पड़े। इन्हें उसने वास्तविक मान लिया और इन्होंने ही उसका अलपन का बाटा। इसी प्रकार गारारिक और मानसिक स्वास्थ्य की अवस्था में भी हम उस हा पर अधिक स्वाभाविक और मगन सपना के महान नयानार अपना मनोरजन करते रह सकते हैं और हम ऐसा नम सकते हैं कि हम अकेले एकदम नहीं हैं।

मुझे अपने घर में बहुत काफी मग-साथ मिल सकता है बिनापकर मुझे के समय जब कोई मुझमें मिलने नहीं जाता। मैं कुछ तुलनाएँ प्रस्तुत करना हूँ जिनमें

मरा स्थिति को पूरी तरह समझा जा सके। मैं जार में हमनवासी मुगावी या स्वयं वात्सल्य मरावर में अधिक तो अकेला नहीं हूँ। भना बनाइए इस अकेले तालाब का साथ। यहाँ कौन है? तब भी इसमें नीलाभायुक्त जन में नील नैय नहा वनिक नीली परिया हा जनमान हैं। मूय भी एकाकी ही है। कभी-कभी घन कुट्टे में ऐसा गगना है कि मूय न हा गए हैं पर दूसरा तो जवानविक ही होता है। ईश्वर भी एक ही है। लेकिन गतान वह बिलकुल अकेला नहीं है। उस बहुत-समगी-साथी मिल जान है। उसकी तो एक जगह बना है। चारागाह में उग एक अकेले स्वर्णधाय के पीछे अथवा कुकुरों के म या मेम के पत्ते में या नानी में या गोमक्की में या भौर में अधिक अकेला मैं नहीं हूँ। मिल घुक् या वानमूचक मुगें (बदर बाक) में या उत्तरी ध्रुव में या दक्षिणी पवन में या अप्रैल की वर्षा में या जनवरी के हिम-द्राव में या एक नय घर की पहनी मक्खी में अकेला तो मैं नहीं हूँ।

जान की मध्याह्न में जब वर्ष बहुत तज़ी में गिरता है और जगता में हवाएँ घ घ करती हैं तब अकसर एक बड़ा मज्जन मर पाम आकर बैठ जाता करता है। यही हम स्थान के भूत स्वामी थे और कहते हैं इन्होंने ही इस वाल्टेन मरावर का वात्सल्य या इसमें तट पर पत्थर जड़े थे और जिनारे जिनारे चीट के पट लगाए थे। ये मुझे बात युग की कहानियाँ और आनवान गुण की बातें सुनाया करते हैं। हम दाना मक्ख और उसका गगन का बीच में रहे बिना भा आमाम प्रमाद और मधुर चचा के द्वारा हा अपनी मध्या मानस बिना जेत हैं। वे बड़े ही बुद्धिमान और विनानी मित्र हैं। वे अपने का गोप या बहानी में भी अधिक गुप्त रखते हैं। माना जाता है कि वे मर चुके हैं लेकिन कार्म नहीं बना सकता कि उन्हें कहा दफनाया गया है। मरे पड़ाम में एक पुरातन बुनिया भी रहती है। अधिकतर राग उस इन्व भी नहा पाते। कभी-कभी उसमें जगती-बूटियावाते गंधयुक्त बगीचे में घूमना बूटिया झट्टा करना और पौराणिक कथाएँ सुनना मुझे बड़ा हा प्यारा लगता है। कहानियाँ गान की समस्त अन्तिम प्रतिभा है। उसका स्मृति पुराण-युग में भी पर तक जानी है। हर पौराणिक कथा का भूत रूप और जिसपर उनमें म प्रत्यक्ष आगमिनी है वह

१. शर्नैड के गृ युद्ध के जिनो में गाँव एक महत्त्वपूर्ण समामन्थ था और स्थान एक जनगण। गाँव ने राज्य प्रथम के शुरुआत के आशापत्र पर इम्पेन्डर किया। बाद में अपनी जन बचाने के लिए वे आगकर अन्तरीका चल बना पड़ा। दो बरा बदल कर ये अन्त तक रहे।

तथ्य वह मुझ बता सकती है। जब वह युवनी थी तब शायद कुछ विविष्ट घटनाएँ घटी थीं। वह एक साल रंग की मत्स्यसील दृढकाय बुद्धिया है। हर ऋतु और मौसम का वह आनन्दपूर्वक भनकती है और अपने ममी बच्चा के बाप तक भी वह शायद जीवित बनी रहेगी।

प्रकृति में मूल पवन बसा जाइ और गर्मी सत्रम एक जवणनाम अबाधता और परोपकारिता भरी है और क्या एक स्वास्थ्य और जानद वह हम सदा इती रहती है। हमारी जाति के प्रति एसी सहानुभूति इन मयम है कि जब भी कोई मानव किसी सगत कारण से दुःखस्त होता है तभी सारी प्रकृति उसका प्रभाव पहचता है। मूल की चमक मन्द पड़ जाती है हवाएँ मानवा की तरह जाह भरण लगती हैं बाल अश्रु बसा करते हैं जगना के पत्त भटने लगत है और मय ग्रीष्म में मातमी कपड़े पहन लेत हैं। क्या मैं घरना में गुप्त बातचात न कर ? आगि रूप में क्या मैं पत्ता और वनस्पतिया का ही गन्ना हुआ नहीं हूँ ?

वह कौन-सी जोषधि है जो हम स्वस्थ गान्त और आरमनुष् बनाए रख सकती है ? मेरे या आपका परदाना की बनार्ह रही बल्कि हम सबकी परानादी प्रकृति की सावर्भौमिक वानस्पतिक उद्बिदीय उस जोषध में हा क्या हाना सम्भव है जिसके द्वारा प्रकृति ने स्वयं को चिर युवा बनाए रखा है और कितन ही बूढ़े पारा^१ को भरते रखा है और उनकी क्षरणशील यागाइया में अपने स्वास्थ्य को पुष् किया है। नीम हकीमा की उन बातला के बल जिनमें अचरन^२ और धृत सागर^३ में लाया गया मिधण भरा है और जिन्हें हम कभी-कभी नाव के आकार की लम्बी आर कम सहरी बैंगना मणोए जान देखन हैं क्या न मैं रामबाण ओषधि के लिए प्रभात के अमिश्रित विणुद्ध पवन का संवन करूँ ? प्रभात का पवन ! यन्नि न्नि के भूय शोन प्रभात के समय लोग इसका संवन न कर सकें तो क्या न कुछ पवन को बानना में भरकर उन लागा के लाभ के लिए मुरनित रख लिया जाए जो उस जाम का प्राण समार सेवन करने का अपना विन पमे का टिकन या चुब है। लेकिन या रगिए ठण्ड में ठण्ड तहयाने में भी यह पवन दोपहर तक बसा वा बसा नहीं रह सकता। यह

१ १४८३ से १५३५ तक जीवित पार नामक एक विद्या जिमने १५२ वर का आयु पूरा।

२ तरक की एक जन्म। माय हा ग्राम का एक जन्म जो अनिवन गानर में तिखती है।

३ उडिया फिनिलेन का एक भात

बहुत पहले ही डाट का उड़ा लगा और अरारा (उपा) व पीछे-पीछे पदचित्र की आर
भाग लगा। मैं उस हान-जिया^१ का पुजारी नहीं हूँ जो जन्मी-बूटी सन्तान बन
वाने वद्व एम्मु-नदियम^२ की उठी थी और स्मारका पर जिसे एक हाथ में एक माप
और दूसरे में एक प्याना—नियम में बभी-बभी माप बुद्ध पीता जाता है—एक
दूए चित्रित किया गया है। मैं तो जुष्टिर का प्याना घाम चवनवानो उम हीर^३
का उपामक हूँ ना जना^४ और जगली सनाद को बनी थी और तिमम न्वा और
मानत्रा का यौवन का गकिन बापम निना न्न की नासनी थी। नायद वही एक
युवती इस घरती पर हूँ है जो पूरी तरह स्मर्य पुष्ट और नीराग थी। जिसर भी
वह बनी जाती था, उधर ही वमल आ जाता था।

१ स्वारथ्य का देवी

२ घन औरथ एवं विक्किया देवान का देवता था। इमन मृग को जिला निदा था, तिमम
रुट हाकर तिमम ने उगे मार देला था।

३ यौवन का देवी तिमम की बेटी और हरवुनिय का पाला

४ रोमन इन् जुष्टिर का बनी, प्रकाश और आकाश का देवी

आए गए

मे सग-साध बा अगिशास लागी की तरह ही पसाद करता हू। मिल गए किसी भी कनीन मज्जन से कुछ समय के लिए जोक की तरह ही चिपट जान को मैं तयार रहता हू। प्रकृति स भयामी मैं नरा हू और यदि काम पड तो गायद किसी पकर पियक्कड स भी अधिक दर तक मैं मधुगाना स बठा रह सकता ह।

मर घर स तीन घुमिया की एक एकांत के लिए दूसरी मित्राचार के लिए और तीसरी सत्यग व त्रा। जब कभी जागा स अधिक बड़ी मध्या स मिलनवाल आ जाने ला तीसरी एक कुर्सी हो उन सबक लिए बच रहती। तकिन माधारणतया वे लाग पड़े रहकर ही अपना काम करना तत। जरूरत बा ही विषय है कि एक छाटा-सा घर बितने भार स्त्री-पुण्या को अपने स समा सकता है। कभी-कभी पचीस या तीस आत्माए मगरीर मरी छत के नीचे आ जमा होनी और फिर भी इतना अधिक निवड जा जान बा अहमाम किए बिना ही हम एक-दूसर स अलग भी हो जात। हमार बहुत स सावजनिक और निजी भवना स अनगिनत कमर हाने है हाल हात है और गराव एव अय गान्तिवातीन मोला-बाला का जमा करन के लिए तहवान होत है। मर विचार स ये सब उनम रहनवाना न लाग अनावश्यक रूप स बड हात ह। य भवन इतने विगात और भय हात हैं कि भानव इनम रेंगन बाल कीटा जम लगन उमन हैं। यदि कभी ट्रेमण्ट या एम्बर या मिडिनेमेकम भवन व बाहर कोई हक्काग अपना बिगुन बजाए ता हो सकता है कि रहनवाना के बलत कोई चना ही निवलनर बाहर गालान स आए और तत्काल ही मीनिया के निमी छ स जा घुग।

इतन छोटे घर स कभी-कभी एक असुविधा मैंन महसूस की है। यह यह कि जब मैं और मरा प्रतिधि हम दाना मित्रनर बन्-बड गाना स बन्-बड विचार प्रकट करन लगन हैं ता हम दाना न बोच काफी फामना नही बच पाता। विचारा को

व्यवस्थित ज्ञान इन के लिए और अपना रंग जमान में पहन एक-ए करस्टे बनान के लिए थोड़ा खुला स्थान चाहिए। यह जरूरी है कि विचार की गंभीर अग्र-वर्गल मुक्त-तुल्य और उठान के बाद पहन एक अन्तिम स्थिर गति प्राप्त कर न तभी वह श्रुतिज्ञान के काना में पड़ नहता वह दूसरे कान में बाहर निकल जाएगी। हमारे वाक्य भी श्रुति का खानन और नियमित पक्किवद्ध करने के लिए अब काग की क्षमता करने हैं। राप्ता की हातरह व्यक्तिगत के शब्द भी उनकी यथाचित धीमा और स्वाभाविक सामान्य ज्ञानी चाहिए। यहां तक कि बीच में पयाज नटम्य प्रत्या भा हाना चाहिए। तात्पर्य के दूसरे बिना मडे किसी माथी में बाने करने में मुझे अनायास में मिला करना है। मर घर में हम सब इतने निकट हान कि एक दूसरे की बात सुनना आरम्भ कर ही न सकत और इतना धीम हम बान न पान कि एक-दूसरे का बात मरना में सुनी जा सके। यदि कभी आप गान्त जन में बहुत पाम-पाम में पत्यर फेंक दें तो एक का नहरे दूसरे का काटन लगती है। ठीक यही हमारे माथ भा हाना। यदि आपका उद्देश्य सिर्फ गान बजाना और जोर-झार में बानना-भात्र हो तब तो एक-दूसरे के गान में गान मिटाकर खड़े हाना और एक-दूसरे की मां में सहता सम्भव हो सनता है। लेकिन यदि हम गम्भीर हाकर विचार-पूजन बाने करना चाहत हैं तो हम एक-दूसरे में इतनी दूर ता खड़ा हाना पड़ेगा ही कि गरीब का गरीब का और नमा को उठ जान का जवम मिल सके। यदि हम उनके निकटतम समय का नाम उठाना चाहत हैं जो हम सबमें ठिया है और जो गन्दा भिष्यक्ति में ऊपर या पर है तो हम चुप ही नही रहना हागा बल्कि गारीरिक रूप में इतना दूर-दूर भी बठना पड़ेगा कि किसी भी गाना में एक-दूसरे का बान सुनना हमारे लिए सम्भव न हो सके। यदि हम स्तर में सार्चे तो बाणी अग्रमन उहीकी सुविधा के लिए है जो उच्चा मुनन है। कितनी हा अच्छी बाने बिनाकर कभी ही नही जा सकती। जस हा हमारा बानचीत उच्च और उन्त स्तर तर पट्टचन गगनी हम अपना कर्मिया अमन पीछ की ओर मरवान गगन यन्त तक कि व पीछे की गवारा में गग जाना और तब वहा काफी स्थान न बच रहता।

मर घर के ठीक पाछ का चौड़ का जगन मग मगन बन्धिया हान था। अम्या गता के लिए फिर प्रस्तुत वह प्रभृति का खुला बटक्खाना था और उमक कातान पर मूय की किण्व बन्धा-बन्धी ने पड़ पानी थी। गरमिया के निना में जव बुद्ध प्रतिष्ठित अनियि जा जान तो मैं उठ बना में जाता और बाई जमूय सब उमन

मिलने गया तो वह बहुतायत का मौसम था और उतान किसी रात की कमा न रहने दी।

व्यक्ति वही भी क्या न रहता हो लाग उसे निराग नष्ट करेगा। अपन जीवन के किसी भी अर्थ अवसर की अपक्षा जगल म रहने व समय अधिक लाग मुभम मिलन जुनने आए। मतनव यही है कि कुछ लोग मर पाय जाते रत। किसी भी जय जगह की अपक्षा मिल बठने का बहा अधिक अनुकूल वातावरण था। लेकिन मासार्क काम-काज का नवर ता कम ही जाग मरे पास आने थ। मर नगर म वतनी दूर रहने के कारण मिलन आनेवाले छट जाया करत थ। म इतनी दूर हट कर गकासीपन के उस विगान समुद्र म रहने लगा था जिसम समाज की नान्या अपन का खाली करती है। फनत मरी जलरत वो भवते हुए सिफ बहुत बानिया मिट्टी ही मरे चारा आर जमा हाता थी। डमर अतिगिबत समुद्र की दूसरी आर स्थित अनजाजे-अनगाहे महादीपा के सक्त भी वहा बठ-बठे हो मुभ मिल जाया करत थे।

एक सच्चे हामर युगीन या पपलागोनिया^१ के निवासी जमे यमिन के सिवाम भला और कौन आज की भी मुह मर घर तक पहुच सक्ता है। जागन्तुर का नाम इतना बढिया और कायात्मक है कि मैं उसे यहा तक नही छाप सकगा। वह कनाग वासी एक लकटहारा है और दिन भर म पचाम डाक बाटन की भमता रपनवाना छाकिया भी है। उमन अपना पिठना भोजन अपने कुत्ते द्वारा मारे गए हिममूपक का पकावर किया था। हामर के बारे म इस जागन्तुर न भी सुन रखा ना। और हसका खयाल था कि पुस्तकें न हो तो भला बरमात के न्ति किसके महा काज जाए लेकिन बहुत मा बरमाने कीत जान पर भी एक पूरी पुस्तक भा वर गायन नष्ट पन सका था। किसी पानरी न जा ग्रीक भापा पढ सकता हाया याव के गिरजाघर म उम बाइबल पढना मिगाई हाणी। लेकिन अर एक किताब लिए बह मरे सामन बठा है और मुझे अनुगत कर-करके उम पुस्तक का उम मुनाना पढ रता है। विषय ह पटोवनम को उन्नाम लेखकर एकिरीज का उम फन्वारना पट्टावनम एक नन्ही

१ पशिया गाइनर का एक प्राचीन नगर

२ एक्लिप्टा खलिपड का एक बर वोडा था। वह पार्लियम का पुन एक माक्रम का पौन था। दिसला के धिया नामक रगन पर मिरगिन सामक एक नाति रत्ता थी। एक्लिप्टा इनका राजा था। यर पद खलिय मे लिया गया ह।

नङ्का का तरंग आया म आमु नर तुम क्या बठ हा भना

‘क्या अकेल तुम्हें थिया म का खबर मिता है
नाग वन्दन है एकर का पुत्र भिनागम अभा जीवन है
स्वयं का पुत्र पात्रियम भा भिगमिना क वाच रहता है
यदि नम म का मर जाए नभा ना नम भाग भाक मनाना चाहिए ।

वह कहता है बहुत बर्तिया । मफ वन्दन का छान का एक वं । गंगा
उमका वगन म है जिस पिछन नकार उदिन उमन एक वामार क लिए कट्टा
दिया था । वह कह उठता है नम काम क लिए आज हा नान म का ह नही
है । उसक लिए हमर एक महान नवक था पर उमन क्या निगा य वह नहा
जानता । उमम अत्रिक् माधा-भा व्यक्ति प्रकृति का पुत्र कज्जिाड म हा मिनगा ।
पाप-कम और गग जा नुनिया क उपर एक गभार ननिक छाया नान दन ॥ उमक
लिए कज्जिाड म हा अस्ति क रखन है । नगमग बागह वष पहन जब वह अट्टात्म
मान का था वह अपन पिता का घर टाडकर अमगका म वमन क लिए घना
जाया था । वह धन कमाकर एक फाम वह भा गाय जपना जमभूमि म ही खरा
ना चाहता था । उमका गगर व हा अनग टाच मत्ता था मड्डून पर गला
हाना न कि भा काफा गभनय धूप सुघरता पं । माग गन्न का न भा ननुमा
वान मुम्त निन्धिया नाली जाव जिनम समय-ममय पर एक भावामि-प्रति नौन
जाना थी । एन भू कप का चपन टापी एक गहर भू गग का का और गाय
क चमह क जून वह पहनता था । माग वह वन्दन अधिक खाता था । मर घर म
कुट्ट मोन पर हा वह काम करता था और जपना खाता एक तीन का शस्त्र म
जपन माव हा न नामा करता था । खान म टा माग जकमर ठ न्मिभूपर और
पना म लवता एक पत्र का खानन म काफा हाना था । कना-कना काफा व
मम भा थिया करता था । पूरी गर्मी व उकटा काटन का काम करता था । वन्दन
मुवह हा वह जा जाता और मर मम क मन का पार करक आय व जाता था
अमरीकिया को नर वह जल्मजिा या धवराह न का वान गन करना था ।
किमी भा कामन पर वह अपन का चान न गन नता था । नम बात का चिन्ता टा
नता थी ति वह मवान का विगशा न न निवान पा रता है । अम्मर जब उमका
कुत्ता रिमा हिममयक का माग नता नव पन्न तो जाव घण न वह माचना रि

रात तन व निए इम नालाव के पानी म छिपा द या नही । तब वह एक मील चल कर बापम घर जाता और उसे ठीक ठाक करके घर के तहखाने म सुरगित रखा जाता । जय वह सुबह ही सुबह जाता होता, तो कहता यकबूतर कितन मोटे-ताजे है । यदि मेरा बापा मुझे प्रतिदिन काम करने पर विवग न करे तो मैं यकबूतर हिममूपक खरगोश और तोतरा का निवार करके अपने लिए काफी मास इकट्ठा कर लिया करू । अर एक दिन मही मप्ताह भर की जरूरत पूरा कर लिया वह ।

वह एक कुशन नकडहारा था और अपना काम आडम्बरपूण बनामक न्य से करता था । वह पडोवा ऐमे कान्ता था नि ठठ जमीन के माथ ममतल हो जाते और एक स्लेजगाडी उनके ऊपर से भरक सकती । इम प्रकार बाद म जो अकुर फूटने के अधिक पुट्ट होते । इमके बाद पूरे पेड का जडकर मिर पर रखन क बदल वह उसके टुकडे करता और इतन पतल कि उह अन्त म हाथ से तोण जा सके ।

मुझ वह पसन्द आया था क्योंकि वह अकेला था खामोश प्रकृति का था और अपन हाल म भस्त था । वह सताप और पुनर्मिजाजी का खजाना था और यह मज उगकी जावा मे फूटा पडता था । उसकी प्रमन्नता अभिभूत थी । कभी कभी मैं जगन म जाकर उम पड गिराते हुए देखता । वह एक अवणनीय तत्ति स मुक्त हमी हुनकर मरा म्वागत करना और यद्यपि वह अप्रेमी भा अच्छी तरह जान लेता था पर कतान की प्रामीमी म मुझे प्रणाम करता । जब मैं उसके पास पहुंचता ता वह काम करना बन्द कर देता और अधस्तुट आनन्द के साथ अभी अभी गिराए गए चीड क तन की बराबर म लग जाता उमकी अदरबानी छान का छीलता उमका एक गोना बना लेता तथा हुमत और वाते करत हुए उमे चवाता जाता । उमम पनु प्रेरणात्रा का इतनी अधिक उपादती थी कि जब भी कोई बात उम छू दनी और मोचन पर विवश कर देती तो वह हुमने-हुमत धरती पर तुडक जाता और लोण-पाट होन लगता । जपन चारो ओर गडे पडा को देखकर वह कह उठता भगवान कसम महा लवडिया काटने रहकर मैं अपन को काफी मनोरञ्जित कर सकता हू । मुझे किसी ओग सेन की जरूरत नही है । कभी-कभी फुरमत्त होने पर वह जपन म ही घूमा और नियम मे कुछ-कुछ नेर बाद अपनी जेबवानी पिस्नौल दागता जमकि अपनी ही मनामी दे रहा हा । इम प्रकार जपना मनोरजन करता । जाडा म वह आग जनाए रखता और दापहर क समय उमीपर एक बेतनी म अपनी बाँकी गरम करना । जय व ए नटठे पर बठकर अपना खाना खाता तो कभी-कभी निवार्निया

आकर उमरी बाह पर बैठ जानी और उमरी उगनिया मथम आन पर अपनी चाच सलानीं जोर वह कहता, अपन चारा ओर टन नन्ह 'वहट्याग' का प्यना मुझे बड़ा अच्छा लगता है।'

उमम मानव का पशु विनाश रूप में विकसित हुआ था। गारीगिन मणिगुना और तपति में वह चीट और चट्टान का बचन भाट था। एक बार मैं उमम पूछा क्या कभी-कभी गत के समय तुम थकान महसूस नहीं करते? एक सचाट भरी गम्भीर नृष्टि मुझपर डालकर उमम उत्तर दिया था अपन जीवन में थकान का अनुभव मैंने कभी किया ही नहीं। लेकिन बौद्धिक और आध्यात्मिक मानव उमम वम ही माया पड़ा था जम बच्च में माया होता है। उम उभी मरन और अमफन पद्धति में गिया मिली था जिसमें वैज्ञानिक पान्ती आन्धिमिया था पनाया वरम है। उम पद्धति में गिप्य मचेतन स्तर तक नहीं वम दिव्याम और श्रद्धा के स्तर तक नी गमित हो पाता है। उममें बच्च का परिपक्व व्यक्ति नहीं बनाया जाता वम बच्चा ही रहन दिया जाता है। जब प्रकृति ने उम बनाया तो उमने उम एक बलिष्ठ रह और आत्मनप्ति दे दी और हर तरफ से उम श्रद्धा और विश्वास का मगारा न लिया जिसमें वह अपन जीवन के ससुर वप बच्चा बन रहकर ही गुज़ार न। वह इतना अकृत्रिम और अपरिपुत्र था कि किसी भी परिचय में उमका परिचय नहीं दिया जा सकता था। भना क्या एक हिममूपक का आप अपन पहाड़ी में परिचिन कर सकते हैं? जम आपन जम न निकाला था वम ही पटासी का भी उम न लना ही पड़ेगा। वह अपन-आपम को प्रयाम नहीं करेगा। लाग उम काम का पमा न हैं और नम प्रसार उम भोजन-वपडा दन हैं। उनके माथ विचार विनिमय वह कभी भी नग करता था। यदि उम कभी कांड आकाशा न करनवाना विनम्र व्यक्ति कहा जा मके तो वह इतना मरन और निमगत विनम्र था कि विनम्र उमका बार्ड अना गुण नहीं रह गया था, न तो वह उमकी धारणा-वन्पना कर सकन में ममथ था। पानी लाग उसने लिए उपलवता के ममान थे। अगर कभी उमम कहा जाए कि ऐसा हा कोई व्यक्ति आ रहा है तो उमका व्यवहार करने का तरीका ऐसा होना जमकि वह मोध रहा हा कि ऐसा महान व्यक्तित्व भना मुझमें क्या चाह सकता है। वह तो पूरी जिम्मेदारी स्वय ही उठा लगा और मुझे झुन जाणगा। प्रगमा वह कभी नहीं मुनता था। लयक और उपलवक का वह विनोप सम्मान नता था। उनसे कारनाम उसक लिए आचयजनक थे। जब मैंने उम बताया कि मैं भा काफी

लिखना हू तो बहुत दर तर तो यह यही माचना रहा कि मेरा मतपर मान लिपि लेखन में है क्योंकि वह स्वयं भी बहुत ही सुन्दर लख लिख लेता था। कभी-कभी गमन की वफा पर उसके गात्र का नाम बड़े ही सुन्दर दृग से ठीक फासीसी प्रान्तों में गिरा मुझे दाम्य पड़ता और मैं समझ जाता कि वह वहां से गुजरा है। मैं उससे पूछा क्या अपने विचारों को लिपिवद्ध करने का विचार भी कभी तुम्हारे मन में आया है? उसने उत्तर दिया था, मेरा जखर जान तो उनके लिए है जो पढ़ा या लिख नहीं सकते। अपने विचारों को लिखन की मैंने कभी कोशिश नहीं की है। नहीं मैं ऐसा कभी नहीं कर सका हू। मैं नहीं जानता कि पढ़न क्या लिए। यह सब तो मुझे मार ही डाल। और फिर साथ ही साथ दिखने करने की भी समस्या रहती है।

मैंने गुना है एक प्रतिष्ठित विद्वान और गुपारक ने एक बार उससे पूछा था 'तुम मसार को क्या डानना चाहोगे या नहीं?' मुझे एक आश्चर्यमयित आनन्द घनि निकालन हुए और यह परवाह न करने हुए कि इस प्रश्न का उत्तर तो पहले भी दिया गया होगा उसने कहा था नहीं मुझे तो यही काफी पसन्द है। यदि कोई दाननिक उससे सम्बन्ध रखे तो उसे निरय कितनी ही बातें सूझा करें। एक अजनबी को तो यही लगता था कि आम बाना के बारे में उस जरा भी जानकारी नहीं है। पर कभी-कभी मुझे उसमें यह मानव दाय पड़ता जो पढ़न कभी नहीं होता था। तब मैं समझ ही न पाता था कि उस गकमपियर जितना जानी मान या एक बानक जितना सरल और अजान उसमें एक उत्तम काव्य चेतना पैक या घोर जड़ता। बस्व के एक आदमी ने एक बार मुझमें कहा था तब मैं छापी भी कालों टापी पन्न इसे सीटी बजाने हुए गात्र में बकार धमके देगता हू तो मुझे लगता है कि यह वग चलते बाने राजकुमार है।

किताबों के नाम पर उनके पास एक जत्रा थी और एक गणित की पुस्तक। गणित में वह बाकी कुत्ता रहा था। जत्रा उसमें लिए एक प्रकार का बिन्दुसोप थी। "महा अनुमान था कि उसमें मानव ज्ञान का सार निहित है। और असल में कुछ दूर तब ऐसा है भी। अकसर विभिन्न सामयिक मुद्दों के बारे में मैं उस चताता रहता और उनपर अपना ज्ञान सरल और व्यावहारिक दृष्टिकोण रखने में वह भी कभी चक न करता। ऐसे रिषया के बारे में उसने पढ़न कभी कुछ नग

— 'मैं उससे पूछा क्या तुम काग्याना के जिन काय चता करने हो?

उमन कहा मैंने तो घर का बुना यह बगमाट कपड़ा पहन रखा है और मेरे लिए यह बहुत बढ़िया है । क्या तुम चाय और काफी को छाड़ सकते हो ? क्या इस प्रदेश में पानी को छाड़कर कोई अन्य पय पिया जाना उचित है ? उसने पानी में विषमज्वर (हमलाक) के पत्ते मिलाकर उम पानी को पिया था और उसके विचारा नुसार गर्मिया में यह पय पानी से तो बहतर हो रहता है । जब मैंने पूछा कि क्या तुम सिक्क के बिना काम चला सकते हो, तो उमने सिक्क के लाभों का एमे बणन करना आरम्भ कर दिया जमेकि वह सिक्क की मस्या के उद्भव और विकास का निश्चित दार्शनिक शाली में परिपाक कर रहा हो और पण (Pecunia) शब्द के मूल पर प्रकाश डाल रहा हो । उसने बताया सोचिए तो यदि मेरे पास एक बैल हो और मैं ज़िमा दुकान में मुई धामा खरीदना चाहूँ तो पक्ष के किसी न किसी अंग का हर धार गिरवी रखने फिरना कितना असुविधाजनक और असम्भव होगा । कितनी ही सस्याओं में पक्ष में वह किसी भी दार्शनिक से बढ़िया तक दे सकता था क्योंकि वह उनका उतना ही बणन करता था जितनी कि वे मस्याएँ उसमें सम्बन्धित थीं और उनको चालू रखने में ठोस वास्तविक कारण ही वह प्रस्तुत करता था क्योंकि कल्पना कोई अन्य कारण उसे नहीं सुभाषानी थी । एक अवसर पर उस बताया गया कि अफगान ने भानव की परिभाषा बिना पश्चाशाना दा परो का पशु बटुकर की है । उसे बताया गया कि एक जादमी ने मुर्गों के पंख नोचे और बोन छठा यह है अफगान द्वारा प्रतिपादित आत्मी । यह सुनकर एक नहत्त्वपूर्ण अन्तर की ओर उमन संकेत किया कि इस उपमा में घुटने गलत तरफ मुड़े हैं । कभी-कभी भावावेग में वह कह उठता, अहा बातें करना मुझ कितना अच्छा लगता है । मैं, भगवान का बसम, पूरे जिन बातें करता रह सकता हूँ । एक बार कई महीना तक मैं उससे न मिल सका, मिला तो मैंने उससे पूछा इन गर्मियों के लिए क्या कोई नया विचार तुम्हारे ज़िमाग में आया है ? उमने उत्तर दिया 'वह जादमी जिस मेरी तरफ धम करना है जो विचार उसके ज़िमाग में आ चुके हैं उसे यदि न ही भूल तो अच्छा है । मैंने वह नाम नहीं रखा । गायद तुम्हारा आत्मी ज़िमागो लेकर तुम यहाँ गोदते रह जायेंगे बौ साच रहा है । तब तुम्हारा ज़िमाग बनी लगा रहेगा और तुम अपने पास माथे के वारे में ही सोचने रहोगे ।' एमे जवनग पर कभी-कभी आरम्भ में ही वह मुझमें कुछ बैठा था क्या कोई नया सुचार तुम कर सकते हो ? जाइँगे कि एक जिन मैंने उमने पूछा क्या तुम अपने में मनुष्य हो ? मैं उस बताया चाहता

था कि उसने अन्तरंग में बाहर की पादरी का सूक्ष्म प्रतिरूप बतमान है और इस जीवन का एक उच्चतर तत्त्व भी है। मनुष्य ! उसने उत्तर दिया, 'कुछ लोग एक चीज पाकर मनुष्य हैं कुछ दूसरी। और एक व्यक्ति जिसके पास काफी पुष्ट है इसी बात से मनुष्य हो सकता है कि वह जाग का तरफ पीठ और मजबूती तरफ पल करके बैठ जाए। किसी भी तरह उसे समार के प्रति एक आध्यात्मिक दृष्टि कोण अपनाए के लिए मैं तयार न कर सका। जो भी ऊँची से ऊँची बात वह समझ सका वह सीधी सीधी उपयोगिता की बात ही थी। पशु ने उतनी ही बात समझ पाने की आशा की जा सकती है। और व्यवहारतः यह बात अधिकांश लोगों के विषय में सच है। यदि किसी में उसका सामन प्रस्ताव रखा कि तुम अपनी जीवन प्रकृति में सुधार क्या नहीं कर रहे तो वह बिना कोई दुःख प्रकट किए सिर्फ इतना कह देता कि अब इसके लिए बहुत देर हो चुकी है। फिर भी यह ईमानदारी और एमे है, अथ गुणा में पूरी आस्था रखता था।

उस व्यक्ति में कितनी भी कम क्या। तब एक निश्चित गम प्राप्त करता मुझ दीख पड़ी थी। अकस्मर में देवता कि वह मन ही मन चिन्तन कर रहा है और अपने निजी विचार रख रहा है। यह बात इतनी दुःख है कि इसने लिए मैं हम मील चलकर जा सकता हूँ यह बात मानव समाज का कितनी ही समस्याओं के उद्गमजन की क्षमता रखती है। यद्यपि वह हिचकिचाता रहता था और गायन अपने को स्पष्टन व्यक्त करने में असमर्थ भी रहता था पर उसका प्रयास व पीछे एक व्यक्त करने योग्य विचार हमारा कमममाया करना था। पर उसकी विचारणा इतनी आदिम थी और पण-वस्तुओं में इतनी दबी थी—यद्यपि किसी भी मान पने लिखे आत्मी से उसकी सभावनाएँ अधिक थी—कि वहाँ भी उत्तेजनीय बात उसमें तो बँटिआई से ही उभरकर ऊपर आनी थी। उसका अस्तित्व यह बतलाता था कि जीवन के निम्नतम स्तरों में भी स्थायी रूप में दान और अतिमिष्ट लाभा के मध्य भी प्रतिभा सम्पन्न मानव मिल सकते हैं। ऐसे व्यक्ति या तो अपने निजी विचार ही लेकर चलते हैं या देखने का नाटक एकदम शुरू करते। वे उतने ही जवाह होते हैं जितना कि यह वाक्य उन मगोर माना जाता है फिर मन्मथ और कीचड़-सो वे कितने ही क्या न हों।

जितने ही यात्रा चलन चलन मुझमें भिन्न और भरे घर की अन्तर में दस्तन आने और बहाने के रूप में आकर मुझमें पानी मागने। मैं उन्हें बता देता कि

मैं पानी तालाब में नक्कर पीता हूँ। मैं उस तरफ़ मक़त कर दता और वं चाहत ता
 एक बुनिया भी उन्हें दं दना। पहली अग्रन वं जामपाम प्रतिवष काफी हनचन
 हुआ करती है और मभी नाग यहा म बहा सफ़र किया करत हैं। उहुत दूर रहन
 पर भी प्रतिवष वं इन आन-जानवाना में मैं वचिन न रह पाता और मेर भाग्य का
 अनिधिया का मरा हिम्मा मुझे मिताता। इनम बिनन ही बड अजीब-म नाग भी
 होत। घमगाताआ म और यहा-बहा रहनवान कितन हा अधनचरा बुद्धि वं लोग
 भी मुझसे भिनन आन। मैं कागिग बगना कि जितनी भी वुडि उनके पाम है व
 उमका उपयोग करें और मरे मामन जाम-बीकार कर न। तम अवमग पर मैं प्रना
 सो ही अपनी बातचीत का विषय बना बना और इस प्रसार मग मनचाहा पूरा
 हो जाता। सच यह है कि उनम म बहुत-म नागा का मैंने नगर वं प्रतिष्ठित लोग
 म और निपना के तयावदिन मगनका म अधिक बुद्धिमान पाया है। मैं साचन
 मगता कि यहा न उनम परस्पर जगना-बगना कर दी जाग। बुद्धि वं वार म मैं
 यह सीखा कि अकचरी और पगियन बुद्धि म बो-विगप अलग नहा है। एक
 तिन धर ही मरन स्वभाव का सीरा साधा एक भिन्नार मर पाम जाता। इस और
 बहुत-से लोग के साथ एक मर वं रूप म इन्मगान किए ज्ञान में रखा था। अर्थात्
 त्त नेत म एक डाँच पर लडा कर दिया या बिज निया जाना जिसम यह पगुजा का
 और अपने को नी इतर-उपर भागन विगन म राकता रह। इस क्विन न मरी
 तरह ही रहन का च्छा व्यक्त का। उमन जल्पन्त माग्गी और मचाड वं साथ जा
 तयावयित बिनमना म या ता ऊची चीज है या फिर बहुत नाची है मुझ बनाया
 कि मैं बुद्धि की दष्टि म बहुत हीन हूँ। यही उमर गद थ। खान न एमा ही मुक्त
 बनाया है। फिर भी उमका अनुमान था कि भगवान उमकी भी उतनी ही रूप रख
 करते हैं जितनी कि औरा की। वं कहता गया मैं मग म ठीक बचपन म एसा
 ही रहा हूँ। मुझम जविक बुद्धि नहा रहा है। मैं और बच्चा का तरह नही था।
 मरा त्तिमाग वनडाग है। मैं मममना हूँ भगवान को यहा मर्जी थी। और अपन
 राग की सचाद वं प्रमाणरूप वह मरे मामन लडा था। मर लिए वह एक आध्या
 त्मिक गुपी थी। मुझ बठिनाइ म ही का एमा आदमा मिता था जिसकी सम्भा
 बनाए उमसे जमी थी। जा बुद्ध उमन वग वह अयन्त मरन मच्चा और ईमान
 दारी से भरा था। और यं भी सच है कि जिस अनुमान म वह अपन का नीच
 गिराता हुआ दीम पगता था उनना हा वह उचा था। पन्त १५७ में

ग, पर यह नोति था बड़ी ही उत्तम और बुद्धिमत्तापूर्ण। मुझे लगा कि इस ठोस और हीनबुद्धि भ्रमारी न सचार्ड और स्पष्टवान्तिता का जो आधार मेरे मन पर था वह यहाँ से बातचीत को आरम्भ करके उस सन्ता के सत्ताप से भी ऊँचे स्तर तक ले जाया जा सकता था।

कुछ अतिथि भर पास उस वग के भी आए जिन्हें बस्व व गरीबों में साधारण या नहीं गिना जाता लेकिन जिन्हें गिना जाना चाहिए। क्योंकि कुछ भी हाथार के निधन समाज में तो बहने ही। अतिथि आपने जानिये की नहीं आपकी शायदा आपकी चिकित्सा की वाचना धन आन है। वे बड़ा ही व्यग्रता से आपसे मदद माँगते हैं और अपनी प्राधना से पढ़ने की भूमिका में आपको महजता देते हैं कि एक बात के लिए वे वृत्तसंस्करण हैं जो यह है कि वे अपनी महापता अपने-आपे कभी नहीं करण। मैं चाहता करता हूँ कि मेरा अतिथि वास्तविक भुवनमरा न हो जाहे किमी भी कारणवश दुनिया भर में अधिक भुवन उसे भवने ही नहीं हो। जो ज्ञान के पात्र होने हैं वे अतिथि नहीं होत। कुछ लोग भरे पास एम भी जात थे, जिन्हें इस बात का अहसास कभी नहीं होता था कि वस अब उन्हें चले जाना चाहिए। मैं उन्हें छाड़कर अपने काम पर चल देता और निरन्तर बढ़ती दूरी से उनकी धाना के उत्तर देता जाता। इस स्थान परिवर्तन की क्रतु में हर स्तर की बुद्धि के लोग मुझे मिलते। उनमें से कुछ तो इतने अधिक बुद्धिमान होत थे कि अपनी बुद्धि का उपयोग करना भी वे न जानते थे। भाग हुए गुलाम आत जिनके आचरण वैशिष्ट्य गजबूरा जस होत। वे रह रहकर कुछ भुवन का उपक्रम करत उसी तरह जैसे कि एक दस्तकचा में सोमनी पीछा करनेवाले गिहारी कुत्ता का भौंकना सुन करनी थी। वे मरी और बड़ी दयनीय दृष्टि से दस्तते। जसकि वह रह हा

आ र्माई क्या तुम मुझे वापिस भेज दोगे ? ।

उनमें से एक दरअसल भागे हुए गुलाम को मैंने उत्तर की ओर चल जाने में सहायता दी थी। ऐसे लोग आते थे जिनके निमाग में वस अरुना एक विचार होता था जस मुर्गों के पास वग एव वच्चा हो और वग भी वस्तुवश वच्चा निकल जाए। ऐसे लोग भी आते थे जिनसे मन में द्वारा विचार होने थे परन्तु मुझे नहीं। वे उन मुगिया की तरह होत थे जिन्हें एने गा वच्चे इधर उधर गौप लिए जाए जो सबसे-मजदूर हा गटमन के पीछे भाग रह हा और हर सुनह उनमें से बीसिया विचार सा जाए और उनका मस्तिष्क सदबन उठे और बोधता जाए। कुछ लोगों

वे पास टागा व बदले बस विचार होते थे। उनकी उपमा एक प्रकार व बौद्धिक वनखजूरा से दी जा सकती है जो आपको भी यहा सबहा सब बार रेंगन पर विवश कर दें। एक आत्मी ने प्रस्ताव रखा कि व्हाइट माउण्टेन्स को तब यहा भी एक रजिस्टर रख लिया जाए जिसमें जानेवाल अपन हस्ताक्षर कर दें। लखित दु ख है कि मेरी स्मरण-शक्ति इतनी तब है कि मैंने ऐसा करना आवश्यक नहा समझा।

अपन पाम जानेवाना की कुछ बिज्ञपताओं को परखे गिना मैं न रन सबा। नडक-नडकिया और जवान स्त्रिया मायारणतया जगल में पट्टचरर वनून प्रसन्न दीख पडत। वे सब तालाब में भाकते फूलों का दखते और इस प्रकार अपन समय का मनुष्ययोग करते। व्यापारी लोग यहा तक कि किसान भी सिर्फ मने अकेलेपन और अपने काम धंधे व घारे में ही बाने करने और किसानों किमा चीज का जिन करक कहते कि तुम हमसे बहुत अधिक दूरी पर रहते हा। वे कहते खबर थ कि कभी-कभी जगन में घूमना हम बहुत अच्छा लगता है पर स्पष्ट दाख पडता था कि वह ठह अन्धा नहीं लगता। 'यस्त आतुर लाग जिनका समय कोई जीविका अथवा उस बनाए रखने में बीत जाता है पादराजो ईश्वर के विषय में ऐसे बात करत है जैसेकि उनके पास इस विषय का एकाधिकार हो और जो विचारों की विभिन्न धाराओं को गहन नहीं करने। डाक्टर और वकील आते और अस्थिरचित्त गहम्बामिनिया जाती तो मेरी अनुपस्थिति में मेरी अनमारी में भाकती और विस्तर को उलट-पलट कर प्यती और यह जानने का यत्न करती कि मेरी चादर अधिक माफ है या उनकी। ऐसे युवक जो युक्त नहीं रह थे और जो इस निष्कप पर पट्ट चूके थे कि काम धंधा की दृष्टि से पिये पिटाए मागों पर चलने में ही मरस अधिक सुरक्षा है—ऐसे मय व्यक्ति आम तौर पर घोषणा करने कि मेरी जसी स्थिति में रहकर बाइ भी बगिया काम करना सम्भव नहीं है और यह वान वे श्वे की चोट पर कहते। हर आयु के स्त्री-पुरुष बूढ़े टगपोक और दुबलमन लाग जिनक चिन्तन का विषय अधिकतर राग और आकस्मिक दुघटना और मृत्यु जैसे विषय हा रहा करत जिनक लिए जीवन खतरा में भरा दूरा है जो नहा साच गरत कि सबट है ही नहीं यदि उमर वार में मोचा न जाए। ऐम नागा का विचार रहता कि समझदार जादमी रहन व लिए सबसे अधिक सुरक्षित स्थान ही ध्यानपूर्वक चुनता है जहा एक पल की चेतावनी पर भी अमुक डाक्टर का बुलाया जा सके। उनके लिए ग्राम गान्गान्द एक एम नमून का नाम है जो पारम्परिक मुग्धा के लिए वचनबद्ध है। आप

मानिए कि एम रोग दवाओं का पेटो साथ लिए बिना घर चुनने भी जाने को तयार नहीं होंगे। तत्त्व की बात यह है कि जो जीवित है उसके लिए मरने का सतरा हमंगा बना रहता है। और जिस अनुपात में वह अपने को जीत हुए भी मर के समान बना लेता है उतने ही अनुपात में वह सतरा कम किया जा सकता है। बड़े-बड़े भी उनका ही सतरा है जितना कि दोड़ते हुए समझा जाता है। जन्म में स्वतः ही बन बठ सुरा रब महाराज भी मरे, पाय आते और ऐम लोगों का आचरण सबसे अधिक उक्तान बनाना जाता। ये सांचा करते कि मैं निम्न पकिया ही हमेगा गाता रहता हूँ

यह है वह घर जिस मैं बनाया है

यह है वह व्यक्ति जो घर बनाए घर में रहता हूँ।

लकिन गायन उह गया नहीं था कि तीसरी पक्ति इस प्रकार है

ये है व लाग जो उस व्यक्ति का परगान करत हैं

जो मेरे बनाए घर में रहता है।

मुझे मुर्गिया मार टालनवान बुत्ता का डर नहीं था क्योंकि मैं मुर्गिया नहीं पानता था। लेकिन मुझे आदमिया का गिकार करनेवालों का डर शुरू था।

इन अंतिम निम्न के आगन्तुका की अपेक्षा कहीं अधिक ध्यानदायक लोग भी मर पास जान थे। घर चुनने के लिए आप बच्चें रत्न-श्रमिक जो इतवार के दिन माफ कपड़े पहनकर निरसत हैं मछिदार और शिमारी कवि और दानिक। गंधेप में वे सब बच्चें और ईमानदार यात्रा वहाँ आते थे जो ग्रामा का दरअमल छोड़कर स्वच्छता के उपभोग के लिए जगती में आया करते हैं। मैं ऐसे लोगों का स्वागत इन गंगों में करने के लिए भयार रहता था अंग्रेजों तुम्हारा स्वागत है अंग्रेजों तुम्हारा स्वागत है। क्योंकि मैं हम जाति का समग प्राप्त कर चुका था।

सेम का खेल

मरे श्वेत म सम की कतार का नम्रार्द्र का यदि जोना जाता तो भगभग मान मील जाती। इस बीच हम घाटे हुईं सम का निराया जाना अनिवाद्य हो गया था। मैं बुझाट करता चला गया था और अंतिम कतार की पुर्जा के समय पहना काफी उग आया था। जब उनकी निराड का टाता नहीं जा सकता था। हृन्गुलीज^१ की तरह का यह जा छाटा-मा आरममम्मानपूण श्रम स्थिरभाव से मुझ करना पड़ा था। इसका क्या अर्थ था मैं समझ नहीं पाता था। यद्यपि सम मरी अल्लरत से कहा जाता था पर मैं अपनी इन कतारों में प्रेम करने लगा था। यह सम मुझ परती में बिपट रहन का बिबा कर रही थी और इसमें आश्रित्यम^२ की तरह मुझे गति ही मिलती थी। पर मैंने इन्हें उगाया क्या? यह सिर्फ भगवान ही जानता है। मारी गर्मी में हम अजीब-स श्रम में लगा रहा। धगतन के इन हिम्म पर जहा पन्न सिर्फ पजपनी कृष्णप्रदरी जानना और इसा तरन के पौष माटे जगली फन और मुत्तन फल उगा करत थे कहा अब उनक बदल यह सम उगान की कागिनी में करता रहा। इन समा में मर बार में और मैंने सम्रा के बार में क्या जाना? मैं उनकी पानता-धामिता हूँ और निगना हूँ। मुत्त मुत्त में बहुत रात तक उनकी लव रख करता हूँ और निम भर मग यही काम रगता है। श्वेत में इनक पत्ते चौड़े और बन्धिया लगत हैं। आम का बर जोर बरा मरी मन्थागिनी हैं जो मूली मिट्टा का भीचना हैं। नहीं इन मिट्टा में अपनी उदगता है जो कितना। यह तो एकदम असमय जो अयाग्य है। कीड मकाड़े ठंडे निम और गवम बन्धन से हिममूपक में गन्तु हैं। हिममूपका जाता एक चौचाई एवढ भन कुतर्-कुतर्कर साफ कर डाला

१ एक पुराणी का भाग जिसे अन्न राख को अन्न पर बारह कम्भव काय करने पड़े थे।

२ ल विद्या का एक तैल्य जो बनव था, यशक धरला क राख में उनमें बदरुत शक्ति मच रत होता रहती था। इसे हरक्यूताट ने मारा था।

है। जानसट और जय पौधा को उखाड़ फेंकना था और उनका सारा प्राचीन जगती बगीचे को उजाड़ देना था मुझे क्या अधिकार है। खर जल्दी ही बची-खुची सेमें बहुत सख्त होकर उनके काम की न रह जाएगी और अपने नये शत्रुओं का सामना करने के लिए जाय बढेगी।

मुझे अच्छी तरह याद है जब मैं बाग बंधन का था तब बोस्टन में था। मेरे कपड़े में मुझे लाया गया था और मैं इन्हीं जगती और पत्तों के मेरे गुजरकर तनाव तक पहुँचा था। यहाँ का दृश्य मेरी स्मृति पर घड़ित प्राचीनतम दृश्यो में से एक है और आज इस रान मेरी बासुरी की स्वर-तहरी उमा तालाब के पानी के ऊपर गज रही है। आयु में मुझमें बड़े चीड़ के बस अभी तक गढ़े हैं। जो कुछ गिरा दिए गए हैं उनके ठोठों में मैंने अपना शाना पकाया है। तबिन चारों ओर नये पौधे उग रहे हैं और किसी वृक्ष की जाया के लिए एक नया वृक्ष तयार हो रहा है। इस घरागाह में जानमन की सजावट उन्हीं जडा से नय जकुर फिर पूरा उठते हैं। अपने धन्य के अपने इस गानगार दृश्य को एक नया स्पाकार टेन का स्वयं मैंने भी प्रयत्न किया है। मेरी उपस्थिति और मेरे धर्म के प्रभाव और परिणाम को सेम के पत्तों गहू की बाला और आलू की वेला के रूप में देखा जा सकता है।

इस पहाड़ी भूमि के लगभग डार्ड एक्ड के टुकड़े का मैंने बोया था। लगभग पंद्रह वर्ष पहले ही यह भूमि साफ की गई थी। जडा की दो या तीन बतारें तो स्वयं मैंने उखाड़कर फेंकी हैं। इसीलिए कोई छात्र मैं इसमें नहीं डालेगा। लेकिन गर्मियों में जब मैं खड़ाई कर रहा था तब तीरा की नोकें मिट्टी में मिली मुझे मिली। इससे पता चला कि कोई अत्यंत प्राचीन जाति यहाँ रहा करती थी। वह अब लुप्त हो गई है और उसने स्वेता के जान से बहुत पहले इस धरती को साफ किया था और इतना जाना-बोया था कि मिट्टी में आज यही फसल दल रहने की शक्ति नहीं रही थी।

किसी हिमयुग या ग्लेशियर के सटक पर उतरने से जववा मूल के बहुत ही भाडिया से ऊपर उठने से बहुत पहले ही जबकि ओम चोगा और बिसरी मिलती है अथ बिगागा। चतावनी के बावजूद मैं अपने सेम के सेत में से हरीने घास मोथ ना उगाउन के काम में लग जाता था। मैं तो जाना भी परामर्श दूंगा कि आम के रहने रहने ही सम्भव है तो अपना सब काम आप समाप्त कर डाल। इतना मुख मैं नये पत्र ही काम करना था और एनास्टिस का काम करनेवाले एक

कनाकार की तरह आम में भीगी पानी में तो हम हलके-हलके घूमता था। तब दिन चर आन पर पर घप में जनन जगन थे। मूष ममा का निगन के लिए आव-अक प्रकाश मुझे द देता था। उस ककरो-रो पीली पहानी घर्नों पर जाग-बोद्धे हाता हुआ ८२ गज सम्बी हरी कनारा के बीच में जीम धीम आम बज्जा था। इस पनारा का एक मिग बजन की भाडिया के एक बुज म समान्य हाता था जिमकी छाया में मैं विश्राम न सकता था ता दूसरा मिग कृष्णवदरी की भाडिया में एक मलान में समाप्त हाता था। जिनकी दर में मैं एक कनार का मम कर दूनी तक पहुँचता रेगियों का हराग्य जीम भी गहरा हा न्यता था। मैं घा-भाये का टाकाहता मम क अकुरा का ताजी मिटटी देता और अपन बाए म मेम-पी घाम-भाये को बजावा देता था। मैं पी-पी मिटटी का प्रेरणा देता था रि वह घीष्म अन्तु के अपन उच्छवामों का चिगायता मिच जीम बाज्जर के रूप में व्यक्त न कर मम के पता और पनिया के रूप में व्यक्त कर। घरती में मैं कहता कि वह घाम क बजन मम का नाम उच्चाग्निक कर। यही धरा प्रतिदिन का काम था। क्योंकि मुझे घोडा या पगुजा का मजदूरी पर मम जानमिया या नहका का कृपि क उल्लन मानता का कार सहारा प्राप्त नता था इसलिए मरा काम बहुत धीम प्राम बनता था। पत्रत मामाय की अपना अपनी मेमा में मैं कही अकि धन-मिन गया था। तैकिन पारोगिक थम मन्-यमीता एक करन की सीमा तक भी क्या न किया जाए निम्नतम काटि का दीधमूत्रता नहीं कहा जा सकता। उसमें एक स्थायी और अस्थ ननिबना निम्न गृही है और एमा थम एक विद्वान को ता बने ही ठोम परिणाम प्रदान करता है। निक्कन जीम बलद म मे हाकर पश्चिम का बार पता नहीं रिमर जानवान यात्रिया की दष्टि म ता मैं एक बटा नीपरिधमी किसान था। व ता अपनी घाण्णानिया में घुटना पर ठन्डिहा रमे और जगाम का छत में नक्काण आराम में बैठे जान ये जबकि मैं उल्ल घर म रक्कर घर्नी पर कठार परिधम करता हुआ दाख पन्ता था। तैकिन मरा घर जल्दी ही उनकी दष्टि और विचारा में अलग हट जाता था। मरक क गाना जीम बहुत नम्बी दूरी तक यही एक मात्र नेत्र जाता-जाया उन्हें मिनता था। यात्री उसका अकिन्तम आनन्द लेने हुए जाग दू जात थे। कभी-कभी मर मे काम करन रिमान क जानों में मन यात्रिया का गणा और आवाचनावा का अन् अग भी पत्र जाता जा उन गुनान क लिए नहा बना जाता था। मम इतना मर म बोई मर। मर इतनी मर म। कनाकि अब

दूसर बिमान निराना गुरु कर दते थे, तब भी मैं बोला ही रहता था । रुढ़ि पर चढ़नेवाला किसान इस बात का पन्ड नहीं पाता था । चारे के लिए मक्का ? क्या भई चार के लिए मक्का ? भूरा कोट और काली टोपी पहन एक भला आदमी पूछ उठता है । ज र कठार आकृतिवाला वह किसान अपने घारे को हावता हुआ यह पूछन के लिए भर पाम जा खड़ा होता है कि जब खेत में खाद तुमने नहीं डाली है तो तुम कर क्या रहे हो ? वह बताता है थोड़ी बची-बूची गदगी डालना थोड़ा कूना-कण्ट धानी राख या गारा ही । तकिन मेरे पाम ढाई एक्ड का खेत था । गर गाडा के बदले सिर्फ एक निराना थी जिने में दोना हाया में लीचता था । खाद बहुत दूर मिनता थी और घाडा गाडिया के प्रति मुग्ध एक बिरबित थी । यात्री लाग खज्जडान हुए गुजरते तो भर खेत का मुकाबला माग के पीछे छुटे अय नेता में जार जार में करत । इसमें मैं जान जाता कि कृषि-समार में मरा क्या स्थान है । श्री कालमन^१ ने अपनी रिपोर्ट में भर खेत का उल्लेख नहीं किया था । बात यह है कि जिह मानव ने अभी सवारा नहीं है एम जगली खेतों में प्रकृति जो कुछ पग कर ली है कौन उमका हिमाय किताब रखन जाता है । जगली घाम की फसल का बड़े ध्यान में तोना जाता है । आद्रता को जाचा जाता है । नेजाव के धार और मज्जी का प्रयोग किया जाता है । लेकिन जगला भगदना सालाब के छिद्रा चरागाहों में जा बगिया किम्म की तरह तरह की फसले उगता है उह जादमी कभी काग्न नहीं जाता । यह कहिए कि मेरा खेत उन जगली और इन ग्रामीण खेतों का सम्बन्ध मूख था । कुछ राज्य मग्य हान हैं और कुछ असम्य अथवा जगली । इसी प्रकार मरा खेत किमी धुरे जय में नहीं एक अधकपित खेत था । मेरी बोई में सहप अपनी आदिम जगली स्थिति की आर लौट गयी थी । मेरी निराना उनके मनोरजन के लिए कामांभी कृषि-भगीत (राज न वाग) प्रस्तुत किया करती थी । पास हा भोज वन की सबम ऊचा टहनी पर बठी भगग की शरार बिडिया जिम कुछ नोग जान भविस कहना पग करत हैं आपक सगम से प्रफुलित हाग मारी सुग गाती रहती है । उम तो साथ चाहिए । आपका खेत यहा नहीं हागा ना किमी और किसान के खेत पर जा बढेगी । जय आप बाज बोने हाते हैं तो बह बिल्लानी है य बिसर ना बिसर ना हक दो हक दा खीच ला खीच ला । लेकिन मक्का मैंने नहीं बाई था । और य सम घ गर जैम गजुम मुरतिन थीं । घ गर के असगन

^१ १८७७ ई १८८१ ईक जा वर एक अधमन निजने एक बकि-बिडिया लिखला थी ।

मगीत और एक या बीस गाथाओं पर किए गए मौने नय का बुझा म क्या कुछ सम्भव है ? फिर भी मैं गीतों रात्र या गान म उनीला अधिक पसन्द करता हूँ। यह एक सस्ती किम्ब की सर्वोत्तम खाद थी किम्ब मरी पूरी जाम्बा थी।

जस-जस मैं अपना निगली म सम की कनाग का ताड़ी मिट्टी दता जाता था मैं इतिहास म अनुस्मिन्विन उा जातिया व जवगपा का जन्म-व्यम्ल करना जाता था उा जातिम युगा म टम आकाग व नीचे रही थी। युद्ध प्राग गिकाग के उनक छात्र-छात्र नयियार आज व तिन भी भू-गम म निक्क जान थ। व प्राहतिर पयग म मित-जुन पते थे। इनम म कुउ पर जातिगमिया द्वारा जग म जनाए जान व चिह्न थे और कउ पर धन म भुनम जान व। तिन नागा नजभी कुछ समय पहन ही म भूमि का जाना हांगा उनक बनना और गीगा व टकट भी यथा मित जात थे। जब मरी निगली पयग म टकरा जानी ना एव सगीन पदा गता ना जगता म और आकाग म गज उलता। यह मर उम थम का अनुचर हाता जा तत्काल हा गक जवाह फमत मुने जाता। अब य मम जिम मैं निगता था सम म रानी आर न ही मैं वह रहता जा मम निरा गता था। एम समय यदि मैं याग करता ही ना एक दयनीय भाव और माय ही गव के भाव म भगवत जान-गृहचानवान उन मभी भागा का याद करता जा बाइवन का क्याआ व मगीत-रूपक त्वन व दिए नाग चन गए थे। नाइटहाव नामक बाउ तीमर पहर का धून म मिर क ऊपर मन्गता। कभी-कभी मैं तिन मर काम म गगा रहता और तब यह पत्नी आत्व म अथवा आममान की जात्व म पते एक वक्ता की तरह मुझे प्रतात हाता। वह गृहक गक मपाट व माय वह नीच आता। मम गली जावाउ हाती रमकि जाकाग फर कर बिपडे बिपडे ग गया हा। पर वह बीगा तत्काल गी भावना म रहित जग का त्या दीम पन्ता। नन्ही पिहिया हवा म भर उलती हैं। व अपन अहे घन्ती पर मगी रन पर या पहाटिया की चाटिया पर चटाना पर गती हैं। वहा काई उा मर ताता मे टम नग मवता। व तानाव की नन्ही सग्रा व ममान ननु और गानीय गपता है जमकि त्वा न पत्ता का आकाग म उता गिया हो। प्रकृति की विभिन्न चीजा म गमी ही मजानीयता है। बाउ नहर का ग्या म उटनवाना भाग है। वह उनता निरीक्षण करता है और उमपर तन्ता है। ह्मा म फर एण उमक वनिया पर ममुद्र व जगती बन परा व जवाव है। कभी-कभी मैं हनगक व जाने का ऊंच आकाग म चमरक काटन दमता। एक बाउ व ऊंच जान कि नावे आन। गक

दूसरें स सटत और जलज हो जाते । मुझ लगता जम व मर ही विचारा के मूलरूप हा । जगना कबूतरों की एक जगल स दूसरे जगल तक की उड़ानों भी मुझे जाक पित करती है । वे एक हनकी बरबराहट और फफडाहट की ध्वनि पटा कग्ने और हगवार की भी तली से उड़ जाते । कभी-कभी किसी गला हुड़ जठ का भरा निराना उलडता ता उमर नीचे एक गदो अंगुम जजनबी-भी चितकवरी मरगन (सलमैर) निरलकर भागती । यह भिन्न दश और नास नदा की गिरानी है पर आज हमारी समकालीन भा है । जब मैं रक्कर अपनी निरानी पर भुक्ता तो ये आवाज और ये दृश्य बतारा के बीच कहीं भी खड़े हावर मैं तेयता और मुतना । यह भ्रात्रीय प्रदेश जो एक असीमित मनोरजन हम प्रान्न करता है यह सब उमाका एक हिस्सा है ।

हररा के दिन नगर म बजो बड़ी ताप दाी जाती है । उनकी आवाज यहा जाता म मल को बन्दूका जसा लगती है । सनिक बाजी की स्पर-लहुरिया भा कभी कभी इतनी दूर तक आ पहुंचती । इस प्रान्न के एकलम दूसरे किनारे पर अपने मेन म सट हावर जब मैं बनी-बनी तापा का हटा मुनता तो मुझ ऐसा लगता जम गुशरा पूग हा । और जब कभी सना का परड हाती और मुझ इस बात का पता न होता ता सारे दिन मुझ कुछ ऐसा अनुभव होता रहता जसे अन्तर्गिरि का एक बिम्ब की ग्राज पी या कौड राग मा जारक्त जग या बल्कवण हा गया है जसेकि जल्दा हा उसका सतह बस फन्न ही बाना है । बहुत र बाद हुना का एक अनुकूल भावा मना पर से और चल भाग पर से मपटना हुआ जाता और मुझ रगकटो की परड का सूचना दता । बहुत दूर पर का यह ननभन एगा लगती जसकि किसीकी मधुमक्खिदा उड़ गई हा और बजिन के परामग के अनमार परामी अपने घरेलू बनता म म मधुरतम स्वरवाा किसी बनन पर हचरा टननन बग्न उह किर म छत म गान का प्रपाम कर रह हा । और तज आवाज मर गाता और ननभन एक जाता और हवा के अनुकूलतम काफ भी को सूचना त गान ता मैं समक जाता कि अन्तिम मधुमक्खिदा । मिश्रितमयम के छत म सुरणापूजन ल आया गया है और तज उन मक्खिया के ध्यान उग गहन पर कद्रित है जिसम छता गिता है ।

मुझ सब गाना कि मासाचमलम और हमारे पितदा के स्वतन्त्रता एम समय हाया म है । जबमें द्वारा अपनी निरार्द म समता ता मरा हृदय एक अवण तीव्र विचारा म भरा जाता और मैं नविश्य म एक स्थिर आस्था सबर सत्य

अपने काम में लग जाना ।

जब कभी गांव में कई बैठ एकसाथ बज्रन लगन तो ऐसा लगता जैसा पूरा गांव एक बिगल घोंकनी है और गोर में ये सब भवान एक एक करके फेंकेंगे और टूट जायेंगे । तबिन कभी-कभी सबमुच हां एवं बड़ी ही उत्तम और प्रेरक स्वर-लहराएँ जगना तक पहुँचती । जोगील गानकी आवाज भी सुन पड़ती और मुझे महसूस होता कि मैं पूरी रूचि से किसी मक्सिकन आदिवासी का ठेठ ढाल मकता हूँ— हम हमें गा मुख्य चीजा के लिए ही उम्मीदवार क्यों बन ?—और मैं दूसरा-उधर देखना कि नाइ हिममूषक या स्वक सामन पड़ जाए जिसपर मैं अपनी बीरता आजमा सकूँ । मुझे ऐसा लगता कि सुनिक बाजा की गूँह ध्वनि निनिम्नीन में आ रही है और गांव के ऊपर छाए दबदाहक पक्ष के गिन्नरा का भीम कारन जोर धरधरान दबकर सुन लाना कि प्राचीन घममुद्धों^१ के सनिक अन्तरिम में चल जा रहे हैं । यह तबि महान दिवसों में म एव या तबिन मर खेत में सब आकाश ठीक वसा ही भीषण पड़ रहा था जैसाकि वह प्रतिनिधि गीबता है और उमम बार्द भी अन्तर नहीं था ।

मुझों के साथ यह गम्भा परिचय एक अनोखा अनुभव रहा । मैंने उन्हें बापा निराया बाग आर मान किया और बचा । यह अन्तिम काम सबम मल्ल काम था । हममें उन्हें खाना भी जाह भू क्योंकि मैंने उन्हें चखा डरूँ । मैं उनमें से का जानने के लिए वृत्तसुनल्य था । जब वे उग रही थीं तब मैं पाच बजे सुबह में लेकर सापहर तक उन्हें निराजा और गरीब दिन साधारणतया अन्न बनाना में लिताता । जग धोचिए विभिन्न किम्मा के घाम मान में आम्भी बना विविध तान-गहवान और आभीयता बना ताना है । उनका बगन बनें तो एक पुनरुक्ति जमी प्रतीत हागी पर धम करत समय बसी पुनरुक्ति विवकुल नहीं लगता थी । दक्षिण इन कामल पीषा का हम निरुपना में उल्लाह डारन है । अपनी निगनी में हम एक घणित पणपान करत हैं । एवं तानि का मन्त्र करत हैं जबकि दूसरी को धममुक्क पानने पानन है । यह गानन बिगपना है एवं मुअर घाग है वह आचरन है वह पादर घाम है । उन्हें पकड़ा डवाना उनही जग को धन में मूलन के किंग डान दो ।

१ मुझों के हृदय में ईसा मसीह का जन्मभूमि को दर्शन के प्रथम में मारना तब मुझों के मन में हुआ था ।

इनका एक रंगा भी छाया में न रह। यदि रह जाएगा तो ये अपने आप ही करवत बदल लेंगे और जम जाएंगे और दो ही दिन में कद की तरह फिर हरे हो उठेंगे। यह भी एक चमत्कार था। सारसों^१ के साथ नहीं बल्कि घास मोथे के साथ, ट्राम^२ के उन घीरा के साथ जिनकी पीठ पर सूप चर्पा और जोम है। प्रतिदिन सेमे दखती कि मैं एक निरानी हाथ में लिए उनकी रक्षा के लिए उनसे गधुआ की संध्या क्षीण करने के लिए जोरमत्त हुए घास मोथे से छाड़या पाटन के लिए चला जा रहा हूँ। कितन ही जाओन तुर्रदार हक^३ जो अपने साथियों की भाँड से एक फुट उंचे उठ भ्रम रहे होने मरे हथियार से बटकर गिर पड़े और धूल में लोट जाते।

गमिया के उन निमा की जिन्हें मरे कुछ साथियों ने बोस्टन या रोम में ललित कलाओं की साधना में बिताया अथवा उन उन्नत भारत में रहकर ध्यान मनन में गुहारा और कुछ न करने या यथावत् पापों की जर्पित किया उन्नीका उपयोग में यह इन्हें के विमानों के बीच विमानों में किया। इसलिए नहीं कि पादयागोरम^४ का अनुगमा और प्रवृत्ति से छावाली हीन के कारण समा की जावदयकता मुझ भोगन के लिए थी चाह मैं उनकी लक्ष्मी बनाऊँ या उन्हें दब कर बदल में जावत ल ल, पर शायद इसलिए कि कुछ की आत्मा नकार और आत्मानि व्यक्ति के लिए भी तो खेतों में काम करना ही चाहिए जिसमें कि एक दिन ऐसे लोग मरणांत घन हों। कुल मिलाकर यह एक दुःख भवनाजन था। यदि यह बहुत लम्बे समय तक चरता रहता तो व्यसन घन जाना। मैंने समा में साँ नहीं डाली और उन्हें एकमात्र ही निगाया भा नहीं। नकिन जितना नी निराया असाधारण रूप में अच्छी तरह निराया और मुझ उसका पल भी मिला। एवनिन न कहा है सब यह है कि कोई भी मानेगा त ही वह इस लगातार हलचल खुशई और कुशल

१. श्रीक पुराणी में एक राजा धार्मिकता का कथा जाता है। उस राजा का कि वह राजा नहीं था मरेगा। जब भी वह राज ने बैठा मारम भाव और सब कुछ सा जाव। बरसों यह होता रहा। फिर तपन ने उसे मुक्त कराया।
२. श्रीक पुराणी का प्रसिद्ध तपन जो भ्रम के महाभारत का युद्ध छेन बना भार जिने पूरी तरह ध्वस्त कर दिया गया था।
३. ट्राम के राजा मायम का बर पुत्र हकटर जिने नकिनात में मारा था।
४. १८२२ ई० पू० में व में एक नैतिकशास्त्रज्ञ।

से मिट्टी की अलग-थलगटी का मुकाबला नहीं कर सकती। एक ओर जाह उनसे क्या है, 'मिट्टी विघेयकर यदि लागी हा तो उनमें एक चूमक हाता है जो नमर, शक्ति अथवा वह लोतिए जीवनन्यायी मत्व को अपनी ओर खींच लता है। मारे थम और हलचल के पाले यही रहस्य है। पापा के लिए यह अनिवाय है। गोबर अथवा अज गन्दगियों के प्रयोग का इस तरीके की सुनना म वहीं गौरवपूर्ण ध्यान है जो पापरी के सामने उनके प्रतिनिधि विकार' का हाता है। फिर यह सुन बजर उनाह पने उन सेना म स एक था जा छुट्टिया मना रह थे।' सर कनम्म टिवाद्' द्वारा निर्दिष्ट सम्भावना के अनुसार इस सत न भी हवा मम मून मत्वा' को ग्रहण कर लिया था। फलन मैंने बाह्य बुगुन सेम उगा लिए।

यह शिक्षान्त की जाती है कि श्री कालमन न उच्चमन्त्रीय किसानों के मर्चने प्रयाओं का ही उन्मत्त निजा है। इसलिये अपने आय-व्यय का पूरा विवरण मैं यहा लिए देता हूँ।

मेरा व्यय इस प्रकार था

निराली	० ५४
जुताए होंगाई ल्नाई	७ ५० बहुत अगिन
मुग १ बीन	३ १०१
आनू के बीन	१ ३३
मटर के बीन	० ८०
मन्मन् व बीन	० ०६
पुनन के लिए मफेद कपडा	० ०२
तीन घण्टों के लिए हन का घाना	
और एक लहना	१ ००
फमन दान के लिए घोसमानी	० ५५
कुल	१४ ७७१ डानर

इतना एक रेशा भी छाया म॥ रह । यदि रह जाएगा तो ये अपने आप हा करवट बल लेंगे और जम जाएंगे और दो ही दिन में नन्द की तरह फिर दूरे हो उठेंगे । यह भी एक लम्बा युद्ध था । सांभो^१ न साथ नहीं वालि घास साथ न साथ, टाय^२ के उन दोरों ने साथजिनकी पीठ पर मूष चर्जी और जोम है । प्रतिदिन मेमे दगती कि मैं एक निरानी हाथ में लिए उनकी रक्षा के लिए उनका अनुशा की सभ्या क्षीण करने के लिए और मत हुए घास माये से ग्राइया पाटन के लिए चला आ रहा हूँ । कितने ही जोशीन नुरेदार हक्टर^३ जो अपने माधिया की भीड़ से एक फुट ऊँचे उठे भम रह हान मेरे हथियार से बटकर गिर पड़ते और धूल में लाद जाते ।

गमिया के उन जिनो को जिर मर कुछ साधिया न बोस्टा या राम में ललित कनाआ की साधना में जिताया अया न उह मारन में रहकर ध्यान मनन में गुडारा और कुछ न नन्दन था यमाक में व्यापार की अपित दिया उहीका उपयोग में नूदनड के डिमाना के बीच किसानों में किया । इसलिए नहीं कि पाइयागोरम^४ का अनुमान और प्रकृति में शाकाहारी होने के कारण समी की आवश्यकता मुझ भोजन के लिए थी चाहे मैं उनका लप्सी बनाऊ या उह दकर बदन में खावल ले ल पर गायन वसति कि कुछ की आत्मातकार और आत्माभि व्यति के लिए भी तो सेतो में काम करना ही चाहिए जिसमें कि एक दिन ऐसे लोग दृष्टांत बन सकें । बूल मिनाकर यह एक दुलभ मनाजन था । यदि य बहुत समय तक चमत्ता रहता तो व्यसन बन जाता । मैंने ममा में रान नही आता और उह एकमात्र ही निगाया भी नही । लेकिन जितना भी निराशा असाधारण रूप में अच्छी तरह निराशा और मुझ उमका फल भी मिला । एवालिन न कहा है, सब यह है कि कोई भी ग्राहक का न हा न दम सयानार हलबल खुदाइ और गुणा

१. श्रीक पुराणों में एक राजा पार्थिव का कथा आता है । उसे राज था कि बड़े राजा नहीं हो सकेगा । जब भी वह जान बैठता सारम प्र उ और सब कुछ ग्रा पाते । बलों पर होता रहा । फिर समय ने उसे मुक्त कराया ।

२. श्रीक पुराण का प्रसिद्ध नगर जो क्षीम के महाभारत का बड़े क्षेत्र बना और जिसे पूरी तरह ध्वस्त कर दिया गया था ।

३. टाय के राजा प्रायग का बर पुत्र हक्टर जिसे शकिला ने मारा था ।

४. ५८२ ई० पू० में य में एक श्रीक शासक ।

स मिट्टी की अगढ़ा-मलगी का मुकाबला नहीं कर सकती।' एक और जगह उमने कहा है, 'मिट्टी पोषण के बिना जीवित नहीं रह सकती। जो नमक, शक्ति अथवा वह लीजिए जीवनदायी सत्त्व को अपनी ओर खींच लेता है। मारे श्रम और हतबल के पीछे यही रहस्य है। पोषण के लिए यह अनिवार्य है। गोबर अथवा अन्य गंदगिया के प्रयोग का इस तरीके की तुलना में वही गौरवपूर्ण स्थान है जो पानी के सामने उसके प्रतिनिधि 'विकार' का होता है। फिर यह खेत बजर, उजाड़ पड़े उन क्षेत्रों में से एक था जो छुट्टियां मना रहे थे।' सर बेनेट्स्मिंगवाइ^१ द्वारा निर्दिष्ट सम्भावना के अनुसार इस खेत ने भी हवा में से मूल सत्त्वा को ग्रहण कर लिया था। फलतः मैं ज़ारह घुसान सेम उगा लिए।

यह शिकायत की जाती है कि श्री कालमैन न उच्चस्तरीय किसानों के सर्चिले प्रयोग का ही उल्लेख किया है। इसलिए अपने आय व्यय का पूरा विवरण मैं यहाँ दिए दता हूँ।

मेरा व्यय इस प्रकार था

निरानी	० ५४
जुलाई हवाई हवाई	७ ५० उद्धृत अधिन
सम के बीज	३ १२ ^१ / _२
आम के बीज	१ ३३
भट्टर के बीज	० ४०
गन्ना के बीज	० ०६
पुनले के लिए सफेद कपड़ा	० ०२
तीन घण्टों के लिए रस्स का धागा	
और एक लड़का	१ ००
फमल देने के लिए घोनागानी	० ७५
कुल	१४ ७० ^१ डालर

मेरी आय इस प्रकार थी

नौ बुसल जीर बारह क्वाट सम बेची	१६ ६४	
पाच बुगल बड़ आलू	२ ८०	
ती बुसल छाटे आलू	२ २५	
घास	१ ००	
ढल्लें	० ७५	
	कुल	२३ ४४ आनर
धन के रूप में लाभ		८ ७११ आलर

सम उगाने में जो अनुभव मैंने किए वे ये हैं छोटे सफेद साधारण सम पहली जून के आसपास सम्बाई के रख तीन फुट का जीर चौड़ाई के रख अठारह इंच का फासला देकर बो दें। हर बार बीजा को ध्यान से देख लें कि उनमें मिलावट न हो। सबसे पहले देख लें कि बीजा का कीट न खा गए हो। जहां ऐसा हो गया हो वहां नये बीज बा दें। यदि खेत के पारो ओर बाड़ न हा तो हिममूषका का ध्यान रखें। ये सबसे पहले फूटनेवाली न-ही कोमल कापली को कुतरकर साफ कर जात हैं। जब बाद में कल्ल फूटते हैं तब ये भी इनरी नजर से नहीं बचने। ये जकुरो का भी जीर कमिया को भी गिलहरी की तरह मोधे गड़े हाकर खा जाते हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यह बात है कि यदि आप पाल में बचना चाहते हैं और अपनी फसल के अच्छे दाम उठाना चाहते हैं तो जिनना भी गोध हो सब फसल को काट लें। इस प्रकार आप खासी हानि से बच जाएंगे।

इसके साथ ही यह अनुभव भी मैंने प्राप्त किए मैंने अपने से कहा अगली गर्मिया में मैं इतना श्रम करके मेम और सब्जी की फसल नहीं उगाऊंगा। अगर बीज नष्ट न हो गए तो मैं सचाई ईमानदारी, सात्त्विकी, आस्था अवोधता जमे बीजो को ही बीऊंगा, और मैं देखूंगा कि ये सब इस धरती में कम परिश्रम और कम साद डालकर भी उगते हैं या नहीं और मुझे स्वास्थ्य दे पात हैं या नहीं। मुझे विश्वास है कि यह धरती ऐसे बीजा के लिए बजर नहीं हा गई है। यह बात मैंने अपने से कही थी। पर दुःख की बात है कि अगली गर्मिया बीत गई हैं उनमें अगली भी और उमरे अगली भी। पाठकगण मुझे आपस कहना पड़ता है कि जो बीज मैंने रोए थे यदि वास्तव में वे उन गुणों की बीज थे तो ये धुन-लगे थे तबवा

अपना मतब खा चुक घे जीर श्मीनिए उग नहा । नाशारंगनवा लोत उनत ही वीर
 जयवा कायर हात हैं जितन कि उनके पूवन रह ये । इस पीठी के लाग भा
 निश्चित रूप म मरवा और मुन ही प्रतिष्प ठीक उसा हय मे वीर चन ताणि
 निजम मरिया पत्र प्राप्तिमी लाग बाधा वग्न ये और ना उहाने यहा पत्नी
 शार जा बननवान गणों का निवाजा या । बसकि यही भाग्य की विवाहा हो ।
 अभी पीठे एक दिन ए कू ना बरकर मुने निस्मर हुआ । वह अपनी निगनी
 म कम म नम मत्तर्वां शार घग्ना म घादना हाल रहा या और ऐसा वह अपनी
 वर बनान क गि नही कर रहा था । वैमिन चूड़नैड र लाग नय प्रजा क्यों न
 करें ? क्या व अपन अन आनू घाम की फसल और वीचा पर ही इतना जोर न
 दें बकि जोर दूसरी फसलें नी उठाए ? क्यों हम मेम के बीना का बकर ता इनने
 चितिन रन हैं पर मनुष्यों की नई पीठी व विपय में जरा भी चिन्तित नहा
 दीवन ? यदि हम कोई ऐसा व्यक्ति मिन नियम उपास्त गुना न न्न गुना मे
 चित्ते हम गमी अय उत्पादनास अमिन मन्ववान मानन हैं लेकिन जा अधिकतर
 न्वा म हा उरते और सैरने रन हैं जे जमानो हैं और व फल फन उठे हैं
 ना निश्चय ही हम बहुत प्रमल्ल होना चाहिए । मय अथवा गाय जैमे श्म और
 अवाणीय गुणावाता व्यक्ति—भने श्री म गुा मम पूनतम हा अथवा एक नई
 किम्म के हा—दलिए वर सख पर मे चना आ रहा ह । हमारे राजदूता का
 आदा मिनता चाहिए कि ऐम बीन मग भने और कायेम को चाहिए कि वह
 उर न्ग म म बन्वान म मगायता ह । हम कभी नी ईमानदारी क गुा के गाय
 जीवचारिवता नही बरतनी चाहिए । यदि हमन मायता और मिनय का
 गुण किचिन भी हो ता हम एक-दूसर का कमी भी प्रवचिन अपमानित जयवा
 निवामिन नहीं करना चाहिए । हम कना भी एक-दूसर म जन्वाती म नहीं
 मिनता चाहिए । अधिकतर लोगों म मैं कभी नही मिनता क्योंकि दग्ता है जम
 उनव पाग समय नही है और व अपनी ममा म ध्यम है । जो जादमी एमा बटार
 परिश्रम कर रहा है ना अपनी निगनी अथवा अपन फावटे पर काम के बीच म
 एम भुक्ता है जम पाठी पर भुक् रहा हा—कुङ्कुमुने की नर न्नी बकि जमकि
 वह अगत परती म ये उग उठा ना वम न्ने जमकि जवाबीन उरकर घग्नी
 पर चना बरती है गोपा न्नी गोपा उ उर अघिक्—एम जाप्ती व विपय में

मेरी आय इस प्रकार थी

नौ बुशल और बारह क्वाट मेम बेबी	१६ ६४
पाच बुशल बड थालू	२ ५०
नौ बुशल छोटे आलू	२ २५
घाम	१ ००
डठलें	० ७५
	<hr/>
कुल	२ ४४ डानर
घन के रूप में साम	८ ७१ १ डानर

सेम उगाने में जो अनुभव मैंने किए वे यह हैं छोटे सफेद साधारण मम पहली जून के आसपास लम्बाई के रस्म तीन फुट का और चौड़ाई के रस्म जठारह इंच का फासला देकर बो दें। हर बार बीजा को ध्यान से देख लें कि उनमें मिलावट न हो। सबसे पहले देख लें कि बीजा का बीड़े न खा गए हों। जहां ऐसा हा गया हो वहां नया बीज बो दें। यदि सेत में चारों ओर घाब न हो तो हिममूषको का ध्यान रखें। ये सबसे पहले फूटनेवाली नही कामल कापला को कुतरकर साफ कर जाते हैं। जब बाद में बल्ले फूटते हैं तब वे भी इनकी नजर से नहीं बचते। ये अकुरो को भी और फलिया का भी गिलहरी की तरह गीधे गडे होकर खा जाते हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यह बात है कि यदि आप पान में बचना चाहते हैं और अपनी फसल में अच्छे दाम उठाना चाहते हैं तो जितना भी गीध हो मन फगल को काट लें। इस प्रकार आप खासी हानि से बच जाएंगे।

इसके साथ ही यह अनुभव भी मैंने प्राप्त किए मैंने अपने से बड़ा अगली गर्मिया में मैं इतना श्रम करके पैम और मक्का की फसल नहीं उगाऊंगा। अगर बीज नष्ट न हो गए तो मैं सचाई ईमानदारी सादगी आस्था अवोधना जग बीजा को ही बीऊंगा और मैं देखूंगा कि मैं सब इस घरलो में कम परिणम और कम खाद खानवर भी उगते हैं या नहीं और मुझे स्वास्थ्य दे पाते हैं या नहीं। मुझे विश्वास है कि यह घरली ऐसे बीजा के लिए बजर नहीं हो गई है। यह धान मैंने अपने से नहीं बो। पर दु ग की बात है कि अगली गर्मिया बीत गई है उनमें अगली भी और उनमें अगली भी। पाठनगण मुझे आपसे कहना पहना है कि जा बीज मैंने बाए थे यदि वास्तव में वे उन मुणा के बीज थे तो वे पुन नग थे नयवा

अपना मरव सो चुब धे और इसीलिए उग नहा । साधारणतया लाग उतने ही वीर अथवा कायर होत हे जिनने कि उनके पूबज रहे थे । इस पीढी के लोग भी निश्चित रूप मे मरवा और सम ही प्रतिवध ठीक उसी ढंग से बोने चले जाणगे जिगसे सदिया पहले जातिवागी लोग बोया करत थे और जो उहोने यहा पहली बार जा बसनाये लोगो को सिखाया था । जसकि यही माग्य की विवशता हा । अभी पीछे एक दिन एक बूढे को दक्कर मुझे विस्मय हुआ । यह अपनी निरानी स वम स तम सत्तरवी बार घरती म घाइया डाल रहा था और ऐसा वह अपनी कष्ट वनान के लिए नहा कर रहा था । लेकिन 'यून्गैट' के लोग नये प्रयाग क्यों न कर ? क्यों वे अपने अन्न, आनू घास की फसल और बगीचा पर ही इतना जोर न दें बल्कि और दूसरी फसलें भी उगाए ? क्यों हम सेम के बीजो को लेकर तो इतने चिन्तित रहते है पर मनुष्या की नई पीढी के विषय म जरा भी चिन्तित नहीं होवते ? यदि हम कोई ऐसा व्यक्ति मिले जिसम उपयुक्त गुणा ने, उन गुणो ने जिह हम सभी अथ उत्पादनो से अधिक मूल्यवान मानते हैं, लेकिन जो अधिकतर दवा म ही उबते और तरते रहत हैं, जडें जमा ली हैं और वे फल फूल उठे हैं, तो निश्चय ही हम बहुत प्रमन्न होना चाहिए । सत्य अथवा 'याय' जैसे मूढम और अवगनीय गुणोवाला 'यक्ति—भने ही य गुण उमम 'पूनतम' हा अथवा एक नई किस्म के हो—देखिए बट सडक पर स चना आ रहा हे । हमारे राजदूता को आदेश मिलना चाहिए कि ऐसे बीज यहा भेजें और कांग्रेस का चाहिए कि वह उह देश भर म बटवान मे सहायता दे । हम कभी भी ईमानदारी के गुण के माय औपचारिकता नहीं बरतनी चाहिए । यदि हमम योग्यता और मित्रत्व का गुण किंचि भी हो ता हम एक-दूसरे को कभी भी प्रबचिन अपमानित अथवा निष्कामित नहीं करना चाहिए । हम कभी भी एक-दूसरे मे जल्दबाजी म नहीं मिलना चाहिए । अधिकतर लोगो मे मैं कभी नहीं मिलता क्योंकि लगता है जमे जावे पाग समय नहीं है और वे अपनी गेमा म 'यस्त' हैं । जो आत्मी ऐसा बटोर परिश्रम कर रहा है जो अपनी निरानी अथवा अपने फावडे पर वाम के बीच म एम भुक्ता है जम लाठी पर भुक् रहा हा—कुटुरमुने की तरह नहीं बल्कि जमकि वह आत घरती मे मे उग उठा हा वम ही जमेकि अगबोल उतरकर घरती पर चना बरती है मोधी गही, मोधी स कुछ अधि—एम आत्मी के शिष्य म हम कुटुर नहीं रहेंगे ।' और जम हा वह वाचन उगा, उगने पग रह रहकर पन

उठने जैसे कि वह उड़ जाना चाहता हो पर तभी वह उनको सिकोड़ लेता।" ऐसे आदमी स वातें करने में लगता है जैसे कि हम किसी फरिश्त से वातें कर रहे हैं। हो सकता है रोटी सदा ही हमें शक्ति न दे मने, लेकिन जब हम नहीं पहचान पाते कि हम क्या रोग है, तब मानव अथवा प्रकृति में किसी भी उदार गुण को नष्ट निश्चानना, एक विधुद्ध उत्साहपूर्ण आनन्द में हिस्सा बंटाना बड़ा ही लाभदायक होता है। इससे हमारे जोड़ों की सख्ती कम हो जाती है और हम लचीले और प्रसन्नचित्त बन जाते हैं।

प्राचीन काव्य और पुराणों से पता चलता है कि कृपि-कर्म अतीत में एक पवित्र बला रहा है। लेकिन आज हम बड़े ही अमम्मानपूर्ण ढंग से जटदयाजी और लापरवाही के साथ लेती करते हैं। कारण यह है कि हमारा उद्देश्य सिर्फ यह रहता है कि हम किसी न किसी प्रकार विशाल पैसा और भारी फमलो के मालिक बन जाए। आज हम न कोई त्योहार मनाते हैं न उत्सव और न जलूस निकालते हैं। पहले इन सबके द्वारा किसान अपने कर्म की पवित्रता का भाव व्यक्त किया करता था अथवा उसके पवित्र उद्गम की स्मृति को ताजा रखता था। तबान्वित पशु मेलों और धन्यवाद दिवसों को उस अर्थ में लिया ही नहीं जा सकता। आज के किमान को तो लाभ और दावतें ही आकर्षित करती हैं। वह रोम के कृपि देवता सिरीस और स्वर्ण के देवता जुपिटर (भारतीय इन्द्र) की नहीं बल्कि यूनान के धन-देवता गारकीय प्लूटस की पूजा करता है। हममें से कोई भी ईप्सा स्वाय और एक गिड़गिड़ाने की आत्मा से मुक्त नहीं है। हम धरती को सम्पत्ति अथवा प्रमुख रूप से पैसा बनाने का साधन मात्र मानते हैं। इससे धरती की गामा विवृत होनी है। कृपि नाम हमारी अपनी आत्मा में गिर जाता है और विमान निम्नतम कोटि का जीवन व्यतीत करता है। वह प्रकृति से परिचय रखता है पर एक ठाकू की तरह। पटो^१ ने कहा है, कृपि कम से मिला लाभ निक्षेप रूप से पवित्र अथवा याय पूरा होना है। वारो^२ के अनुसार रोम के प्राचीन लोग धरती को माता और सिरीस का रूप में पुकारते थे। उनका विचार था कि धरती को जोतनेवाला एक पवित्र और लाभदायक जीवन बितानेवाले होते हैं और वही हैं जो रोम के कृपि देवता राजा सन्न के असल वंशज हैं।

१ १३४ से १४६ ई० पू० तक धनप्राप्ति रोगन सामान्य और कृपि लम्बक

२ ११६ से २० ई० पू० तक न सिर्फ एक रोगा विद्वान और लेखक

हम यह भूल जाते हैं कि सूय जुते हुए खेता, चरागाहा और जाला पर समान भाव से चमकता है। उसकी किरणों का य समी ममान रूप में प्रतिबिम्बित करने और पीत है। सूय अपन दैनिक भ्रमण में प्रकृति का जो एक शाश्वतीय चित्र देखता है, जुते हुए सेत ता उसका एक अंश मान हैं। उसकी दृष्टि में सारी धरती ही एक बगीचे के समान है। इसीलिए हम सूय की ज्योति और उसकी ऊमा के लाभों का समान आस्था और उत्तरता से ग्रहण करना चाहिए। यदि मैं समा की इस फल का बहुत महत्त्व देता हूँ और वर्ष के अन्त में उस काट लेता हूँ तो इसमें क्या ? यह सम्झा चौंका सेत, जिसकी मैं इन दिनों तक देखरख की मात्र मुझे ही अपना प्रमुख संरक्षक नहीं मान सकता। मुझमें जलज कितने ही अन्य प्रभाव उसके अधिक अनुकूल हैं। वे उस सींचो हैं और हरा भरा बनाते हैं। इन समा में वे फल भी निहित हैं जिन्हें मैं नहीं काटा है। क्या वह आगिक रूप से हिमप्रपक्व जल पगुजा के लिए भी नहीं उम हैं ? गहू की बोली के लिए लटिन भाषा में जो गन्ना है उसका अर्थ है आशा। गहू ही किसान की एकमात्र आशा नहीं होनी चाहिए। दाने के लिए लटिन में जो शब्द है उसका अर्थ है पदा करना। पौधा सिर्फ दाना ही तो पैदा नहीं करता। यदि ऐसा समझ लिया जाए तो हमारी फसलें कम खराब हो सकती हैं ? क्या मुझे उस घास माये के दाना की उपज पर भी आनन्द नहीं होना चाहिए जो पशुओं का भोजन है ? यह अपेक्षाकृत कम महत्त्व की बात है कि मैं सिर्फ किसानों के ही खलिहानों का भरो। एक सच्चा किसान व्यर्थ की चिन्ता छोड़ देगा। गिलहरी को इस बात की फिर कहा होता है कि इस वर्ष जगज में बेसनट पदा होंगे या नहीं ? इसी प्रकार वह सा खेता की उपज पर अपने स्वयं के अधिकार को त्याग देता है। वह अपना दैनिक धर्म प्रतिदिन पूरा करता चला जाता है और मन ही मन प्राथमिक ही नहीं, अन्तिम लाभों की भी बलि दे देता है।

गाव

दापहर स पहल भी खेत को निराबर और गाय पढ सितकर ११ में बहुधा तालाब
 म दुबारा नहा लेता था। किसी टिटही ने पीछे पीछे तालाब के उस पार व एक
 कुड तक मैं तरता चला जाता और इस प्रकार अपन गरीर से थम की धल मिट्टी
 को धा डालता अथवा अध्ययन स पढी भूरिया को सीधा कर लेता। हरएक दो
 दिन व बाद मैं गाव जाता और बहा उस मुह स उस मुह तक अथवा इस अथवा
 स उस अथवा तक निरन्तर घूमतो रहनेवाली गप्पा को सुनता। यनि हामिया
 पैधी की घुराव जिनकी नाभा म इन गप्पा का तबन किया जाए तो य ताब ही
 उतनी ताजगी देनेवाली होती है जितनी कि पसा की सरगराहट और मडफा की
 ताबा भारी। मैं आमिया गिर लडना या दरन व लिए गाव मे उमी प्रकार
 घूमता जने में बिडियो और गिलहरिया का दानन व लिए जयल म घूमता था।
 वहा पीड व पण से टकराती चलनवाली हवा व स्थान पर मैं गाडिया की खड
 लट सुनता। भर घर स दूर एक ओर तो नदी व तन्वर्ती घाम के मगन म छुड
 दरा की एक थस्ती थी और दूसरी ओर देवदार और बौरा व गुल्मा की छाया म
 ध्यस्त लोग का एक गाव था। मच ही मुझे व लोग चरागाहा व कुत्ता जितने हा
 अजीब लगन थे। उनम से प्रत्येक अपनी माद ट द्वार पर बठा हुआ या गप मारने
 के लिए पडोमा व घर की ओर भपटता हुआ ही दीग पडता था। मैं अबवर उन्नी
 आदतो का अध्ययन करने बहा जाता। गाव मुझे एक विंगल समाचार-वश प्रतीत
 होना था। जगे कमी स्ट स्ट्रीट की रडिम एण्ड कम्पनी म हुआ करता था उम
 मस के एन जाने म भी अखरो विंगमिग ममक आटा और दूसरी बिराने
 की चीजें रहती थी। कुछ लोग को समाचारा की भूग इन्नी फिफ्ट हाडी है,
 और उनकी पाचन-शक्ति इतनी गुष्ट हान्ती है कि व गारी जायु जिना जिन-जुने
 तावागिक स्थाना म बठ रह सकन हैं और समाचार सामगिग हवाजा का तरह

उनके कानों में पुनपुनः आते और उनमें समाते रह सकते हैं। जसकि वे ईश्वर की साम ल रह हा। य समाचार उनमें एक सूनापन और पीडा के प्रति जडता ही पदा करते हैं नहीं तो यह सब सुनना बहुत कष्टकर होना चाहिए। पर इसका उनकी जीवन चेतना पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। जब कभी भी मैं गाव में से गुजरता मैं ऐसे ही प्रतिष्ठित लोग की पक्ति के दानों में कठिनाई से ही बच पाता। किमा सीढ़ी पर बैठकर घप खाते हुए, अपने शरीर को आग की ओर झुकाते हुए और अपनी आत्मा से, पक्ति के दानों और बड़ी ही विषयाकुल दृष्टि फैलते हुए मैं उन्हें देखता। कभी वे किसी गोदाम से पीठ लगाए जेबों में हाथ डाले स्तम्भा पर बनी स्त्री प्रतिमाओं की तरह ऐसे खड़े मिलते जसकि उनके ऊपर का उठा रह हा। धरो से बाहर खड़े होने के कारण जो भी हवा में होता वे उसीका सुन लेते। य लाग उन भाटा पीसनवाली चक्कियों के समान होते हैं जिनमें जन्म के पहले पाटा लापरवाही में दरडा जाता है और उसके बाद उसे अन्तर अधिक बढ़िया और महीन पीसनवाली चक्कियाँ पर पहुँचा दिया जाता है। मैंने देखा है कि किराने की दुकान, मछलानगह, डाकखाना और बैंक गाव की जाते हैं। पूरे गाँव के आवश्यक अंग के रूप में गाव में सुविधानरूप स्थाना पर एक घण्टी एक बड़ा तोप और एक आग बुझान का इजन भी रखा रहता है। उस गाव की गलियाँ में घर एक-दूसरे के आगे-आगे इस क्रम से बने थे कि मानव जाति में अधिकतम लाभ उठाया जा सके कि हर यात्री को उनकी भार भेजना हुए बीच में से भागना पड़े और स्त्री-पुरुष और बच्चे सभी उसपर एक हाथ चलाने का आनन्द ले सकें। अब जो लोग इस पक्ति के निकटतम रहते थे जहाँ से कि वे अधिकतम दान मन्त्र और दील सकते थे और व्यक्ति पर पहना मुक्ता चना सकते थे, उन्हें अपनी स्थिति की अधिक कीमत चुकानी पड़नी थी। जो लाभ उपाचल में छिपे गिबर मकानों में रहते थे जहाँ कि पक्ति टूट गई थी और लम्बे रिक्त स्थान बीच बाँच में छूटे थे जहाँ कि आगन्तुक दीवार फाँदकर या गाँव की पगडंडियाँ पर से बचकर भाग सकता था उन्हें मकान या जमीन का बहुत थोड़ा किराया देना पड़ता था। आगन्तुक को फमाने के लिए सब तरफ सादरबोड लटके थे। यहाँ वह भूख बुझान के लिए सावजनिक गृह और शराबगृहों का जार निश्चिता कभी वह किसी आरपन चाँद का देगनर भूया चाँदा की अथवा जाहरी की दुकान पर आता और कभी बाल बनवान के लिए नार्ड की, जूता पहनने के लिए जूत बनानेवाले का

और बपड़े सितवाने के लिए दर्जों की दूबाल में घुस जाता। इसमें जतिरिक्त एयरथायी पर भयंकर निमग्नण उमे प्राप्त था कि वह इनमें से किसी भी घर का आनिध्य स्वीकार कर ले और ऐसी स्थिति में लोग उससे बहुत अधिक आगा बाध लेते थे। अधिकार इन घतरा से मैं आश्चर्यजनक ढंग से बच जाया करता था। मैं दृष्टापूर्वक बिना किसीसे भी वानधीत किए अपने जदय की ओर बढ़ता चला जाता। जिन्हें दोनों ओर पवित्रवद्ध योगा के मुक्के खाने का खेल खेलना है उन्हें मैं ऐसा ही करने की सम्मति दूंगा। कभी मैं आरफियम^१ की तरह अपने विचारों को बहुत ऊँचाई पर रखता जैसे कि उमने अपनी सारंगी पर बबताओं की स्तुति गाकर साइरनों^२ की आवाज को दबा दिया था और इस प्रकार यह पतरा से बच गया था। कभी-कभी मैं अचानक ही छलांग लगा जाता और मेरा अता पता कोई भी बता न पाना। मैं एस अवसरों पर निष्पत्ता का बिनाप ध्यान न रखता और किसी मेड की रिक्तता में छिपने से भी न बचता था। कुछ घरों में अघट की तरह घुस जाने की भी मुझ आदत थी। वहाँ भरा अच्छा स्वागत होता था और वे लोग समाचारा का सत्त्व और उनका बचरा सब कुछ—क्या कुछ दब गया है मुठ और गान्ति की सम्भावनाएँ स्या हैं और दुनिया के अधिक देर तक मिले जुले रहने की आगा है या नहीं—जान देने के यात्र मुझे पिछले दरवाजे से बाहर निकाल देते और मैं फिर जगला में भाग जाता।

जब कभी मैं बहुत अधिक देर तक गात्र में टिका रहता तब वासनर घघेरी और सूफानी राल में गात्र के जगमगाने बैठसपाया या भाषणगृह से निकलकर, रई या मक्का का घला कच्चे पर सटकाए जगल में वन अपने विग्रामदायक बन्दर गाह की ओर अघवार पर तरते हुए जाता बडा ही मुहाना लगता था। मैं बन्दर से अपने को बस-बसा लेता और अपने को विचारा की आनन्ददायक भीड के बीच और अन्दर खींच लेता। अपने बाह्य व्यक्ति को पतवार पर बिठा देता और यदि लहरे सान्त होनी तो पनसार को भी बाध देता और चल देता। जैसे मैं लेता

१ २ अपालो एव म्यूस वैलियोस का पुत्र आरफियम एक कवे और संगीतकार था। सर्वे आर मित्रा दीर्घा के बीच रत्नेशानी साररन नाम की समुद्र-परियाँ अत्यन्त मधुर स्वर में गाकर नाविका को अपने पास खींचकर मार डाला करती थी। आरस्थान ने देशान्नों की खुनि इनने खोर से गाई कि उनकी आवाज के नीचे साररनों की आवाज दब गई और बंद बच गया।

जाना, किन्तु ही उत्तम विचार मुझमें उठने जाने। यद्यपि किन्तु ही भीषण तूफानों का मैं भेना है पर किसी भी श्रुति में मैं स्वयं को पण्डित या अस्त अनुभव नहीं किया। जंगल में, माधारण रातों में भी, लागा के अनुमान से कहीं अधिक अधरा रहता है। रास्ता पहचानने के लिए वृद्धा मुझे गहक ऊपर पड़ा के बीच के आकाश की ओर देखना पड़ता। जहाँ गाड़ी की लीक न होती, वहाँ भर ही पलों से बनी हडकी-सी पगड़ानी को मैं महसूस करने की बागिस करता या हाथों से छू-छूकर विशेष क्या के सम्बन्ध से भाग पहचानना। दृष्टान्त के लिए जंगल में चीड़ के दो बगों के बीच अठारह इंच से अधिक का फासना नहीं था। मैं इनके बीच में से गुजरा करता था। अधरी रात में य भाग की पहचान में सहायक हान थे। कभी कभी एक अधरी और धुंधली रात में इसी प्रकार दर में घर लौटते हुए जब जागें खुद न सम सक्तीं, वन पर ही अपनी राह बनाते तब मैं अपने में दूबा और लाया-लोया वन चलता जाता और मेरा ध्यान तभी टूटता जब मेरे हाथ अपने घर की साकिन को खाने के लिए उठने होने। एसी स्थिति में अपने चलने का एक बदल भी मुझे याद न रहता और मैं साचता कि यदि मेरी आत्मा इस गरीर का छोड़ जाए तब भी यह गरीर उसी प्रकार घर पहुँच जाएगा जैसा हाथ बिना किसी भी सहायता के मुह तक पहुँच जाते हैं। कितनी ही बार जब कोई मिलनेवाना मध्याह्न तक ठहर जाता और रात अचानक हानी, तो मैं अपने घर के पिछवाड़े के गाड़ी के भाग तक उसे ध्यान जाता और मनेन में उसे बता देता कि तुम्हें अमुक दिशा में जाना है, और वह गंगा का ध्यान आवा की सहायता में नहीं पैरा की ही मदद में रख पाना। कभी तरह एक वृद्ध अधरी रात में मैंने दो युवकों को उनके भाग पर लगाया। वे तालाब में मटती पकड़ने आए थे और जंगल में स होकर लगभग एक मील आगे रहने थे और इन भाग के सम्बन्ध थे। एक या दो दिन बाद उनमें से एक ने मुझे बताया कि उस रात उठत रात गए तक वे अपने घर के चतुर्दिक् ही चक्कर काटते रहे और सुबह के लगभग घर पहुँचे। इस बीच कई बार बार की क्या आई पड़ो के पत्ते निचुड़ने लग और वे बुरी तरह मराओर हो गए। मैंने सुना है कि जब अधरी इतना घना हाना है कि एक बहावत के अठ्ठार उसे चाकू से काटा जा सकता है तब लाग गाव की गलियाँ में भी रास्ता भूल जाते हैं। कुछ लाग, जो उपावल में रहते हैं और अपनी गाड़ियाँ में बठार सरीदारों के लिए नगर आते हैं रात बर्दा बाटन के लिए बाध्य हो जाते हैं। किन्तु ही स्त्री-पुरुष किसीसे मिलन आए और

"तुम लोग जो शासन राय चलाने हो, तुम्हें सजाए लागू करने की क्या जरूरत है ? पुण्य में प्रेम करो और लोग पुण्यात्मा बन जाएंगे । बड़े आदमी का पुण्याचरण पवन के समान होता है और साधारण व्यक्ति का घास की तरह । जग हवा ऊपर से चनती है तो घास झुक जाती है ।

सरोवर

कभी-कभी ज़र मानवा के ससम और उनकी गप्पा से मुझे अजीब हो जाना और गाव के मित्रों से उकता उठता, तब मैं अपनी स्वाभाविक सीमा से और अधिक दूर पश्चिम की ओर चला जाता और इस प्रदेश के अभी तक अनदखे हिस्सा में नये बनाव और नये चरागाहों में जा निश्चिन्ता अथवा जब सूख डूब रहा होता तो मैं पयर हैवन पहाड़ी पर हकलवरी और नीलवदरी खाकर अपना पेट भरता और कई मिना के लिए काफी बड़ा एक ढेर भी जमा कर लेता। जो व्यक्ति फनों को खरीदता है या उन्हें बाज़ार में बेचने के लिए उगाता है वह उनका वास्तविक स्वाद प्राप्त नहीं कर सकता। उग स्वाद को प्राप्त करने का बस एक ही रास्ता है। रोकिन बहुत ही थोड़े लोग उस रास्त पर चलने हैं। यदि आप हकलवरियों का स्वाद जानना चाहते हैं तो किसी ग्वाल से या किसी मीनर में पूछिए। निसन कभी हकलवरिया नहीं तोड़ी यदि वह कहे कि मैं उनका स्वाद लिया है तो वह एक बेहून्ना घात कहता है। हकलवरिया तो बोम्बेन नगर तक पहुंचनी ही नहीं। वे तो हम अपनी तीन पहाड़ियों पर उगती हैं और नगरवाले उन्हें जान तक नहीं पाते। फन का स्वादिष्ट और अनिवाय अंग अभी नाट हो जाता है जब बाज़ार की गान्गी में रगल सा-सावर उसकी कानि उड़ जाती है और जो बच रहता है वह चारा मात्र होता है। ज़र तब ईश्वरीय याय जीवित है एन भी अच्छी हकलवरी आव निर पहाड़ियों से उग ओर भेजी ही नहीं जा सकती।

कभी-कभी अपने निराई के बाम से निपटवर मैं किसी एग सायो के साथ जा मिलता जो सुनह में ही वस्त्र की सी या तैरो पत्ते की सी म्पिरला और सामोनी के साथ मछलिया पकड़ रहा होना और अर तग जा चुका होना। तरह-तरह की विचारणाओं में डूबे रहकर मेरे पहुंचा की घड़ी तक वह इस निष्पत्ति पर पहुंच चुका होता कि वह भी कालागदम व प्राचीन सम्प्रदाय में ही सम्मन रखता

है। जब वह था जो बहुत बलिया मछियारा था और लकड़ी के काम में भी बहुत कुशल था। वह भरे घर की मछियारा के जागम के लिए बनाया गया घर सह्य करता था। जब वह पेरे म्पाजे में बैठकर अपने बाल को मसालना तो मुझे भी बड़ी प्रमनता होती थी। कुछ ही दर में हम दोनों तालाब पर होते। वह नाव के एक सिरे पर बैठता मैं दूसरे पर। हम दोनों बार्ने जिक न कर पाने क्योंकि अपनी आयु के बाद के मिनत में वह बहरा हो गया था। पर वह रह रहकर एक भजन गन गुनाता गिराता मेरे बिनत में बहुत काफी मजबूत जाना। म्म प्रकार हमारा सभाषण एक अविच्छिन्न संगीत के रूप में चलना और यह मह मे चतनवाही गतचीत की अपक्षा कही अधिक मुखवर होता। जब सदा की भाति वातचीत के लिए कोई भी भरे आसपास नहाना तब मैं एक चपटी लकड़ी से नाव की लकड़ा को बसपपा कर एक गुज पदा करता जो चारा ओरक वनो में धूम जाती और फल जाती। जगली पशुओं के रखवाले की तरह इन ध्वनियों प्रतिध्वनियों को मैं तब तक छेना रहता जब तक वनो में गी घाटिया और भाडिया में से एक गुरगुराहट न फूटने लगती।

गम सध्या में बहुत घा में नाव में बैठकर वासुरी देख देता। जब मछलिया मेरे चारों ओर चक्कर घाटने लगती जमेकि मैंने उन्हें माह लिया हो। वन की दूरी हुई लकिया मरोवर की तनी में बिलरी पमलिया जमी प्रकीत होती और बाद उनक ऊपर तरता जाता। इससे पहले भी गर्मियों की अवेरी रातों में किसी माघी को लेकर मैं तालाब पर बहुत निन हुए कभी कभी आया करता था। तब दुस्माहिस ही मरा उद्देश्य होता था। हम एक-दूसरे पानी में सगकर आग जलाने। हमारा विचार रहता कि इसमें मछलिया जाकपित हानी हैं। एक घाय पर कीना व गुरुद्व चित्रका कर हम पाउट में लिया पकड़ते। जब बहुत रात वातन पर हम निपट चुकते, ता जगती हुई लकडिया का टपर आकाश में आतिगात्रिया की तरह उछालने। वे वापस तालाब में आकर गिरती और हिस्म की सी आवाज के साथ बुझ जाती और हम स्वयं की पुण्य अघरे में अटकने लगाने हुए पाते। अब हम सीनिया बजाने हुए, इन घनघोर अघरे के चीरते हुए मानवा की बस्ती की ओर वापस चल गये। लेकिन अब तो मैंने तट पर ही अपना घर बना लिया था।

कभी-कभी गाव की किसी बठक में घरवाना के भा जाने के बाद तब बैठे रह कर मैं जगल में वापस लौटता ता अजन जगने निन के भोजन के विचार में आधी रात के समय आनी की छाया में नाव में बैठकर मद्रिया पकड़ता। उग समय

उल्लू और लामटिया रात्रि-गीत गाती और मैं बटुन पाम में ही कहीं से किसी अनात चिन्टिया का रह रहकर चहचहाना सुनता रहता। मेर लिंग में अनुभव बड़े ही स्मरणीय और भू-यवान थे। तट से भी टेन् सी गड्डी दूरा पर चानीस फुट गहर पानी में मैं अपनी नाव को खड़ा कर देता। चादनी में अपनी पूछा से चोट करके मतह पर गड़े वनानवाली लन्ही पच और साइनर मछलियां में मैं घिर जाता। एक लम्बी पीली सुनली के माध्यम में मैं चानीस फुट तल रहनेवाली रहस्यमय नारकीय मछलियां से मिलाप करता। कभी-कभी जल में रात की मोठी हवा में इधर-उधर भटकता, ता माठ फुट लम्बी एक सुनली को जल में सरोवर के चारा और नीचता चलना और दखता कि जब-तब इस सुनली के माथ माथ एक हनकी धिरकन-भी पता हानी है जो इस वान का मरेत है कि कुछ जीव एक अनिश्चित पर सगपास्पद उद्ध्य लेकर उससे पास-पाम घूम रह हैं और मन ही मन एक निष्प पर लहा पहुंच पाने हैं। बहुत देर बाद हाथ व ऊपर हाथ रखकर ची-ची करती, फेंकती एक भागवाली पाउट मछली का मैं ऊपर हवा में उठाता। विनोदकर अवेरी राता में जल विचार बहुत दूर दूरारे नार में मष्टि की उत्पत्ति और प्रलय के विषय में उलझ जात हैं उस समय सपना में बाग डालनेवाला यह हनका-भा घबरा बड़ा ही जजीव लगता है और स्वयं को प्रकृति में दुबारा ओड पाना कठिन हो जाता है। मरी इच्छा होने लानी है कि मैं जना काटा नीचे पानी में फेंकने व साथ-साथ ऊपर हवा में भी फेंक। नीच का जल ऊपर के पवन में अधिक पना कठिनाई से ही होगा, और इस प्रकार मैं एक जाट से दो मछलियां परत।

बाल्गेन की गोभा हनके स्तर की ही है। सुल्लू वह बहुत है पर उत्कृष्ट की भीमा तब नग पहुंचती। जो व्यक्ति बाग-धार यहा में आया हो या इसके तट पर रहा न हो उस यह अधिग आरपिन नहीं करेगी। फिर भी गन्गड़ और विगुदता की दृष्टि में यह मरावर दाना महत्वपूर्ण है कि इसका विशेष वपन किया ही जाना चाहिए। यह हरे पानी में एक साफ और गहरा बुझा है। यह आधा मीन लम्बा है और इनकी पंक्ति पौन में भीन है। उसका क्षेत्रफण लगभग गांठे दूरी में एकड़ होगा। चौड और बहुत व जगन व बीच यह एक जगम जन-म्यान है। चाना और भाग व मित्र पानी की आम और निवासा का कोई अय साधन यहा नहीं पाया जाता। यह बाग जार पगहिया मरी हैं ता टीक मरे पानी के

उठकर चालीस से अस्सी फुट तक ऊँची चली गई हैं। दक्षिण-पूर्व और पूर्व की दिशा में चौथाई और तिहाई मील के भीतर ये जमा लगभग सौ और डेढ़ सौ फुट तक ऊँची उठ गई हैं। ये पूरी तरह जंगलों में ढका हुआ है। हमारे बानकाड़ का सारा पानी जम से कम दो रंगों का पाया जाता है। एक रंग तब का है जब हम जल की धारा में देखते हैं। जब उसे हम बहुत निकट से देखते हैं तब दूसरा पर अधिक सही रंग हम दीख पड़ता है। पहला रंग प्रकाश पर निर्भर है और आकाश के सत्त्व पर निर्भर है। गर्मियों में साफ मौसम में त्रिपेपर जब जल उद्वेलित हो, तब वह नीले रंग का दीख पड़ता है। और अधिक दूरी में मभी जल एक नमान हो नजर आते हैं। जब तूफान आया हो, तब वह कभी-कभी गहरा मलेटी रंग का दीख पड़ता है। समुद्र के विषय में यह प्रसिद्ध है कि बानावरण में बिना किसी प्रबल परिवर्तन के भी उसका जल एक दिन नीला और एक दिन हरा दीख पड़ता है। मैंने अपनी नज़रों को देखा है। जब सब कुछ बर्फ से ढका होता है तब उसका जल भी और बर्फ भी धान की तरह हरे रंग का उभर आता है। कुछ नीला नीले रंग का जल तरल हो या ठोस विगुद्ध जल का रंग मानते हैं। लेकिन यदि नाव में बैठकर पानी में सीधे नीचे भाँके तो उसके वित्तन ही विभिन्न रंग दीख पड़ते हैं। बाटन एक ही कोण में देखने पर भी कभी नीला और कभी हरा प्रतीत होता है। घन्टी और आकाश के बीच में रहकर यह दोनों का रंग ग्रहण कर लेता है। घन्टी की बाती में देखने पर इसमें आकाश का रंग प्रतिबिम्बित दीखता है। जिन निक्षेप में देखने पर, तट के पास जहाँ नीचे का रेत उभर आता है जहाँ एक पीली जमा लिंग होता है। उसका आग का रंग हलका हरा और घनी आगे पास मरोवर के बीच नव पड़ने पर एक नमान गहरा हरा घनता चला जाता है। कुछ अवसरों पर पहाड़ी की बाती में देखने पर भी तब के पास तक रात्रि साफ गहरा दीख पड़ता है। कुछ लोगों ने इसका कारण पूरी वनस्पतियों को बताया है लेकिन पत्तों के चिन्न में पड़े वस्तु में रेत की पट्टी के नीचे रखते तट के पास भी यह उतना ही रंग होता है। इनके द्विपुष्पाकार तटवर्ती जल का भी यही रंग है। यह बड़ी हिम्मत है जहाँ वनस्पतियों का ताजाव की तली में प्रतिबिम्बित और परतों में प्रकाशित रूप तो गर्मियों से जल मयम पानी पिघलती है और जैसे ही मध्यमाँ १८ एवं १९ भी उन जाती है। इस प्रदेश के अथवा जहाँ की १९ म

पर प्रतिबिम्बित करने लगती है अथवा प्रकाश अत्रिक मात्रा में न म धुन जाता है तब वह जल या हाँ दूर से दखन पर भी आकाश में भी अत्रिक मट्टे नीचे रग का दीखन लगता है। इस समय जल की सतह पर से प्रतिबिम्ब का दब पान के लिए, अब जब मैं अब निमीनित आकाश से दृष्टिपात किया है, मुझे जल का रंग जटिलीय अवगमोय, हनका नीला दीख पडा है। यह वसा हो या जैसाकि भीमा दुई या धूपडाहा रग का मिल्क और तनवार की घाट का हाना है, आकाश के रंग में भी अधिक आसमानी। नहों के उय ओर का रग, जो अभी-अभी इस जाग कानुनना में काच भर दीख पडा था अब मूल जैसा ही गहरा हरा दीख पगता है। नहा तक मुझे याद है यह गीने के रग का सा हरिताम नीला हाना है दीख वसा ही जैसाकि पश्चिम में मूपास्त में पट्ट के बादना के बीच-बीच में भावतमान पाग के आकाश का हाता है। लेकिन इसीके गिनाम में पानी का यदि प्रकाश के मामन किया जाए तो वह वसा हो वपगूय हागा जैसाकि उनका ही माप्रा की हवा। सभी जानते हैं कि गीने की एक बड़ी तस्ती हर रग की आभा लिए होती है। कारीगर लाग आकार का इस बात का कारण बताते हैं क्योंकि उमी तनरी का एक छोटा-सा टुकड़ा वगहीन हाता है। मैं कभी यह मिद न कर सका कि हरा रग प्रतिबिम्बित करने के लिए वाटहन के जन का कितना बडा आकार काफी हागा। हमारी नती का पानी भीने एकदम पास से दखनवाले का काना या बगून भूरा नील पगता है और यह अधिनतर तालावा की तरह ही नहनेवान के गगरा का एक पानी आभा प्रान कर देता है। लेकिन तालाव का जल विन्नोर जैसा गुद है और नहनेवाले की अलगमटर पायर जमा इक्निमा प्रदान कर देता है। अब यह और भी अनिक अप्राकृतिक प्रतीत हाता है क्योंकि ब्यकिन के हाथ-पर फैक आर विवृन्म हाकर एक दैत्याकृति का आभास दन लगत है और किसी मादकत एजेता के लिए अध्ययन के उपयुक्त विषय बन जाते हैं।

जब इतना पारदर्शी है कि पचीम या तीम पुट की गहराई तक की तनी भी आमानी में लीज जानी है। जल पर उग्न हुए सतह में कितने ही पुट नीचे पच और गान्तर मछनिया के भुड के भुट आप दब मवत हैं। ये गायद मिष एक इच नम्बी हो हाती हैं लेकिन पच मछनिया अपनी निरदा रखाआ के कारण माफ पहचान

पड़ती हैं। आप सोच सकते हैं कि ये मछलियां जा बड़ा जी लती है तो अवश्य ही तापस जाति की होगी। बहुत बर्फ पहले एक जाड़ा में जब मैं पिकरल मछलियां पकड़ने के लिए बर्फ में छेद कर रहा था तो जस ही मैं किनारे पर गया, मरी कुल्हाड़ी उछाकर वापस बर्फ पर आ पड़ी और जसकि इसे किसी शतान ने प्रेरित किया है वह बीस पचीस गज फिमलनर सीधे एक छेद में नीचे उतर गई। पानी इस स्थान पर लगभग बीस फुट गहरा था। उल्लास में बर्फ पर लड़ गया और मैंने छेद में से भागा। कुल्हाड़ा एक ओर की हटकर सिर के बल टिकी थी और उसका घेंटा सीधा लड़ा नान के जल के साथ धीमे धीमे हिल रहा था। बेंग बड़ा तब तक एक ही सीधा खड़ा रहता और हिलता रहता जब तक कि वह समय के प्रभाव से गति न जाता। पर मैंने बसा न हाने दिया। मैंने अपने पास की बर्फ काटनवाली छत्ती से एक और भूराख ठीक उसके ऊपर बनाया। तब मैंने पड़ोस में उपलब्ध सबसे लम्बे बेंत का चारू में काटा। एक फाल बनाकर उसने सिर में बांधा और फंद की मछ की गांठ पर लाकर बस दिया और इस प्रकार कुल्हाड़ी को वापस खींच लिया।

तालाब का तट किसी फाल की चिताई के उपयुक्त चिकन गाल सफा परंपरा की पट्टी में बना है। खानी रत बस एक या दो जगह ही है। कोई स्थान पर तट का ढनाव इतना घड़ा है कि एक छत्राग में आप डुबान पानी में पहुँच सकते हैं। और यदि जल अदभुत रूप से पारदर्शी न हो तो बस यहाँ से जागे तली न दीखे और उसमें दगन फिर उस पार तल के ऊपर उठने पर ही हो सकें। कुछ का विचार है कि यह ताल अतल है। इसमें कहीं भी कीचड़ नहीं है। कोई भी व्यक्ति मरमरा दृष्टि में देखकर भी बड़ दगा कि घाम तो इगम डेनी नहा। घाम के छोटे छोटे मजाना का छाड़नर जिनमें पानी भर आया था और जा जल समुचित रूप से ताल के जग है ही नहीं ज़ारिबी में दखन परभा काई माट जगता अयवा

बना है। और जाटा के मध्य तक म लगन के ऊपर चमकता हरी घाम उग आती है।

हमारे जिल म नामग टाड मौल पश्चिम की ओर नादन एकर कानर म ठोक ऐसा ही 'टाइट सरावर' नामक एक जोग मगवर भी है। यहां म बारह मौल की परिधि में स्थित अविकतर तानाशास में परिचित हू पर कुए की सी प्रकृति का इतना गुद काइ सीसरा मगेवर मुझे नहीं गीब पडा। एक ब जाद एक कितनी ही आतियों और पीनिया न इमका जन गिया है इमकी प्रगता की है, इमकी गहगइ तापी है। व मभी व्यतीत हा चुकी हैं पर इमका जन जभी तक उतना ही हरा और पारलगी है। एक दरकर वनवाना जलवान यह नहीं है। गायद वमन की उम सुवहभी जन जादम और हाना का ईदन व वगीचे म निष्कामित किया गया था, वा वन सरावर अस्तित्व म आ चुका था। और तम भी वमन की हाकी मीठी वषा उमपर पड़ी था कुत्ता छाया था दगिगी पवन चरी वो जर्नानित वक्तव्व और हम जिहने आत्म जीरहोना व पतन के बार म कुछ नहीं भुना था उमपर तर रह थे व्यावि उनके त्रिग ता तव भी लमी विगुद भाल ही कानी थी। उम समय भा यह मगवर उमडता था और मकुचिन हाना था। अपना पानी यह स्वचउ बना चुका था और उम आज व स रग म रग चुका था। नव भी स्वग का अधिकार पत्र इस मिन गया था कि स्वर्गीय आम का मचिन वनवाना समार म यह अकला वारान सरावर होमा। बौन जानता है कि कितनी विद्वान् पातिया के माहिया र इम वस्तीलियन पाठपन की तरह मा किया गया है और स्वणयुगा म मिन पगिया न यहां निवास किया था ? यह प्रथम काटि का हीम है आ वानकाउ के मुनुट म जडा है।

सकिन जो मानव पत्नी वाग इस कुए पर आये वे वे अपन पग के चिह्न शायद यग डोड गए है। मुम यह दगकर आचन हुआ है कि किनार पर घन पड जहा जभी काने गए हैं वहा भी पत्नी के मनेद्वान पर सकरा अननारी व तत्नों जैमा माग तापाव का घेरना आ पत्तान पत्ता है। यह तम म उरता है गिरना है पानी व किनार तक पहुचना है और पीछे हटता है। यह भी गायद उतना ही पुराना है जितना कि इम प्रग म मानव का अस्तित्व। आदिम गिरगिया व परा न दम

बनाया है और भूमि व वतमान स्वामी भी समय-समय पर अनजाने ही इसपर चढ़ जाते हैं। जाड़े के दिनों में, जब हनुकी-सी जप पड़ चुकी हो तालाब के बीचों-बीच गड्ढा होकर दरों का यह पगडण्डी विशेष रूप से स्पष्ट दीख पड़ती है। घास और टहनियाँ इस दिशा नहीं पातीं और चाचाई मौसम के घरे में एक लहरदार मर्पे रेखा के रूप में यह साफ उभर उठती है लेकिन गर्मियाँ में बहुत निरुद्ध से देखने पर भी यह उठनाई से ही दीख पाती है। लगता है जैसे वह इसे दुबारा छान देती है वह भी एक स्पष्ट उभार देकर तरांग रूप टाकता है। एक दिन कभी यहाँ बनाए जाने वाले बगला व अलहून पार्कों पर भी गायद इन पगडण्डियों के चिह्न सुरक्षित बच जाएँ।

यह सरोवर चढ़ता है और उतरता है पर ऐसा नियमित रूप से होता है या नहीं और हाता है या ऐसा किम अवधि व बाढ़ हाता है यह कोई नहीं जानता यद्यपि घटून-ना लाग जाने का दिखावा करती हैं। साधारणतया यह जाड़ा में चढ़ जाता है और गर्मियाँ में उतरा हुआ और ऐसा मौसम की सामान्य आदतों और शुष्कता के अनुसार नहीं होता। जिन दिनों मैं यहाँ रहता था उन दिनों की तुलना में तालाब थोड़ा-थोड़ा एक या दो फुट नाचा रहा और बर-बर बरस में बरस पाच फुट तक बढ़ा यह मुझ बाढ़ है। एक जोर रेत की एक सक्री पट्टी पानी में अन्दर तक चली गई है। गायद १८२४ की बाढ़ हूँ याग तब मैं लगभग तीस गज आगे इन पट्टी पर मैं चाउडर (मछली और बिस्कुट में बना एक साँझ) उकालकर पकाया करता था। इसका पच्चीस घण्टा तक ऐसा किया जाना सम्भव न हो सका। इसके विपरीत कुछ घण्टा बाद सामान्य तट से लगभग अस्सी गज घन की और जगह में एक श्वान्त गड्ढा में मैं नाव पर बैठकर मछलियाँ पकड़ा करता था। यह मेरा स्थान अब घास का मैदान बन चुका है। यह बात तब मैं अपने मित्रों को बताता था ताकि निवास नहीं कर पाते थे। तालाब स्थितिपूर्वक दो वर्षों तक बढ़ा है और अब १८५२ की गर्मियाँ में जिन दिनों मैं यहाँ रहता था उसकी अपेक्षा, यह टीक पाच फुट ऊँचा है अर्थात् उतना ही ऊँचा है जितना वह तीन साल पहले था और उस घास व मैदान में अब फिर मछलियाँ पकड़ी जा रही हैं। इस प्रकार बाहर की ओर पानी की गलह में छ-मान फुट का अन्दर पड़ जाता है। पर चारा और की पहाड़ियाँ तो जा पानी बाहर आता है वह मात्रा में नगण्य हो जाता है। अर्थात् इस बाढ़ का कारण अवश्य ही अन्दर की जलमात्रा बढ़ने का ही कारण

ही हंगे। अब साजिए इन गमिया म नालाय का पानी फिर उतरन लगा है। इम उतार चत्ताव, के बारे म एक बात उत्तरनीय है कि ऐसा विशय अवधिया के बाद होना हो या नहा, पर लगना है इसरो पूरा होने मे कितने ही वष लग जाने हैं। मैंने इसकी एक बाढ़ और दो उतारा के अंग दखे हैं। मुझे आगा है कि बारह या पंद्रह वष बाद जल फिर उतना ही उतर जाएगा जितना कि मैं सदा से देखना आया हू। जल का आमद और निक्कासी के लिए उपस्थित खान जो परिवहन पदा वस्त हैं उनको ध्यान म रखते हुए एक मीन पून की ओर स्थित सरावर भी और बीच म पड़नेवाले छोटे-छोटे जय सभी तालान वाल्डेन के अनुसार ही बरतते हैं। इनम भी वाल्डेन के माय-माय ही जन की सतह अभी कुछ दिन पहले ही उच्चतम हो पाई है। जहा तब मेरा ध्यान जाना है यह बात हाइड सरोवर के लिए भी सच है।

इन जम्बी अवधिया के बाद वाल्डेन के इम उतार चत्ताव म कम से कम एक लाभ अवश्य होता है। जब पानी इतना ऊंचा चढ़ जाता है और या अधिक वर्षों तक ऐसा ही बना रहता है तब आमपाय चलना तो निश्चय बटिन हो जाता है, पर यह जल पिछले चत्ताव के बाद किनारे पर उग आई भाडिया और पानी-चीड़, बेंग, मिदुर, एम्प आदि का नष्ट कर डालता है। जब जन उतरता है तब तो बिलकुल साफ और अवाध मिलता है। कई तालावा और उन सारी जल-श्रोता के विपरीत जिनमे प्रतिदिन ज्वार भाट आता है जल के पूनम रन्ने की अवस्था म भी इसका तट स्वच्छतम रहता है। मर घर के ठीक सामन पंद्रह फुट ऊंचे चीड़ के पेड़ों की, एक पक्ति थी। इसे जन ने एम नष्ट कर दिया जसेकि तीवर नीचे रखकर उल्लाह पेका हा, और इम प्रकार इनके बर्दाव का राक दिया। इन पक्ष के आगार से पता चलता है कि कितने वर्षों बाद जल इतना ऊंचा चढ़ा है। तालान इम उतार चढ़ाव के द्वारा अपन तट पर अपना अधिकार घोषित करना है और उन सुरुचकर माफ रखता है। पड़ अपना अधिकार समझकर तट पर नहीं उग सकते। ये तट, इम भीन के हाड हैं जिनपर लगी नहीं उग सकती। यह समय समय पर इन हाडा का चाटकर माफ कर रखा है। जब पानी चढ़ा हाता है तो मिदुर, सरपन और मेपल अपन तना से बड़ी मात्रा म लान रोग्य जडे घरनी म तीन या चार फुट ऊंचे तक पानी म चांग आर फना देते हैं जैसकि वे अपन का स्थिर रखने का प्रयत्न कर रहे हा। नीनवरी की भाडिया जो मागारणतया

वितकुल फल नहीं पत्नी इन परिस्थितियाँ म बढिया फलत द डालनी है ।

कुछ नागा वं निण य एक मुत्थी है कि तट पर पत्थर इतनी मुघडना म बस जड़ गए । घर नगर उ नागा म एक बिजली प्रमिद है । सबसे अधिक बड़ नागा न धके धराया है कि यह उहल अपनी जवानी म मुनी था । किंवदन्ती य है कि बहुत प्राचीन समय म एक बार जान्वासा लोग यहा की एक पहाड़ी पर, जो जाना म उतनी ही उंचे उठी थी चिन्ता पीव म्रय य ताताव धरती म धसा है एक सम्मनन कर रह थ । व्हाना के अनुसार उहल बहुत अदनीय आचरण किए । (जान्वागिमा पर गमा दोष रभी नही उगाया जा सका ।) जब वे इस प्रकार यस्त थ ता पहाड़ी अचानक बापी और नीचे धम गई । बाउन नाम की एक बुद्धिवा श गिफ वच पा और उमात्र नाम पर सरासर को यह नाम मिला । अनुमान किया गया है कि जय पहाटी बापी नो ये पत्थर मय धार से मुक्त आए और यह बलमान तट बन गया । कुछ भी श यह ता निदिष्ट है कि बहुत पहले कभी ताताय महा महा था और अब यह है । यह जान्वासा दन्तकथा मरे द्वारा पहन बना उल्लितान उग बढमान विवरण म भी रच समर रही बठनी । उस यद व स्पष्ट स्मति है कि अपना भाप जाना का उण्या तरर जब वह महा आया था तो उसने इस जगगाह स हनरी-आ भाप उठनी दगी थी और एक जून व वय का दन्तापूवक नीचे की तर सकत तरत गया था । तभी उसने निणय पर लिया था कि यहा एक कुआ गारा जाए । इन पत्थरा व सधरध मे घुना का विचार अभी तक यह है कि पहानिया पर नहरा की प्रतिक्रिया म ये यहा आ पाए यह बात वटिनार्द मे ही जवनी है । लखि में दगा है कि चारा जोर की पहा दिया दूमी प्रार व पयम म आवयजनक रूप स भरी हुई हैं । परात तालाष मे निवन्तम स्थित न की पत्थरी के दोना आर एक पत्थरा को नीवारा के रूप मे इकट्ठा पर लिया गया है । विषय बात ता य है कि तट जहा सवन अकि आरस्मि है वही पत्थर भी मत्रम अधि है । इगात्रिा चाह दुभायवग ही कहिा मरे निण यह वार् सम्प नहा र गया है । इन पत्थरो म तट का चिन्नेवान वी में पहचान गरता ह । यान यह नाम किसी मयन वा डेन अभी किसी मवेत्री वस्ती व नाम पर नही रता गया है । ता में मयभना हू इववा मून नाम 'यान' इन - निरा पाग और नीवार साची गर् है-मरावर होता ।

ताताय मर निण ता एक गुण-गुणिया कृशा था । वय म चार मीन

मरावर

इमरा जन उनता ही ठग रहता है जिनना कि वष भर खूब रहता है। मैं समझना हूँ इस अवधि में यह दम प्रलय का यदि सर्वोत्तम नहीं तो किसी भी अन्य जगत् में जिनना ही बर्णित तो जरूर जाता है। जाड़ा में हवा के प्रति उम्रुन जलायवा का जन हवा से सुरक्षित माना और कुआ की नुनना में अधिक ठग होता है। ६ मार्च, १८४६ के दिन इस तापमान का जन को मैन तीस पहर पांच बजे से तेज़र अगले दिन दोपहर तक अपन रोज़ के कमरे में रखा। उम्र गमय बमरे का तापमान ता मूय के छन पर कमवन के कारण ७० तक पहुँच बका था। लेकिन जल का तापमान ८०° रहा और यह गाव के छडे में ठग कुए में तत्काल सावि गए जल में एक अंग अग्रिम ठग था। उमी दिन धार्याग मित्र का ताप मान ४०° था। अवात् इसका जन अन्य सभी परागित जगत् में अग्रिम उल्ल था यद्यपि गर्मिया में दमका जन मवम ठग रहता है जबकि छिउन और गटे पानी के बाश्मूद बाहर का पानी इसमें नहीं मिलता। हमरा कारण इसकी गल पडन पर भी अन्य जगत् में जिनना गम नहीं होता। हमरा कारण इसकी गल राई है। मवमे गम मौमम में मैं बनुषा एक बाल्नी भर पानी अपन तत्काल में रग देता हूँ। बनु यह रान भर में टटा ले जाता है और यह ग्लि भर ठग रहता है। वग में पडाम के एक और मान में भी पानी ल खाना हूँ। एक मत्ताह रग रहन पर भी उमत्तायव। जल बसा ही रहता है जमकि अभी भरा गया हो और उमका स्वाद भी खराब नहीं होगा। कई किमी भी तापमान के स्तर पर यदि गर्मिया में गिविर नगाए ना मिफ रहता है और कि एक बाल्नी पानी कुछ घुट गहगाई में गिविर की छाया में रग छाटे। तब उम वष के प्रयोग की जरूरत नहीं पडेगी। बान्डन में ते एन पिकरन मछली मान पौष की पकड़ी गयी थी। एक अन्य मछली बडे वेग में रीन को खावनी ल गई। मछलिया उमे खूब नहीं मका इमतिग निचिल भाव में उमन उन आठ पौष अदाडा। इसके अनिर्वन पच और पट्ट मछलिया जिनमें कुछ दो-दो पौष का हागा, गान्द की भी अपका राज बहन चाँदी ब्राम और कुछ ईन भी जिनमें एक चार पौष की थी या पकड़ी गई थी। बजन ही मछली के पक का आधार होता है और इसीलिए यह बजन में मैन भार का विशेष उल्लेख किया है। जहाँ नर भर मुनवे में जाया है वम दलनी में इन मछलिया यहा पाई गई हैं। मुझे पाच इंच लम्बा एक छाँटीया मछली भी कुछ-कुछ पाई है जो दोना बाबुजा की आग में चाँदी के रग की थी और पीठ पर मे हरी थी।

यह कुछ-कुछ गान्तिवा (डेम) की तरह की थी। इसका उल्लेख मैंने प्रमुखतया इसीलिए किया है कि भर इस ययाय वणन में कहानी व तत्त्व भी मिल सकें। वैसे यह सरोवर मछलियाँ की दृष्टि से विशेष उबड़ नहीं है। बहुत अधिक नहीं पर पिकरल मछली ही यहाँ की प्रमुख उपज है। एक बार मैंने कम में कम तीन प्रकार की पिकरल मछलियाँ बफ पर पड़ा देखीं। पहले प्रकार की पिकरल लम्बा उथली पौनाद्वी रंग की थी। तमो मछलियाँ सत्रम अधिक ननियाँ में ही पकड़ी जाती हैं। दूसरे प्रकार का पिकरल चमकदार सुनहरा रंग की कुछ हरी आभा लिए हुए थी और जाइयजनक रूप से गहरी थी। साधारणतया यही यहाँ सत्रम अधिक मिलती है। तीसरी दूसरी के से आकार की और सुनहरा रंग की थी पर इनका बाजुआ पर छात्रे छाट गहरा भूरा अथवा काले घड़े पड़े हुए थे तथा थोड़े-से हलके रक्तवण व घाँव भी इनमें मिल थे। ये बहुत कुछ ट्राउट मछलियाँ जमाँ थी। रंगीक्यू नेटम यह विशेष नाम इनके लिए उपयुक्त नहीं ठहरना। इनका नाम तो स्पेन्सम होना चाहिए। ये सभी बहुत ठाम मछलियाँ हैं और अपन जाकार से अधिक भारी हैं। साइना पाउर और पच भी और इस सरावर में मिलनवाली सभी मछलियाँ नगी और दूसरे जगहों का मछलियाँ का अपेक्षा अधिक स्वच्छ सुंदर और ठाम सामकानी है और इन्हें अपन मछलियाँ से सरलतापूर्वक अलग किया जा सकता है। कारण यह है कि यहाँ का पाना अधिक साफ है। बहुत-से मत्स्य-विज्ञानिक इनमें से कुछ का दखकर गायब कई नई किस्मों की स्थापना कर सकें। यहाँ मड़गा और कछुआ की भी एक बड़ियाँ जाति वनमान है। कुछ गम्बुज भी यहाँ मिलते हैं। छछर और ठाँविलाव भी अपने चिह्न इसका आभास छाँ जान है। कभी-कभी घूमता फिरता काँई कीचड़ का कछुआ भी यहाँ आ निकलता है। कभी कभी जब मैं प्रातः ही अपनी नाव का ठलता, तो राम नर उमक नीच छिया पड़ा हुआ एक बड़ा कीचड़ का कछुआ निकलकर भागा। बत्तों और हम वमत और पनमड में यहाँ आगर आ जान है। सफ़ा पेटवाली अवादीले सरावर में जल का छूना हुई उठती है और टिटहियाँ गर्मी भर इससे पथराल विनारा पर भूना भूतता है। कभी-कभी पानी के ऊपर भूक मफेन चीठ पर बग काँई मछलीमार बाज मरे धान पर उड जाता है। पर पथर हैना की तरह चिन्नी न इस सरावर को गायन ही कभी अपवित्र किया हो। अधिा से अधिक वप में एक बार एक लून पग आता है। उत्तमनाय जीव-जन्तु य ही है जो आजकल इस सरोवर पर मिलन

हैं। यदि शान्त मौसम मनाव पर से देखें तो रतीने पूर्वी तट क पाम क मामा-य-तया आठ या दस फुट गहरे पानी म और तालाब के कुछ जोर हिस्सा मे भी, मुर्गी के अडा से भी लघ आकार के छोटे छोटे पत्थरा न छ फुट घ्यानवाले और एक फुट ऊंचे गोल ढेर पानी के अदर बने मिलते हैं। मगर यह कि वहा चारा आर रत के सिवाय कुछ भी नही हाना। पहन पहल देखकर आश्चर्य हाना है कि गायद आदिबामिया ने इह किमी मतलब स बफ पर बनाया होगा और बफ के पिघलन पर य णेर नीचे बैठ गए हाने। पर य इतन नियमित और इनम स कुछ स्पष्ट ही इतन ताजे हान हैं कि यह अनुमान ठाक नही लगना। य नदिया म मिलनवान ठरा जस ही हान हैं। लेकिन चूपक या तम्बू मछलिया ता यहा हाती नही। फिर किन मछलिया ने इह बनाया होगा। गायद य चीवी मछलिया क घामल हान हैं। य सब सरोवर क तल क एक मधुर रहस्य प्रदान कर देने हैं।

तट इतना काफी ऊबड़-खाबड़ है कि मन का उबड़ता नही। मैं अपन मन का आपा से गहरी ग्राडिया क कारण शतदार पश्चिमी तट का अधिक ठाम और ऊंच उत्तरी तट का और उम दक्खिणी तट का देख रहा हू जिसम बटे ही सुंदर घुमाव हैं और एक पर दूसरे जितन ही अन्तरीप बन गए हैं जिनक मय किनन ही अनदेखे लहू हैं। पहाडिया क बीच एक छानी भील—पहाडिया जिसक जल क किनारा म ही चारा जोर ऊपर उठ गई हैं ऐसी भील—क बीच म चारा और क बन की स्थिति जितनी अच्छी एव जितनी स्पष्ट रूपम सुंदर लगती है उतनी और कहा म नही लगती। कारण यह है कि गिमपर बन का अतिविश्व पड रहा है वह जलाशय इम स्थिति म बन के लिए उसरी सर्वोत्तम अग्रभूमि बन जाना है और उसका घुमावदार किनारा बन की प्राकृतिन जोर समुचिन सीमा का कान बना है। उम स्थल के सिवाय जहा कुन्हाही स बाद भाग माफ कर दिया गया है या कोई जेत जान निया गया है पर चित्र म न कोई अनगढ़पन क्षान्ता है और न ही अघरा पन। पडा का जन की आर फनन क लिए काफी अवसर हाना है और उनम म प्रत्यक अपनी सबसे पुष्ट गान्वा का उस ग्गि म फनाना है। लगना है जमे प्रकृति न एक स्वाभाविक गान् वुन गी हा। जाम किनार की छाटी भाडिया स आरम्भ करव उचित क्रम म सबसे ऊंचे पडा तक उठ जाता है। मनुष्य के हाया की काली गरी क बहुत ही कम बिहल यहा गीव पडत हैं। एक हजार बप पन्न की तरह ही आज भी सरोवर का जन किनारा को नयना रहा है।

बिसी भी प्राकृतिक लक्ष्य की सपस सुन्दर और अभियन्त विवेकता उसनी भील जाती है। भील घग्ती की आत्म है। इसमें भावनेवाला यकिन मानो अपनी ही प्रकृति की गहराई का नापना है। तट के निकट उगनेवाली वनस्पतिया इसपर पड़ी पलक का बाना की भावर ह और चांग और की बना टकी पहाडिया और टीले इसका भोह है।

मिनम्बर के एक गान दिन के तीसरे पहर सरावर की पर्वी सीमा पर सम तल रेतीन तट पर सडे हातर जबकि एक हलकी धुध के कारण सामन की तट रखा जम्पट हो गई हा सैन समभा हे कि भीन की गीन की तरह समकनी मतह यह उक्ति बन्ना म आई है। यकि आप सिन के बन सडे हाकर दंगे ता यह मत हवा मे उठनवाले मकड़ी के घडिया म बन्िया जान के उस एक धाग जमा प्रनी हागा जो घाती के आर पार बिच गया ना जा चीड के सुदूरस्थ बना के प्रतिपत्ता म चमन रहा हो और वायुमण्डल का एक तह का इसरी से जग बर रहा हा। आप गायन मोच उठे कि उमक नाच नीच चलकर सामन की पहाडिया तब मूले पहुचा जा मकता है और जवाबीले जो इसके ऊपर उड रही है गायन इसपर बठ भी सवता है। और मच ही कभी-कभी के जग का सतह के नीचे तक एम डुबकी लगा बठता है जम गाली कर बठी हा और उनका भ्रम निवारण हा जाता है। जभी आप सरावर पर पश्चिम की ओर नटिपान करते हैं आपका अपन लाना हाथ आया के ऊपर नगा लन पडन है क्याकि मूय और उमका प्रति बिम्ब दोना ही चमन रहे हात हैं और दाना ही समान रूप मे जगमगान हात हैं। यदि उन दाना म बीच म आप तन की मूढमतापूर्वक लप्ते तो वह गायन ही आपनी गीन जमा दीन पडगा। बस वही स्पन इसके अपवात है जहा स्क्वेर कीड घाधी घाधी दूरी पर पूरा मतह पर बिबर है और घपम अपनी हलचल म अकल्प नोप किम्म की लख बन्िया भ्रमक मतह पर पंजा करत हैं। कभी-कभी गप घतल अपन पस प जाती है जयवा जमाकि मैं बना चुका हू काई जवाबील इतनी गहरी डुबकी नगाली है कि पलो का छू जाए। बस एम जवमरा का छान्दर मतन गीन जमी ही गीन पगती है। कभी-कभी ऐसा हाता है कि कुछ दूर पर काई मद्धना तीन या चार फुट उठ गया म उद्वनकर एम गाय बनाता हुद फिर पानी म बून जाती है। जहा म यन निवचना है और फिर जहा डुबकी लगाना है दोना स्पन पर एम बिगता मो कीव उगती है। कभी-कभी ता गाना या पूरा वृत्त स्पन बन जाता

है। तापमान की वीना व राखें सतह पर उठने बार नरत रहते हैं और मछलियां उठें भयंकर जनम पुन लीन हो जाती हैं। सतह पिघलाकर ठंडे किए गए उन शीगे की तरफ प्रतीत होती है। ता अमी जमा नहीं है। जो कुछ घ व उमपर दीव पत्तन हैं वे माना शीगे के वनाव म जवरेपन जवे ही स्वच्छ और मुदर दीव पत्तन हैं। अक्सर एक अत्रिक् समतल और घुमला जल गप में अलग माफ दीव पटना है जमकि उम एक अदृश्य मक्की न जाने न अथवा जल पर विद्याम लेनवानो पलतरिया का छनी न जलग कर दिया है। किसी भी पहाडा की चाटी म आप तात व किसी भी भाग में मछलिया को उठाने दत्व मकत हैं। पिक्कल या गाइ-नर मरावर की गात और स्निग्ध सतह म कीजे पकडती हैं। यह मावारण मा तथ्य मछलिया द्वारा किया गया यह हवाकाण्ड, कितन विस्तार और विवर्ण व माय प्रकाशित होता है, यह बात वही ही अनाव नगनी है। अपन सुदृग्म्य घर में पानी म पही गोन भवरा न। जब व तीस गड व्यामवाली हानी हैं में भला भाति पहचान जता है। चीनाद भील की दूरी म जल का गान सतह पर निरंतर आग बनत हुए एक धाटर-बग मर का माफ दया जा सकता है क्याकि यह दा भुकी दुर्द गवाआ व बीच एक हनकी लीक-भी मीचता बनता है। स्वेटर की पत्र पर रेंगन हुए एसी लीक नहीं बनाना जा ताम मवे। लेकिन जब सतह काफी उडेलित हाना है तब न तमपर स्वेटर हान हैं न वाग्ग त्रग। गाल्ज त्रिना म ही किनारा व अपन आग घग म म यनिरनन हैं आर प्रमग म्क म्ककर वगमूवक बढ़कर पूरी सतह का नाव जात हैं। पनभ्रत वे किसी एर यडिपा त्रिज जब मूय की घुन वनुत प्यारी लगती है उच्चाई पर सडे किसी छठ पर तात की आर मुह करवे बैठता और आसग के और पटा के जल पर पटन प्रनिविमत्रा के कारण अथवा अक्षय सतह पर निरन्तर बनती जाती मत्ताकार भवरा का अव्ययन करना एक वन नी गान्निप्रम काम है। जब वे डम भागी फनाव पर काई एसी हनचन नहा ता नत्वाव ही धीम म उमी प्रकार गान न न जानी हा त्रिम प्रकार गागर की टुक्की तन पर कासनी दुर्ग नहरे तम म लीन हा जाती हैं और तभी त्रि मत्र त्रुद्र गाल्ज न जाता है। काई मछली फुलवाना नगी और कीन सतह पर गिगता नगा कि य मत्ताकार भवरे उसकी मूचना मव तन पटुवा नी हैं। य वत्त मा य का म्साए हैं य ताल के जनमाता व निरन्तर फन्त रहने की निगानिया हैं, य उसी नागी की फन्तने हैं आर उसर वर का उठने गिगता हैं। गान-द

और घन्ना दाना का मिहरना म कोई विभेद नहीं किया जा सकता। ताल बा
 द्य कितना गतिपूण है। मानव निर्मित वस्तुएँ तब दीप्तमान हैं। हर पत्ता
 टहनी पत्थर और गवडा का जाला इस तीसरे पहर व समय बस ही चमक रहा
 है जमेजि यस्त की मुसह य सब चीजे आम स उदक दमकती है। बछू की
 अथवा किसी चीजे की हर हरकत एक ज्योति स्फोट मा पदा करती है और जब
 बछू पानी पर गिरता है तो कितना मीठी गज निकलती है।
 मिनम्बर या अकनूर व एक दिन वाल्डन जंगल के बीच जडे शीगे जमा
 गता है। इसका चारा ॥र जब पत्थर मेरी जासा वो ता बस हो मूयवान गत
 हैं जमेजि य बहुत अमूल्य अथवा दुर्लभ है। ताल जितनी सुंदर विपुल और
 साथ ही इसकी बड़ी चीज घायद घरातन पर और मिल हो नहीं सकती। इसका
 चारा और किसी हृदय की जरूरत नहीं है। जातिपा जानी है और नली जाना
 है पर नम विवृत नहा कर पानी। यह वह दपण है जिस कोई पत्थर तोड़ नहीं
 सकता इसका पारा कभी उडेगा नहीं इसने मुनम्मे की प्रकृति निरंतर सवारती
 रहती है। बाई तूफान काइ धूल मिट्टी इसके सदा चमकनवान तल का धुंधला
 नाल कर सकत। हर प्रकार की अपवित्रता इस शींग म पड़कर डब रहती है।
 मूय की धूमिल पची उमकी यह प्रकाश किरणों की भाइन उमको सदा घनी
 पोछता रहती है। यह ताल विगावी साँसें अपन ऊपर टिकन नो देना बलि
 अपनी सामा का सतह स बहुत ऊपर बादल बनाकर भेज दा है और तब भी य
 बादल उमकी गोले म प्रतिबिम्बित होत रहते हैं।
 जल का यह क्षण पवन म निहित प्राणा का ही ता स्पाकार द रहा है। नव
 जीवा और हस्तत यह निम्नर ऊपर मे प्राण कर रहा है। प्रकृति की दृष्टि म
 यह धरती और आकाश के बीच की चीज है। धरती पर तो घात और पड़ ही
 मिनने हैं तबिन यत् तो हवा म पानी स्वयं बिग्न उगता है। पवन कहा इसका
 टकरा रहा है यह मैं प्रकाश की नकीरा अथवा उमकी नहर का दायर पहला
 मकता है। आत्मी हो बाल है कि हम नीच इसकी तनी तक को देख मकने
 बनन हम गाय पवन की तनी का भी इसी प्रकार दल मकने और मानुस
 मकने जि मूयमम प्राण उमम कहा निहित हैं।
 अकनूर व अन्तिम भाग म जब सख्य पाला पवन लगता है तब सख्य
 बाहर वग अन्तिम रूप से विवृत हो जाते हैं। तब और नवम्बर व जि

गात जिन म काई भी चीज सतह पर जरा भी हलचल पदा नहीं करती। नवम्बर के एक दिन दोपहर बाद की बात है। यद्यपि जावाझ पूरी तरह वादला में था या जोर हवा कुहर से भरी थी पर कई जिन की आधी-वर्षा के बाद एकदम शांति थी। उस समय मैंने देखा, तात आन्ध्रजनक रूप से गान्त जोर स्थिर या जोर उसकी सतह को पहचानना तक कठिन पड़ रहा था। अक्तूबर के चमकदार रंग की नहीं, चारा जोर की पहाड़िया की मसी प्रतिच्छाया ही पानी पर पड़ रही थी। यद्यपि मैं यथासम्भव मनु गति से ही सतह पर सँवह रहा था पर नाव में पन होनेवाले वस्तु जितनी दूर तक दृष्टि जाती थी फनते जा रहे थे और छायाओं की पसलिया जमा आकार प्रदान कर रहे थे। सतह पर कुछ दूर तक चलन पर यहाँ-वहाँ हनकी-सी दमक मुझे दीव पड़ी जैमकि पाने से वचे छुचे म्पेटर कीड़े बहा झुकट्टे हो गए हैं अथवा उन स्थला पर नीचे तली में फनते खोते ऊपर की शात सतह को विचलित कर रहे हैं। जब मैं धीमे धीमे खेकर बहा पहुँचा तो यह देगवर मुझे आन्ध्र जूआ कि पाच पाच इंच लम्बी तापे व रंग की हजारों छोटी छोटी पच मछलिया बहा हर पानी में बिलपाड कर रही थी। वे निरंतर सतह तर आती और उसमें भवर पैना फरती और कभी कभी ऊपर घुलबुल छोड़ जाती। ऐसे पारदर्शी और अवाह प्रतीत होनेवाले जल पर जिनपर वाता की प्रतिच्छाया पड़ रही थी लगता था जैसे मैं एक गुडवार में बैठा हूँ पर तर रत्न होऊँ। मछलिया का सँरना मुझे ऐसा लग रहा था जसकि वह एक प्रकार का सँना या महराना है और वे मछलिया न होकर पशिया व पने भुँ हैं जो मरे टीक नीचे में दायें या बायें शतर गुजर रहे हैं और बान्वाले जम उनके पर उनके चारा ओर फन हैं। इस प्रकार के कितने ही भुड तालाव में वनमान थे। इसमें पहन कि वष का भितमिनी सृष के विस्तृत प्रताप का उत तक पहुँचान से राक के इन कुछ जिन का भरपूर लाभ उठा रहे थे। कभी-कभी मछलिया व य समुद्र पना आमाग द जात जमकि हलक पवन ने सतह पर चान की है अथवा वर्षा की वने उसपर टपरी है। जब मैं सापरवाही स उनक पात पहुँचकर अचानक उन्हें चौंका जाता था व छप छप की जावाझ करने अपनी पछा में पमी नये उगाता तमकि किमी भाडानुमा टहनी में पानी पर जापात किया गया हो और तत्काल ही गहराइया में उलटकर छिप जाती। अंत में हवाए उठी कुहरा बड़ा और नहरों न नीना गुरू कर लिया।

अब पत्त मछलिया इन्हें की जगहा बहते ऊंची कन्ती पानी में आधी ऊपर उठ जाती और तीन चत्तलमत्र सबड़ा बाल धात्र सतह के ऊपर एवसाय उभर जाते । एक वर्ष ५ डिगम्बर के दिन मैंने मतह पर कुछ भस्त्र दस । हवा बुहर में भरी थी । मैंने समझा कि फौरन ही बड़े जोर की बया जातवाली है मैंने नीचे में चप्पू समाल और घर की ओर नात्र वनाई । यत्रिज अभी गाला पर बदा का मैंने तही भना था पर दर्पा बहुत तकी में बन्नी प्रतीत हानी थी और मैं पूरी तरह भोग जान की आगना कर रहा था । पर अचानक ही भस्त्र एक गाव बसा कि त्रजसत्र इह पत्त मछलियो न पदा किया था जा चप्पूना की आवाज स करकर गहराइयो में भाग गन् था । मैंने स्वयं उनसे मसूहा का विबुध होन लेखा । नात्रिज तीमर पहर का समय भस्त्र गूना हा गुडारना पडा ।

एक बड़ पुरष ने जो तगभग साठ वर्ष पठन इह नाखाव पर अकसर जाया करता था मुझ बलाया कि उन निना यह तात्र चारा और व बनाव कारण अकसा सा रहता था । कभी कभी बसगा और अन्य बसपनिया व कारण यहा बनी हत चल गयी जाती थी । बहुत-से गन् भी यहा आत य । वह बड़ यहा मछलिया पकडने आय करता था जो त्रजसत्र त्रिज तत्र पर पडी त्रजडी व त्रड्डा में बनी एक छोटी सी डाभी का प्रयोग किया करता था । यत्र डाभी का सफेद चाट के सट्टा का लावना करव और उह माय जात्रवर बनाई गई थी । गिरा पर म इह चौकार बाट दिया गया था । यह बनी भडी थी त्रकिन बहुत सारे वर्षों तत्र यह काम बनी रती और तत्र गायत्र पानी अर जान के कारण तली में बढ गई । यत्र त्रिमकी थी बड़ नहा जानता था । जमन में ता यह मरावर की थी । वह बड़ त्रिवरा की छाल व टुन्ना की तात्रवर बसात गाव तगर व त्रिज रम्मी बसा करता था । एक और बड़ में ता कुम्हार पा और त्रानि स पहात बसा रहा करता था उस बनाया था त्रि मरावर की तनी में एक लात्र की पती पना है । कभा-कभी यह त्रखर ऊपर आ जाती है पर जग ही आत्र इसकी जोर बने यह गहरे पानी में गायत्र हो जाती है । उस पुरानी डागा व बारे में मुनवर मुझ प्रगनना हुई थी त्रिमन गायत्र त्रिमो आत्रिवागी त्रानी का म्यात्र त्रिया हागा जा बनी ता त्रयो सामग्री स त्रानी पर अधिक जाकपत्र रती त्रगा । वह डाभी बहन पहात तट पर उगा व त्र हागा जो पानी में गिर गया हागा और तत्र पानी तत्र बहा नरता रहा हागा । इस मरावर के लिए यत्र सर्वोत्तम नाव थी । मुझ पात्र है अब मैंने पत्रनगहस इन गहराइया में भागा

था, तो मुझे दत्ता व किन्नर ही बड़े-बड़े तन तनी म पड़ दीस पड़ थे। य तन या तो कभी आधी न उल्टर पानी म गिर पड़े होंगे या नटाड व समय बर्फ पर छाट लिए गए होंगे क्याकि उन दिना नर ही मस्ती थी। पर जब व मय अधिराग लुप्त हो चुके हैं।

जब पहली बार मैं वाल्डन पर नाव खेई थी तो यह ऊंचे ऊंचे चौड़ और बलत व सघन जंगल म घिरा था। इसकी कुछ स्थलिया म अगूर की बलें जन व माथबाल पडा पर चट गई था और उन्होंने कुज बना लिए थे जिनम नाव प्रवाह कर जाती थी। सरोवर की नट स्थित पहाडिया इतनी सीधी और लडा हैं और उनपर लगे हुए जंगल इतने ऊंच हैं कि यदि पच्छिमी किनार मे दखा जाए तो ऐसा लगता है जमबि य किसी वय दृश्य का दखन व लिए बनी बठन की सीढिया हैं। जब मैं और भी छाना या तन में नाव का बीच म ल आकर जन पर पच्छिमी पवन के अनुबून बहता रहता था। गर्मिया व तीसरे पहर मर मैं सीढ पर उलटा लटा रत्ता और जागता हुआ भी मरना म उरा रहता। मैं तभी जागता जब मरी नाव नट की रन म टकराती और मैं य स्थान व लिए उठता कि मरा भाग्य मुझे किस तट पर छाट गया है। य स्थि व थे जय जानस्थ ही सबम जागपन और उत्पादक उद्यम प्रतीत होता था। स्थि व सबम मूयवान अग का इस प्रकार बितान व लिए मैं किन्नी ही बार लोहर म पड़न ही भाग निरन्तर हू। उन दिना मैं घन की दृष्टि म न मरी गर्मिया के दिना और धूप व घण्टा का तकर बहन घनी था और उह खुनकर स्पष्ट करता था। मुझे इस बात का खेद नहा है कि मैं अधिन समय किसी कागवान म या अध्यापक व पाम क्या नहीं बिताया। तकिन जब स मैं इन तन का छोडा है तबन्तारा न इहैं और भी उबाव बना डाना है। अब किन्नर ही वषों तक घन के अगन-बगल व रास्ता म बहा घमना फिरना और बीच-बीच म वास्पनिया व बीच म भावकर पानी की दखना सम्भव रही हा मरगा। जाग यदि मरी मरम्बनी मान ही रत्ता उमे दामा किया जाए। यदि उनव कुओं का काट डाना जाए तो मसा आप व न आगा कर सकन हैं कि पानी गाएग ?

तनी म पड़े पडा व तन, पुराना नटाड की डीपी और चारा आर व घन वन अब मय कुछ बीन चुगा है और गाववान नहान या जन पान व लिए ताताय तक जान व यान माच रह हैं कि कम स कम मगा जितन पविश उम जब का पादना द्वारा गाव तक र जाए और इसन जनन बनन घाए जाए। व टापी धुमाकर वा

एक दवाखर ही अपने बाँडन का पा लेना चाहते हैं। वह दानान सौह-अदव जिमकी काना को फाडनेवाणी हिन्हिहाङ्ग पूरे जिले म मुनी जाती है, जिसने याशनिंग स्त्रिय को अपने परा म गदला बना लिया है और जा वाल्डन तन् के जगला को नानखर न गया है। ट्रायगाला यह घाडा^१ जिमे भाउ के टटनू यूना लिया न बनाया था और जिमके पट म एन हजार आत्मीय। इस प्रयेग का घोडा वह मर हाल का मर बहा है जो डीपवट पर उमका सामना कर और इस पूना हुई महामारी की छाती म अपना प्रतिशान प्ररित भाला घुमड द।

जितने भा चरित्रा न परिचय में अतक पाया है उनम गायन वाल्डेन सर्वो तम है और इसन अपनी पवित्रता का अच्छी तरह सुरक्षित रखा है। जितने ही यक्षिया का उमक समकन रखा गया है पर उनम स बहुत कम ही इस सम्मान म पाय है। यद्यपि लकडहार न पहन इसका यह तट और फिर वह नट नगा कर लिया है और उहोने जीन आयरनडगाला ने उस लकडी स सूभरा के घाडा जसी अपनी भुगिया बना ली हैं रन की पटरी न इसकी सीमाया को भग पर डाला है और बफ माफ करनवाना ने नम बिनो लिया है पर यह अनन अपरिवर्तित ही है। इसमे वनी जल है जिस में अपने योवन म दगना था। जितना भी परिवर्तन आया है वह कम मुभम ही आया है। अपनी इसनी नहरा क बावजूद इसपर एक भी स्पादी भुर्गे नही पडी है। यह बिरयुता है और प्राचीनकाल की तरह ही आज भी में वना हावर अवाबोना का दुबकी नगान और मनन पर म कीड पकडने देख सकता ह। आज रा मूभ फिर यह प्रतीन हुआ जस पिछने बीस वर्षों स मैंने इसे नगमग प्रतिनि नही दखा है। वना यही ता है वह बाँडन जगला के बीच स्थित यह भीन जिम वनन यप पहन में खात्र निवान था। पिछन जाण म जिम तट पर का जगन काट लिया गया था वनन फिर उतने ही जाण म दूमरा जगल उगा था रन है। जा विचार तन उमर मन म उठ रहा था यही अन भी उठ रहा है। यह यही तरल हथ और आनन है जा स्वय इसने और इसन सप्टा के तिए है और गायन मर तिए भी है। यह निश्चय हा किमी ऐसे बीर पुण्य का काम है जिमम छन नहीं था। उसन अपन हाथ म इस जन की गानाई दी, इसे गहरा

१ ट्राय नगर को जस इराया न जा सका तस शत्रु ने एक बिरान घोडा बनाया जिमके पट में एक हजार शत्रु मैत्रिक दिन गण। घोड़े को नगर के द्वार के साम छोड़ दिया गया। आन्धान उगे चन्द ले गए। शत्रु को शत्रु ने बाग लगाकर नगर बना दिया।

बनाया और दम विचारा में साफ किया और इस सरोवर का कानकाड के नाम वसीयत कर गया। मैं हमने चेहरे से पहचान सकना हू कि उसीकी प्रतिच्छाया इसपर पड़ा करती है और मैं लगभग कह सकता हू, ओ वाल्डेन, क्या यह तुम हो ?

‘ किसी पत्नी को गोमित करने
का सपना मैं नहीं देखता
वाल्डेन के मैं निकट निकटतर
ईसा स्वर्ग का आनन्द भूंगा
मैं इसका पयरीला तट हू
और पवन जा इसपर बहनी
मर हाथा की मुट्ठी में
इसका जल है और रणु है।
और गहनतम तल का हमने
मन में ऊचा स्थान मिला है।’

रस के दिव्य इसे देखने के लिए कभी नहीं रुक फिर भी मैं समझता हू इजानियर, फायरमैन और ब्रेकमन आदि भीमम भर का टिकट रखनेवाला यानी दम बहूषा देने हैं और उनसे लिए यह दूध दखना सवाधिक उपयोगी भी है। इजी नियर रान में कभी नहीं भूलता अथवा उसकी अन्त प्रकृति नहीं भूलती कि कम में कम दिन में एक बार उसमें शान्ति और पवित्रता का ऐसा दृश्य दखा है। चाहे एक बार ही क्या न दखा हो, वह स्टेट स्टीट की ओर इज्जन का कालिब को घा डालने में महामय होगा है। किसीन प्रस्ताव रखा है कि इस ‘भगवद्विबट्ट’ बहा जाए।

मैं ऊपर कहा है कि वाटन में जल के आगमन और बहिर्गमन के लिए दम्य सोन काई नहीं दोष पड़ता। पर एक आर तो यह अस्पष्ट और अप्रत्यक्ष पिनण्टम सरोवर में सम्बद्ध है। पिनण्टम अधिक ऊचाई पर है और इन क्षणों के बीच छाटे-छाटे तालाबों की एक पूरी शृंखला पड़ती है। दूसरी ओर स्पष्ट और प्रत्यक्ष यह कानकाड नहीं स जुड़ा है। नती निचली सतह पर है और उस तल के माग में भी तालाबों की बनी ही कभी बनमान है। हो सकता है भूनाम

विज्ञान के अनुसार किसी अत्यन्त प्राचीन युग में यह शृंखला नटरूप में बही हो। भगवान की मनाही हूँ नहीं तो थोड़ी मो खर्चा के बाद यह कड़ी दुबारा पूरवत बह सकती है। इस प्रकार इतने लम्बे समय तक आत्मकेन्द्रित और समीप से रहने पर यह मगर इन वना व स्यामी जमा बन गया है और इसने एक अनाखी किण्वितता प्राप्त कर ली है। तब भला किस दुख न होगा यदि पिण्डस सरावर का अपभ्रष्ट जगुद्ध जन इसमें मिल जाए अथवा इसे समुद्र की लहरों में मिलकर अपने माधुर्य को गवा दना पड़े ?

निम्न में स्थित पिण्डस सरोवर अथवा सड़ी (रतीला) ताल हमारी समस्त बड़ी भीत है। यह धरती में घिरा एक समुद्र है और बाल्य में लगभग एक मील पूर्व में है। यह काफी बड़ा है। इसका क्षेत्रफल लगभग एक मील सत्तानवे एकड़ बताया जाता है। मछलियों की नष्टि से भी यह बहुत उबर है पर यह अपभ्रष्ट कम गहरा है और उतना आश्चर्यजनक रूप में शुद्ध भी नहीं है। मैं वना का पार करके बहुधा मनोरंजन के लिए उसी ओर जाया करता था। यहाँ इसके लिए उपयुक्त है। वहाँ हवा का जपन गाला में स्वच्छ भाव से टकराना आपस में और लहरों की दौड़ का दल और नाविकों का जीवन का याद करें। पतझड़ के दिनों में जब तब हवा चलती है चसन्द नट चट्टे करने के लिए मैं वहाँ जाया करता था। चसन्द पानी में गिरकर और बहकर भर परो व पाम आ जात थे। एक दिन जब मैं इसमें दलदली तट पर चल रहा था और ताजी फुहारें भर चेहर पर पड़ रही थी तब एक नाव का अजर अवशेष के पाम में आ निकला। नाव के दोनों पाम नष्ट हो चुके थे। इसका चपट तल का छाप-सी ही कटिनाई से वहाँ नागरमाथे व पीछा व बीच बधी थी। फिर भी हमका आकार एकदम स्पष्ट रूप में पहचान पड़ता था कि जसकि यह एक बड़ा पाया है जो गलकर मिट्टी में मिला हुआ है पर जिसकी नसें अभी तक मिट्टी में साफ उभरी हैं। समुद्र-तट पर जस अवशेष की कल्पना की जा सकती है वसा हा प्रभावशाली यह भी था और इसमें भी उतनी ही गम्भीर निम्ना मितता थी। तालाब का यह तट अब वनस्पति में ढकी एक उभरी भूमि मात्र रह गया है और इस तट का रूप में पहचाना मात्र की जा सकता है। नागरमाथ और मोती घास के पीछे इन पर उग आए हैं। इस तालाब की उत्तरी सीमा में गनीली तली पर पड़े जहाँ व चिह्न मुझे बड़े अच्छे लगते थे। पानी का दबाव के कारण किसी भी चलनवात का

परा को य चिह्न जमे हुए और नख लगा करन थे। इन चिह्नों का अनुसंधान ही आदिवासियों की मापति में एक बं पीछे एक नहरान हुए नागरमाये एम जग जाए न जसे सहरान न ही उन्हें वहा बाया हा। वहा मभे गायद पाइपवट की बटिया घाम अयवा जडो स बनी अजीब-भी गेदे भी काफी बड़ी मल्ल्याम देखने का मिली। इनका व्यास आधे इंच से लेकर चार इंच तक का होता था, और ये पूरी तरह गोल हानी थी। ये छिद्र पानी में रतीनी तलो पर चहकर आनी और चली जाती थी और बम्बी-बम्बी किनारे पर भी फेंक दी जाती थी। ये या तो ठोस घास होनी थी या इनके बीच में घाहो-भी रेत भी हानी थी। पढ़ने-पढ़ने आप यही कहते कि मान पत्थरा की तरह इन्हें भी सहरान ही बनाया है। किन्तु आप इस सम्बन्ध में मजबूत होते भी एक जैसी ही घटिया सामग्री से बन हैं और वे वष की एक विशेष श्रुति में ही बनते हैं। फिर मैं समझता हूँ कि लहरें इतना बनाती नही जितना एक चीन का जो स्थिरता प्राप्त कर चुकी है जजर करती हैं। गेदा न अपना यह आकार अति स्थित समय तक सूखे रहकर ही प्राप्त किया होगा।

पिल्लटम मरोवर। हमारे पास नामों की बड़ी दक्षिण, किन्तु अधिक है। उस गङ्गा और जटबुद्धि किनारे जो जिनका सेत इस स्वर्गीय मरोवर में सटा हुआ और जिनमें निम्नतापूर्वक इसमें तलाव का नगा बना दिया है वहाँ अधिकार था कि वह अपना नाम इस तालाब को दे। पहले की बात से पकड़नवाला एक बज्जूम जा एन गालर की अथवा मेंट की चमकदार मगह का अधिक पसन्द करता है क्योंकि उसमें यह अपने पील चेहरे को देख सकता है जो ताल पर रहनेवाली जगली बत्तवा को भी बसान घुम आइ मान सकता है। ऐसा कि म मुख और गरीरवान और पानी में से पर और पजावाले एक बाल्यनित दंत्य के तरीक में परहन की लम्बी आदन के कारण जिनका उगलिया टनी और पजा जमी बन गई हैं। उस किमान के नाम पर इस तालाब का नाम पडा और मेर नाम पर नहीं। जिनमें इन बम्बी दन्ता नहीं जो इसमें बम्बी नगमानही जिनमें बम्बी इन्ने प्यारने जिया इसकी गन्ना नही की, जिसने बम्बी इसमें प्रति अच्छे शब्द नहीं बान और इसमें निमाण पर भगवान का मयवाद नहीं दिया। उस व्यक्ति का दमन या उसकी बातें सुनने में तालाब पर नहीं जाता। अच्छा होता यदि इसमें तरनवाली मछलियों के नाम पर इसपर आवाये जगली पत्तिया या चीराया ब नाम पर, इसमें किनारा पर उगनवान जगली फूला ब नाम पर अथवा किसी वय मानन या बच्चे ब नाम पर जिनका

जीवन का सून इसके इतिहास के साथ गया हुआ है, उसका नाम रख दिया जाता। उसने नाम पर नहीं जा अधिकार के रूप में वम एक जलालती कागज लिखा सरता है जिसे उम जसे ही दिमागवाले किसी पडोसी अथवा विधिवेत्ता न दिया होगा उसका नाम पर नहीं जा केवल पसे की भाषा में साक्ष्यता है जिसकी उपस्थिति मात्र में तट अभिषिक्त हो जाता है जिसने चारों ओर की भूमि का नगा कर डाला है, जो सहज हमारे सारे पानी का मुखा सकता है जिस इमी बाल का दुःख है कि यह अग्नेजी घाम का खेत या बम्सवदरी का क्षम नहीं है — जिसकी दृष्टि में हम तालाब को प्राप्त करने का कोई लाभ ही नहीं है — जो इसे सुखाने उसकी तली के बीचों-बीच चाल सकता है। यह सरावर उमकी मशीन नहीं चला सकता और इसका दगन में यह गौरव का अनुभव नहीं करता। मैं उसके श्रम का सम्मान नहीं करता, मैं उससे उस खेत का भी सम्मान नहीं करता जहाँ की हर वस्तु कीमत रखती है। सम्भव हो सके तो किसान खेत की प्राकृतिक मुपमा का और अपने भगवान का भी ल जाकर बाजार में बजा कर दे और उसमें कुछ उठा सन ता उठा ले जो अपन तयारयित भगवान का पान के लिए बाजार जाता है जिसके खेत में स कोई चीज मुपन नहीं मिल सकती जिसके खेत फसल नहीं घास के मदान फल नहीं, पड फन नहीं बस टालर पन करते हैं जो फला की सुन्दरता से प्रम नहीं करता जो फला को सब तक पका हुआ नहीं मानता जब तक के डावरा में परिवर्तित न हो जाए। मुक्त हो वह गरीबी दो जो सच्चे बभ्रव का उपभोग करती है। मेरी दृष्टि में किसान उन ही अनुपात में सम्माननीय और रोचक है जितने अनुपात में कि वह गरीब है गरीब किसान ! एक आदश फाम बही है जहाँ घर कूड़े ऋचर के बीच घर कुकुरमने की तरह खाना हो मनुष्या छोडा, बन्ता और मुअरा के साफ और गद सनी वन एक-दूसरे से मने हा और आत्मियास ठमा टम भर हा। काम खर्ची में मना एक विनाल क्षेत्र होना चाहिए जिसमें मे खाद दूध और मकानन की गंध एसाय उठ। कृषि के उच्चस्तर के अतगत जहाँ लोग के जिन और दिमागा की खाद डाली जाए। जैसेकि आप गिरजाघर के आगन में आलू उगाना चाहते हा। आत्म फाम ऐसा होता है।

नही, नही, यदि और प्राकृतिक दया के सर्वोत्तम जग के नाम मनुष्य के नामा पर ही रखने को उम्मीद है तो वे थपलम और यापनम पुष्प ही हान चाहिए। हमारे सरोवरों के मूम वम स वम आर्दरियन सागर जस सच्च नामा

पर गये जाने चाहिए। इस मामले के तट में आज भी एक बीर कृत्य की प्रति-
ध्वनि उठा भरती है।

गूढ़ मरोवर छोटा सा है और वह प्लिण्म मरोवर के भाग में पड़ता है।
फेयर हैवन बानकाड नदी का ही एक बड़ाव है। इसका क्षेत्रफल लगभग मत्त
एक बताया जाता है और यह दक्षिण पश्चिम की ओर एक मील पर है। लगभग
पालीम एकड का हाइट मरोवर फेयर हैवन से डेढ़ मील आगे है। ऐसा है मरा
यह भीना का देश। बानकाड नदी और यं सब मेरे जन स्रोत हैं। दिन और रात
वष पर वष जमा भी गलना मैं इनके पाम न जाता हूँ उसे ही यं पीम डालते हैं।

लकड़हारो न रेन बी पटरा न और मैंने स्थय भी वाल्डेन को तो दूषित कर
हाना है, पर यह हमारे इन मरोवरा में सबसे सुंदर नहीं तो सबसे आकर्षक सरो-
वर है—जगनों की मणि ग्लाइट सरोवर। चाहे यह नाम इसके तल की आश्चर्य
जनक विस्तृता के कारण दिया गया हो या इसके तल के रंग के कारण यह नाम है
साधारण और हल्का ही। यह और वाल्डेन इनमें समान हैं कि आप कहें कि
अवश्य ही भूगर्भ में कहीं यं परस्पर सम्बद्ध हैं। इसका तट भी वसा ही पथरीला है
और इसके तल का रंग भी वाल्डेन जसा ही है। अत्यधिक गर्मी को ऋतु में जब
हम जगला में से इसका गाडिया पर दृष्टिपान करते हैं उन गाडिया पर जो बहुत
गहरी नहीं हैं और जिनके तल की छाया मनह को रंगती रहती है तो इसका पानी
धुंधल नीले-हरे अथवा मधुनीन रंग का गीमना है। बहुत वर्षों पहले रंगमान
बागज बनाने के लिए गाडिया भर रेत इकट्ठा करने के लिए मैं वहां जाया करता
था। उमक बाद मैं वहां जाता मैं बराबर जारी रखा। वहां तान रहनेवाले एक
व्यक्ति ने प्रस्ताव रखा है कि इसका नाम वाइग्निड (हरी) भाल रंग दिया जाय।
यदि निर्धन घटना को दम्यें तो इसका नाम गायन पीव चीन्वात्सा गगनर हाना
चाहिए। लगभग पन्ध्र वर्ष पन्ध्र नए में कुछ गड आगे गहरे पानी में पड़े एक
चौड का गिनर का सत में कुछ ऊपर उठा हुआ आप दम्य मनन थे। यह चीन्
एक विनाप जाति का था जिसे यहां पाना चौड कहा जाता है और यह एकलम
अलग जाति का नहीं है। कुछ नागा का अनुमान था कि जंगल तानाव खाग गया
यं वंग उम जंगल का एक पड था जो इस स्थान पर खज था। मुझ पना लता है
कि बहुत पहले गन् १७६० में बानकाड प्रान्त का एक मानचित्रांकक वणन इसी

एक नागरिक न भासासचुटम की ऐतिहासिक सस्या के मथहा के लिए तयार किया था। वाल्मन और व्हाइट सरावरों के विषय में बताने के बाद लखव लिखता है—जब जल कम होना है उस समय व्हाइट सरावर के मध्य में एक वक्ष को देखा जा सकता है। लगता है जहाँ यह इस समय खड़ा है वही यह उगा भी था। इसकी जड़ें सतह के जल से पचास फुट नीचे हैं। इसका गिखर टूटा हुआ है और उस स्थान पर इसका व्यास चौन्ह इंच है। १८४८ के वसन्त में सड़गरी स्थित इस तालाब के निपटलम रहनवाले एक व्यक्ति में मैंने बातचीत की थी। उसने बताया था कि दस या पंद्रह वर्ष पहले उसीन इस पड़ को बाहर निकलवा लिया था। जहाँ तब उसे पाद था यह पेड़ तट में माठ या पचहत्तर गज दूर तीस अथवा चालीस फुट गहरा पानी में खड़ा था। बाढ़ के दिन से और यह दोपहर से पूर्व तक निकलवा रहा था। तभी उसने निश्चय किया कि पडासिया की सहायता से नीगर पहर इस प्राचीन पोने चीट के पड़ को बाहर निकलवा लिया जाए। उसने एक को काटकर किनारे तक एक माग बनाया और बत्ता की महायता में उसे ऊपर खींचकर उस माग में से बाहर निकाल लिया। अभी वह उस पूरी तरह निकाल भी न पाया था कि यह दमकर उस आश्चर्य हुआ कि पेड़ पानी में उल्टा खड़ा था। तब ऊपर था और गायगाआ के ठठ नीचे। ऊपर का अन्तिम भाग रेतीली तली में गहरा घसा हुआ था। पड़ तब पर लगभग एक फुट के व्यास का था। उसने जाना की थी कि इसमें में बहुत बन्धिया तल्ले खीर जा सकेंगे। तबिन यह इतना गना हुआ, निक्ता कि बचन जलान के काम ही आ सकता था। उसका कुछ भाग तब तब भी उसका मायबान में पड़ा था। उसने तब पर कुल्हाड़ी के और कठ फाटना की चाचा के चिह्न थे। उसका विचार था कि तट पर यह बग उल्टा हुआ पना होगा। अतः में जाधी के जार में यह तानार में जा गिरा होगा। इसका ऊपर का निरा जत्र पानी में फनकर भारी हो गया होगा तब भी नना सूता और खड़ा रहा होगा। तब यह निर्य बल नीचे बठ गया होगा। उसका पिता जो जम्मी बप का था यह स्मरण नहीं कर सका कि बत्र यह बग बहा नहीं था। कुछ पारपत्र जोर बडे नरडी के कुन् जत्र भी तत्रो में पत्र देसे जा सकन हैं। सतह की तत्रा के कारण ये पत्र प्रनीन हान हैं जमवि बटुन बड बत्र साप दौड रहे हैं।

इस गरीबर का जिता नार न बटुन कम दूविन किया है क्योंकि मधियादे के लिए यहा बहुत कम आकषण है। मफद निनी का उगा के लिए कीचड की

जन्मरत जानी है इसक अथवा साधारण मीठे पनग क बदल तट क साथ-साथ पथरानी तली म नीला पनग हो यग क गढ़ पानी म उगता है । जून क महीन म हमिंग बग इनपर जाती हैं । इनके नीलाभ पत्ते और इनके फूला दाना का ही रंग और विशेषकर इनके प्रतिबिम्ब का रंग मधनील जन म अनाथा साम्य रखता है । बगान्त सरोवर और बाल्मिक प्रकाश की भीलें हैं । य विशाल बिल्लौरा का तरह घरातन पर जड़े हैं । यदि इह स्थायी रूप म जमा दिया जाए और य न्तन छट्ट हा मक्के कि पकड़े जा मक्के ता निश्चय ही गुलाम इह हीरे समझकर मन्नाटा के मुकुटा के लिए ले जाए । लेकिन य तरन है और बिगल हैं और हमारी सन्ताना के लिए य मग मग क लिए सुरक्षित हैं । इसीलिए तो हम इनका अनादर करन हैं और किसी कान्तर क पीछे भागते हैं । य इनन पवित्र हैं नि बाजार म इनका मूल्य नहीं गगाया जा सकना । बडा-बचरा इनम बिल्कुल नहीं है । हमार जीवन म भी कितन अधिक सुन्दर य हैं और हमार चरित्रा स भी कितने अधिक पारंगी हैं । किमान य बाग के सामन की तनैया की अपना जिमम बतगें तरती हैं य मरावर कितने अधिन साफ हैं । यहा भाष जगनी बतग मित्रती हैं । काई मानव एमा नहीं है जा प्रकृति क मौन्य का आदर कर मके । बसगिया गगाए पन्नी और उनकी म्वर लहरिया फूला क साथ समन और एकम्वर हैं लेकिन कौनमा युवक अथवा युवती है जा प्रकृति की प्रचुर बग सुन्दरता की तुलना म ठहर सक । प्रकृति निगान्त जकेना हा पनपनी है नगरा म रहनवाले गगा स बहन दूग । स्वग की बानें करके आप धरती का अपमान करन हैं ।

बैकर फार्म

कभी कभी मैं घूमता घूमता चीड़ व कुजा की तरफ निकल जाता। लहराती दह निया म सुमजित य चीड़ प्रकाश मे ओन प्रोत एमे लगते थे जैसेकि ये मदिरा के गिराए हा अथवा समुद्र पर कोई जहाजी बड़ा मड़ा हा। ये तने कोमल हरे और छायादार थे कि डूइडम^१ न बनूत के वसा को छाड़कर इनम पूजन करना आरम्भ कर लिया होता। पिन्गस मरोधर म परे दियार के जगला तब भी मैं पहुच जाता जहा दबत नील धरिया स^२ के पड ठचे म ठचे उठते जाते थे और बल्हाल के समथ एडे होन के उपयुक्त थे और जहा धूपचंदन की भाडिया फला म भर गनरा की तरह धरती को दफ देती हा। अथवा उन दलाली प्रदशा की तरफ मैं चला जाता जहा सफे भाऊ क पडा म उस्निया जाति की शिलाबल्का बन्नवार की तरह लटकी हो और दनदल के दबताभा के निण गोलमडा का पाम दनवाले कुकुरमुत धरती को ढके हा और तितलिया अथवा मीपा की तरह दानस्पतिक घाघ सुंदर खुम्बिया ढडा की सुमजित किए हों जहा स्वाप्प पिव और ढागवड उग हा। गान आन्डरनेरी पिहिया की आखो की तरह चमक रही हा जहा बकगवच कायू मे आई गहन म मस्त नकडी म नानिया बना देता है और उस कुचन डारता है जहा जगमी हासागरिया की सुन्दरता का दखकर दान अपना घर भूत जाता है और जहा किने हा जय जनाम और वजित जगली फन जो मर्त्यो क सिण जास्वाय नहीं हो मनेन उस चकाचौध कर एन हैं और वह उनकी आर वार्त्तपिन हो उठता है। किसी विद्वान क पाम जाने के बल मैं इन विनेप प्रकार क वसा का तमन चला जाता हू जो पाम-मडाम म दुनभ हैं, जो दूर किसी चराताह क दान या किसी दनन या जगल क मछ अथवा किसी पन्डा की चाटा पर हा मद मिलन हैं उन्तरण क निण बाना भोजन इ तिमक दा पुत्र योगवान बुध

१ प्राचीन क वर्ण के पुरोहित

वदिया नमून हमार यहा है। इसका भाई पीना भोज, जो दोली मुनहरी पाताक पहनता है और जिसमें म काले भोज की सी ही गुणव जाती है, करज, जिसका मुन्तरतापूर्वक लिचन से चिनिन हर प्रकार से पूण तना बडा ही माफ होता है। इसके कुछ दिखरे छिनरे नमूनों के सिवाय अच्छे ऊचे पना के सिफ एक छाटे-स भुड को हा में जानना हू जा इस प्रदंग म बच रहा है और जिसके बारे में यह कहा जाता है कि इन्हें उन बबूनों ने चोपा था जा एक बार पाम के ही बीच-नटा के सोम म फम गए थे। इसको लकड़ी को तोटा जाए तो इसके बीच का चानी की तरफ चमकनवाला अंग दखन ही योग्य जाना है। इसके अतिरिक्त वाम, हानवीम कटिम आस्पाडेणलिय अयवा कृत्रिम देवदार जिसका केवल एक ही अच्ग उगा हुआ पद हमारे यहा है। चोडक कुछ अधिक ऊचे वन, एक शिगल का पट अयवा साधारण म अधिक बढिया विपगद्धर जो जगल के बीच बौद्ध पगाडे की तरह खडा है और एस कितन ही अय वला के नाम में ल सकता हू। मदी-गमा इन्ही वदिया क दान के लिए मैं पहुंचा करता था।

एक बार एसा हुआ कि मैं एग इद्रघनुप के ठीक नीचे खडा था। यह इद्र घनुप वायुमण्डल की निचली पत म बनमान था और चारा ओर की घाम और पत्ता का ऐस रंग रंग था कि य सब मुझे अमे चकाचौंध किए डालता थे जमेकि मैं गीन गीसा मसे दख रहा हाऊ। इद्रघनुप के प्रकाश का एक भील भी बन गई थी और कुछ देर के लिए मैं उसम पढी डातफिन मछली बन गया था। यदि यह प्रकाश अधिक देर तक रहता ता गायन मर कायों जीर मर जीवन की भी रंग नेता। जय मैं रेल की पटरी के साथ साथ बनी पगन्डी पर चलता था ता अपनी छाया क चारा ओर एक ज्योति-वन् दखकर आश्चर्य म पट जाता था। यह अपने विपय व्यक्ति हान का भ्रम मुझम पन्न करता था। एक आत्मी न घोषणा की थी कि जयारलडवाला की छाया के चांग ओर एसा ज्योतिवन् नही बनता। गमा ता यन् क निवामिया और उनम स भी कुछ विगिष्ट लागे क साथ ही जाना है। वनवनुता मलिनी अपन मस्मग्णा मलिनता है कि जब वह से एतेला क दुग म यानी था तब उसे एक भयानक मपना दोस्ता जयवा किमीन उस दशन दिए और उसके वा म प्रात और माय उसके सिर की छाया के चारा ओर एक चमकदार ज्योति वन गाय पन्न गया। वह इन्ना म हा या प्रास म एसा निम्न रह होता और जब पाम आम म गाती जाती ना यह वस्त विपय रूप म स्पष्ट नीव पडता।

मम्मवन वही अदय है जिसका मैन ऊपर झिंक विधा है जा प्रभात म विनोपनर दोख पन्ता है । एमा यद्यपि स्थायी रूप म हुआ करता है पर यह साधारणतया दोख नहीं पड़ता । इसलिए सेलिनी जम व्यक्ति की चपल कल्पना म इसका एक अधविश्राम बन जाना बहुत स्वाभाविक था । इसके अनिरिक्तन बह कहता है कि 'म उमने बहुत ही थोड़े लागा का दिखाया है । लेकिन नया व लाग वास्तव म ही प्रतिष्ठित नी है जा इस घात की चतना रखन है कि उह जरा भी प्रतिष्ठा मिली है ।

एक दिन तीसर पहर जगल म हाकर म मछलिया पकड़न के लिए फेयर हैवन की ओर चल गया । म साग मछी के अपन घटने हुए भार को बढ़ाना चाहता था । मरा माग मुझे बकर फाम व माय जु प्लेजेंट मीडो म से ल गया । इस स्थान व बार म एक बकि न सिखा है

आपका प्रवण एक मुहान छेत म होना है
जहा पला व कर्द सन पड खड हैं
एक ताजा थडिया साता है
जिसम मस्कवा बहती है
और पारे तमी अचल टाउट
कपटनी फिरती है ।'

बाडेन जान म पहने मन यही रहन की सोची थी । मन यहा सब ताड नह साने का लाघा जीर मस्बन और टाउट मछलिया का डराया था । एक तीसर पहर की बात है — उम प्रहर की जा बहुत लम्बा प्रतीत हुआ करता है जिसम बहुत-सी घटनाए घटन की सम्भावना रहती है जा हमारे प्राकृतिक जीवन का एक बहुत बडा भाग हाता है । जय म चला था तो उसका जाघा बीत चुका था । अचानक माग म चौदार पन्न लगी और मुझ एक चीड के पन्न व नीचे आध घट के लिए गटा हा जाना पडा । मन टपिया को अपन सिर पर मगा लिया और अपना सम्मान जा लिया और बहुत दर वाज जय पानी म सडी मरी जाघी ऊचाई जिननी लम्बा फिरन घाग पर मरी दष्टि गई तभी अचानक जोर व वाज धिर जा और शिखरी इनने जाराग कडन गयी जि म उसकी आवाज गुनन व मिवाय

और कुछ भी न कर सका। मन माँचा 'गुब्बू' के आकार की बिजली की इस दमक के द्वारा एक गरीब निशस्त्र महिला का उन्मात्कर स्वताया का सचमुच हो गव का अटुमव हुआ होगा। बहुत पान्थ हा एक मापटी थी जो सटक स लगभग आम मोल पर थी, लेकिन ताताव के बहुत निकट थी और बहुत समय में खानी पड़ी थी। म टमोका आर भागा

‘अपनी जायु व पूर दिया म
यहा कवि न उनाया था
इसा एक ठोडा मा घर
जा अर विनाश की ओर बर रहा है।

इस प्रकार की एक कहानी प्रसिद्ध है। लेकिन अब उनमें जानपीला नाम का एक भायराइवामी अपने कई बच्चा के साथ रहता था। सबसे बड़ा चौद चहरवाला बच्चा था जो काम में अपने पिता की सहायता करता था और अब उसका साथ साथ बया म बचन के लिए बौद्ध में से भागा चला आ रहा था। सबसे छोटा बच्चा किसी आहूगनी के १ भुगिया पड़े 'गुब्बू' के आकार के चेहरवाला था। वह अपने पिता के घुटन पर लगे बैठता था जबकि राजाआ के महल में बठा हा और अपने और बूढ़ के बीच में बने अपने घर में से आगल्लुव पर बनी उत्कटापूरा भक्ति जालता था। गिगु हान का लाम उस प्राप्ति था। जानसील का गरीब भुव मग बच्चा हान के बहन बह एक उच्चवर्ग की धनिम कनी या आर समार की आगा और उसका उत्तरी नभय था। इसके मिशाय गायन वह आर कुछ नती जानता था। बाहर बड़े द्वार की बर्षा झाड़ी की आगन बस्वन छ और इस सब हान के उस भाग के नीचे बठ रहा था सबसे कम चला था। पहल भी बहुत बार में बहा बठा था। यह परिवार जिस जगह में बसगरीरा जाया होगा उसमें बहुत म भी बहन पहन म में बहा बठता रहा है। जानपीला एक इमानदार परिश्रमी पगल्लु माधनहीन मोधा मादा जायमी था। उसका पनो भी एक बोर स्त्री थी और अपने ऊपर बूझ पर लगाता रिजने ही साथ पना मकनी थी। अपना बिकना गान बहान और गनी छानी लिए और एक हाथ में नाचू का म्यामी रूप में घाम वह सब भा माचनी थी कि एक दिन उनही मो दगा ममल आगयो। लेकिन यह बाद जगल बहा मा नहीं जीवन थे। भुगिया न ना बया ३ बचन के लिए

यहाँ आधय न लिया था और व परिवार के सदस्यों की तरह ही हमारे म चारों ओर अकड़ती घूम रही थी। मैं मोचता हूँ व इतनी मानवगत बन गई थी कि उन्हें भूना नहीं जा सकता था। व खड़ी होकर मरी गायों में भावती थी और भर जूत पर अपनी चाब चलाती था। इसी बीच महसूसामी न मुझे अपना कहानी बता डाली कि किस प्रकार वह एक पन्नामी किसान के लिए कठोर परिश्रम करके एक दलदला भूमि को ठीक कर रहा है और वह एक चरा गहवा फावड़े से खाद रहा है। इससे लिए उसे एक एकड़ पर दस डालर व उस भूमि का एक वषतक इस्तेमाल करने का अधिकार मिलेगा और आवश्यक खाद मिलेगी। उसका चौड़े मुहवाला ट्राटो का लड्डका प्रसन्नतापूर्वक उसके माय काम कर रहा है और नहीं जानता कि उसके पिता न कितना गलन सोना कर लिया है। मैं न अपना अनुभव बताकर उसकी मदद करती चाहती। मैं न उग बताया तुम मरे निकटतम पटामिया में स एक हो। मैं जो यहाँ मल्लसिया पकड़ने आया हूँ और एक जावारा जसा दीख पड़ता है तुम्हारी ही तरह अपना जीवन बसर कर रहा हूँ। मैं एक सुघर हलने और साफ घर में रहता हूँ। उसकी कीमत तुम्हारे इस तरह के वाणिज्यिक विराय में कठिनाई में ही अधिक होगी। चाह तो तुम भा एक या दो महीने के भीतर अपना मन्त्र स्वयं बनाकर गड़ा कर सकते हो। मैं चाय या काफी या मक्खन या दूध या गाय मास नहीं खाता और मुझे इन सबको पान के लिए थम नष्ट करना पड़ता। फिर जब मैं कठोर थम नहीं करता तो क्या खाता भी नहीं। अपने खान पर मुझे अनुत्त हा कम व्यय करना पड़ता है। तबिन क्याकि तुम न चाय काफी मक्खन दूध और मास का प्रयोग करना आरम्भ कर लिया है तुम्हें इनकी कीमत चरान के लिए अधिक बर्तार परिश्रम करना पड़ता है और इस प्रकार कुछ नारीरिक क्षणितता का पूरा करने लिए तुम्हें खाना भी खपादा पड़ता है। नग प्रकार यह मामला जिनका लम्बा है उतना ही चौड़ा भी है। अमन में यह लम्बे से चौड़ा ही अधिक है क्योंकि तुम अमल्लुष्ट हो और इस सौ में तुम न अपना जीवन नष्ट कर डाला है। फिर मा तमरीका खान में तुम न लाभ देखा क्याकि यहाँ तुम प्रति दिन चाय काफी और मास पा न हो। तबिन मक्खन अमराका बड़ा है जहाँ तुम ममा जीवन-गढ़ति अपना न सन्तन हो निगम इन सबके बिना भा तुम अपना नाम चना सता जहाँ सत्य तुम्हें गुनामा मुद्ध और अत्य असाध्यक सबों का भार उठाने के लिए बिना करने का प्रयास नष्ट करता। क्याकि मैं मने दान

उपयुक्त वस्तुओं का प्रयोग ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणाम है।—मैं जान
 कर उसमें गम्भीरता की तबत वह दागिनिक हा अथवा दाशनिक् बनना चाहता
 है। यदि मानव का आत्ममुक्ति का प्रयोग आरम्भ करत व फलस्वरूप धरती व
 ममता आगों का प्रयोग स्थिति में छाँदना पड़े तब भी मुझ प्रयत्न ही होगी।
 प्रत्यक्ष प्रयोग मस्कृति व निष्कृति सर्वोत्तम है यह जानन व लिए मानव का
 स्निग्ध पन्न की उद्गमन नही है। पर आयरन-बामिना की सम्पत्ति व लिए
 आनन्दक है कि व एक प्रकार का ननिक पावडा लेकर बटें। मैं उसे बनाया
 प्रयोग में इतना बड़ा श्रम करने व निष्कृति भारी नून और मजबूत कपड़े
 चाहिए जो व सब चली हो गए हैं जाएँ और पट जाएँगे। लेकिन मैं हल्के
 जून और बारीक कपड़े पहनता हूँ जिनकी कीमत आधी भी नहीं पड़ती। चाह
 तुम मानो कि मैं एक बड़े जादूगो व मे कपड़े पहन हूँ पर वान बैसी है नही और
 मैं एक या दो घण्टा में महारजन व तौर पर बिना श्रम के इनकी मछनिया पकड़
 मरना नू जा मर निष्कृति तब काफी हों और यदि मैं उह एक ही एक मछिया
 व गुडार् का पका व मुझे द जाए। यदि तुम और तुम्हारा परिवार माँसी म कह
 ना जाए तब महारजन व लिए ही गमिया म हकदारिया तान जा सकत हैं।—
 जान न मगर एक नम्बी श्रम छाँदी जो उसकी पना कूल्ह पर हाथ रखे धूरती
 गी। मुझे पता कि दाना माच रहे हैं कि क्या मनी उनका पास यह सब करन के
 लिए पयान्त पका और पयान्त हिमावी बुद्धि हा मकी। उनसे लिए तो ऐसा करना
 अनुमान म हा गजना करके चल दन जवा हा और व साथ-साथ ममम नहा पा रह
 थे कि दम तराफ म व कम निना लग पाएँगे। इसलिए मेरा अनुमान है कि व
 अभी तक अपने ही दम पर माहनुकक आवन जो रह हैं और उनका पूरा शक्ति
 लगाकर भुगवना भी कर रह हैं। पर उनका पाम जीवन व भागी भरकम म्मम्मा
 म प्रयोग-योग्य भाग बना लन और उन्हें पूरी तरह उखाड़ फेंकन की युक्ति नहा
 है। व आवन की दम हा तापरवाहा स ग्रहण करत हैं तबेकि भाड छेती की
 पक। व बहुत ही हानिप्रयोग से जूमन हैं। दुख का वान ह कि जॉनफील्ड बिना
 गाना व जूमन है और अनपन्न हा गहा है।

मैं उससे पूछा क्या तुम कभी मछनिया पकड़ना हा ? 'हा हा' जब
 तब लाल-लाल मैं बोली मछनिया पकड़ सता हूँ बगिया पच मछनिया। तुम चारा
 क्या प्रयोग करत हा ? 'मैं बोला म गानर पकड़ता हूँ और उन्हें लगाकर पच

फनाता हूँ। पर जागापूण चमकत हुए चहर से उमका पत्नी बाँन उठी, “जान अच्छा हो तुम अब आया। लेकिन जान असमजस भ रहा।

दोछारें रव गइ थी। पूव के जगला पर चमन आया इद्रधनुष सुहानी सध्या की आशा दिला रहा था। इसलिए मैं चत निया। जब मैं बाहर निरल जाया तो मैंने पीन को पानी मागा। उस घर को पूरा देख लन के लिए मैं हुए की तनी नी दय लना चाहता था। लेकिन वहा का तन छिड़ला था और उमम वाल और पन थे। रस्मी टन चुकी थी और डोन जगप्य था। इस बीच चूल्ह का एक बतन चुना गया पानी को साफ दिया गया और काफी मलाह मशविर और त्रिलम्ब के बाँ जल एक ही आत्मी का दिया गया। ठंडा करने के लिए और मिट्टी की तला म बिठा दन के लिए पानी का कुछ दर रखा नहीं जा सका था। मैं अपनी जाल बंद का कुलतापूवक मतम स रिचले पानी को खाचकर मैं मिट्टी को बचाया और आनिप्य के उस जल की जिनती लम्बी घट मैं खीच सकता था मैंने खाची। एने मामला म मैं नकचहा जसा व्यवहार नहीं करता।

बपा के बाद जब मैं उग आइरिंग के घर से चला और फिरन मछलिया पकडन की जल्मी म परित्यक्त घरागाहा कीबड भर गडो आर दलदला उजाड और जगली स्थता म म माग बनाता हुआ मरोवर की आर तजा म बढा ता एक पनब निग मैं भाच उठा कि भर लिए जिम स्वत और कालिज भेजा गया है यह सत्र घघा रिता सुच्छ है। लेकिन मैं पहाडीक डनान पर रक्षाय पश्चिम की आर दीप पडा। इद्रधनुष मरे कचे पर था और स्वच्छ हवा म तरकर आता हलकी टन टन की जावाड पना नहीं कहा म आतर मरे काना म गिम गई। मरा प्रना मुभमे बह उगी— दिना तिन दूर-दूर तक जाकर मछलिया पकडा और गिकार करो। और अधिक दूर जाओ और नि दाब भाव म घस्मा के किनारे और घरा के पास बिश्राम ना। बपन यौनन म अपने अष्टा की याद रखा। चिन्ताआ स मुक्क हाकर प्रभान म पन्न उठा और साहम के काम करो। दापहर ता तुम दूसरी भीला के तट पर पहुच जाओ और जहा भी रान पड जाए उस ही अपना घर समझ लो। इनग बर मगान नहीं है और ना यहा सन जा सकन है उनम उत्तम खल नहीं है। अपनी प्रवृति के अनुकूल इन दलदला और भाडिया की तरह जा कभी अग्रजी चाग नहीं बन गेगा उगा और बड़ा। बिजलियावा बन्वने दो। यदि व रिमान की फमना का हानि पट्टाणा है ता चिन्ता मन करा। तुम्हारे लिए दगदा धट मगन ता

नहा है। जब साग गाळिया और ठना की खान म भागत हैं तुम बादना व नाच आश्रय ला। जीवन निवाह तुम्हारा व्यवसाय नहीं तुम्हारा मनोरंजन न। भूमि का उपभोग करा पर उसका स्वामी मत बना। जाम्ब्या और उद्यम की कमी व कारण मनुष्य खरीदत, बचत और दामा की तरह जीवन निवाह करत वहीं व वहीं रह जान है।

‘आ बकर पाम !

प्राकृतिक दृश्य, निमका मवॉनम आ है

याही सी भानी घूप !

आमाद प्रमोद व लिए कोई भी तुम्हारा

रन-लादन में मट चरागाह की आर नहीं दीटना।

तुम किसीम बहम नहा करत

प्रना सु कनी घबराने नहीं

मोटी मोटी सड़ की गबरडीन पहन

तुम प्रथम क्षण जितन ही अब भी मना है

प्रम करनवाना आआ

घणा करनवाना आआ

पवित्र नाव व गिगु

और राय के गार्ड-फाक्त आआ

अपन पदमथा का

पहा की गाम्माआ में नटना दा !

रात्र पहन पर बगबर के मेन म अयवा गरी म नहा घ की प्रनिध्वनिआ मागा का पादा व रती गहनी है वे तुम स्त्राए घर सौट आत हैं। उनका आवन अटल रहता है क्योंकि व अपन की निश्चामा का बार-बार अपन फेफड़ा म भरत रहत हैं। प्रातः साय उनकी छायाए उनके दैनिक कर्मा म आग नव वर जाना हैं। म बलून दूर म साहसगू काय करत खतर भेवकर नदगाने काव नया अनुभव और नय सम्भार नवर प्रनिधि घर व पान आना चाहि।

मर तालाब नव पट्टवन म पत्र ना एक ननन प्रेरणा न जानपीन्ड का मन बन्द किया पा। उमन मध्या म पत्र ही काचर का मुन्द का काम छा दिया

था और वह बाहर निकल आया था। लेकिन वह बचारा दो चार ही मछलियां पकड़ पाया जबकि मैं भरपूर पकड़ रहा था। वह कहन लगा कि यह उमरा भाग्य है। लेकिन जब नाव में हमन परम्पर जगह बदल ली तो शायद भाग्य न भी जगह बदल सी। बचारा जानपील* । मेरा विश्वास है कि वह इस लम्बे को नहीं पड़ेगा नहा तो वह इससे लाभ उठा पाता। इस आदिम अवस्था आवागमन देश में किसी पुराने हेतु तरीके में जीवन जीने की सोचना पच मछलियां को दाइतर से पकड़ना जयावहारिक है भग ही कभी-कभी यह बढ़िया चारा मिल होता हो। उसका भाग्य उसके अपन हाथ में है फिर भी वह गरीब है। गरीब रहने के लिए ही वह पैदा हुआ है। आयरलैंड की गरीबी या गरीब खिन्गी को अपना 'आइम की दांगी' को और दलदली जीवन-स्थिति का समन उत्तराधिकार मपाया है। वह या उसके बच्चे इस दुनिया में तब तक उन्नति नहीं कर सकते जब तक उनके पीछे परागान दलालों में चयन के उपयुक्त पग का टलागिया* चपलें नहीं मिल जाती।

उच्चतर नियम

जब मैं पकड़ी हुई मछलियाँ लिए बास का अपना पाछे घिसकाना हुआ जगन में से हटकर घर लौट रहा था तब अघेरा हो चुका था। जवानन एक हिम मूषक का मैंत सामने से बचकर भागन दना। उस दवन ही जानी उन्नाम की एक अजीब-सी बिरक मैंन अपन अन्दर महसूस की और उस पकड़कर कच्चा चवा जान की तीव्र गालमा मुझमें उगीष्ट हा उठा। यह बात नहा कि मैं उस समय भूता था। मुझमें तो वह बनतापन ही जाग साग रहा था जिसका कि वह निममूषक स्वयं प्रतिनिधि था। जिन दिनों मैं मगवर पर रटा करता था उन दिन एक-एक बार बड़े अजीब उमाद का साथ अनभूमे गिवासी कुने की तरह किमा भी एम पशु की लाज में जिमे मैं कच्चा चवा डाव मक मैं जगना का नाप गया हू। मास का काई भी टुकड़ा उस समय भर लिए निरन्धाय न हाता। जगनी-पन का नयानक में भयानक दृश्य हमार इनन परिचित हा चुक हैं कि हम उन्ह गिनती में लग ही नहीं। मैंन अपन में ममी लागी की तरह एक जार ता एक उच्च-तर अथवा सयाकपिन प्राध्यात्मिक जीवन के प्रति भुकाव पाया है और दूसरी जार एक आन्मि और बनन जीवन की लाजसा भी मुझे अपन में लीक पड़ी है। मैं जाना का ही ममान रूप से सम्मान करना हू। मैं जगनी जीवन का सम्मन जीवन में कम प्यार नहीं करता। मछनी पकड़ने में जा बपता और सुमाहमिकता है व मुझ अभी तक इसकी जार प्रेरित करनी हैं। कभी-कना मुझे अच्छा लगता है कि मैं जीवन का हिय दृष्टि से दग और अपन निन का अधिक भाग जानवग की तरह बिगाऊ। प्रकृति से मरे म नित्यनम परिचय का श्रम गायद बचपन में ही मेर मछनी पकड़न और गिरार सेवन का गीत का है। एमे गीत बहुत आरम्भ में ही प्रकृति से हमारा परिचय करा दन हैं। उसमें हम रमा भी दन हैं। नहीं तो हम छाटी आयु में हमारी उससे बहुत हा कम जान-बहान हा पाण। मछियां गिवासी

नकहदार और जय लोग जा मदाना और जगला में ही अपना जीवन व्यतीत करने हैं और एक-दूसरे के साथ स्वयं भी प्रकृति के ही अंग बन जाते हैं अपने काम धंधा के मध्यांतरों में टटकर प्रकृति निराखण करते हैं। इसके लिए उनकी मानसिक स्थिति प्रकृति के पास मानसिक पहुँचनेवाले दासों की अवस्था की अपेक्षा अधिक अनुकूल होती है। प्रकृति उनके सामने स्वयं का माल देने में भ्रम नहीं करती। प्रेरी के मदाना का यानी स्वभावतः ही एक गिहारी मिमारी और बान्नाम्बिया नदिया के उद्गम स्थान का यानी गिहार का जात फसानेवाला और सेंट मेरी के भरना का घुमक्कड़ एक मछियारा जाना है। जो यकिन सिर्फ यानी है वह बामी और जधूरी बीज सीखता है और उस प्रामाणिक जहा माना जा सकता है। जब काननिक विवरण के माध्यम से उन सागा के व्यावहारिक अथवा अन्तःप्रेरणा में उपनयन पाने हम तक पहुँचता है तो हम उसमें अत्यधिक रुचि लेते हैं क्योंकि वही तो मछी मानवता है अर्थात् वही मानव के अनुभवा का मच्चा लेगा है।

व लाग गलती पर है जो यह कहते हैं कि एक जमरीकी के पास मनारजन के मापन बहुत कम हैं क्योंकि उसे सावजनिक छुट्टिया अधिक नहीं मिलती और अमरीका के घर और मच्छ इन्डवाला जिनसे खेत भी नहीं खेतने। कारण यह है कि यहाँ मछरी मारने और शिकार खेलने जैसे आदिम किन्तु निम्न मनारजना का स्थान प्यरिस्म के खेल अभी तक नहीं ले सके हैं। मर समयस्का में "यूइल" का दम और चौकट के बीच का हर लड़का चिन्तिया फसाने का जान अपने काम रगता था। गिहार करने और मछरी मारने के उसके क्षत्र किसी जधूरी गामन के गिहारक्षत्र की तरह सीमित और सरगित नहीं जान थे। क्या के क्षत्र में भी के अधिक असीम जाने थे। तो क्या आश्चर्य कि वह खेल के मदान में अधिक नहीं टकर पाता। लेकिन एक परिवर्तन जान जाता है जिसका कारण मानवता की वृद्धि नहीं गिहार के जानवरों की निरंतर बढ़ती कमी है। गिहारी ही गायन गिहार किय जानवाने पशुओं का सबसे बड़ा मित्र जाना है। मानवतावादी समाज भा हम बात के अपवाद नहीं है।

भाजन में विविधता जान के लिए भी कभी-कभी मैं तालाब में मछलिया पकड़ करता था। तभी मैं दर्जनगन उगी किम्ब की आवश्यकता में प्रेरित पाकर करता था जिसमें पश्चिमिनि जान आन्ति मछियारा न बना दिया होगा। हम

वर्ति व विरुद्ध कितनी भी मानवतावाणी दलीलें म द, वे सब कृत्रिम हैं। उनका सम्बन्ध मेरी भावनाओं से इतना नहीं जितना मेरी विचारणा से है। इस समय यह मन में सिर्फ मझरी पकड़न के बारे में ही बह रहा है। बहुत पहले से ही चिड़ीमारी व सम्बन्ध में मेरे विचार इसमें भिन्न रह रहे हैं और वन निवास व विरिज जान में पहन ही मैंने अपनी बन्दूक बेच ली थी। यह नहीं कि मैं दूसरा की अपेक्षा कम मानवाय व बल्कि यह कि मझरी पकड़न का अपनी भावनाओं पर विशेष प्रभाव पड़ता मैंने अभी नहीं देखा। मछलिया या कीड़ा के प्रति मेरे मन में कभी भी दया का भाव नहीं उठा। यह मेरी आदत बन गई थी। जहां तक चिड़ीमारी का सम्बन्ध है बिगन खर्पा में बन्दूक मैं इसीलिए रखता था क्योंकि मैं पक्षी विज्ञान का अध्ययन करना चाहता था और नये जयवा दुग्ध पशुओं की खोज में रहता था। पर मैं स्वीकार करता हूँ कि जब मैं यह सोचने पर विवश हो गया हूँ कि पक्षी विज्ञान के अध्ययन का इसमें भी बर्तिया तरीका मौजूद है। वह है पक्षियों की जानता का बहुत जविक निरुद्ध में निरीक्षण करना। सम्भवतः मात्र इसी कारणवश मैं बन्दूक छोड़ देने पर राजी हो गया हूँ। मानवतावाणी आधार पर किए गए जाशेपा का मैं पुष्ट नहीं मानता। मुझे इस बात में सन्देह है कि इन गिहारा का स्थान इनमें ही लाभप्रद खेल व भी भी लगे हैं। इसीलिए जब भी मेरे मित्रों ने मुझसे सनाह ली है कि व अपने लडका का गिहार खेलने दें या नहीं तो मैंने हाँ ही कहा है। मुझे याद आया है कि यह मेरी गिहारा का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है कि उह गिहारी बनाओ। पहले-पहल मिलाही ही मही पर सम्भव हो तो जतम उह एम गतिगानी गिहारी बनने का कि इस या किसी भी जगत् में प्राप्त उह मयदे गिहार का भी वे अपने लिए काफी न मानें। व मानवा के गिहारी और मछियार भी बन। यहां तक तो मैं कवि चामर की नन में पूरी तरह मन्मत् हूँ—

जा कहते हैं कि गिहारी घासिक जन नगी हारा
उहने कोई बहुत वाटे की बात नहीं कह ली है।

प्रविन के और जालि के भी गतिहाम में एक युग आता है अब अन्त्यानक्तिना^१ की भाषा में गिहारी ही 'सर्वोत्तम जन होते हैं। जिस लडके ने बन्दूक का घाण

कभी दवाया ही नहीं उसपर तर्क खाने के सिवाय और क्या किया जा सकता है ! यह अधिक मानवीय नहीं बन गया है । उसकी शिक्षा की दुःखद उपेक्षा की गई है । मेरा यह उत्तर उन युवकों की दृष्टि में रखकर ही है जो शिक्कार के इस उद्यम में जुटे हैं । मेरा विश्वास है कि वे गीघ्र ही उसमें ऊपर उठ आएंगे । लटकपन की विचारणीय आयु के पार पहुँचकर कोई भी मानवीय व्यक्ति उस प्राणी का जो उस त्रितनी ही अवधि तक जीवन का अधिकारी है अविचारपूर्वक नहीं मारेगा । खरगगा भी जीवन के छोर पर पहुँचकर बच्चे का तरह ही चीखता है । माताओं ! मैं आपको बतावनी देता हूँ कि मेरी सहानुभूति सामान्य मानवतावादी विवेक-बुद्धि का अनुसरण सत्ता ही नहीं करती ।

एक युवक का मन के और अपने व्यक्तित्व के सबसे मौलिक अंश के सामं प्रथम परिचय इसी प्रकार होता है । वह पहल-पहन एक शिक्कारी या मछलियारे के रूप में ही बड़ा पहुँचता है । यदि उसमें एक अधिन अच्छे जीवन के बीज होते हैं तो अन्त में वह अपने समुचित लक्ष्य का पहुँचान सता है । गायन वह कवि या प्रकृतिवादी बन जाता है और बहूक और काट को पीछे छोड़ जाता है । अधिराग लाग इस दृष्टि से अपरिपक्व हैं और रहते । कुछ देना में पान्थी द्वारा शिकार किया जाना अनाधारण बात नहीं है । एसा पादरी अच्छे गडरिये का कुत्ता भी बन सकता है पर इजोल में वर्णित अच्छा गडरिया नहीं बन सकता । यह देखकर मुझे यह आश्चर्य हुआ है कि नवली काटने के क्षण में जमे घाँवा का छोड़कर जो एक काम एक व्यक्ति के सिवाय मेरे सभी साथी नागरिकों का—बाह्र घंटा घंटा घंटे—पूरे आधे दिन तक बाह्यन मरोवर पर रान रख सका है जहाँ तक मरी जानकारी है वह मछली पकड़ने का काम ही है । साधारणतया जब तक बहुत बारी मछलियाँ उनमें हाथ आ जाए वे अपने का भाग्यवान नहीं मानते अथवा नहीं समझते कि समय का पूरा मुआवजा उन्हें मिल गया है । यद्यपि तालाब का दृश्य देखने का अवसर तो उन्हें निरन्तर प्राप्त रहता ही है । मछली मारने की आसानी रूपी बीचट के तनी में बठने और उद्देय के पत्रिप्त हान तक तो गायद हजारी बार ही उन्हें बड़ा जाना पड़ । पर इसमें सन्देह नहीं कि विगुडीकरण का यह प्रक्रिया लगातार जारी रहती । राज्यपाल और उनकी समिति के सम्मेलन की इस मरीज की हमकी-मो स्मृति है यद्यपि अब वे उठके से तब मछली पकड़ने के लिए बड़ा मगध, पर अब वे नन प्रौढ और सम्भाल बन गए हैं कि मछलियाँ पकड़ने नहीं जा

मनन । इसमें अधिक और कुछ 'गमन' बारे में बकरी भी नहीं जानेंगे । फिर भी अतः समय स्वयं जाने की आशा तो बँक रहे ही हैं । यदि विधान मटल बनी वालें न या ध्यान करना है तो बम बड़ा मछली पकाने के लिए जल जानवाले काटा की मस्या का नियंत्रण करने के लिए है । तबिन व काटा के भी उस काटे के बारे में कुछ नहीं जानने जिसमें स्वयं मरावर का फमाया जाए और जिसपर चार की जगह विधान को ही बिपका दिया जाए—सम्यं जातियो में भी इसी प्रकार भ्रूण मानव विनाम करता हुआ गिवाही को स्थिति में म गुडरता है ।

पिछले वर्षों में मैंने बार-बार यह महसूस किया कि थोड़ा आत्ममग्गन में गिरे बिना मछली पकटने का काम मैं कर नहीं पाता । बार-बार मैं मछलियाँ पकड़ी हूँ । मैं इस काम में कुशलता प्राप्त की है और अपने बहुतसे माधिया की तरह इसके प्रति मुझमें एक आन्तरिक भ्रूवाव भी है जो समय-समय पर उभर उठता है । लेकिन अब भी मैं यह काम किया है मैं यह महसूस किया है कि यदि मैं मछलियाँ न पकड़ता तो अधिक श्रद्धा होना । मैं समझता हूँ यह कहकर मैं गलती नहीं कर रहा हूँ । प्रभान की प्रथम किशोरी की तरह यह एक दबी-दबी-सी सूचना है । सन्धि के अधम स्तरों में मध्यम रखनेवाली अतवति मुझमें निस्सन्देह मौजूद है । फिर भी हरथप के साथ मैं मछलियों को उत्तरोत्तर कम होता जा रहा है यद्यपि यह भी नहीं कि मानवाय भावा की और विवेक की मुझमें बढ़ि ही हो रही है । प्रस्तुत समय तो मैं निश्चिन्त भी मछलियों को नहीं रहा हूँ । लेकिन यदि मुझे फिर किसी उजाड़ वन में रहना मिलता तो मैं एक पक्का मछलियाँ और गिवाही फिर में बन जाऊँगा । इसके अतिरिक्त मैं और इस प्रकार के भाजन आदि में एक अनिश्चय गन्धी है । आज मैं समझने लगा हूँ कि किस भाव में प्रेरित होकर काफी अधिक खब करके भा घर यह प्रयास करता रहता है कि वह प्रतिदिन साफ-सुथरा और प्रतिष्ठित नजर आए और हर प्रकार की दुःख में और कुश्या से दूर रहकर आनन्दपूर्ण बना रहे । बसाई का मास करनेवाले नौकर का और मन्त्राज का—इन सबका काम मैं स्वयं ही किया है और मैं ही वह मज्जन रहा हूँ जिसके लिए यह तब पकाया गया है । इसलिए जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह असामान्य रूप में पूरा अनुभव के बाद कह रहा हूँ । मांगानार के प्रति मरी विनयता का व्यावहारिक कारण है उसकी मन्दी । इसमें अतिरिक्त अब मछली का पकड़ने का करव पतार मैं ही चुकता तो मुझे निश्चिन्त न लगता कि मरने पट मरने नहीं है । या

नगता कि भाजन नगण्य और अनावश्यक रहा है और जितनी कीमत उसका चकाती पड़ी है उतना लाभ उससे नहीं हासला है। यादों की खोज और कुछ जानू इतना ही काम कर जाते। परधानी भी कम जानी और गदगी भी। अपने बहुतस मित्रों की तरह कितने ही वर्षों तक माम या चाय या काफी आदि का भेवा भन कठिनाई से ही कभी किया। यह इर्मलिन नहीं कि इनके कुछ दुष्प्रभावों में मैं परिचित हो गया था। बल्कि इसलिए कि इन चीजों का मैं अपनी कल्पना से मतलब बिठा मारा। सामाहिक व प्रति प्रतिष्ठा किसी अनुभव का परिणाम नहीं है। वह तो सहज अंतर्बल है। निम्न स्तर का जीवन बिताना और कितने ही विषयों में कठिनाईयाँ भेनना मुझे अधिक आकर्षक लगता था। यद्यपि ठाक ऐसा ही मैंने कभी नहीं किया लेकिन अपनी कल्पना की नज़िब नज़िब मैं काफी दूर तक गया। मेरा विश्वास है कि एक प्रत्यक्ष व्यक्ति का अपने उच्चतर गुणों जयवा कवि प्रतिभा का सर्वोत्तम स्तर में बनाए रखने के लिए यत्न रहा है कि अपर सामाहिक न और किसी भी प्रकार के अत्याहार में दूरे रहना पड़ा है। बिना और स्पष्ट की कृतियाँ मैं मैंने पढ़ी हैं और कृमिगात्रियाँ पढ़ा कदा कदा यह एक महत्वपूर्ण तथ्य तो है कि कुछ कीड़ अपनी स्वस्थ स्थिति में गान के शरीरव्यवस्था में भीजद रहने का भी उनका उपयोग नहीं करते। कृमिगात्रियाँ न यत् सामान्य नियम बना लिया है कि सभी कीड़ स्वस्थ स्थिति में न जाने की स्थिति की अपेक्षा बहुत कम प्यारे हैं। बुगलद लावा नितली बन जान पर और पट डिम्ब मक्खी बन जान पर एक या दो बार गहरा या किसी जय मीठ रस से ही संतुष्ट हो जाते हैं। नितली के पत्तों के नीचे छिपा उमरा पर उसके लार्वा का ही प्रतिनिधि है। यही वह चीज है जो उसे कृमिभाजी बनने का आह्वान करती है। लार्वा स्तर का आत्मा भी अपना कुछ स्वाभिमानी होता है। फिर पूर्ण की पूर्ण जागृत हो मारात्म्य अर्थात् कल्पना में प्रवेश के सभी लावा स्थिति में हैं और उनका विज्ञान उच्च उनके पास मौजूद है।

जो हमारा प्यार का वन न पट्टाए ऐसा भावना पकाना और बिलाना उचित है कल्पित काम है। तबिन में समझता है जय हम शरीर का भाजन दा है तो अपना कल्पना का भाजन स्तर भी बहुत ही आवश्यक है। ज्ञान का परमाय

एक ही मनुष्य पर बठना चाहिए। फिर भी शायद ही ऐसा किया जा सके। पना का समयित भाजन यदि हम करें तो अपने भूख पर लज्जित हान की हम उम्मीद नहीं है और न ही वह हमारी उच्चतम मानना में बाधक है। लेकिन तब ही भाजन में अनिश्चित ममाला मिलाया कि उमन बहर का काम किया। उत्तम स्वादिष्ट भाजन खाने रहना उचित नहीं है। शाकाहार हा या मासाहार वही भाजन जिसमें जल प्रविष्टि ही पनाकर आपको मिलाने है। यदि उस ही स्वयं अपने हाथों में पनात हुए आप लोगों को पका लिया जाए तो आप स्वयं में गठ उठेंगे। लेकिन जब तक इसमें उठना नहीं होना तो तक हम सम्यक् नहीं है। तयारयित मनुष्य स्त्री पुरुष हम मल ही हा मच्छे स्त्री पुरुष हम नहीं हैं। निश्चय ही यह सत्य है कि क्या परिश्रम लाया जाना है। यह प्रश्न बकार है कि मासाहार के लिए कल्पना का क्या त्याग नहीं किया जा सकता। मैं इनमें से सन्तुष्ट हूँ कि उस तयार नहीं दिया जा सकता। मानव मानव ही पना है क्या यह एक फल ही नहीं है? सत्य है कि वह बहुत दूर तक दूसरे पना का बिकार पर जीवन रह सकता है और रहता है पर यह एक जीवनिया तरीका है। जो आदमी खरहा का बिकार करन और ममता का बाटन बनना है वह इस बात का अविर अनभव कर सकता है। जो व्यक्ति मानव को एक अधिक निर्दोष और भ्रष्ट भाजन तक भीमिन रहना सिगाना है वह निश्चय ही इस जाति का उद्धारकर्ता है। मरा भावरग चाह जमा भी क्या न रहा हा, मुझे इस बात में बाई भी मन्हा नहा कि जगन उत्तरोत्तर मुगल तम में मासाहार का या मानव-जाति के भाव्य का उमी प्रकार एक अनि शाय अंग है जिस प्रकार जगली मानव न अधिक सम्यक् जातियाँ सम्भव में आन के बाद एक-दूसरे को खाना छाड़ दिया।

यदि मानव अपनी प्रजा के सदस्य पर स्थायी और निश्चित मत्प बनना का मुने ता वह अनुमान नहा कर सकता कि किम चरम या कष्टि पाण्ड पन की सामा तो य सवन इस ल जाएगा। फिर भी जम जग वह अधिक दूर निश्चय और निश्चय बनना जाना है बसे-बसे ही जमका भाग तय हाता जाना है। एक स्वयं व्यक्ति ही जिस एक दबी-दबी पर जमन्दिन्य आपत्तिका अनुभव करना है वही मानव जाति के तर्कों और रीति रिवाज पर अन्त हावी हा जाती है। कोई व्यक्ति ऐसा नहा जिनमें प्रजा का अनुमरण किया हा और उमन उम विषय गामान बना दिया हा। इसका परिणाम गौरीक टुलना हाया। फिर भी शायद

ही कोई इस परिणाम को अपमोस की बात मान क्योंकि यह तो उच्चतर सिद्धांतों के अनुकूल होने की बात है। यदि आपके दिन और रात ऐसे बन जाए कि आप उनका सह्य स्वागत करें और जीवन फूला और मधुर गंधवाली जड़िया की तरह एक सुवास छोड़ें वह अधिक लचीला, अधिक तारक मण्डित और अधिक अमर बन जाए—ता बहा आपकी सफलता है। सारी प्रकृति आपको बधाई देगी और क्षण भर के लिए अपना अभिनंदन करने का आपका अधिकार होगा। महानतम उपलब्धियाँ और मूल्य यद्योचित मूल्यवान् स बहुत दूर रहते हैं। हम सहज ही सह हो उठता है कि उनका अस्तित्व भी है या नहीं। हम जल्दी ही उड़ भूल जाते हैं। पर व सर्वोच्च यथाथ हाते है। सम्भवतः सबसे अधिक वास्तविक जीव अमाधारण तथ्या का मानव हमारे मानव तक पहुँचा ही नहीं सकता। मरे अनिष्ट जीवन की फसल बहुत कुछ प्रभात और संध्या के रंग जितनी ही अस्पृश्य और अवगनीय हानी है। वह तो किसी तारे की थोड़ी-सी धूल है और इन्द्रधनुष का एक लण्ड है जो मेरे हाथ में आ गया है।

फिर भी जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं कभी अमाधारण रूप से चट्टर नहीं बन सका। मैं जल्दबाजी करने पर कभी-कभी बड़े स्वाद से भुना हुआ खूहा खा लेता। मुझे प्रमत्तता है कि मैं इतने दिना तक गराब के बंदले सिर्फ पानी पीकर रहता रहा। क्योंकि मैं एक अफीमखी के स्वर्ग में नसगिक आकाश को अधिक पसन्द करना हूँ। मैं प्रमत्ततापूर्वक हमारा गम्भीर बना रहना पसन्द करूँगा। फिर तब मैं खूब होन के भी जनत स्तर है। मेरा विश्वास है कि एक विवेकी पुष्प का एक मात्र पथ तो पानी ही है। गराब उतना उत्तम पथ नहीं है। घम काफी का एक प्याला पाकर मुबहशी और चाय पीकर संध्या की सम्भावनाओं पर पानी फेर देने के बारे में क्या कहा जाए। जब मैं उनके लिए तालाबित होता हूँ तब मैं जितना गिर जाता हूँ। मगीत नव नया पदा कर मनता है। प्रत्यन्त एम मामूली कारणा न ग्रीम और रोम का विनाश कर दिया था और यही इंग्लैंड और अमरीका का भा नष्ट कर गे। सभी गरावियाँ में वीन एमा है जो हवा का दानो में भरकर उसमें सम्मत्त हाना नहीं चाहता? बहुत समय तक स्थल घम करते जान का यह आपत्ति जनक परिणाम मैं पाया है कि उगन मुझे सयममूल्य गान और पीन पर विवश किया है। लेकिन सब कहूँ तो आवश्यक इस बारे में मैं अपने को कम नियमरुद्ध माना हूँ। मैं गान की मञ्च पर घम भावना को लेकर कम ही बैठता हूँ और आगे

वात की आकांक्षा नहीं करना। यह इसलिए नहीं कि मैं पहले की अपथा अत्रिब बुद्धिमान बन गया हूँ बल्कि—मैं आत्मस्वीकार कर ल चाह इस कितना भी बुरा क्या न समझा जाए—इसलिए कि आयु के साथ मैं अत्रिब ग्रामीण और नापरवाह हो गया हूँ। जमाकि कविता के चार म माना जाता है शायद ऐन श्रान्ता का जवानी में हा हम मवाधिक स्वागत करते हैं। भरा आचरण यत्न कही नहा ह बल्कि भरी विचारणा यहा प्रस्तुत ह। फिर मैं अपने का उन विगवात्रिकारप्राप्त नामा मता मान हा नहीं सकता जिसका वार म वदने कहा है चिमका मयन्यापन सर्वोच्च परमात्मा म मुच्छा विवाम हा वह जा भी यामन आ जाए उम हो स्या सकता है। अथान वह यह पूछने के लिए विवश नहा है कि भाजन क निग क्या है अथवा उम किमन पकाया है। लेकिन जमाकि एक हिंदू व्यास्यकार न स्पष्टीकरण दिया है वगान न एस पुरुषा के रम विगोपाधिकार का विपत्ति के समय तर क निग मामित किया है।

कौन है जिमने कभी-कभी उस भाजन म अवगनीय जानद प्राप्ति न किया हा जो उसन भूय म प्रगति हाकर नहीं खाया था ? यत्न माचकर मैं रामाचिन हा उछता ह कि स्वात की एक माधाग्न स्थून अनुभूति विगप का यह श्रय प्राप्ति है कि उगन मुझे एक प्रत्यक्ष ज्ञान काया स्वाद न मुझे एक प्रेरणा दी एक पहली पर खाए बरा न मेरी प्रता का भी भाजन दिया। चेंग-मू^१ न कहा है जब आत्मा स्वत अपनी ख्यामा नहीं हानी तब व्यक्ति दखता है और कुछ भी नहा खता, वह मुनता है पर कुछ भा नहीं मुनता वह खता है पर भाजन का स्वात महसूस नहा करता।' जा व्यक्ति भोजन का भरी स्वाद महसूस क मरता है वह कभी भी पट नगी बन सकता जा महसूस नगी कर सकता वह दमक सिवाय कुछ और नगी हा सकता। एक पवित्रतावादी (प्यूरिटन) अपना भूय मरुत रागी का उमी जानमा क माय खा सकता * जिमन कि एक उच्चतरिकारा एक कछुा का खाता है। मृदु म पहुचा हुआ भाजन व्यक्ति का भ्रष्ट नगी करना बल्कि जानमा भ्रष्ट करनी है जिमन माय वह उम खाता है। न रिम्प और न हा माया बल्कि एंड्रिय स्वात निच्छा हम पतिन करता है जबकि खाया हुआ भाजन हमारे अन्दर क पापु के पापण के लिए गही हाता न नी वह हमारे राष्ट्रात्मिक

जावन की प्रणाली के लिए होता है। वह कि उन कीड़ा का भोजन करने के लिए होता है। जो हमपर हावा ही जाता है। अगर एक शिकारी कीचड़-कठआ और छद्मदरों के और ऐसा ही अन्य जगती चीजा के स्वाद के वश में है तो एक उच्चवर्ग की महिला बछड़ के पर में घनाई गई जेली के जववा समुद्र पार की भारती भठना के पाठ पागत है। दाता की स्थिति समान है। शिकारी सांता की जार जाता है तो वह स्त्री अपने परिश्रम करने की ओर। आश्चर्य तो यह है कि वह आप और मैं यह गदा पशुजा का सा धम खान और पाने मात्र का जीवन जीते हैं।

हमारा पूरा जीवन इतना नतिक है कि स्वस्थित करना है। बहा एक क्षण के लिए भी पुण्य और पाप के बीच सचि नहीं होती। जल्दाई हाथट लगा हुआ धन है जो कभी मारा नहीं जाता। धरती के चारा जार गुजनवादी बीणा ध्वनि में इसीपर बन जाता है और उसका यही तत्त्व हम सामाजित करता है। बीणा विन्द की धामा बम्पनी की वह फरीकानी है जो उसके कानून को बचता फिरती है और बदल में घानी-नी जल्दाई की कामत ही हम चुकानी पता है। यद्यपि जितत जीवन उदामान हा जाता है पर बिस्व — नियम कभी विरक्त नहीं हात। व सदा ही अचरित भावत नोता के पथ में रहते हैं। मधुर पश्चिमाय पवन की धामा मुनिता। उमम निश्चय ही एक फत्कार दिया है और वह भाग्यहीन है जो उन नन्हा मुन मरता। हम एक तार का छत नहीं जववा एक कर्म आग बन्धन नहा कि जावपक नाति-बचन जाकर हमपर चिरा जाते हैं। जिनन की कणरु स्वर यदि उनम कुद्रुदूर पर जाया जाए तो सगीन जम मुन पटन हैं और हम हमारे जीवन का मुक्तता पर एक गवपूण मधुर ध्वन्य है।

हम अपने अन्तर एक पशु की उपस्थित पान हैं जो उनता ही जागरित मिलता है जितना कि हमारा उच्चतर प्रकृति गहरी नीम में लकी होती है। यह एक रंगन वाता एन्द्रिय तन्तु है जिसका तावत पूरा तरंग समाप्त नग किया जा सकता टोक जमा तरंग जगति जीवन और स्वास्थ्य में भी उन टुमि राटा का परम तहा किया जा सकता जो हमारे गरीब में भरे हैं। हम हम जंतु में भाग मकर है पर तार स्मभाव का बन्धन नग मकर। मुम आगवा है कि हमका अपना एक स्वास्थ्य जिगम बड रग उता है। इसीलिए हम भन-बग में मकर है कि भी जल्दी नहा कि पश्चिम में। पाठ्य गरीब नि एर सुजर का निचता जववा मुम मिता। गव और मरुतून दान उमम जग है। हमम मुम मकर मिता कि आप्यामिग

जोर गप सबों लिए स्वयं गधा नहीं बनता
नहीं तो मानव-मुअर्रा का खड ही नहीं
बल्कि वह गतान भी है जिनमें उह भयानक प्राण भरा है
तथा जोर भी बदतर बना दिया है ।'

यद्यपि एन्द्रियता जितनी ही रूप ग्रहण करती है पर गभीर रूप व पीछे चीज तक ही है। आत्मी खाना हा या पाता हो सम्भाग करता हा या सोता हा वह एक ही प्रकार की इन्द्रियपरायणता में यह सब करता है। य मर तक ही लालसा व विभिन्न रूप हैं। व्यक्ति को इनमें से किसी एक काम में लिप्त देख लिया जाए तो यह निश्चय किया जा सकता है कि व्यक्ति विशेष जितना अधिक एन्द्रियक है। अपवित्र पवित्रता को न सहन कर सकता है व उसमें साथ अन्त में ल विठा सकता है। जब रंगनवान जन्तु व बिल व एक द्वार पर आक्रमण किया जाता है तब वह स्वयं व दूसरे द्वार में प्रकट कर देता है। यदि आप ब्रह्मचारी बनना चाहें तो आपको समयी बनना होगा। ब्रह्मचर्य क्या है ? यदि व्यक्ति ब्रह्मचारी है तो वह कम जान कि वह क्या है। वह नहीं जानता। हमने इस गुण व बारे में सुना है पर हम नहीं जानते कि यह क्या है। हमने तो अफगाह सुनी है उसमें मिलती जुलती बात हम कहें हैं। श्रम करने में बुद्धिमत्ता और पवित्रता आती है। आनन्द में अज्ञान और एन्द्रियता। विद्यार्थी व मन का आनन्द ही उसकी इन्द्रियपरायणता है। एक गत्त आत्मी सामान्य आनमी होता है। वह अगीठी के पास बैठता है मूय उसपर मीठा चमरता है। वह बिना धर खाना खा रहा है। यदि आप गरीबी से और सब प्रकार व पापा में बचना चाहें तो गरीब से काम करें। फिर चाहें वह घुड़माल साफ करने का ही काम क्या न हो। प्रवृत्ति को बगल में करना बठिन है लेकिन उसे बगल में किया ही जाना चाहिए। यदि आप एक अमस्कृत व्यक्ति की अपना अधिप पवित्र नहीं है यदि आप उसमें अधिक अपना वासनाओं का निषेध नहीं करते यदि आप उसमें अधिप धामिन् नहीं हैं तब आपको ईगाई हान का क्या लाभ है ? मैं धर्म का बितनी ही प्रणालियाँ व परिचिन हूँ जो अमस्कृत मानो गड हैं और जिनके अभिमत पाठकों का लक्ष्य में भर रहे हैं किन्तु चाहें व मात्र पूजा आदि तब ही सीमित क्या न हो। व उगे तब प्रयास करने की प्रेरणा देते हैं।

इन गरीब बानों से वहन में मैं हिलने रहा हूँ लेकिन विषय व कारण नहीं

क्योंकि मरना कितने अश्लील है इस बात की मुझे ज़रा भी परवाह नहीं है बल्कि इसलिए क्योंकि अपनी अपवित्रता को प्रकाश दिए बिना मैं उत्तक वारे में कुछ भी नहीं बता सकता। हम एक प्रकार की ऐंद्रियता के वारे में खुनकर वानें कर रहे हैं पर दूसरी क वारे में चुप रहते हैं। हम इतने पतित हैं कि मानव प्रकृति के आवश्यक कृत्या क वारे में भी सहजता में वानें नहीं कर सकते। प्रारम्भिक युगा में कुछ युगा में हर कृत्य की जादरपूजन चर्चा की जाती थी और उस कानून से नियमित किया जाता था। हिन्दू विधि निर्माता के लिए कोई भी बात वह आधुनिक चर्च क विना भी विरुद्ध क्या न लगे उपेक्षणीय या नगण्य नहीं थी। वह खान पीन मभोग वरत और नपुण्यता तथा दोषगता करने-जैसी बातों के भी नियम बनाना है। वह, वा नुष्ठ है उस महत्त्व दता है और इन बातों का मामूली घनाकर उनसे गलत रूप में बचना नहीं।

हर व्यक्ति अपने शरीर तथा मंदिर का निमाता है। इसमें वह अपने दृष्ट की पूजा विगुद अपनी पद्धति से करता है। इसने स्थान पर पत्थरों पर छेनी चलाकर कर्म निमाण में बच नहीं जाता। हम सभी शिल्पी और चित्रकार हैं। मांस रक्त और हृदय ही हमारी सामग्री हैं। हर उच्चता मानव के रूपाकार को तत्काल सम्पन्न करना आरम्भ कर देती है और हर हीनता और ऐंद्रियता उसे पंगु बनाती है।

सितम्बर की एक राध्या क समय दिन भर के कठोर श्रम के बाद जाँट पागर अपने द्वार बठा है। उसका मस्तिष्क अब भी कम अधिक अपने धधे क वारे में ही भाव रहा है। नहा धोकर वह अपने बौद्धिक व्यक्तित्व का मनोरंजन करना अट गया। राध्या कुछ टण्टी थी और उसके बच्चे पलेमी पाला पन्न की आवाज़ कर रहे थे।

था। उमीकी तरह एक एक कर वह कमर की दीवारा पर भी चढ़ जाता। एक दिन जब मैं बेंच पर साहनी गये लेटा था वह भरे कपड़ा पर जोर मेरी बांह पर चढ़कर उम कागज के चारा ओर चढ़कर गगाने लगा जिसमें मरा खाना लिपटा था। मैं खाना अपने में मगए रखा। उम उससे उचाता रहा और उसका साथ आगे मिचौनी खेलता रहा। अंत में मैं पनीर का एक टुकड़ा अपने अगूठे और उगलिया का पीच में धामे रहा। वह जाया भरे हाथ पर बठकर उसने उसमें मुह मारा मक्खी तो तरह अपना पंजा और चेहरा माफ किया और चला गया।

एक कौए न भरे सायवान में घामला बना लिया और राइन ने घर के सामने पड़ चीड़ का पड़ पर। जन में तीतर जो बड़ा ही शर्मिला पक्षी है मुर्गी की तरह कुड़कुड़ाता हुआ और अपने बच्चा का पुकारता हुआ उह घर के पिछवाड़े के जंगल में लाकर छिड़किया का पास में गुजरता। अपने पूरे व्यवहार में स्वयं का यह इन जंगल की मुर्गी सिद्ध करता था। जैसे ही आप पास पहुंचते हैं मा का आवाज पाकर बच्चा अचानक बिगड़ जाते हैं जसकि एक भाग्य उह उठा न गया हो। मूरे हुए पत्ता और टहनियो से वे इतने एकरूप हैं कि यात्री उनके पास हान की आवाज से मुक्त इन बच्चा के समूह का बीच ही अपना पर रख दें और फलतः बड़ी छिटिया का उन्न की सर का, उमरी चील-पुनार को और च च की ध्वनि को सुनकर ही अर्मातियत का जान सके। तभी वह देखे कि उसका ध्यान आकर्षित करने का लिए तीतर अपने पंजा का फड़फड़ा रहा है। पिता तीतर पंजा का उठा पर आपने चारा ओर उस चरार कागजा कि कुछ क्षणा तक तो आप यह समझ ही न सोंगे कि यह कौन-सा पक्षी है। यह तीतर स्थिर और सौम्य रूप में घूमने है अपना सिर पत्ता का नीचे डालने हैं और कुछ दूरी में दिए जानवाने अपनी मा का निष्ठा का ध्यान ही कम से रखने हैं। दुसरा यदि आप उनके पास पहुंचेंगे तो वे भागेंगे नहीं और स्वयं को प्रकट करने करेंगे। उह पिता पहचान आप उत्तर अपना पर रख सकते हैं अथवा एक मिनट का लिए उनपर अपनी दृष्टि जमा सकते हैं। एक समय मैं उह अपने खुले हाथ पर बिठाया है। वे अपनी मा और अपनी अवस्थिति के प्रति इमानदार रहने हुए बिना हरे या काफ वन बना बट गए हैं। उसी यह अवस्थिति इतनी पक्की है कि एक बार जब मैं उह पत्ता पर दुसरा रख दिया तो उनमें में एक अचानक एक तरफ का मुक्क पड़ा। एक मिनट बाद भी मैं उन ठीक उगी स्थिति में पत्ता हुआ पाया। वे अथ पक्षिया के बच्चा की तरह

जन्तुमव म बच्च नगी हाउ बन्नि चूता मे भी जयिव विकनिन जोग प्रकाशप्रो
 गत हैं। उनकी मृता गम्भीर आत्मा की प्रोउ किन्तु नानी यमिज्यक्ति बगी ही
 स्मणीय हानी है। यन्ना है जम गगी बुद्धि नी उनम प्रतिबिम्बित हा ग हा
 यगता है जम मिह गगव का पवित्रता ही उनम नगी है बन्नि जन्तुमव मे प्राउ
 स्पष्ट विवक भी है। यन्ना जम क माय बमी आन्ने पैदा नहीं रुट धी। वह ता
 नमम प्रतिबिम्बित जन्तुमव आकाश का गगता है। यन्ना म गम जय गन् पैदा
 नना हाना। यानी का गम पाद्वर्गी कुम म भाकता प्रकप नना मितता। ज्ञानी
 अथवा मज्जु गिहारी गग ही नमम पिता तानर का मार जगता है जोग य माने
 बच्च जिमा खानी पगु या पगी का गिरार वनन के निग बच जात हैं। अथवा व
 उन मुहन पता म गीन हा जात हैं जिनमे व वल्लुन अधिक् माम्भ रखत हैं। कहा
 जाता है कि किसी मुर्ती द्वारा पात तानपर ना का भी नमग उपस्थित हात ही व
 तत्वात बिगार जात हैं जोग का पत है कयाकि उन्हें मुर्ताग कट्टा करनवानी मा
 का पुकार अब उनक बाना म नहीं पडता। यन्ना या मग मुगिया यगी ये म
 चने।

मैंने खुदाई करके साने का साफ भूरा पानी एक ब्रुए जमे गहरे गढ़े में डकट्टा कर लिया था। एक बाल्टी भर पानी पूरे ताल का गडगडाए बिना मैं इसमें से ले लिया करता था। गर्मियां में सरोवर का पानी तो बहुत गर्म हो जाता था। मैं पानी लेने के लिए ही प्रतिदिन यहाँ जाया करता था। जगती मुर्गी इधर भी अपने बच्चा का ले आया करती थी। दलदन में वह कीटा का खाजती बच्चा के एक फुट ऊपर से उगती हुई किनार तक पहुँच जाती और बच्चे उसके नीचे पड़ित बनाकर दौड़त। जब वह मुझ देख लेती तो बच्चों को छाड़कर मेरे चारा और चक्कर पर चक्कर लगाती चार या पाँच फुट दूरी तक जा जाती और पत्ता और टागा को टूटा हुआ सा प्रार्थित करके मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती। उधर बच्चे उसके निर्देशानुसार घोंमे में घूम घूमकर तारुवर में ची-ची करत इकहरी पक्षि में दलाल में होकर आग उड़ जाते। अथवा कभी कभी मुर्गों को तो मैं दल न पाता पर उनके बच्चों की चून्च सुनता। वहाँ भी जगती फास्ता सोने के जल पर बठनी जयवा सफेद चीड़ की कोमल डालियाँ पर एक से दूसरी पर हानी हुई मेरे मिर पर से उड़ती। सवन राजदीक वाली टहनी पर ऊपर से नीचे की ओर दौड़ती हुई लाल गिलहरी विनोद रूप में परिचित और उत्कृष्ट दीखती। किसी आकषक स्थल पर जरा कुछ अधिक दूर जाप बछिए और जगन के सभी रहनवाले एक एक करके अपना दण्ड जापको दिया जाएंगे।

पुत्र वम शान्त विरम की घटनाएँ भी मने यहाँ देखी हैं। एक दिन जब मैं लखिया की डरी या कहिए जंग की डेरी के पास पत्ता तो मैं दो बड़े चीटा का एक ताल और दूसरे उमरा भी बड़े लगभग आध दूध सम्म बाने चीटे का भयानक रूप में गुत्थम-गुत्था होने देया। एक बार दूसरे का पकड़कर ब छटने नहीं दत सम्म करत हैं मत्तमुद्ध करत हैं और लकड़ी के टुकड़े पर ही निरत उगता पनटी करते रहते हैं। दूर तक दाने पर मैं आश्चर्यचकित रह गया कि लखिया ऐसी ही पादाग्रा से डरी हुई थी। यह द्वन्द्वमुद्ध नहीं था। यह तो एक मराम या जो चीटा का दा जातिया में चल रहा था। लान चाटे बाल चीटा में जा मिश्रित थे और अक्सर दा सान तो एक बाला। इन मिश्रितना की माराया में

१ घोंमे के अगेला का एक जानि विनोद दान के यद्ध में पक्षिवाग को अप नारा में भाग दिया था।

लकड़िया व मरे ढेर की सभी पहाड़िया और घाटिया भरी था और लाल और कान दोना के ही मृतक और मरणासन्न घरती पर ज़िलरे थे। यही एक युद्ध है जिसे मैं कभी भी दखा है और यही वह युद्धभूमि है जिसपर उम समय में घूमा हूँ जबकि युद्ध जोरा पर था। यह एक परस्पर विनाशक युद्ध था। एक ओर थे गणतन्त्रवादी लाल और दूसरी ओर साम्राज्यवादी काले चीटे। हर तरफ़ वे एक संहारक द्वन्द्व में जुटे थे। फिर भी ज़रा भी तो शान नहीं हो रहा था। फिर मानव-सन्निक इतना दबता से लड़ते भी तो नहीं। एक जाड़े को मैं देखा। दाना लकड़ी के टुकड़ा के बीच एक घस से चमकती घाटी में बुरी तरह परस्पर गुंथे हुए थे। दोपहर के समय उन्होंने युद्ध आरम्भ किया और सूरज ढलने तक या तो लड़ते रहे या मर गए। छोटे लाल सन्निक ने पाप की तरह शत्रु की छाती से अपन को चिपका लिया था। कितनी बार वह उस मदान पर लुब्धता-लुब्धता था पर एक पल के लिए भी धूधनी के पास के उसके एर स्पष्ट गृह (फील्ड) पर चोट करने से नहीं रुकता था। एक स्पष्ट गृह को तो वह पहले ही काटकर फेंक चुका था। काला अर्बिच बलवान चीटा उम इधर से उधर पटक रहा था। और बहुत पास आकर मैं देखा कि वह उसके कई जगा का काट भी चुका था। व बुलडागा से भी अधिक खूबारी के साथ लड़ रहे थे। उनमें से कोई भी पीछे हटने के लिए तैयार नहीं था। स्पष्ट ही उनका नारा था, 'विजय पा लो या मर जाओ।' वसी बीच इस घाटी की आर पहाड़ी की तरफ से एक अकेला चीटा आ निकला। स्पष्ट ही वह जोश से भरा था। या तो उसने अपन शत्रु को मार डाला था या अभी तक युद्ध में हिस्सा ही नहीं लिया था। दूसरी वान ही ठीक लगती थी क्याकि उनका कोई भी अटूटा हुआ नहा था। उसकी मा ने शायद उस यह आत्मा देकर भेजा था कि या तो चीतकर लौटना या मरकर। शायद वह कोई ऐकिलीज था जिसने अलग रहकर अपन शत्रु का पागा था और अब अपन पेट्रीकनस^१ को बचाने के लिए या उसका बन्धन लाने के लिए चला आया था। दूर गड़े हानर उनमें इस असमान-द्वन्द्व को देख क्याकि काले चीटे लाल से दुगुन बड़े थे। वह तेज चलकर पास आया। उन योद्धाओं में आध इंच की दूरी के भीतर जमकर लड़ा हुआ और अवसर देखकर काले सन्निक की आर उछल पड़ा। शत्रु की सामनवासी दायाँ टांग की जड़ पर आपात कर

उसने शूट कर दिया। प्रत्याघात के लिए उसका अपना कौन सा जग चुना जाय यह उसने शत्रु पर छोड़ दिया। इस प्रकार तीन योद्धा अपने जीवन के लिए लड़ रहे थे। एक नया आकषण प्रस्तुत हो गया था जिसने पिछले सभी दृढ़ता और युद्धों को लज्जित कर दिया था। इसी बीच मैंने देखा कि दोना पक्षों के अपने-अपने बाज भी थे जो विरोध लकड़ियों पर जम थे। वे मुस्त पड़ सनिका म जोश भरन और मरनेवाले योद्धाओं को प्रमत्त करने के लिए अपनी अपनी राष्ट्रीय ध्वजें बजा रहे थे। मुझे भी यह देखकर बसा ही जोश चढ़ आया जसाकि तब चढ़ता जब वे सब मानव होते। जितना भी आप साबेंगे दोना के बीच अंतर कम प्रतीत होगा। निश्चय ही यदि जर्मनों के इतिहास में नहीं तो कम से कम कानकाउ के इतिहास में तो किसी भी ऐसी युद्ध का उल्लेख नहीं मिलता जो लड़नेवालों की मर्यादा की दृष्टि में या उनके द्वारा प्रदर्शित, दशभक्ति और वीरता की दृष्टि से इस युद्ध का क्षण भर भी मुकाबला कर सके। समस्या और सहार को देखें तो यह या तो आस्टर लिटल^१ का युद्ध था या प्रूमडन का। कानकाउ का युद्ध^२। देशभक्ता के एक के लोभ और लक्ष्य स्वरूप घायन हुआ। यहाँ तो हर चीटी एक बटिक थी। गोलीया चलाओ भगवान के लिए गोलीया चलाओ^३ और हज़ारों न डेविस और होसमर वाला भाग्य पाया। उनमें एक भा विराय का दृष्ट नहीं था। मुझे कोई सन्देह नहीं कि हमारे पूजार्थ की तरह ही य भी एक सिद्धांत के लिए लड़ रहे थे। नवा यद्ध चाय पर तीनों पक्षों का कर छुड़ाने के लिए नहीं लड़ा जा रहा था। जो इस युद्ध में सम्बंधित वे उनमें लिए इस युद्ध का परिणाम उतना ही महत्वपूर्ण और स्मरणीय होगा जितना कि कम से कम बकरहिल^४ के युद्ध का हुआ था।

य तीन जवान जिनका मैंने विरोध रूप से वर्णन किया है लकड़ी के जिन टुकड़ पर लड़ रहे थे उस में अपने घर के आया। उन्हें अपने अपनी सिडकी की चौकट पर एक निशान लकड़कर रख दिया जिसमें कि मैं इनके युद्ध का लेख सकूँ। एक भाई क्रोस्वाप को पहन लाल चाटे के ऊपर टिकाकर मैंने देखा कि यद्यपि यह शत्रु की

१ गोलीया के एक लकड़ में नवा अपने आरि या और रूप में काट लड़ा गया युद्ध

२ १८७३ में रोपलियन के विरुद्ध लड़ा गया युद्ध

३ जर्मनों के स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान लड़ा गया युद्ध

४ १७७५ में हुए रारा रारा संग्राम का एक युद्धस्थल